वार्षिक प्रतिवेदन

2009-2010

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली - 110058
पुस्तकालय

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)
(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार के अधीन)
56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली - 110058

वार्षिक प्रतिवेदन

2009-2010

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)
(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार के अधीन)
56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,
नई दिल्ली-110058

प्रकाशक:
कुलसचिव,
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)
56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,
नई दिल्ली-110058
ईपीएबीएक्स : 28524993, 28521994, 28524995
तार : संस्थान
ई मेल : rsks@nda.vsnl.net.in
वेबसाईट : www.sanskrit.nic.in

विषय-सूची

		पृष्ठ
1.	**पर्यावलोकन**	5-8
1.1	संस्था	5
1.2	भूमिका एवं कार्य	5
1.3	कार्यक्रम तथा क्रियाकलाप	6
1.4	अध्यापन	6
1.5	शिक्षक-प्रशिक्षण	6
1.6	शोध	6
1.7	आंतरिक छात्रवृत्ति	6
1.8	प्रकाशन	8
1.9	यू.जी.सी. द्वारा संस्थान का पुनरीक्षण	8
2.	**कुलपति के विषय में**	9
3.	**2009-2010 के दौरान उपलब्धियाँ**	10
4.	**2009-2010 के दौरान राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की अनुपम उपलब्धियाँ**	11
5.	**संरचना एवं क्रियाकलाप**	12-16
6.	**अनुभाग**	17-35
6.1	शैक्षणिक अनुभाग	17
6.2	शोध एवं प्रकाशन अनुभाग	17
6.3	पत्राचार पाठ्यक्रम तथा अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण अनुभाग	20
6.4	परीक्षा अनुभाग	26
6.5	प्रशासन अनुभाग	28
6.6	वित्त अनुभाग	28
6.7	योजना अनुभाग	30
6.8	पालि एवं प्राकृत	32
6.9	परियोजनाएँ	34
6.10	पुस्तकालय एवं विक्रय इकाई	35
7.	**परिसर**	36-64
7.1	श्री गंगानाथ झा परिसर, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)	37
7.2	श्री सदाशिव परिसर, पुरी (उड़ीसा)	40
7.3	श्री रणवीर परिसर, जम्मू (जम्मू एवं कश्मीर)	41
7.4	गुरुवायूर परिसर, त्रिचूर (केरल)	42
7.5	जयपुर परिसर, जयपुर (राजस्थान)	51
7.6	लखनऊ परिसर, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)	52
7.7	श्री राजीव गांधी परिसर, शृंगेरी (कर्नाटक)	54
7.8	गरली परिसर, गरली (हिमाचल प्रदेश)	59
7.9	भोपाल परिसर, भोपाल (मध्य प्रदेश)	60
7.10	के.जे. सौमैया संस्कृत विद्यापीठम् परिसर, मुम्बई (महाराष्ट्र)	61
8.	**योजनाएँ**	65-73
8.1	संस्कृत के प्रोन्नयन हेतु स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों, संस्थाओं तथा पाठशालाओं को वित्तीय सहायता	65
8.2	अखिल भारतीय संस्कृत वाक्-स्पर्धा	67

8.3	शास्त्रचूडामणि योजना	68
8.4	व्यावसायिक प्रशिक्षण योजना	69
8.5	संस्कृत शब्दकोश परियोजना	69
8.6	संस्कृत, पालि/प्राकृत, अरबी और फ़ारसी विद्वानों को राष्ट्रपति सम्मान प्रमाण पत्र प्रदान करने की योजना	69
8.7	संस्कृत वाङ्मय सृजन योजना	70
8.8	ग्रन्थ क्रय योजना	71
8.9	आदर्श संस्कृत महाविद्यालयों/शोध संस्थानों के रूप में मान्यता प्राप्त संस्थाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु योजना	71
8.10	शोध एवं उच्चमाध्यमिकोत्तर छात्रवृत्तियाँ प्रदान करने हेतु योजना	72
8.11	असहाय परिस्थितियों वाले प्रतिष्ठित संस्कृत पंडितों को सम्मान राशि देने की योजना	73
9.	**वर्ष 2009-10 की प्रमुख गतिविधियाँ**	**74-108**
9.1	तृतीय दीक्षान्त समारोह	74
9.2	प्राकृत राष्ट्रिय सम्मेलन	76
9.3	संस्कृत सप्ताहोत्सव	77
9.4	चतुर्थ विश्व संस्कृत सम्मेलन, क्योटो	80
9.5	पालि राष्ट्रिय सम्मेलन	81
9.6	हिन्दी पखवाड़ा	84
9.7	स्थापना दिवस	85
9.8	उत्तर पूर्व राज्यों पर सम्मेलन	86
9.9	कौमुदी महोत्सव	88
9.10	युवा महोत्सव	92
9.11	अखिल भारतीय संस्कृत वाक्स्पर्धा एवं शलाका परीक्षा	96
9.12	अखिल भारतीय संस्कृत शिक्षक सम्मेलन	98
9.13	द्वितीय अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन	100
9.14	अखिल भारतीय संस्कृत नाट्योत्सव	101
9.15	पण्डित परिषद्	104
9.16	अखिल भारतीय पालि-प्राकृत संगोष्ठी	104
9.17	संस्कृत विद्वानों को 'पद्म पुरस्कार'	106
9.18	स्मृति व्याख्यानमाला	107
10.	**संलग्नक**	**109-171**
	क. प्रबन्ध मण्डल के सदस्यों की सूची	109
	ख. वित्त समिति के सदस्यों की सूची	110
	ग. संकाय सदस्यों का परिसर वार विवरण	111
	घ. विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) उपाधि प्राप्त शोध छात्रों का विवरण	120
	ङ. सम्बद्ध संस्थाएँ	123
	च. परीक्षाओं को मान्यता देने वाली सरकारें	132
	छ. परीक्षाओं को मान्यता देने वाले विश्वविद्यालय	134
	ज. मुख्यालय में अनुभागवार कार्यरत स्टाफ संख्या	141
	झ. वार्षिक अनुदान स्वीकृत स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों की राज्य वार संख्या का विवरण	143
	ञ. वित्तीय सहायता से प्रकाशित प्रकाशनों का विवरण	144
	ट. वार्षिक अनुदान प्राप्त आदर्श संस्कृत महाविद्यालयों/शोध संस्थानों का विवरण	146
	ठ. वर्ष 2009-10 की लेखा परीक्षा रिपोर्ट तथा लेखा परीक्षित वार्षिक लेखा	148

1. पर्यवलोकन

1.1 संस्था

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (इसमे इसके बाद इसे संस्थान कहा जाये) की संस्थापना अक्टूबर, 1970 में, सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 (1860 का अधिनियम XXI) के अन्तर्गत पंजीकृत एक स्वायत्त संगठन के रूप में, पूरे देश में संस्कृत के समग्र विकास तथा प्रोन्नयन हेतु हुई। अपने निर्माण काल से ही यह भारत-सरकार द्वारा पूर्णरूपेण निधि प्रदत्त है। यह संस्कृत के प्रसार तथा विकास हेतु शीर्ष निकाय के रूप में कार्यरत है तथा संस्कृत अध्ययन के विकास हेतु, विभिन्न योजनाओं तथा कार्यक्रमों के निर्माण तथा कार्यान्वयन में मानव संसाधन विकास मन्त्रालय की सहायता करता है। संस्कृत भाषा के प्रतिरक्षण, प्रसार तथा विकास और इसके सभी पक्षों की शिक्षा हेतु, 1956 में भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय द्वारा स्थापित संस्कृत आयोग के विभिन्न संस्तुतियों के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु इसने एक केन्द्रीय अभिकरण के रूप में भूमिका निभाई है।

संस्थान के पारम्परिक संस्कृत शिक्षण के संवर्धन और सम्प्रसारण के क्षेत्र में योगदान, इसके श्रेष्ठ प्रकाशनों और इसके द्वारा 55,000 से भी अधिक दुर्लभ संस्कृत पाण्डुलिपियों के संरक्षण तथा प्रबन्धन को महत्त्व देते हुए भारत सरकार ने इसे 7 मई, 2002 से प्रभावी, मानित विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया है, जो अधिसूचना संख्या एफ. 9-28/2000 यू 3 के अन्तर्गत है तथा जिसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अधिसूचना संख्या एफ 6-31/2001 (सी.पी.पी.-1), दिनांक 13 जून 2002 से अनुगत किया गया है।

1.2 भूमिका एवं कार्य

संस्था के बहिर्नियम में निर्देशित राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मुख्य उद्देश्य संस्कृत शिक्षण और शोध का प्रसारण, विकास व प्रोत्साहन है जिनका पालन करते हुए;

i. संस्कृत विद्या की सभी विधाओं में शोध का आरम्भ, अनुदान, प्रोत्साहन तथा संयोजन करना है, साथ-साथ शिक्षक-प्रशिक्षण तथा पाण्डुलिपि विज्ञान आदि को भी संरक्षण देना है जिससे पाठमूलक प्रासंगिक विषयों के साथ आधुनिक शोध के निष्कर्ष का सम्बन्ध स्पष्ट किया जा सके तथा इनका प्रकाशन हो सके।

ii. देश के विविध भागों में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों की स्थापना, अधिग्रहण तथा संचालन करना एवं समान उद्देश्यों वाली अन्य संस्थाओं को संस्थान से संबद्ध करना।

iii. केन्द्रीय प्रशासनिक निकाय के रूप में सेवा करते हुए इसके द्वारा स्थापित अथवा अधिगृहीत समस्त केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों का प्रबंधन तथा उनकी शैक्षणिक गतिविधियों में अधिकाधिक प्रभावी सहयोग करना जिससे विशिष्ट क्षेत्रों में विद्यापीठों के बीच कर्मचारियों, छात्रों व शोध तथा राष्ट्रीय कार्य-विभाजन के अन्तर्विनिमय और स्थानान्तरण को सुसाध्य एवं तर्कसंगत बनाया जा सके।

iv. संस्कृत के संवर्धनार्थ भारत सरकार के केन्द्रीय अभिकरण के रूप में उनकी नीतियों एवं योजनाओं को लागू करना।

v. उन शैक्षणिक शाखाओं में अनुदेश एवं प्रशिक्षण का प्रबन्ध करना जिन्हें संस्थान उचित मानता हो।

vi. शोध एवं ज्ञान के प्रसार हेतु समुचित मार्गदर्शन एवं व्यवस्था करना।

vii. अतिरिक्त प्राचीर अध्ययन, विस्तारित कार्यक्रमों तथा सम्बन्धित दूरस्थ क्रिया-कलापों का उत्तरदायित्व लेकर समाज के विकास को योगदान देना।

viii. इनके अतिरिक्त उन सभी उत्तरदायित्वों एवं कार्यों का निष्पादन करना जो संस्थान के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक या अभीष्ट हों।

ix. पालि एवं प्राकृत भाषाओं को प्रोत्साहन देना।

1.3 कार्यक्रम तथा क्रियाकलाप

संस्थान अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्नलिखित प्रमुख कार्यक्रमों और क्रियाकलापों में कार्यरत है:

- विभिन्न राज्यों में परिसरों की स्थापना।
- माध्यमिक, पूर्वस्नातक, स्नातक, स्नातकोत्तर स्तरों पर परम्परागत पद्धति से संस्कृत शिक्षण तथा डाक्टरेट की उपाधि के स्तर पर शोध का संचालन।
- स्नातक अर्थात् शिक्षा शास्त्री (बी.एड.) स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण का संचालन।
- संस्कृत के विभिन्न क्षेत्रों में शोध-कार्य का संचालन व समन्वयन।
- उभयनिष्ठ अभिरुचि वाली संयुक्त परियोजनाओं के प्रायोजन में अन्य संगठनों से सहयोग।
- संस्कृत पुस्तकालयों, पाण्डुलिपि संग्रहालयों की स्थापना और दुर्लभ पाण्डुलिपियों एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन तथा प्रकाशन।
- स्वीकृत निर्धारित पाठ्यक्रम/शोध को संतोषजनक रूप से पूर्ण करके निर्धारित परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने वाले व्यक्तियों को उपाधियाँ प्रदान करना और डिप्लोमा/प्रमाण-पत्र देना।
- विज़िटरशिप, फेलोशिप, छात्रवृत्तियाँ, वज़ीफे, पुरस्कार तथा पदकों का संस्थापन एवं उन्हें प्रदान करना।
- दूरस्थ शिक्षा-कार्यक्रमों का संचालन।
- संस्कृत, पालि तथा प्राकृत के प्रोन्नयन हेतु मानव संसाधन विकास मन्त्रालय की योजनाओं का कार्यान्वयन।

1.4 अध्यापन

संस्थान के अपने दस परिसरों में, संस्थान द्वारा निर्मित पाठ्यक्रम के आधार पर प्राक्शास्त्री से आचार्य स्तर तक शिक्षण का संचालन किया जाता है तथा संस्थान से सम्बद्ध संस्थाओं में प्रथमा से आचार्य तक शिक्षण का प्रबन्ध किया जाता है। विद्यालय स्तर पर संस्थान अंग्रेजी, हिन्दी तथा अन्य आधुनिक विषय जैसे इतिहास, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, गृहविज्ञान और गणित आदि के लिए सी.बी.एस.ई. के पाठ्यक्रमों का अनुसरण करता है। शास्त्री-स्तर पर हिन्दी और अंग्रेजी जैसे आधुनिक विषयों के लिए सामान्यतया दिल्ली विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों का अनुसरण किया जाता है।

स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा संचालित और संस्थान से सम्बद्ध संस्कृत संस्थाएँ भी उसी पाठ्यक्रम के साथ शिक्षण प्रदान करती हैं। सभी परिसरों में संस्कृत शिक्षा की आधुनिक प्रणाली के छात्रों को परम्परागत प्रणाली में सम्मिलित होने की सुविधा देने हेतु प्राक्शास्त्री नामक + 2 स्तर का द्विवर्षीय मध्यवर्ती पाठ्यक्रम है।

1.5 शिक्षक-प्रशिक्षण :

परिसरों में शिक्षण अभ्यास पर बल देते हुए एक शैक्षिक वर्ष हेतु शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का संचालन किया जाता है, जिसमें बी.एड के समकक्ष शिक्षा-शास्त्री की उपाधि प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त, एम. एड. के समकक्ष शिक्षा आचार्य उपाधि पाठ्यक्रम का संचालन जयपुर तथा जम्मू परिसरों में किया जाता है।

1.6 शोध :

संस्थान के सभी परिसरों में, छात्र विद्यावारिधि उपाधि के लिये पंजीकृत है जो पी.एच.डी. के तुल्य हैं।

गंगानाथ झा परिसर, इलाहाबाद, कुछ चयनित शाखाओं में मात्र शोध-गतिविधियों हेतु पूर्ण समर्पित है। सभी परिसरों में शोध हेतु छात्रों का पंजीकरण होता है और इसके सफल समापन पर उन्हें पी-एच.डी. के समकक्ष विद्यावारिधि की उपाधि प्रदान की जाती है।

1.7 आन्तरिक छात्रवृत्ति :

छात्रों को संस्कृत शिक्षण के साथ-साथ संस्कृत की विविध विधाओं में गहन अध्ययन हेतु आकर्षित तथा प्रोत्साहित करने की दृष्टि से संस्थान अपने परिसरों में सभी पाठ्यक्रमों तथा शोध के लिए योग्य छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान करता है। प्राक्शास्त्री, शास्त्री, शिक्षा-शास्त्री तथा आचार्य पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों हेतु परिवर्धित छात्रवृत्ति क्रम से 300 रुपये, 400 रुपये, 400 रुपये तथा 500 रुपये प्रतिमास है। विद्यावारिधि उपाधि के प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील शोध में जुटे विद्वानों को 3000 रुपये की छात्रवृत्ति प्रतिमास दी जाती है, साथ ही दो वर्षों के लिए 2000 रुपये वार्षिक निरंतरता अनुदान भी दिया जाता है। निम्नलिखित तालिका वर्ष 2009-10 में छात्रों को दी गई छात्रवृत्तियों का विवरण दर्शाती है :

		कक्षा									
		प्राक् शास्त्री		शास्त्री			शिक्षा शास्त्री	आचार्य		विद्या-वारिधि	शिक्षा आचार्य
क्रम.सं.	परिसर	I	II	I	II	III	-	I	II		
1.	श्री गंगानाथ झा परिसर इलाहाबाद	–	–	–	–	–	–	–	–	06	–
2.	श्री सदाशिव परिसर पुरी	30	30	50	35	45	50	185	107	05	–
3.	श्री रणवीर परिसर जम्मु	13	13	37	14	10	45	16	16	–	09
4.	गुरुवायूर परिसर त्रिचुर	31	07	37	27	29	04	27	21	04	–
5.	जयपुर परिसर जयपुर	27	22	60	60	60	50	35	44	03	13
6.	लखनऊ परिसर लखनऊ	05	07	18	14	14	50	28	15	03	–
7.	श्री राजीव गांधी परिसर शृंगेरी	37	24	34	27	24	50	42	24	03	–
8.	गरली परिसर गरली	21	35	68	60	60	–	24	27	04	–
9.	भोपाल परिसर भोपाल	10	05	14	19	12	50	20	09	03	–
10.	के.जे.सौमैया सं. वि. परिसर मुम्बई	02	–	07	04	07	37	04	01	01	–
योग		**176**	**143**	**325**	**260**	**256**	**336**	**381**	**264**	**32**	**22**
							कुल योग - 2195				

छात्रवृत्ति प्रदान किये गए छात्रों, छात्राओं तथा अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ावर्ग के छात्रों की कक्षावार संख्या निम्नलिखित है–

कक्षा	योग	पुरुष	स्त्री	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	अन्य पिछड़ा वर्ग
प्राक् शास्त्री-I	176	114	62	21	11	41
प्राक् शास्त्री-II	143	104	39	11	03	19
शास्त्री-I	325	201	124	28	15	62
शास्त्री-II	260	175	85	19	09	56
शास्त्री-III	256	144	112	22	05	33

कक्षा	कुल योग	पुरुष	स्त्री	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	अन्य पिछड़ा वर्ग
शिक्षा शास्त्री	336	243	93	32	13	37
आचार्य-I	381	279	102	14	05	77
आचार्य-II	264	154	110	11	05	46
शिक्षा आचार्य	22	20	02	01	-	01
विद्यावारिधि	32	21	11	-	-	07
कुल योग	**2195**	**1455**	**740**	**159**	**66**	**379**

1.8 प्रकाशन :

शोध पत्रिकाएँ –

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान 'संस्कृत विमर्श:' और 'गंगानाथ झा परिसर, इलाहाबाद पत्रिका' नामक दो शोध पत्रिकाएँ प्रकाशित करता है। जबकि पहली पत्रिका संस्थान के मुख्यालय द्वारा प्रकाशित होती है, दूसरी गंगानाथ झा परिसर, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित की जाती है। इनके अतिरिक्त, परिसरों से वार्षिक साहित्यिक पत्रिकाएं भी प्रकाशित की जाती हैं।

संस्थान एवं परिसरों द्वारा विद्वतापूर्ण प्रकाशनों, मूल पाठों एवं दुर्लभ पाडुंलिपियों का प्रकाशन किया गया है। संस्थान ने प्रतिवेदित वर्ष में अपने प्रकाशन कार्यक्रम तथा संस्कृत वाङ्मय सृजन योजना के अन्तर्गत 36 पुस्तकों को प्रकाशित किया है।।

'संस्कृत वार्ता' एक तिमाही समाचार बुलेटिन का भी नियमित रूप से प्रकाशन किया जा रहा है।

1.9 यू.जी.सी. द्वारा पुनरीक्षण

मानित विश्वविद्यालयों की पुनरीक्षण योजना के अन्तर्गत के. वि. आ. (यू.जी.सी.) ने संस्थान के मुख्यालय एवं संस्थान के सभी परिसरों का निरीक्षण किया है। संस्थान द्वारा शौक्षणिक स्तर को बनाए रखने की भूमिका को सराहा है और आगे मानित विश्वविद्यालय की स्थिति की संस्तुति की।

कुलपति के विषय में

प्रो॰ राधावल्लभ त्रिपाठी, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) में 14 अगस्त, 2008 से कुलपति के पद पर सुशोभित हैं। आपके सफल नेतृत्व में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान संस्कृत तथा पालि एवं प्राकृत भाषाओं के चहुँमुखी विकास के लिए महनीय योगदान दे रहा है। अपने उल्लेखनीय कार्यों के फलस्वरूप आपको देश के वरिष्ठतम आचार्यों में सम्मिलित कर समादृत किया जा चुका है। आप विगत 38 वर्षों से उदयपुर तथा सागर स्थित विश्वविद्यालयों में शिक्षण कार्य में रहे हैं- जिसमें हरिसिंह गौड़ विश्वविद्यालय, सागर में 25 वर्षों से अधिक समय तक आप संस्कृत विभागाध्यक्ष रहे। साथ ही इसी विश्वविद्यालय में दो सत्रों तक आप कला संकायाध्यक्ष भी रहे। वरिष्ठतम आचार्य होने के कारण आपने 6 माह तक कुलपति पद को भी अलङ्कृत किया। इसके अतिरिक्त मध्य प्रदेश के महामहिम राज्यपाल द्वारा आपको दो बार कुलपति के पद पर अस्थायी काल के लिए पदासीन किया गया।

अपने अनुकरणीय एवं उल्लेखनीय शैक्षणिक कीर्तिमान के फलस्वरूप आप नाट्यशास्त्र तथा साहित्यशास्त्र में अपने मौलिक एवं अमूल्य योगदान के कारण बहुशः अभिनन्दित हुए हैं। आपकी 115 पुस्तकें, 183 शोध पत्र एवं विवेचनात्मक निबन्ध तथा 30 से अधिक संस्कृत नाटकों के अनुवाद एवं कुछ गौरव ग्रन्थ संस्कृत से हिन्दी में प्रकाशित हो चुके हैं। अपने बहुमूल्य एवं उपयोगी सृजनात्मक लेखन के कारण आप प्राच्य विद्या की विभिन्न शोध पत्रिकाओं द्वारा समादृत हैं। साथ ही अनेक विश्वविद्यालयों में आपकी इन कृतियों पर शोध छात्र पीएच.डी. (विद्यावारिधि) की उपाधि से समलङ्कृत हो चुके हैं और आगे भी निरन्तर शोध कार्य कर रहे हैं। आपके वैदुष्यपूर्ण सारस्वत जीवन एवं कृतियों को रेखांकित करते हुए प्रतिष्ठित त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'ज्ञानयनी' ने अपना एक विशेष अंक प्रकाशित कर अपने समर्पण भाव को अर्पित किया है।

आपको उल्लेखनीय साहित्यिक योगदान के लिए अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों एवं सम्मान पत्रों से विभूषित किया जा चुका है जिनमें संस्कृत काव्य के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा 'नाट्यशास्त्रविश्वकोश' (चार खण्डों में) के लिए के.के. बिड़ला ट्रस्ट का शंकर पुरस्कार विशेष उल्लेखनीय हैं।

सम्प्रति आपको महाराष्ट्र के महामहिम राज्यपाल द्वारा संस्कृत के लिए कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, नागपुर के 'आजीवन-उपलब्धि पुरस्कार' तथा केन्द्रीय राज्यमंत्री, मानवसंसाधन विकास मंत्रालय द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के 'वेदव्यास' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

3. 2009-2010 के दौरान प्रमुख उपलब्धियाँ

मानित विश्वविद्यालय के रूप में क्रियाकलाप

- यू.जी.सी. के निर्देशक सिद्धान्तों के अनुसार शोध हेतु परिशोधित नियम अंगीकृत।
- आगामी सत्र से आरम्भ करने हेतु रुचि आधारित ऋण प्रणाली, आन्तरिक मूल्यांकन व सत्र पद्धति के नियम एवं पाठ्यक्रम स्वीकृत। नए पाठ्यक्रमों की रूपरेखा बनाई गई है।
- 11 नये प्रकाशन प्रकाशित किये गये।
- कौमुदीमहोत्सव में 11 संस्कृत नाटकों का मंचन हुआ।
- 9 विशिष्ट स्मारक व्याख्यान आयोजित किये गये।
- अगरतला, त्रिपुरा में अखिल भारतीय संस्कृत रंगप्रयोग महोत्सव में विख्यात नाट्यदलों ने संस्कृत नाटक प्रदर्शित किये।
- संस्कृत विमर्श: (नूतन माला) शोध पत्रिका के द्वितीय एवं तृतीय खंड का विमोचन हुआ।
- सम्बन्धित अध्ययन बोर्डों की बैठकों के आयोजन से सभी विषयों के पाठ्यक्रमों को संशोधित किया गया।
- 14881 छात्र विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकित किये गये।
- 52 छात्रों को विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) की उपाधि प्रदान की गई।
- 3792 छात्रों का संस्थान परिसरों में प्रवेश हुआ।

मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत क्रियाकलाप

- 17280 छात्रों को शोध व उच्चमाध्यमिकोत्तर योजना के अन्तर्गत छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गईं।
- संस्कृत ग्रन्थ क्रय योजना के अधीन 133 शीर्षकों का थोक क्रय हुआ।
- संस्कृत वाङ्मय सृजन योजना के अन्तर्गत प्रकाशकों/विद्वानों ने 25 प्रकाशन प्रकाशित किये।
- स्वैच्छिक संस्कृत संस्था अनुदान योजना के अन्तर्गत 746 संस्थाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की गई।
- 1439 शिक्षकों को स्वैच्छिक संस्कृत संस्था अनुदान योजना के अन्तर्गत समेकित वेतन प्रदान किया गया।
- 8543 छात्रों को स्वैच्छिक संस्कृत संस्था अनुदान योजना के अधीन छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गईं।
- आधुनिक शिक्षकों हेतु 90 संस्थाओं/संस्कृत पाठशालाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की गई।
- आधुनिक संस्कृत पाठशालाओं की विकास योजना के अन्तर्गत 159 शिक्षकों को समेकित वेतन प्रदान किया गया।
- अखिल भारतीय संस्कृत वाक्स्पर्धा में 2009-10 शास्त्र शलाका परीक्षा का आयोजन किया गया।
- 34598 छात्रों को अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत मौखिक (स्पोकन) संस्कृत में प्रशिक्षित किया गया।

4. 2009-10 के दौरान राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की अनुपम उपलब्धियाँ

1. विख्यात अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों द्वारा व्याख्यान
   1. प्रोफेसर साइमन ब्रॉडबेक - इग्लेंड
   2. प्रोफेसर शेल्डन पोलोक - अमेरिका
   3. डॉ. करण सिंह - भारत
2. संस्कृत साहित्य का इलेक्ट्रोनिक रूप में संग्रह तैयार कर ई-टेक्स्ट के प्रारूप एवं डिजिटाइजेशन के लिए स्थापित एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था एस.ए.आर.आई.टी. के साथ समझौते ज्ञापन पर हस्ताक्षर।
3. 22-24 सितंबर, 2009 को विज्ञान भवन में "बौद्ध धर्म का सार्वभौमिक सन्देश", विशेषकर पालि एवं प्राकृत साहित्य के सन्दर्भ में अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार।
4. 25-27, जुलाई 2009 को प्राकृत साहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी जयपुर में आयोजित की गई।
5. 'पूर्वात्तर राज्यों का संस्कृत साहित्य में योगदान' पर 9-11 अक्टूबर, 2009 को गंगटोक में सम्मेलन।
6. लखनऊ परिसर मे पालि भाषा के अध्ययन हेतु केन्द्र की स्थापना।
7. जयपुर परिसर में प्राकृत भाषा के अध्ययन हेतु केन्द्र की स्थापना।
8. संस्कृत में शब्दकल्पद्रुम विश्वकोशीय शब्दकोश के सॉफ्टवेयर को पूर्ण कर सी. डी. के रूप में प्रमोचन (लाँन्च) किया।
9. संस्कृत में दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं की स्थापना के लिए प्रारम्भिक कदम उठाए।
10. 1-5 सितंबर, 2009 को क्योटो में आयोजित विश्व संस्कृत सम्मेलन में दो आयोजनों, 'शास्त्रचर्चा एवं कवि सम्मेलन' को प्रायोजित किया। इस सम्मेलन मे भाग लेने वाले संस्कृत के 19 कवियों एवं विद्वानों के शिष्टमंडल की सुव्यवस्था की। संस्कृत में एक यक्षगान का प्रदर्शन सम्मेलन में आयोजित किया गया।

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के संकाय द्वारा प्राप्त सम्मान एवं पुरस्कार

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के निम्नलिखित संकाय सदस्य राष्ट्रपति सम्मान-पत्र के लिये चयनित हुये-

1. डॉ. विश्वमूर्ति शास्त्री, प्राचार्य, जम्मू परिसर।
2. डॉ. मदन मोहन शर्मा, जयपुर (राजस्थान)।

5. संरचना एवं क्रियाकलाप

मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत-सरकार, संस्थान के पदेन अध्यक्ष होते हैं। वर्ष के दौरान, **माननीय श्री कपिल सिब्बल जी, मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत-सरकार, संस्थान के कुलाध्यक्ष रहे।** कुलपति प्रधान कार्यपालक अधिकारी हैं। वे संस्थान के मामलों पर सामान्य पर्यवेक्षण तथा नियन्त्रण रखते हैं, नीतियों और कार्यक्रमों का निष्पादन करते हैं तथा संस्थान के सभी प्राधिकारियों के निर्णयों को लागू करते हैं। इस वर्ष के दौरान प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी कुलपति के पद पर आसीन रहे। कुलाध्यक्ष के अतिरिक्त संस्थान के निम्नलिखित स्वीकृत प्राधिकारी हैं:

1. **प्रबन्ध मण्डल**–संस्थान में प्रबन्धन का प्रमुख अंग है। नीति-निर्णयों तथा निर्णयों के कार्यन्वयन, प्रतिपादन हेतु अधिकार-सम्पन्न है।
2. **विद्वत् परिषद्**-शिक्षा, शिक्षण, प्रशिक्षण, परीक्षा और शोध कार्यक्रमों के मानदण्डों के अनुरक्षण हेतु उत्तरदायी प्रधान शैक्षिक निकाय है।
3. **योजना तथा परिवीक्षण परिषद्**-विकास कार्यक्रमों के परिवीक्षण हेतु उत्तरदायी प्रमुख योजना निकाय है।
4. **वित्त समिति**-प्रबन्ध मण्डल के समक्ष वार्षिक लेखा व वित्तीय प्राक्कलन रखने, कुल व्यय की सीमाएँ निर्धारित करने और हर प्रकार के पदों के सृजन की संस्तुति हेतु उत्तरदायी प्रमुख वित्त निकाय है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त, संस्थान में अन्य निकाय भी संघटित हैं, जो अपने-अपने कार्य के स्वरूप के आधार पर संस्तुतियाँ तैयार करते हैं, यथा–सहायता अनुदान समिति, प्रकाशन समिति, छात्रवृत्ति चयन समिति, शोध मण्डल तथा परीक्षा मण्डल।

वर्ष 2009-10 में संस्थान के प्राधिकारियों/निकायों द्वारा आयोजित बैठकों की संख्या दर्शाने वाली तालिका नीचे दी जा रही है:

मण्डल/परिषद्/समिति	बैठकों की संख्या
प्रबन्ध मण्डल	2
वित्त समिति	3
शैक्षिक परिषद्	1
सहायता अनुदान समिति	2
परीक्षा मण्डल	–
शोध मण्डल	2
छात्रवृत्ति चयन समिति	1
प्रकाशन समिति	2
योजना तथा पर्यवीक्षण मण्डल	–

प्रबन्ध मण्डल तथा वित्त समिति का संघटन क्रमशः संलग्नक 'क' व 'ख' में दिया गया है।

अपने समृद्ध पुस्तकालय के अतिरिक्त राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान निम्नलिखित प्रमुख अनुभागों के माध्यम से कार्य करता है–

1. शैक्षणिक अनुभाग
2. शोध एवं प्रकाशन अनुभाग
3. पत्राचार पाठ्यक्रम तथा अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण अनुभाग
4. परीक्षा अनुभाग
5. प्रशासन अनुभाग
6. वित्त अनुभाग
7. योजना अनुभाग

1. शैक्षणिक अनुभाग

यह एकक शैक्षिक कार्यों के निष्पादन हेतु मानक-निर्धारण, शैक्षिक-कार्यक्रमों के कैलेंडर निर्माण तथा विविध पाठ्यक्रमों हेतु पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार करने के लिए प्रमुखतया उत्तरदायी है।

2. शोध तथा प्रकाशन अनुभाग

यह एकक संस्थान की विभिन्न योजनाओं के कार्यान्वयन तथा अंगीभूत परिसरों के शोध तथा प्रकाशन गतिविधियों के समन्वयन, शोध तथा प्रकाशन कार्यक्रमों और संस्थान की परियोजनाओं के समन्वय से सम्बद्ध है। यह संस्कृत साहित्य के निर्माण हेतु वित्तीय सहायता तथा पुस्तकों के थोक क्रय जैसी योजनाओं से भी सम्बद्ध है।

3. पत्राचार पाठ्यक्रम तथा अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण अनुभाग

यह एकक पत्राचार पाठ्यक्रमों की व्यवस्था हेतु उत्तरदायी है। ये पाठ्यक्रम दो स्तरों पर दिये जाते हैं। यह अनुभाग अखिल भारत में अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्रों का भी प्रबन्ध करता है तथा अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण हेतु पाठ्यसामग्री का निर्माण करता है।

पत्राचार पाठ्यक्रम निम्नलिखित प्रदान करता है :

क. संस्कृत के प्रथम वर्ष में प्रारम्भिक पाठ्यक्रम (हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम)

ख. संस्कृत के द्वितीय वर्ष में प्रारम्भिक पाठ्यक्रम (हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम)

स्वाध्याय के आरम्भ स्तर से प्रारंभ कर अनौपचारिक संस्कृत शिक्षा अनुभाग पञ्चस्तरीय पाठ्य-सामग्री प्रस्तुत करता है। संस्कृत अध्ययन से प्रेम करने वाला समाज का कोई भी वर्ग इस कार्यक्रम से लाभान्वित हो सकता है। इसके अतिरिक्त इस खण्ड ने प्रशिक्षक-प्रशिक्षण, संस्कृत स्वाध्याय योजना एवं दूरस्थ शिक्षा के कार्यक्रमों को सम्भाला।

4. परीक्षा अनुभाग :

परीक्षा अनुभाग निम्नलिखित पाठ्यक्रमों हेतु वार्षिक और पूरक परीक्षाओं का आयोजन करता है :

प्रथमा	(कक्षा आठ)
पूर्वमध्यमा	(कक्षा दस)
उत्तरमध्यमा	(कक्षा बारह)
प्राक्शास्त्री	(कक्षा बारह)
शास्त्री	(बी.ए.)
शिक्षाशास्त्री	(बी.एड.)
आचार्य	(एम.ए.)
शिक्षाचार्य	(एम.एड.)

परीक्षा अनुभाग के माध्यम से संस्थान द्वारा शिक्षा-शास्त्री पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु प्रतिवर्ष एक प्रवेश प्रतियोगिता परीक्षा का संचालन किया जाता है। इसे पूर्व-शिक्षाशास्त्री परीक्षा (पी.एस.एस.टी.) के नाम से जाना जाता है।

विद्यावारिधि (पी. एच. डी.) कार्यक्रम में पंजीकरण हेतु पूर्व-शोध परीक्षा ली जाती है।

परिसरों तथा सम्बद्ध संस्थाओं के छात्रों को शोध उपाधि विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) से पुरस्कृत करने हेतु यह शोध-प्रबन्ध का मूल्यांकन तथा मौखिक परीक्षा की भी व्यवस्था करता है।

5. प्रशासन अनुभाग :

प्रशासन अनुभाग संस्थान और उसके अंगीभूत परिसरों के सामान्य प्रशासनिक कार्यों की देखभाल करता है। यह नियुक्तियों, पदस्थापनों, स्थानान्तरणों तथा अन्य स्थापना सम्बन्धी कार्यों की योजना भी बनाता है। साथ ही यह परिसरों के प्रशासन पर भी पूर्ण रूप से नियन्त्रण रखता है।

6. वित्त अनुभाग :

यह अनुभाग बजट का विवरण, अनुदान का वितरण, वित्तीय व्यवस्था तथा वार्षिक लेखा-जोखा आदि तैयार करता है। यह भविष्य निधियों का भी प्रबन्धन करता है और छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्तियों के संवितरण की व्यवस्था करता है।

7. योजना अनुभाग :

यह अनुभाग स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करना, शास्त्र चूड़ामणि विद्वानों की नियुक्ति, विभिन्न संस्कृत पाठशालाओं/विद्यालयों/स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों/विश्वविद्यालयों में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के आयोजन हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करना, संस्कृत विकास योजना के अन्तर्गत परम्परागत एवं राजकीय विद्यालयों में संस्कृत व आधुनिक विषयों के शिक्षक उपलब्ध कराने हेतु तथा विश्वविद्यालयों/एन.जी. ओ. को विभिन्न परियोजनाओं हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करना, भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित विद्वानों को आर्थिक अनुदान देना, आदर्श संस्कृत महाविद्यालयों/शोध संस्थानों और संस्कृत शब्दकोश परियोजना को वित्तीय सहायता प्रदान करना जैसी विभिन्न योजनाओं के उचित कार्यान्वयन हेतु उत्तरदायी है। यह अनुभाग संस्कृत के पारम्परिक छात्रों के लिए अखिल भारतीय वाक्स्पर्धा के आयोजन हेतु भी उत्तरदायी है।

8. परिसर :

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) द्वारा देश के विभिन्न भागों में निम्नलिखित परिसरों का संचालन किया जा रहा है–

क्रम सं.	परिसरों के नाम	स्थान
1.	श्री गंगानाथ झा परिसर	इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश
2.	श्री सदाशिव परिसर	पुरी, उड़ीसा
3.	श्री रणवीर परिसर	जम्मू, जम्मू और कश्मीर
4.	गुरुवायूर परिसर	त्रिचूर, केरल
5.	जयपुर परिसर	जयपुर, राजस्थान
6.	लखनऊ परिसर	लखनऊ, उत्तरप्रदेश
7.	श्री राजीव गांधी परिसर	शृंगेरी, कर्नाटक
8.	गरली परिसर	गरली, हिमाचलप्रदेश
9.	भोपाल परिसर	भोपाल, मध्यप्रदेश
10.	के.जे. सौमैया सं. वि. परिसर	मुम्बई, महाराष्ट्र

इन सभी परिसरों में सभी उपस्करों सहित पुस्तकालय, प्रयोगशाला, छात्रकक्ष, स्टाफ क्वार्टर तथा छात्रावास उपलब्ध हैं। ये निम्नांकित पाठ्यक्रमों हेतु निर्देशन कार्य करते हैं। इलाहाबाद परिसर में केवल शोध कार्यक्रम का संचालन होता है–

क्रम सं.	पाठ्यक्रम	के समकक्ष
1.	उत्तरमध्यमा/प्राक्शास्त्री	सीनियर सेकेण्डरी
2.	शास्त्री	बी.ए.
3.	आचार्य	एम.ए.
4.	शिक्षाशास्त्री	बी.एड.
5.	शिक्षा आचार्य	एम.एड.
6.	विद्यावारिधि	पी-एच.डी.

बी.एड. कार्यक्रम का संचालन पुरी, जम्मू, जयपुर, लखनऊ, शृंगेरी, भोपाल, गुरुवायूर और मुम्बई परिसरों में किया जाता है। जयपुर एवं जम्मू परिसर में शिक्षा आचार्य कार्यक्रम संचालित किया जाता है। शैक्षिक सत्र का प्रारम्भ प्रतिवर्ष जुलाई में, छात्रों के विभिन्न कक्षाओं में प्रवेश के साथ होता है। निम्नलिखित तालिका से वर्ष 2009-10 में परिसरों में प्रति-कक्षा प्रवेश का पता चलता है–

		कक्षा									
		प्राक् शास्त्री		शास्त्री			शिक्षा शास्त्री	आचार्य		विद्या-वारिधि	शिक्षा आचार्य
क्रम.सं.	परिसर	I	II	I	II	III	-	I	II	-	-
1.	श्री गंगानाथ झा परिसर इलाहाबाद	–	–	–	–	–	–	–	–	9	–
2.	श्री सदाशिव परिसर पुरी	66	42	69	51	53	98	185	132	9	–
3.	श्री रणवीर परिसर जम्मू	55	27	76	37	33	94	18	20	–	18
4.	गुरुवायूर परिसर त्रिचूर	48	19	61	52	37	99	34	33	04	–
5.	जयपुर परिसर जयपुर	71	29	206	112	104	100	135	72	110	25
6.	लखनऊ परिसर लखनऊ	09	09	32	15	18	93	71	21	06	–
7.	श्री राजीव गांधी परिसर शृंगेरी	45	25	42	29	24	99	46	25	04	–
8.	गरली परिसर गरली	21	35	68	68	67	–	29	28	09	–
9.	भोपाल परिसर भोपाल	30	13	28	42	20	93	32	21	16	–
10.	के.जे.सौमैया सं. वि. परिसर मुम्बई	04	–	09	04	07	80	05	05	02	–
	योग	349	199	591	410	363	756	555	357	169	43
							कुल योग - 3792				

विभिन्न कक्षाओं में प्रविष्ट छात्रों, छात्राओं तथा अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की संख्या निम्नलिखित हैं–

कक्षा	योग	पुरुष	स्त्री	अनु. जाति	अनु. जनजाति	अन्य पिछड़ा वर्ग
प्राक् शास्त्री-I	349	269	80	23	11	43
प्राक् शास्त्री-II	199	147	52	18	04	13
शास्त्री-I	591	438	153	45	20	107
शास्त्री-II	410	287	123	30	13	68
शास्त्री-III	363	262	101	30	10	52
शिक्षा शास्त्री	756	598	158	50	23	82
आचार्य-I	555	202	153	28	11	108
आचार्य-II	357	283	74	22	08	48
शिक्षा आचार्य	43	41	02	01	–	03
विद्यावारिधि	169	134	35	06	06	14
कुल योग	**3792**	**2861**	**931**	**253**	**106**	**538**

परिसरों के छात्रों ने 2009-10 की वार्षिक परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन किया। निम्नांकित ग्राफ़ परिणाम की प्रतिशतता को प्रति कक्षानुसार दर्शाता है–

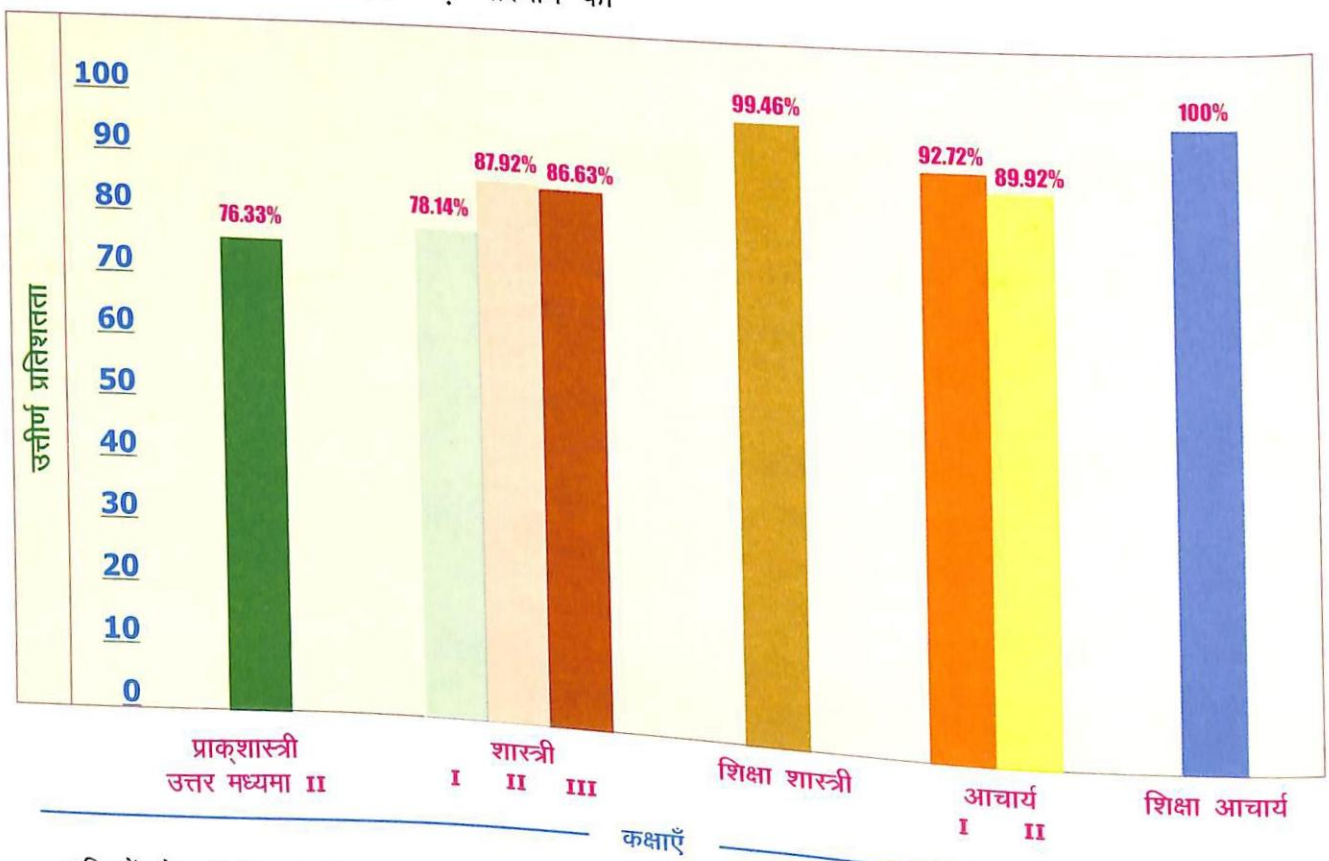

परिसरों में प्रशिक्षित एवं कुशल प्राध्यापक-वर्ग हैं। तथापि जिन विषयों में पूर्णकालिक शिक्षक उपलब्ध नहीं थे, उनमें अंशकालिक शिक्षक भी रखे गए। परिसर-वार संकाय-सदस्यों का विवरण संलग्नक-'ग' में दिया गया है।

6. अनुभाग

6.1 शैक्षणिक अनुभाग

इस अनुभाग के महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व हैं :–

संस्थान के शैक्षिक क्रियाकलापों को सुव्यवस्थित करना और विभिन्न कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रमों का निर्माण करना।

प्रथमा से आचार्य तक के विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रम बनाने के लिए विभिन्न विषयों की समितियों का गठन करना।

विद्वत् परिषद् की बैठक व अध्ययन परिषद् की बैठक के आयोजन का समन्वय करना और अनुवर्ती कार्रवाई करना।

रिपोर्ट वर्ष के दौरान सितबंर 2009 में शैक्षणिक परिषद की एक बैठक का आयोजन हुआ था। इस बैठक के अतिरिक्त शैक्षणिक परिषद की उप समिति की भी बैठक जून 2009 में आयोजित हुई।

इस वर्ष के दौरान संस्थान के विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्य विवरण का संशोधन एवं मुद्रण किया गया।

रिपोर्ट वर्ष के दौरान शैक्षणिक विभाग को संस्थाओं को संबंधन देने के कार्य की जिम्मेवारी सौंपी गई। संस्थान का प्रारंभ कुछ केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों से हुआ था परन्तु बाद में कुछ शिक्षण संस्थाओं का भी संबंधन किया गया। इन निजि शिक्षण संस्थाओं को केवल सामान्य पाठ्यक्रमों, प्रथमा से आचार्य विद्यार्थी के लिये सम्बद्धता प्रदान की। गत वर्षों की अपेक्षा मानित संस्थाओं की संख्या में वृद्धि हुई है। इस वर्ष के दौरान संस्थान से संबद्ध मानित संस्थानों की सूची इस रिपोर्ट के संलग्नक 'ङ' मे दी गई है।

संस्थान की परीक्षाओं को मान्यता प्रदान करने वाली सरकारों एवं विश्वविद्यालयों की सूची संलग्नक "च" एवं "छ" में डाली गयी है।

6.2 शोध एवं प्रकाशन अनुभाग

इस अनुभाग के महत्त्वपूर्ण दायित्व हैं : मुख्यालय और परिसरों के शोध और प्रकाशन कार्यों में सामंजस्य स्थापित करना तथा मन्त्रालय द्वारा अन्तरित योजनाओं को कार्यान्वित करना। ये निम्नलिखित हैं–

1. संस्कृत समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं के साथ संस्कृत साहित्य का सृजन।
2. संस्कृत-ग्रन्थों का क्रय और अप्राप्य तथा दुर्लभ ग्रन्थों का पुनर्मुद्रण।
3. पाण्डुलिपियों का क्रय और प्रकाशन।

यह अनुभाग अनुदान समिति की बैठकों का समन्वयन भी करता है।

वर्ष 2009-2010 में संस्थान की अनुदान समिति की बैठक 11 अगस्त, 2009 और 29 जनवरी, 2010 को हुई जिसमें विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत कई महत्त्वपूर्ण प्रस्तावों का अनुमोदन किया गया। इन योजनाओं के सम्पादन हेतु रु. 82,60,667/- जारी किए गए जिनसे कि उनका सम्पादन-व्यय पूरा किया जा सके।

संस्कृत वाङ्मय सृजन योजना के अन्तर्गत संस्थान

की वित्तीय सहायता से विभिन्न सम्पादकों ने 25 ग्रन्थों का सम्पादन किया।

इसके अतिरिक्त 17 संस्कृत पत्रिकाओं को भी वार्षिक प्रकाशन अनुदान प्रदान किया गया।

इस वर्ष ग्रन्थ क्रय योजना का विवरण निम्नलिखित है–

आवेदकों की संख्या	81
प्रस्तुत किए गए शीर्षकों की संख्या	191
कुल क्रय किए गए शीर्षकों की संख्या	133

संस्थान ने अपनी प्रकाशन योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाशिक किये:-

1. भृतहरि नीतिशतकम्
2. माडर्न संस्कृत राइटिंगस इन कर्नाटक
3. बुद्धोदय काव्यम्
4. आत्मतत्व विवेक
5. मूलशङ्कर नाट्यत्रयी
6. राधावल्लभीयमत् प्रकाशकं ब्राह्मसूत्रभाष्यम्
7. मञ्जुनाथ ग्रन्थावली

   प्रथम-साहित्यवैभवम्

   द्वितीय-जयपुरवैभवम्
8. बौद्धपरम्पराया: वैश्विक सन्देश:
9. संस्कृत विमर्श:

   द्वितीय अंक, तृतीय अंक
10. विद्यालय प्रशासन संघटन
11. धम्मपद

इलाहाबाद परिसर को 11 ग्रन्थों के मुद्रण करने की स्वीकृती तथा राजेश्वरी विद्या संस्था को 05 ग्रन्थ के मुद्रण की स्वीकृति प्रदान की गई।

इसके अतिरिक्त, संस्थान डायरी तथा संस्कृत वार्ता बुलेटिन भी प्रकाशित किये गए।

संस्थान ने अपनी प्रकाशन समिति के माध्यम से 17.6.2009 तथा 26.11.2009 को अन्य संलेखो के साथ साथ निम्नलिखित प्रमुख संलेखों के प्रकाशन की भी अनुमति दी:-

1. भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ग्रन्थावली
2. नरकासुरविजयव्यायोग
3. अर्थशास्त्र एवं प्रबन्धन के लिये संस्कृत में पाठ्य सामग्री
4. अरण्यक् शिक्षा
5. ऋग्वेददूषणो-द्धार
6. उपनिषद् रहस्य
7. शाब्दिकभरणम्
8. प्रबुद्धभारतम्
9. एन्थोलोजी आफ आर्याज़
10. लहरी पंचकम्
11. पं0 रामजी ठाकुर विरचित कविता

इन संलेखों के प्रकाशन का कार्य प्रगति पर है।

संस्थान के नव-गठित केन्द्रीय शोध मंडल की बैठक 01.5.2009 तथा 29.12.2009 को हुई। विद्यावारिधि शोध उपाधि पाठ्यक्रम हेतु विभिन्न परिसरों में पंजीकरण के हेतु 174 शोध छात्रों के पंजीकरण की स्वीकृति प्रदान की गई। विद्यावारिधि में तीन कनिष्ठ शोध अध्येताओं का पंजीकरण किया गया है।

शोध एवं उच्चमाध्यमिकोत्तर छात्रवृत्तियाँ

यह अनुभाग देश भर में छात्रवृत्तियों का संवितरण करता है। छात्रवृत्तियाँ दो प्रकार की हैं–

1. पारम्परिक पाठशालाओं के छात्रों हेतु शोध छात्रवृत्तियाँ;

2. इण्टर, बी.ए., एम.ए. और पी-एच.डी. तथा समकक्ष पारम्परिक पाठ्यक्रम जारी रखने हेतु उच्च-माध्यमिकोत्तर छात्रवृत्तियाँ।

वर्ष 2009-2010 में संस्कृत पाठशालाओं/ महाविद्यालयों/ उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों/ महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान करने हेतु दी गई वित्तीय सहायता का विवरण इस प्रकार है–

कक्षा	छात्र संख्या				छात्रों की	अपेक्षित
	(सामान्य)	(अनु.जा.)	(अनु.ज.जा.)	विकलांग	कुल संख्या/रु.	रु.
9वीं	4477	207	50	2	4736x2500	11840000
10वीं	2809	117	55	0	2981x2500	7452500
11वीं	1784	206	70	4	2064x3000	6192000
12वीं	1843	265	59	6	2173x3000	6519000
बी.ए.-I	1354	202	32	2	1590x4000	6360000
बी.ए.-II	556	81	6	1	644x4000	2576000
बी.ए.-III	440	53	4	1	498x4000	1992000
एम.ए.-I	110	23	2	2	137x5000	685000
एम.ए.-II	66	11	0	0	77x5000	385000
एम.पी.सी.-I	15	1	1	0	17x3000	51000
एम.पी.सी./12वीं	22	33	16	0	71x3000	213000
पीडीसी-I	30	0	0	0	30x3000	90000
पीडीसी-II	9	0	0	0	9x3000	27000
पीएच.डी.	24	1	0	2	27x20000	540000
पीयूसी-I	589	10	0	0	599x3000	1797000
पीयूसी-II	234	2	1	1	238x3000	714000
टीडीसी-I	25	0	0	0	25x4000	100000
टीडीसी-II	7	0	0	0	7x4000	28000
टीडीसी-III	10	0	0	0	10x4000	40000
आचार्य-I	47	3	1	0	51x5000	255000
आचार्य-II	25	6	0	1	32x5000	160000
कनिष्ठ शास्त्री-I/9वीं	4	0	0	0	4x2500	10000
कनिष्ठ शास्त्री-II/10वीं	1	0	0	0	1x2500	2500
कनिष्ठ उपाध्याय-I/9वीं	1	0	0	0	1x2500	2500
मध्यमा-I/9वीं	20	3	1	0	24x2500	60000
मध्यमा-II/10वीं	20	0	0	0	20x2500	50000
प्राक्शास्त्री - I/11वीं	19	4	0	0	23x3000	69000
प्राक्शास्त्री - II	22	3	0	0	25x3000	75000
पूर्व-मध्यमा-I/9वीं	71	1	1	0	73x2500	182500

कक्षा	छात्र संख्या (सामान्य)	(अनु.जा.)	(अनु.ज.जा.)	विकलांग	छात्रों की कुल संख्या/रु.	अपेक्षित रु.
पूर्व-मध्यमा-II/10वीं	42	17	3	0	62x2500	155000
शास्त्री-I	711	48	3	0	762x4000	3048000
शास्त्री-II	69	14	1	0	84x4000	336000
शास्त्री-III	64	11	2	0	77x4000	308000
उपशास्त्री-I/11वीं	6	0	0	0	6x3000	18000
उपशास्त्री-II/12वीं	16	0	0	0	16x3000	48000
उत्तरमध्यमा-I/11वीं	45	3	4	0	52x3000	156000
उत्तरमध्यमा-II/12वीं	31	1	0	0	32x3000	96000
वरिष्ठ उपाध्याय-I/11वीं	1	0	0	0	1x3000	3000
वरिष्ठ उपाध्याय-II/12वीं	0	1	0	0	1x3000	3000
कुल	**15619**	**1327**	**312**	**22**	**17280**	**52639000**

6.3 पत्राचार पाठ्यक्रम और अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण अनुभाग

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने वर्ष 2009-2010 के दौरान इस विभाग के माध्यम से निम्नलिखित योजनाएँ/कार्यक्रम संचालित किये :

1. अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण
2. संस्कृत स्वाध्याय योजना
3. प्रशिक्षण कार्यक्रम
   (i) प्रशिक्षक प्रशिक्षण वर्ग
   (ii) संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण वर्ग
4. दूरस्थ शिक्षा
5. पत्राचार पाठ्यक्रम

1. अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण कार्यक्रम

2009-2010 के मध्य, अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रथमा एवं द्वितीया दीक्षा के दो चक्रों का संचालन किया गया। देशभर के 1092 केन्द्रों में लगभग 34598 छात्रों ने कार्यक्रम में भाग लिया। ऐसे केन्द्रों की संख्या का राज्यवार विवरण निम्नलिखित रूप में हैं:

क्रम सं	राज्य	प्रथम चक्र	द्वितीय चक्र
1.	आन्ध्र प्रदेश	13	13
2.	बिहार+झारखण्ड	09	09
3.	दिल्ली	02	03
4.	गुजरात	23	20
5.	हरियाणा	14	08
6.	जम्मू एवं कश्मीर	07	03

7.	कर्नाटक	39	28
8.	केरल	07	04
9.	महाराष्ट्र+गोवा	02	–
10.	म.प्र.+छत्तीसगढ़	52	41
11.	उड़ीसा	96	69
12.	पंजाब	12	05
13.	हिमाचल प्रदेश	13	14
14.	राजस्थान	36	31
15.	उत्तराखंड	14	06
16.	उत्तर प्रदेश	112	105
17.	पश्चिम बंगाल	41	38
		02 अनुदान रहित	02 अनुदान रहित
18.	उत्तर पूर्व राज्य	103	94
	योग	**599**	**493**
	कुलयोग –	**1092**	

इन केन्द्रों के अध्येताओं ने बहुत उत्साह दिखाया। छात्रों, अध्यापकों, प्राध्यापकों, चिकित्सकों, अभियन्ताओं, बैंककर्मियों, उद्योगपतियों, अधिकारियों, वकीलों, वैज्ञानिकों, कृषकों और गृहिणियों आदि ने इस कार्यक्रम का लाभ उठाया।

परिणामस्वरूप, देशभर में अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्रों के खुलने से लोगों ने संस्कृत एवं भारत की सांस्कृतिक विरासत का ज्ञान अर्जित किया है। समाज के सभी वर्गों के लोगों ने संस्कृत सीखने में अति उत्साह दिखाया। विभिन्न केन्द्रों पर भव्य उद्घाटन तथा समापन समारोह आयोजित किए गए। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा तैयार की गई द्वितीया दीक्षा की पाठ्य-सामग्री विभिन्न केन्द्रों में संस्कृत शिक्षण का मुख्य आधार है। अध्येताओं ने इस पाठ्य-सामग्री को श्रेष्ठ माना है। द्वितीया दीक्षा की समाप्ति पर सहभागिता प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

इन अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्रों का संचालन न केवल देश के नगरों और महानगरों में किया गया, अपितु दूरवर्ती छोटे गाँवों और छोटे कस्बों, जम्मू व कश्मीर तथा उत्तर-पूर्व राज्यों के दुर्गम क्षेत्रों में भी किया गया। संस्कृत शिक्षकों को अति दूर के स्थानों से भी आना पड़ा। देश भर में अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्रों का संचालन विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों (डिग्री कॉलेजों), इण्टर कॉलेजों, उच्च और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों, कनिष्ठ उच्च विद्यालयों, पब्लिक स्कूलों, मदरसों और स्वैच्छिक संस्थाओं में किया गया। परिणाम अत्यन्त उत्साहवर्धक रहे।

इन केन्द्रों की सम्यक् क्रियाशीलता हेतु सम्बद्ध राज्यों से केन्द्रों, केन्द्र-संयोजकों और शिक्षकों के लिए प्रस्ताव प्राप्त होने पर, राज्यों में केन्द्रों, केन्द्र-संयोजकों और शिक्षकों को नामित किया गया। प्रसिद्ध/महत्त्वपूर्ण संस्थाओं से सीधे प्रस्ताव प्राप्त होने पर भी संस्थान द्वारा केन्द्रों हेतु संस्वीकृति प्रदान की गई।

राज्य-संयोजक (अनौ. संस्कृत शिक्षा)

क्र.सं.	राज्य	संयोजक का नाम एवं पता
1.	आन्ध्र प्रदेश	डॉ. दोर्बल प्रभाकर शर्मा, सेवा-निवृत्त प्रधानाचार्य, एस.वी.जे.वी. संस्कृत कलाशाला, म.नं. 10-12-12, कोव्वुर-534350, पश्चिम गोदावरी जिला (ए.पी.)।
2.	बिहार+झारखण्ड	डॉ. श्री प्रकाश पाण्डेय, प्रवक्ता, बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, क्वा. नं.-23, विश्वविद्यालय परिसर, मुजफ्फरपुर-1 (बिहार)
3.	दिल्ली	डॉ. हरि राम मिश्रा, सहायक प्रो. संस्कृत शिक्षण का विशेष केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-67.
4.	गुजरात	डॉ. बी.बी. रामप्रिय, दर्शनम् संस्कृत महाविद्यालय, श्री स्वामीनारायण गुरूकुल विश्वविद्यालय प्रतिष्ठानम्, एस जी वी पी सर्किल, ए जी हाईवे चारोडी, अहमदाबाद-3284818 (गुजरात).
5.	हरियाणा	डॉ. सुरेन्द्र मोहन मिश्रा, संस्कृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र-136119 (हरियाणा).
6.	हिमाचल प्रदेश व पंजाब	डॉ. भक्तवत्सल शर्मा, प्राचार्य, सनातन धर्म आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, डोहगी, जिला-ऊना, हिमाचल प्रदेश-174307.
7.	जम्मू एवं कश्मीर	प्रो. विश्वमूर्ति शास्त्री, प्राचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, ग्रा/पो. कोट भलवल, समीप सेन्ट्रल जेल, तहसील/जिला-जम्मू-181122.
8.	कर्नाटक	प्रो. ए.पी. सच्चिदानन्द, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, श्री राजीव गान्धी परिसर, श्रृंगेरी-577139, जिला-चिकमंगलूर, कर्नाटक।
9.	केरल	डॉ. सुब्रामण्यम् शर्मा, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय, गुरुवायूर परिसर, डाकघर-पुरनाट्टुकड़ा-680551, जिला त्रिचूर(केरल)
10.	महाराष्ट्र (विदर्भ)	प्रो. पंकज चान्दे, कुलपति, कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक, जिला-रामटेक नागपुर, महाराष्ट्र।
11.	महाराष्ट्र	प्रो. रविन्द्र अंबाद समुले, संस्कृत प्रगट अध्ययन केन्द्र पुनेविश्वविद्यालय, गणेश खिन्द रोड, पुणे-411037 (महाराष्ट्र).
12.	म.प्र.+छत्तीसगढ़	प्रो. पी.एन. शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, ई-7/62, अरेरा कालोनी, समीप सैन बोर्ड, भोपाल-462016 (म.प्र.)।
13.	उत्तर पूर्व राज्य	डॉ. दीपक कुमार शर्मा, प्रो. संस्कृत विभाग, गोहाटी विश्वविद्यालय, गोपीनाथ बारदोलोई नगर, गुवाहाटी-781014, असम.
14.	उड़ीसा	डॉ. सुकान्त कुमार सेनापति, रीडर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय, श्री सदाशिव परिसर, पुरी-752001 (उड़ीसा) - द्वितीय चक्र हेतु।
15.	पंजाब	डॉ. इन्द्रमोहन सिंह, संस्कृत विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला-14702 (पंजाब)

16.	राजस्थान	डॉ. पूर्ण चन्द्र उपाध्याय, संस्कृत विभागाध्यक्ष राजकीय बिरला महाविद्यालय, भवानी मंडी, झालवाड, राजस्थान-326502।
17.	तमिलनाडु	डॉ. आर. रामचन्द्रन्, संस्कृत विभाग, रामाकृष्ण मिशन, विवेकानन्द कॉलेज, मइलापुर, चेन्नई-110004
18.	उत्तराखण्ड	डॉ. बुद्धदेव शर्मा, सचिव, संस्कृत अकादमी, रानीपुर झाल, नेशनल हाईवे, हरिद्वार, उत्तराखण्ड।
19.	उत्तर प्रदेश	डॉ. लक्ष्मी निवास पान्डे, रीडर, संस्कृत विभाग (शिक्षा), राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), लखनऊ परिसर, विशाल खण्ड-4, गोमती नगर, लखनऊ- 226010.
20.	पश्चिम बंगाल	श्री तन्मय भट्टाचार्य, रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर, शोध विभाग, गोल पार्क, कोलकाता-700029.

डॉ. रत्न मोहन झा, व्याख्याता, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली को अखिल भारतीय स्तर पर राष्ट्रिय संयोजक के रूप में कार्यक्रम संयोजन का भार सौंपा गया।

कार्यशाला :

दिल्ली में स्थित संस्थान के मुख्यालय में 17 से 27 अगस्त, 2009 तक एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिससे कि अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्रों में शिक्षणार्थ प्रथमा दीक्षा की विशिष्ट पुस्तक की रूप रेखा तैयार की जा सके। प्रो. आर देवनाथन, डा. रामलखन पान्डे, डा. सुरेन्द्र मोहन मिश्रा, प्रो. जी. एस. आर. कृष्ण मूर्ति, डा. रामकुमार शर्मा, डा. रमाकान्त पान्डे, डा. तन्मय कुमार भट्टाचार्य, डा. चन्द्रकला आर कोन्डी, डा. (श्रीमती) विजयलक्ष्मी राधाकृष्ण, डा. मधुकेश्वर भट्ट, डा. सतीश कुमार, प्रभृति विद्वानों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

विभिन्न स्थानों पर 21 दिवसीय आवासीय शिक्षक प्रशिक्षण शिविरों का संचालन किया गया। विस्तृत वर्णन निम्नलिखित हैं :

स्थान	अवधि	सहभागियों की संख्या	विदग्ध व्यक्ति
दक्षिणेश्वर आद्यपीठ आनंद	29-05-09 से 18-06-09	77	डॉ. तन्मय भट्टाचार्य डॉ. एस.के.सेनापति डॉ. रत्नमोहन झा डॉ. नारायण दास डॉ. सुधाकर मिश्रा डॉ. मौसमी बोरठाकुर श्री जयन्त देवनाथ श्रीमती सरबनी भट्टाचार्य

स्थान	अवधि	सहभागियों की संख्या	विदग्ध व्यक्ति
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), राजीव गांधी परिसर शृंगेरी, जिला- चिकमंगलूर (कर्नाटक)	06-06-09 से 26-06-09	20	प्रो. आर. देवनाथन प्रो. ए.पी. सच्चिदानन्द डॉ. सी.एस.एस.एन्. मूर्ति डॉ. विश्वास डॉ. रामचन्द्रपुली बालाजी डॉ. चन्द्रकलाआर कोण्डी डॉ. सोमनाथ साहु श्री वैंकटेश मूर्ति डॉ. गणेश टी पंडित डॉ. नागरत्न डॉ. शंतला डॉ. पवन कुमार डॉ. बी.पी.एस. श्रीनिवास डॉ. सुशांत कुमार राय डॉ. गिरिधर राव
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), जयपुर परिसर, त्रिवेणी नगर गोपालपुरा, बाईपास	06-6-09 से 26-06-09	42	श्री रामकृष्ण पजतेया डॉ. राम कृष्ण डॉ. वाई.एस. रमेश डॉ. अर्कनाथ चौधरी डॉ. सुदेश कुमार शर्मा डॉ. पी एन. शास्त्री डॉ. सतीश कुमार डॉ. कुलदीप शर्मा डॉ. पूर्णचन्द्र उपाध्याय डॉ. शिव चरण शर्मा
उत्तरांचल संस्कृत अकादमी संस्कृत भवन, दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग, ज्वालापुर (उत्तरांचल) हरिद्वार (उत्तराखंड)	26-06-09 से 16-06-09	35	डॉ. रघुवीर प्रसाद शर्मा डॉ. जितेन्द्र ठन्डानी डॉ. बुद्धदेव शर्मा डॉ. रामलखन पाण्डेय डॉ. लक्ष्मी निवास पाण्डेय डॉ. आनंदकुमार श्रीवास्तव डॉ. हरिराम मिश्रा डॉ. बृहस्पति मिश्रा डॉ. राघव कुमार झा डॉ. प्रकाश चन्द्र पंत डॉ. रत्न मोहन झा

4. दूरस्थ शिक्षा:

दूरस्थ विधि से विविध संस्कृत पाठ्यक्रम प्रस्तुत करने के उद्देश्य से राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान स्वाध्याय सामग्री का निर्माण करता रहता है। इस प्रक्रिया में विभिन्न स्थानों पर तीन कार्यशालाओं का संचालन किया गया।

कार्यशालाएँ :

(स्वाध्याय सामग्री पर कार्यशालाएँ)

स्ट्राइड व इग्नू के मार्गदर्शन में स्वाध्याय सामग्री पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार करने के उद्देश्य से निम्नलिखित कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। प्रो. सी.आर.के. मूर्ति इन कार्यशालाओं में विदग्ध व्यक्ति थे।

क्रमांक	कार्यशाला का स्थान	अवधि	सम्बद्ध पाठ्यक्रम/ कक्षा	विद्वानों ने भाग लिया
1.	अध्यात्म साधना केन्द्र छतरपुर, दिल्ली	2.5.09 से 8.5.09तक	प्राक्शास्त्री, शास्त्री एवं आचार्य द्वितीय वर्ष (साहित्य)	डॉ. गुन्डमनी गानपय्या होला डॉ. नागरत्न डॉ. विश्राम तिवारी डॉ. राघव कुमार झा डॉ. वी.एन दामोदरन उन्नी डॉ. श्रीमती सरवती भट्ट डॉ. सूर्यमणी रथ डॉ. राघवेन्द्र भट्ट डॉ. बसंत कुमार मिश्रा डॉ. अमृतेश डी एम डॉ. गजानन एल. भट्ट डॉ. एन. लक्ष्मीनारायण भट्ट डॉ. रामकुमार शर्मा डॉ. उमाकांत चतुर्वेदी डॉ. नारायण दास डॉ. तनमय भट्टाचार्य डॉ. सुमनकुमार झा डॉ. सी. उपेन्द्र राव श्री के. वेंकटेश मूर्ति डॉ. रत्ना मोहन झा
2.	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) जनक पुरी नई दिल्ली	23.2.10 से 26.2.10 तक	प्राक्शास्त्री, शास्त्री एवं आचार्य द्वितीय वर्ष (ज्योतिष)	डॉ. वासुदेव शर्मा डॉ. हंसधर झा डॉ. पी.वी.वी. सुब्रामण्यम् डॉ. रामकृष्ण पाजेताया श्री के. वेंकटेश मूर्ति डॉ. रत्न मोहन झा

5. पत्राचार पाठ्यक्रम

संस्थान भारत और विदेश में संस्कृत के सामान्य अध्येताओं के लिए हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम से संस्कृत भाषा सीखने के लिए दो वर्ष की अवधि वाले पत्राचार पाठ्यक्रमों का संचालन दो स्तरों पर करता है, अर्थात् (अ) संस्कृत में प्रारम्भिक पाठ्यक्रम-प्रथम वर्ष (ब) संस्कृत में प्रारम्भिक पाठ्यक्रम-द्वितीय वर्ष। वर्ष 2009-2010 के दौरान पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से संस्कृत अध्ययन हेतु 1004 नये छात्रों ने पंजीयन करवाया। इनमें से 15 विद्यार्थी विदेश से हैं जिनहोनें संस्कृत अध्ययन हेतु अपने नाम पंजिकृत करवाये।

वर्ष 2009-10 में 498 विद्यार्थियों ने हिन्दी माध्यम से तथा 506 विद्यार्थियों ने अंग्रेजी माध्यम से संस्कृत अध्ययन हेतु अपने नाम पंजीकृत करवाये।

कार्यशालाएँ

पाठ्यक्रमों की सत्यता जांचने हेतु समय-समय पर कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। शिक्षण सामग्री में सुधार करने हेतु प्रो. राजेन्द्र मिश्रा, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के पूर्व कुलपति; डॉ. पंकज मिश्रा, सैन्ट स्टीफन्स महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय; प्रो. रंजित बेहेरा, एन.सी.ई.आर.टी ने कार्यशाला में भाग लिया।

6.4 परीक्षा अनुभाग

इस अनुभाग का मुख्य दायित्व, विभिन्न परीक्षाओं का आयोजन तथा संस्थान के परीक्षा पत्रों का मूल्यांकन है। संस्थान के द्वारा प्रथमा से आचार्य, शिक्षाशास्त्री, शिक्षा आचार्य तथा विद्यावारिधि जैसी विभिन्न परीक्षाओं का संचालन किया जाता है। इन परीक्षाओं में अंगीभूत परिसरों तथा सम्बद्ध संस्थाओं के छात्र प्रवेश पाते हैं। ये परीक्षाएँ शैक्षिक परिषद् एवं परीक्षा मंडल द्वारा निर्धारित मार्गदर्शी सिद्धान्तों के अनुसार संचालित की जाती हैं।

वर्ष 2009-10 में परिसरों एवं मानित (सम्बद्ध) संस्थाओं में विभिन्न कक्षाओं के लिए कुल 14881 छात्रों ने प्रवेश लिया। इन सभी छात्रों में से कुल 11009 छात्रों ने परीक्षा दी। वर्ष 2009-10 में केन्द्रीय रूप से आयोजित, अलग-अलग कक्षाओं एवं उनके छात्रों की संख्याओं सहित, विभिन्न परीक्षाओं में शामिल एवं उनमें उत्तीर्ण होने वाले छात्रों का विवरण निम्नलिखित है:-

क्रमांक	कक्षा	परीक्षा में बैठने वाले छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण
1.	प्रथमा–III	311	237
2.	पूर्वमध्यमा–II	1042	870
3.	उत्तरमध्यमा–II	850	713
4.	प्राक्शास्त्री–II	1173	755
5.	शास्त्री–I	1986	1552
6.	शास्त्री–II	1424	1252
7.	शास्त्री–III	1145	992
8.	आचार्य–I	1374	1274
9.	आचार्य–II	1012	910
10.	शिक्षाशास्त्री	746	742
11.	शिक्षाआचार्य	46	46
	योग	**11009**	**9343**

इस वर्ष के दौरान 52 छात्रों को विद्यावारिधि की उपाधि से पुरस्कृत किया गया। इन शोध-छात्रों का विवरण संलग्नक-घ में दिया गया है।

संस्थान ने शिक्षा शास्त्री/बी.एड. पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु पूर्वशिक्षाशास्त्री परीक्षा का संचालन किया। इस प्रवेश-परीक्षा हेतु 5363 छात्रों का पंजीकरण हुआ। इसमें से 3353 छात्र तथा 1538 छात्राएँ थी जो इस परीक्षा में बैठे तथा 550 छात्राएँ एवं 1189 छात्रों को इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने व विभिन्न आठ परिसरों में प्रवेश पाने हेतु सफल घोषित किया गया। 800 छात्रों को वर्ष 2010-11 के शैक्षणिक वर्ष में नियमों के अनुसार प्रवेश दिया गया। संस्थान ने वर्ष 2009-10 के लिए पूर्व शिक्षाचार्य परीक्षा तथा पूर्व-शोध परीक्षा का भी संचालन किया।

वार्षिक परीक्षा 2010 में पाठ्यक्रमानुसार सर्वोच्च स्थान पाने वाले छात्रों का विवरण निम्नलिखित है:

क्रमांक	अनुक्रमांक	छात्र का नाम	कक्षा/विषय	परिसर/संस्थान
1.	34453	शोम्या के आर	आचार्य (न.व्याकरण)	श्रृंगेरी
2.	34774	दिनेश कुमार	आचार्य (प्रा. व्याकरण)	लखनऊ
3.	34752	कमलकांत बालन	आचार्य (साहित्य)	जयपुर
4.	34004	सुबोध कुमार पांडे	आचार्य (सि. ज्योतिष)	रामजी मेहता अद. सं. म
5.	34896	ज्ञानेन्द्र पांडे	आचार्य (फ. ज्योतिष)	आर पद्मावती वाराणसी
6.	34314	कमल सिंह	आचार्य (सर्वदर्शन)	जम्मु
7.	34602	सुब्रत कु. पीनी	आचार्य (धर्मशास्त्र)	पुरी
8.	34647	रश्मिता साहु	आचार्य (पुराणेतिहास)	पुरी
9.	34199	दुर्गेश कुमार मिश्रा	आचार्य (स.यजुर्वेद)	ज.एन.नी. लगमा, बिहार
10.	34506	गुरूमयुम डी शर्मा	आचार्य (पौरीहितम्)	राधा माधव, इंफाल
11.	34210	बजरंग बली दुबे	आचार्य (रामानन्द वेदांत)	आर रामानंद वेदांत
12.	34763	राजेश कुमार वर्मा	आचार्य (जैन दर्शन)	जयपुर
13.	34786	शोनल सिंह	आचार्य (बौध दर्शन)	लखनऊ
14.	35122	मानस मजुमदार	आचार्य (नव न्याय)	सीताराम वैदिक, कोलकाता
15.	34564	गीतांजलि साहु	आचार्य (सांख्ययोग)	पुरी
16.	34427	नवनीत भट्ट	आचार्य (मीमांसा)	श्रीनगर
17.	34433	टी सीताराम शर्मा	आचार्य (अद्वेत वेदांत)	श्रीनगर
18.	195	राकेश कुमार जैन	शिक्षा आचार्य	जयपुर
19.	11055	रश्मि डोगरे जी एन	शिक्षा शास्त्री	श्रीनगर
20.	26143	आशिश वशिष्ठ	शास्त्री	जयपुर
21.	14413	गोपाल पानीग्रही	उत्तर माध्यमा-II	श्री रामकृष्ण मठ वी पी विद्यालय, बेलुर मठ (प.ब.)
22.	16325	सुब्रामण्यम् होला	प्राक्-शास्त्री-II	श्रीनगर
23.	11758	सुबरत गयेन	पूर्व मध्यमा-II	श्री रामकृष्ण मठ वी पी विद्यालय, बेलुर मठ (प.ब.)
24.	2016	सुरेश रानी	प्रथमा-III	लज्जाराम सं. एम वी. पांडु पंडारा, जीन्द, हरियाणा

6.5 प्रशासन अनुभाग

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मुख्यालय में प्रशासन अनुभाग नियमों, विनियमों और प्रक्रियानुसार आन्तरिक व्यवस्था के कार्य करता है। यह संस्थान के विभिन्न अंगीभूत परिसरों को अधिक प्रभावी और कार्यकुशल बनाने हेतु आवश्यक स्थापन सहायता प्रदान करता है। यह अनुभाग प्रमुख रूप से सामान्य प्रशासन, स्थापना सम्बन्धी मामलों, सेवा और आपूर्ति, भूमि और भवन अधिग्रहण, नए परिसरों की स्थापना और प्रबन्धन परिषद् तथा वित्त समिति की बैठकों के संचालन आदि कार्य करता है।

भोपाल परिसर के प्रशासनिक भवन का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है व उसे परिसर को सौंप दिया गया है। प्रेक्षागृह के प्रथम प्रक्रम के निर्माण का कार्य पूर्ण हो चुका है। इस उद्देश्य के लिए परिसर को 215 लाख रूपये की धन राशि दी जा चुकी है। गरली परिसर में भूमि की चाहरदीवारी के लिए ग्रिल का कार्य पूर्ण हो चुका है तथा प्रशासनिक खंड निर्माण का कार्य प्रगति पर है। इस उद्देश्य हेतु परिसर को 512 लाख रू. की धन राशि दी गई । मुंबई परिसर को पहले से ही 298 लाख रू. की धन राशि दी जा चुकी है। सोमैय्या न्यास, विद्या विहार द्वारा स्थानांतरित भूमि पर भवन निर्माण हेतु अनुमानित धनराशि की योजना के.लो.नि.वि. द्वारा दी जा चुकी है। ब.म.नि. से अनुमति प्राप्त होने के बाद शीघ्र ही निर्माण कार्य शुरू कर दिया जायेगा। इसके अतिरिक्त इस स्थान पर मल-निर्यास (सीवेज लाईन) को पुर्नव्यवस्थित करने हेतु 32,500 रू. की धनराशि दी गई। लखनऊ परिसर में छात्राएँ एवं छात्रों के छात्रावास की चाहरदीवारी हेतु 4.93 लाख रूपये की धनराशि दी गई।

इसके अतिरिक्त राजीव गांधी परिसर, श्रृंगेरी में द्विपहिया एवं चारपहियों वाहनों को खड़े करने हेतु छत सहित पार्किंग के निर्माण के लिए भी 7.22 लाख रूपये की धनराशि दी जा चुकी है।

वर्ष 2009-10 में संस्थान के मुख्यालय में कार्यरत अनुभागानुसार स्टाफ की संख्या संलग्नक-ज में दी गई है।

सूचना के अधिकार के अधीन मुख्यालय कार्यालय में कुल 108 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए तथा 105 के उत्तर दिये जा चुके हैं। तीन प्रार्थना पत्र सम्बन्धित परिसरों को स्थानान्तरित किये गये हैं।

6.6 वित्त अनुभाग

वर्ष के दौरान इस अनुभाग के महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व निम्नलिखित हैं–

बजट (2009-2010) :

वर्ष 2008-09 की 352.62 लाख रूपये की अप्रयुक्त शेष धनराशि को वित्तीय वर्ष 2009-10 में समाविष्ट किया गया। मन्त्रालय के द्वारा (गत वर्ष के अव्ययित शेष सहित) 8862.62 लाख रूपये का कुल बजट स्वीकृत किया गया। इस राशि को संस्थान के अधीन इकाईयों को निम्नलिखित रूप से आबंटित किया गया:–

(रू. की संख्या लाखों में)

क्रमांक	एकक का नाम	योजना	योजनेतर	योग
1.	मुख्यालय	3298.56	1368.11	4666.67
2.	पुरी परिसर	--	492.34	492.34

(रू. की संख्या लाखों में)

क्रमांक	एकक का नाम	योजना	योजनेतर	योग
3.	जम्मू परिसर	44.57	361.68	406.25
4.	इलाहाबाद परिसर	--	243.45	243.45
5.	गुरुवायूर परिसर	29.77	395.43	425.20
6.	जयपुर परिसर	23.15	517.81	540.96
7.	लखनऊ परिसर	14.82	408.85	423.67
8.	श्रृंगेरी परिसर	307.52	---	307.52
9.	गरली परिसर	719.54	---	719.54
10.	भोपाल परिसर	453.57	---	453.57
11.	मुम्बई परिसर	183.45	---	183.45
	कुल योग	**5074.95**	**3787.67**	**8862.62**

वर्ष में दौरान यह धन वेतन और भत्ते, छात्रवृत्तियाँ, प्रख्यात संस्कृत विद्वानों को राष्ट्रपति सम्मान एवं संस्कृत शिक्षण के विकास के अन्तर्गत अन्य विभिन्न योजनाओं तथा व्यय की अन्य रख-रखाव की मदों पर उपयोग में लाया गया। वित्तीय वर्ष के अन्त में 267.88 लाख रुपये (88.95 लाख रुपये योजनागत तथा 178.93 लाख रुपये योजनेतर हेतु) शेष धनराशि बिना व्यय अवशिष्ट रही।

लेखा :-

यह अनुभाग संस्थान के विविध एककों से प्राप्त लेखों के समेकन और लेखा-परीक्षा हेतु डी.जी.ए.सी.आर. को प्रस्तुत करने के लिए उत्तरदायी है। वर्ष 2009-10 हेतु परीक्षित वार्षिक लेखा तथा लेखा-परीक्षा प्रतिवेदन अनुबंध-ठ में रखे गए हैं।

भविष्य निधि खातों का अनुरक्षण

यह अनुभाग मुख्यालय के अधिकारियों व अन्य कर्मचारियों के वेतन व भविष्य निधि खातों का अनुरक्षण करता है। वित्तीय वर्ष की समाप्ति पर अविलम्ब प्रत्येक सदस्य को वार्षिक भविष्य निधि खाते का विवरण प्रदान किया जाता है।

लेखा परीक्षा आपत्तियों का निराकरण :-

वर्ष में लेखा-परीक्षा आपत्तियों को निपटाने के लिए संगठित प्रयास किए गए। इसके लिए सभी परिसरों को ये निर्देश दिए गए कि वे आवश्यक सुधारात्मक कार्यवाही करें। इसके अनुपालन के उत्तर लेखा-परीक्षा अधिकारियों को भेजे गए। इस प्रकार इस वर्ष में बहु-संख्यक लेखा-परीक्षा आपत्तियों को निपटाया गया।

इस अनुभाग को आदर्श संस्कृत महाविद्यालयों से सम्बन्धित कार्यों और संस्कृत, पाली, प्राकृत, अरबी तथा फारसी भाषाओं के लिए अपना उत्कृष्ट योगदान हेतु भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित विद्वानों को मानदेय देने का कार्य भी सौंपा गया है। इसके साथ ही, देश भर के उन संस्कृत पंडितों को जो दयनीय अवस्था में रहते हैं, उन्हें वित्तीय सहायता देने की योजना का कार्यभार भी इसे सौंपा गया है।

6.7 योजना अनुभाग

यह अनुभाग संस्कृत भाषा और साहित्य के संवर्धन तथा प्रचार हेतु मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा अन्तरित निम्नलिखित योजनाओं के कार्यान्वयन हेतु उत्तरदायी है:-

(i) स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों को वित्तीय सहायता

इस योजना के अन्तर्गत चयनित संगठनों को उनके संस्कृत अध्यापकों को वेतन, छात्रों को छात्रवृत्ति, पुस्तकालय अनुदान और संस्थान-भवन के निर्माण के रूप में वित्तीय सहायता की स्वीकृति दी जाती है।

इस योजना के अन्तर्गत वर्ष में संस्थान द्वारा रुपये 10,36/- लाख की राशि व्यय की गई। वर्ष के दौरान 746 संस्थाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की गई।

(ii) अखिल भारतीय वाक्स्पर्धा प्रतियोगिता

संस्थान द्वारा इस प्रतियोगिता का आयोजन देश के विभिन्न भागों में प्रतिवर्ष परम्परागत संस्कृत के छात्रों को शास्त्रीय संस्कृत भाषा में आशु भाषण के लिए प्रोत्साहित करने हेतु किया जा रहा है।

वर्ष के दौरान शास्त्र श्लाका परीक्षा का आयोजन किया गया। अखिल भारतीय संस्कृत वाक्स्पर्धा राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), जयपुर परिसर में 30.11.2009 से 02.12.2009 को आयोजित की गई। पारंपरिक संस्कृत संस्थाओं के जो छात्र राज्य स्तर की प्रतिस्पर्धाओं में चयनित हुए, उन्हें राष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धा में भाग लेने का अवसर दिया गया। 13 राज्यों से 154 छात्रों ने विभिन्न 19 प्रतिस्पर्धाओं में भाग लिया।

निम्नलिखित प्रतिस्पर्धाओं में छात्रों ने बड़े उत्साह एवं जोश से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया:-

1. भाषणस्पर्धा- व्याकरणभाषणम्, साहित्य भाषणम्, भव्याभाषणम्, सांख्य-योग भाषणम्, मीमांसा भाषणम्, वेदांत भाषणम्, धर्मशास्त्र भाषणम्, ज्योतिषभाषणम्।

2. शलाकापरीक्षा- काव्य शलाका परीक्षा, साहित्य शास्त्र शलाका परीक्षा, व्याकरण शलाका परीक्षा, न्याय शलाका परीक्षा, सिद्धांत-ज्योतिष शलाका परीक्षा, वेदांत शलाका परीक्षा, पुराणेतिहास शलाका परीक्षा।

3. कंठपाठस्पर्धा- अष्ठध्याय कंठपाठ, अमरकोश कंठपाठ।

4. समस्यापूर्ति अन्ताक्षरी

विभिन्न स्पर्धाओं हेतु पुरस्कारों की रूपरेखा इस तरह की थी:-

I भाषण (वाक्स्पर्धा) प्रतिस्पर्धा

(i) पुरस्कार - 7000 रुपये सहित स्वर्ण पदक

(ii) पुरस्कार - 5000 रुपये सहित रजत पदक

(iii) पुरस्कार - 3000 रुपये सहित कांस्य पदक

II प्रत्येक शास्त्र शलाका परीक्षा, अष्टध्यायी एवं अमरकोश कविता-पाठ, समस्यापूर्ति एवं अन्ताक्षरी हेतु:-

(i) 7000 रुपये सहित स्वर्ण पदक

(ii) 5000 रुपये सहित रजत पदक

(iii) 3000 रुपये सहित कांस्य पदक

वर्ष के दौरान 12.16 लाख रुपये का इस उद्देश्य के लिए उपयोग किया गया।

उपरोक्त प्रतिस्पर्धा आयोजित करने से पहले संस्थान के तत्वावधान में प्रत्येक श्रेणी में सभी क्षेत्रों से राज्य स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

(iii) शास्त्रचूडामणि योजना

इस योजना के अन्तर्गत संस्थान, आदर्श पाठशालाओं और राज्य सरकारों द्वारा चलाए जा रहे संस्कृत महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों एवं स्वैच्छिक संगठनों में सेवानिवृत्त प्रख्यात संस्कृत विद्वानों की सेवाओं का उपयोग किया जाता है।

इस योजना को आरम्भ करने का उद्देश्य यह है कि परम्परागत पद्धति से संस्कृत शिक्षा प्रदान करने वाले केन्द्रों में विभिन्न शास्त्रीय विषयों के गहन अध्ययन को

संरक्षित किया जा सके। योजना के अनुसार परम्परागत-संस्कृत विद्वानों की नियुक्ति विभिन्न संस्थाओं में की जाती है। प्रत्येक विद्वान् को रुपये 6000/- प्रति माह दो वर्ष की अवधि हेतु दिए जाते हैं। अनुदान समिति की संस्तुति पर एक वर्ष हेतु इनकी नियुक्ति का कार्यकाल बढ़ाया जा सकता है।

वर्तमान में नियुक्त विद्वानों के अतिरिक्त 45 अन्य शास्त्रचूडामणि विद्वानों का चयन वर्ष 2009-10 में किया गया। इस योजना के अन्तर्गत रु. 28,16,400/- लाख व्यय किए गए।

(iv) व्यावसायिक प्रशिक्षण योजना

इस योजना के अन्तर्गत चयनित संस्थाओं को उनके ज्योतिष, कर्म-काण्ड, पुरालिपि-शास्त्र, सूची-निर्माण, पाण्डुलिपि विज्ञान, संस्कृत आशुलिपि और टंकण आदि विद्या विशेषों में कार्यशालाओं के आयोजन तथा प्रायोगिक प्रशिक्षण के संचालन हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना के अन्तर्गत वर्ष 2009-10 में रु. 0-08 लाख व्यय किए गए।

(v) मान्यता-प्राप्त आदर्श संस्कृत महाविद्यालयों/ शोध संस्थानों को वित्तीय सहायता

इस योजना के अन्तर्गत देश के विभिन्न भागों में 25 संस्थाएँ भारत सरकार की वित्तीय सहायता से संस्थान के अधीन चल रही हैं। इस योजना के लिए वित्त का बड़ा भाग संस्थान द्वारा जारी किया जाता है। इस योजना के अन्तर्गत मान्यता-प्राप्त संस्थाओं को व्यय की आवर्ती मदों पर 95% तथा अनावर्ती मदों पर 75% अनुदान दिया जाता है। इस वर्ष योजना के अधीन रुपये 575.94 लाख तथा योजनेतर में रुपये 371.95 लाख रुपए की धनराशि संस्थान द्वारा इन संस्थाओं को दी गई।

(vi) संस्कृत शब्दकोश परियोजना

ऐतिहासिक सिद्धान्तों के आधार पर एक अतिव्यापक शब्दकोश तैयार करने की परियोजना डेकन कॉलेज, स्नातकोत्तर तथा शोध संस्थान, पुणे द्वारा आरम्भ की गई है। इस परियोजना में व्यय का प्रमुख स्रोत, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के माध्यम से उपलब्ध कराया जा रहा है। इस परियोजना पर वर्ष 1948 में विचार किया गया था तथा संबद्ध सामग्री के संग्रहण के बाद सम्पादन-कार्य 1973 में प्रारम्भ किया गया। अब तक 9 खण्ड, जिनमें 24 भाग हैं, सम्पादित एवं प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें एक लाख से अधिक शब्द सम्मिलित हैं। वर्ष 2009-10 के दौरान संस्कृत शब्दकोश परियोजना हेतु रुपये 29.56 लाख की राशि राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान द्वारा आबंटित की गई है।

(vii) भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मान-पत्र प्राप्त विद्वानों को मानदेय राशि

भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मान-पत्र प्राप्त विद्वानों को संस्थान प्रति वर्ष 50,000/- रुपये की मानदेय राशि प्रदान करता है।

संस्कृत के लिए पुरस्कार

वर्ष 2008 से संस्कृत विद्वानों को 5 लाख रूपये की मानदेय राशि दी जा रही है।

पालि/प्राकृत, अरबी एवं प्रशियन हेतु पुरस्कार

पालि/प्राकृत, प्रशियन एवं अरबी के पुरस्कृत विद्वानों को जीवनपर्यन्त प्रत्यक वर्ष 50,000/- रूपये की मानदेय राशि दी जाती है।

महर्षि बादरायण व्यास सम्मान

30 से 40 वर्ष की आयु वर्ग के युवा विद्वानों को संस्कृत, पालि/प्राकृत, अरबी एवं फारसी के क्षेत्र में महर्षि बदरायण सम्मान।

संस्कृत में 5 पुरस्कार एक बार रु. 1 लाख की नकद राशि।

पालि/प्राकृत में 1 पुरस्कार एक बार रु. 1 लाख की नकद राशि।

अरबी में 1 पुरस्कार एक बार रु. 1 लाख की नकद राशि।

फारसी में 1 पुरस्कार एक बार रु. 1 लाख की नकद राशि।

इस वर्ष के दौरान इस मत में रुपये 285.27 लाख व्यय किए गए।

(viii) उत्तर पूर्व क्षेत्रों में संस्कृत भाषा का प्रोत्साहन:

वर्ष 2009-2010 में संस्थान ने देश के उत्तर-पूर्व

क्षेत्रों में संस्कृत भाषा के अध्ययन, प्रसार और प्रोत्साहन हेतु रुपये 42.80 लाख व्यय किए।

संस्कृत में उत्तर-पूर्वी राज्यों का योगदान विषय पर राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा गंगटोक, सिक्किम में एक संगोष्ठी आयोजित की गयी। राधा माधव संस्कृत महाविद्यालय, नाम्बोल, मणिपुर को इस वर्ष के दौरान आदर्श संस्कृत महाविद्यालय का दर्जा दिया गया।

(ix) पारम्परिक संस्कृत पाठशालाओं महाविद्यालयों में शिक्षकों हेतु आधुनिक विषयों के लिए वित्तीय सहायता

संस्कृत संवर्धन की इस योजना के अन्तर्गत राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान पारम्परिक संस्कृत पाठशालाओं/महाविद्यालयों में शिक्षकों हेतु आधुनिक विषयों के लिए प्रतिमास रु. 6000/- प्रति विषय के हिसाब से वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है। योजनानुसार प्रत्येक संस्था में वित्तीय सहायता को आधुनिक विषयों में तीन शिक्षकों तक सीमित किया गया है।

संस्थान द्वारा वर्ष 2009-10 में इस योजना के अन्तर्गत रु. 100.48 लाख व्यय किए गए। 90 संस्थाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की गई।

(x) विभिन्न राज्यों के विभिन्न सरकारी विद्यालयों में संस्कृत शिक्षकों हेतु वित्तीय सहायता:-

संस्कृत संवर्धन योजना के अन्तर्गत राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान विभिन्न राज्यों में सरकारी विद्यालयों के संस्कृत शिक्षकों को वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है। यह सहायता एक संस्कृत शिक्षक के वेतन हेतु प्रदान की जाती है। वर्ष 2009-10 में कुल 103 सरकारी विद्यालयों लाभग्राही थे और इस योजना के अधीन रु. 21.43 लाख की राशि का उपयोग किया गया।

(xi) विभिन्न परियोजनाओं पर एन.जी.ओ., संस्कृत विश्वविद्यालयों, संस्थाओं को वित्तीय सहायता:-

एन.जी.ओ./मानित संस्कृत विश्वविद्यालयों/ विश्वविद्यालयों/संस्थाओं द्वारा संस्कृत के विकास एवं प्रचार हेतु आरम्भ की गई विविध परियोजनाओं व कार्यक्रमों से सम्बन्धित शत-प्रतिशत व्यय का वहन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा किया जाता है।

वर्ष 2009-10 में संस्थान ने विभिन्न परियोजनाओं हेतु रु. 108.3 लाख व्यय किए।

6.8 पालि एवं प्राकृत

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने वर्ष 2009-2010 के दौरान पालि एवं प्राकृत भाषाओं के विकास के लिये नौंवी योजना काल में 5 करोड़ रुपये उपलब्ध कराये हैं। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान को 2008-2009 से पालि एवं प्राकृत भाषाओं के प्रोत्साहन के लिये योजना सुपुर्द की गयी। योजना के अन्तर्गत 2009-10 में निम्नलिखित गतिविधियों को प्रारम्भ किया गया।

पालि एवं प्राकृत अध्ययन केन्द्र

पालि अध्ययन का एक केन्द्र राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के लखनऊ परिसर में स्थापित किया गया। प्राकृत अध्ययन केन्द्र की स्थापना जयपुर परिसर में की गयी।

विकास अधिकारियों, कनिष्ठ एवं वरिष्ठ शोध अध्येताओं की नियुक्ति

मानव संसाधन विकास मंत्रालय की योजना की व्यवस्था के अनुसार निम्नलिखित नियुक्तियाँ की गयी हैं-

विकास अधिकारी - 2 (पालि एवं प्राकृत दोनों में एक)

कनिष्ठ शोध अध्येता-10 (पालि एवं प्राकृत में पाँच-पाँच)

वरिष्ठ शोध अध्येता-10 (पालि एवं प्राकृत में पाँच-पाँच)

प्रत्येक अध्येता को निश्चित शोध योजना आबंटित की गयी है। विकास अधिकारी योजना कार्य का पर्यवेक्षण

कर रहे हैं। उनसे पालि एवं प्राकृत के प्रोत्साहन के लिये चल रही विभिन्न योजनाओं में भी संस्थान को सहायता करने की आशा की जाती है।

पालि के लिये प्रशिक्षण सामग्री एवं अध्ययन सामग्री का निर्माण

धम्मपद से छत्तीस चयनित गाथायें अंग्रेजी एवं हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित की जा चुकी हैं। इस पुस्तिका का संशोधित संस्करण भी आ चुका है। पालि के निम्नलिखित व्याकरण ग्रन्थ छप चुके हैं-

(i) सद्दनीति

(ii) मोग्गलान व्याकरण

संस्कृत छाया सहित पालि त्रिपिटक का प्रकाशन

संस्कृत छाया के साथ पालि त्रिपिटकों के एक सम्पूर्ण संस्करण को तैयार करने की एक बृहद योजना प्रारम्भ की गयी है। यह कार्य लगभग 40,000 पृष्ठों में, 200 खण्डों में प्रकाशित होगा।

दुर्लभ पालि एवं प्राकृत ग्रन्थों के संस्करण तैयार व प्रकाशित करना

निम्नलिखित ग्रन्थों के संस्करण तैयार किये गये हैं-

(i)	थूपवंश	(ii)	सुत्तनिपात
(iii)	धम्मपद	(iv)	इतिवुत्तक
(v)	विमानवत्थु	(vi)	देवपुत्तसंयुत्त
(vii)	देवतासंयुत्त	(viii)	थेरगाथा
(ix)	थेरीगाथा	(x)	बुद्धचर्या
(xi)	चरियापिटक	(xii)	जातक

पालि एवं प्राकृत भाषा शब्दकोश

पालि एवं प्राकृत शब्दकोशों की दो योजनायें प्रारम्भ की गयी हैं। इन शब्दकोशों के ई-टैक्स्टस राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की वेब साईट पर डाले जायेंगे।

पालि एवं प्राकृत में प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम

इन पाठ्यक्रमों का संचालन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के लखनऊ और जयपुर परिसर में किया गया।

प्राकृत पाण्डुलिपियों एवं पाण्डुलिपि पुस्तकालयों का सर्वेक्षण

यह योजना राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के जयपुर परिसर मं प्रारम्भ की गयी। आधारभूत कार्य पूर्ण हो गया है। विस्तृत प्रतिवेदन का कार्य प्रगति पर है।

पालि एवं प्राकृत अध्ययन का सर्वेक्षण

पालि एवं प्राकृत अध्ययनों के सर्वेक्षण की दो पृथक् योजनायें राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के लखनऊ और जयपुर परिसरों द्वारा संचालित की गयीं। दोनों पर आधारभूत कार्य हो चुका है। "पालि स्टडीज थ्रू दी एजेज" पर एक विस्तृत खण्ड 2011 के अंत तक पूर्ण हो जायेगा। भारत में प्राकृत अध्ययन की एक यथास्थिति प्रतिवेदन पूर्ण हो गया है। विस्तृत प्रतिवेदन का कार्य चल रहा है।

राष्ट्रिय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों व संगोष्ठियों का आयोजन-

"बौद्ध परम्परा में वैश्विक सन्देश (पालि साहित्य के विशेष सन्दर्भ में)" पर अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलन का आयोजन 22-24 सितम्बर, 2009 को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के तत्त्वावधान में विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। "प्राकृत साहित्य के सन्दर्भ में भारती परम्परा की बहुलता व विविधता" पर राष्ट्रिय सम्मेलन संस्थान के तत्त्वाधान में जयपुर में 25-27 जुलाई, 2009 को आयोजित किया गया। इन दोनों सम्मेलनों के कार्यविवरण प्रकाशित हो चुके हैं। अखिल भारतीय पालि-प्राकृत सम्मेलन भी संस्थान के तत्त्वावधान में लखनऊ परिसर में 27-28 मार्च, 2010 को "पालि प्राकृत अन्तः सम्बन्धः" विषय पर आयोजित किया गया था।

वर्ष के दौरान प्रकाशित पुस्तकें

1. बौद्ध परम्परा का वैश्विक सन्देश (पालि अध्ययन शृंखला-I)
2. प्राकृत साहित्य और भारती परम्परायें (प्राकृत अध्ययन शृंखला-I)
3. धम्मपद (धम्मपद से पैंतिस चुनिंदा गाथायें)

6.9 परियोजनायें

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने 2004 से कुछ परियोजनायें प्रारम्भ की हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण परियोजनायें 2009-2010 से प्रारम्भ हुए हैं। परियोजनाओं का वर्तमान प्रतिवेदन इस प्रकार हैं-

1. भाषा मन्दाकिनी (दूरदर्शन प्रकाशन)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान सितम्बर, 2003 से संस्कृत कार्यक्रमों का प्रशासन इग्नू के ज्ञान दर्शन चैनल के द्वारा प्रतिदिन एवं सप्ताह में तीन दिन क्रमशः डी.डी. भारती और डी.डी. इन्डिया से कराता है। वर्ष 2009-2010 के दौरान, तीन मिनट के 730 कथानक इग्नू से, तीस मिनट के 156 कथानक डी.डी. इण्डिया से और 157 कथानक डी.डी. भारती से प्रसारित हो चुके हैं।

2. संस्कृत साहित्य का राष्ट्रिय ई-डाटा बैंक (ई-टैस्ट्)

परियोजना का उद्देश्य संस्कृत में ई-लर्निंग विकसित करना एवं ई-संस्कृत संग्रह को इलैक्ट्रानिक्स टैक्स्टों एवं इन्टरनेट के माध्यम से जन सामान्य को उपलब्ध कराना है। संस्थान के विभिन्न परिसरों के शिक्षकों को उनकी विशेषज्ञता एवं अध्ययन के क्षेत्र के आधार पर ग्रंथ आबंटित किये गये हैं। ग्रंथों को टंकित करने एवं कम्प्यूटर पर फाईल तैयार करने के लिये डाटा एन्ट्री आपरेटरों की नियुक्ति की गयी है। पहले चरण में छत्तीस ग्रंथ संपूर्ण हो चुके हैं तथा संस्थान की वेबसाईट पर भी डाल दिये गये हैं।

पालि की एक पुस्तक प्रमाणवार्तिक भी सर्च मोड सहित वेबसाईट पर डाली जा चुकी है।

3. श्रव्य/दृश्य माध्यमों के द्वारा संस्कृत शिक्षण (मल्टी मीडिया परियोजना)

इस परियोजना में, सात डीवीडी एलबम तैयार किये जा चुके हैं-संस्कृत भाषा शिक्षणम्, वैदिक गणित, संक्षेपरामायणम्, नाट्यविंशतिका, तदेव गगनं सैव धरा, कविभास्करी एवं अभिज्ञानशाकुन्तलम्। दो डिजिटल कार्यक्रम-शब्दकल्पद्रुम् तथा संस्कृत स्वयं शिक्षक का प्रथम स्तर भी परिपूर्ण हो चुके हैं और विमोचन हो चुका है।

संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी उपशीर्षकों सहित दस सजीव कहानियों की सी.डी कथादशकम् भी इस वर्ष लोकार्पित हो चुकी हैं।

4. प्रस्तुत कथानक

टी.वी. प्रसारण के 125 कथानक 2009-10 वर्ष के दौरान तैयार हो चुके हैं। मार्च 2010 तक कुल 787 कथानक तैयार हो चुके हैं।

5. एम पी 3 श्रव्य सी.डी.

सम्पूर्ण तत्त्वचिन्तामणि प्रो. के. ई. देवनाथन, तिरूपति द्वारा रिकार्ड की जा चुकी है। पहले ही दो भाग पूर्ण हो चुके हैं।

6. पुस्तकालयों की नेटवर्किंग

संस्थान के सभी पुस्तकालयों की सूची नेटवर्किंग के द्वारा संस्थान की वेबसाईट पर ड़ाली जा चुकी हैं। इस परियोजना के लिये एन. आई. सी. ने संस्थान के स्टॉफ को ई-ग्रंथालय सॉफ्टवेयर में प्रशिक्षित कर दिया है। सम्बद्ध परिसरों के पुस्तकालय स्टॉफ के निर्देशन में टंकण कार्य करने के लिये डाटा एन्ट्री आपरेटों की नियुक्ति की जा चुकी है। प्रथम चरण के लिये लक्ष्य 50 हजार प्रविष्टियाँ हैं।

7. पाण्डुलिपियों का डाटा बैंक

संस्कृत पाण्डुलिपियों का डॉटा बैंक तैयार करने के लिए इलाहाबाद परिसर में मानस सॉफ्टवेयर आबंटित किया जा चुका है। परिसर के शोध छात्रों ने पाण्डुलिपि पुस्तकालय के स्टॉफ के निर्देशन में डाटा शीट्स तैयार कर ली हैं। परिसर के विद्वानों द्वारा परिक्षण के पश्चात् डाटा संस्थान की वेबसाईट पर डाल दिया जायेगा।

संस्थान ने अपने परिसरों के विभिन्न पुस्तकालयों में उपलब्ध सभी पाण्डुलिपियों के डिजिटलाईजेशन के लिये भी पहल कर दी है। डिजिटलाईजेशन का कार्य राष्ट्रिय पाण्डुलिपि मिशन के माध्यम से संचालित होगा।

8. हू इज हू

संस्थान संस्कृत के विद्वानों का डाटा बैंक पुस्तक के रूप में और साथ ही साथ साफ्ट रूप में तैयार कर रहा है। डाटा बैंक मुख्यालय और भोपाल परिसर में तैयार किया जा रहा है। अपेक्षित प्रोफार्मा संस्थान की वेबसाईट पर डाला जा चुका है और सभी संस्कृत विश्वविद्यालयों, संस्कृत विभागों के विभागाध्यक्षों तथा प्रसिद्ध विद्वानों में भी वितरित किया जा चुका है।

9. संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं की बोलियों व उपबोलियों का शब्दकोश

अन्तर्भाषायी अध्ययन भाषाओं के प्रोत्साहन व संरक्षण के लिये एक उपयुक्त मार्ग उपलब्ध करा सकता है। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने ''बोलियों व उप-बोलियों सहित संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं का शब्दकोश'' की एक परियोजना प्रारम्भ की है। यह परियोजना 2009 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन वित्तिय सहायता के साथ शुरू की गयी है।

यह विविध भारतीय भाषाओं, बोलियों और उप-बोलियों में समान पारिभाषिक शब्दों के अध्ययन के माध्यम से पारंपरिक ज्ञान और भाषाई दक्षता के संरक्षण एवं सुरक्षा में भी योगदान देगी। एक परियोजना अध्येता भी नियुक्त किया जा चुका है। पहला खण्ड तैयार हो रहा है।

6.10 पुस्तकालय एवं विक्रय इकाई

संस्थान सभी दस परिसरों के समृद्ध पुस्तकालयों के अतिरिक्त मुख्यालय में भी शैक्षणिक कार्यकलापों और आगन्तुक विद्वानों की सुविधा हेतु 22000 से भी अधिक संस्कृत ग्रन्थों से युक्त पुस्तकालय है। परियोजना अधिकारी इस कक्ष के प्रधान हैं जो विक्रय व कम्प्यूटर के कार्यों की भी देखरेख करते हैं। संस्थान के अधीन सभी पुस्तकालयों की नेटवर्किंग 2009-10 में आरम्भ हो गई है। एक तिहाई ग्रन्थों का काम हो चुका है।

इकाई ने परिसरों को पहले से ही कम्प्यूटर प्रदान कर दिए हैं। संस्थान के पुस्तकालय हेतु वर्ष में प्राप्त ग्रन्थों पर हुए व्यय का विवरण तथा बिक्री आय निम्नलिखित है–

पुस्तकालय

1.	क्रीत ग्रन्थ	रूपये 3348.00
2.	उपहार के रूप में प्राप्त ग्रन्थ	रूपये 1,70,278.00

विक्रय

1.	पुनर्मुद्रित दुर्लभ ग्रन्थ	रूपये 04,07,995.00
2.	संस्थान के प्रकाशन	रूपये 13,71,442.00
	कुल योग	**रूपये 17,79,437.00**

परिसरों की एक झलक

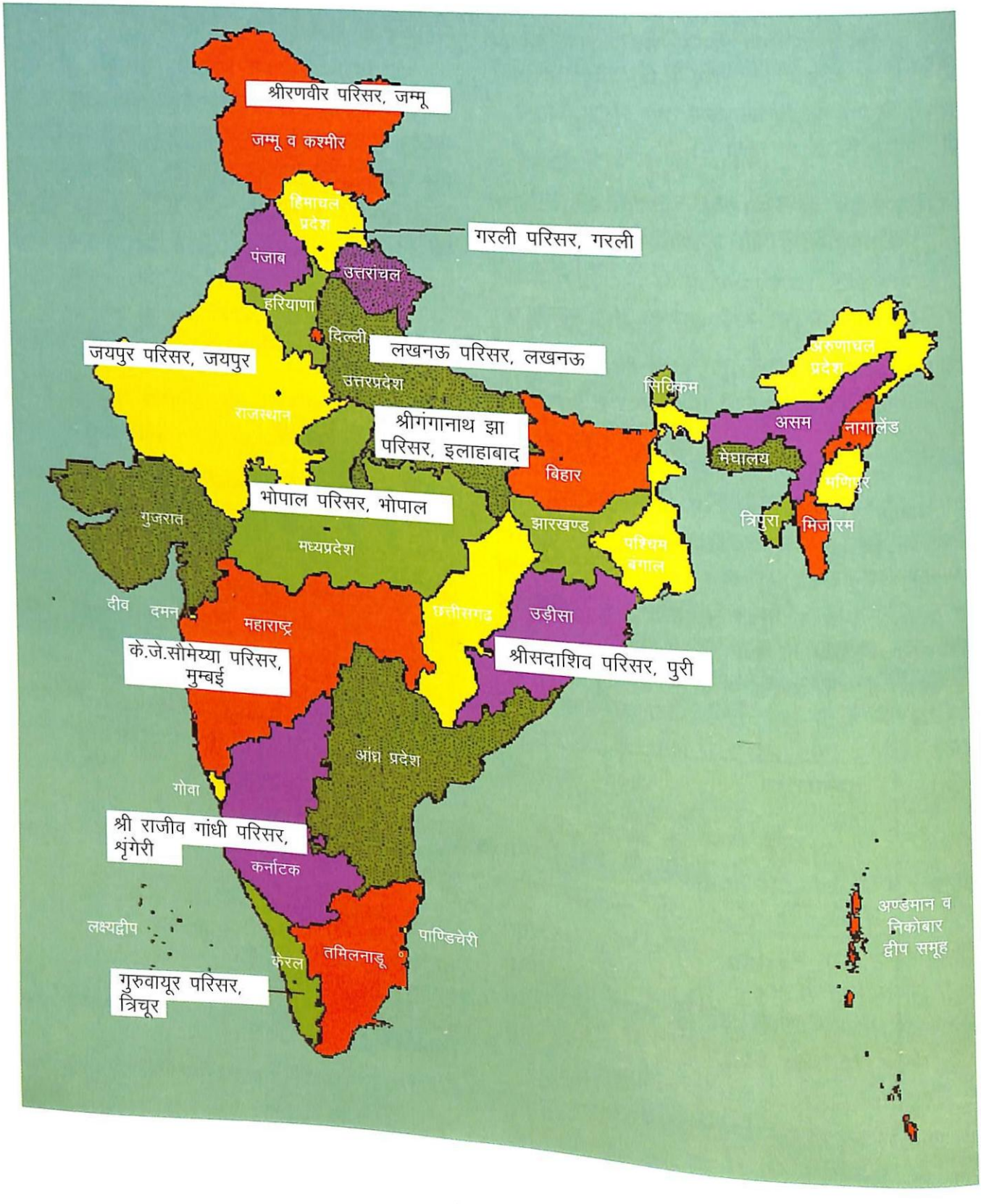

श्रीरणवीर परिसर, जम्मू
जम्मू व कश्मीर
हिमाचल प्रदेश
गरली परिसर, गरली
पंजाब
उत्तरांचल
हरियाणा
दिल्ली
लखनऊ परिसर, लखनऊ
जयपुर परिसर, जयपुर
उत्तरप्रदेश
राजस्थान
श्रीगंगानाथ झा परिसर, इलाहाबाद
सिक्किम
अरुणाचल प्रदेश
असम
नागालैंड
मेघालय
मणिपुर
त्रिपुरा
मिजोरम
बिहार
भोपाल परिसर, भोपाल
गुजरात
मध्यप्रदेश
झारखण्ड
पश्चिम बंगाल
दीव
दमन
महाराष्ट्र
छत्तीसगढ़
उड़ीसा
के.जे.सौमेय्या परिसर, मुम्बई
श्रीसदाशिव परिसर, पुरी
आंध्र प्रदेश
गोवा
श्री राजीव गांधी परिसर, शृंगेरी
कर्नाटक
लक्ष्यद्वीप
पाण्डिचेरी
केरल
तमिलनाडू
अण्डमान व निकोबार द्वीप समूह
गुरुवायूर परिसर, त्रिचूर

7. परिसर

7.1 श्री गंगानाथ झा परिसर, इलाहाबाद (उत्तरप्रदेश)

गंगानाथ झा शोध संस्थान की स्थापना सन् 1943 में इलाहाबाद में हुई। संस्थान का अधिग्रहण राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली द्वारा अपनी अंगीभूत विद्यापीठ के रूप में 1 अप्रैल 1971 को किया गया। अत: संस्थान का पुन: नामकरण "गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद" हुआ। सन् 2004 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अधिसूचना के पश्चात् राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान अपनी सभी सम्बद्ध विद्यापीठों सहित मानित विश्वविद्यालय के रूप में प्रतिष्ठित हुआ और तब तक "गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद" के रूप में जाना जाने वाला "गंगानाथ झा परिसर, इलाहाबाद" में परिवर्तित हो गया। यह परिसर संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं पर शोध-कार्य के लिये विशेष रूप से समर्पित एक मान्यताप्राप्त शोध केन्द्र है। छात्रों की एक बड़ी संख्या राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) की विद्यावारिधि (पी.एच.डी.) उपाधि प्राप्त करने हेतु शोध कार्य करने के लिये पंजीकृत हैं। पंजीकृत शोध छात्र परिसर के किसी एक प्राध्यापक के मार्गदर्शन में कार्य करते हैं एवं समृद्ध पुस्तकालय एवं पाण्डुलिपि अनुभाग में उपलब्ध सुविधाओं का भरपूर प्रयोग करते हैं। पुस्तकालय एवं पाण्डुलिपियों का प्रयोग केवल परिसर के प्राध्यापकों एवं पंजीकृत शोधछात्रों तक सीमित नहीं हैं बल्कि यह एक संदर्भ पुस्तकालय के रूप में भारत और विदेशों के विद्वानों के मध्य आकर्षण का केन्द्र भी है। यह संस्कृत तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति में अभिरुचि रखने वाले विद्वानों और शोधार्थियों को दुर्लभ प्रकाशित पुस्तकों एवं अप्रकाशित पाण्डुलिपियों के अपने पुस्तकालय का प्रयोग करने के लिये आमन्त्रित करता है।

शैक्षिक प्राध्यापक-गण के सदस्य, पंजीकृत छात्रों के शोध-कार्यों में निर्देशन देने के अतिरिक्त, संस्थान द्वारा प्रदत्त उनके अपने शोध कार्य को भी करते हैं। परिसर की शोधपरियोजनायें केवल वैयक्तिक स्तर पर ही नहीं अपितु सामूहिक दल के रूप में भी की जाती हैं।

अपने सुस्वीकृत प्रकाशन कार्यक्रमों के अतिरिक्त, परिसर ने कुछ अन्य परियोजनाओं को भी प्रारम्भ किया है जैसे ''ऋग्वेद-भाष्य-कोश''।

सामान्य क्रियाकलाप

समारोह उत्सव कार्यक्रम

संकाय ने 2009-10 में इस परिसर में निम्नलिखित कार्यक्रम संचालित किये:

(i) अगस्त 2009 में 'संस्कृत सप्ताह' का आयोजन हुआ था। विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किये गये।

(ii) डॉ जनार्दन प्रसाद पाण्डये ने क्योटो, जापान द्वारा 1 सितम्बर से 5 सितम्बर, 2009 को आयोजित चौदाहवें विश्व संस्कृत सम्मेलन में भाग लिया।

(iii) परिसर के प्राचार्य ने 14 सितम्बर, 2009 को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के मुख्यालय में आयोजित दीक्षान्त समारोह में भाग लिया।

(iv) हिन्दी दिवस के अवसर पर परिसर द्वारा हिन्दी कवि सम्मेलन आयोजित किया गया।

(v) ''पण्डित मण्डन मिश्र स्मृति व्याख्यान'' 26 अक्टूबर, 2009 को आयोजित किया गया।

(vi) अखिल भारतीय व्याख्यान स्पर्धा का आयोजन 28, अक्टूबर 2009 को किया गया।

कार्यकलाप

(i) मौलाना अब्दुल कलाम आजाद के जन्म दिवस पर 11, नवम्बर 2009 को शिक्षा दिवस के अवसर पर सम्मेलन आयोजित किया गया।

(ii) राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) द्वारा आयोजित कौमुदी कौमुदी महोत्सव के अवसर पर परिसर ने संस्कृत नाटक ''इन्द्रजलम'' अभिनीत किया।

(iii) विश्व हिन्दी दिवस समारोह 11 जनवरी, 2009 को मनाया गया।

संकाय सदस्यों के कार्यकलाप

त्रि-मासीय अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण सत्र का उद्घाटन 11 जनवरी, 2010 को किया गया।

प्रकाशन

परिसर ने परिसर की वार्षिक पत्रिका ''उषती-2009'' का प्रकाशन किया।

शोध की प्रगति

बारह शोध छात्रों ने अपने शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किये। पन्द्रह शोध छात्रों का कार्य प्रगति पर है। इस वर्ष के दौरान अट्ठारह शोध छात्रों को उनकी विद्यावरिधि उपाधि प्रदान की गयी।

शास्त्र चूड़ामणि योजना

आचार्य रहस बिहारी द्विवेदी ने 27 अप्रैल, 2009 को परिसर में ''शास्त्र चूड़ामणि विद्वान'' के रूप में कार्य आरंभ किया।

संकाय सदस्यों की प्रगति

1. प्रो. शैल कुमारी मिश्रा

(i) चार शोध छात्रों को विद्यावारिधि उपाधि प्रदान की गयी।

(ii) पारद् कल्प मात्रिका की एक प्रति तैयार की।

(iii) परिसर की हस्त पुस्तिका के सम्पादन में सहयोग किया।

(iv) उन्हें प्रदत्त कार्यों व उत्तरदायित्वों का निष्पादन किया।

2. डॉ. वी. एन. गिरि (सहआचार्य)

(i) सात शोध छात्रों को विद्यावारिधि उपाधि प्रदान की गयी, छह शोध छात्रों ने अपने शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किये।

(ii) सर-समुच्चय कार्य प्रकाश टीका प्रगति पर है।

(iii) अन्वियखनयतत्त्व बोध का सम्पादन किया।

(iv) न्याय सूत्र विवर्ती।

(v) सरिदरय अन्वसन की प्रेस कॉपी तैयार की।

(vi) बृहत्त्रयी ई-टैक्सट योजना का सम्पादन कार्य सम्पन्न किया।

(vii) परिसर के अन्य कार्यो का निष्पादन किया।

(viii) परिसर की शोध पत्रिका का सह-सम्पादन किया।

3. डॉ. बनमाली विश्वास (रीडर)

(i) सूर्यविमर्श, सगारिका, दृक्, भारतीय मनीषा, दर्शन एवँ "द जर्नल ऑफ गंगानाथ झा" में शोध पत्र तथा सम्मानीय खण्डों में पाँच शोध पत्र प्रकाशित।

(ii) चार पुस्तकों की समीक्षा प्रकाशित।

(iii) परिसर की शोध पत्रिका के सम्पादन में सहयोग।

(iv) राजीव गाँधी ग्रामोद्योग ग्रामीण उद्योग विश्वविद्यालय में दिसम्बर, 2009 को ''आधुनिक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत भाषा व साहित्य'' पर एक विशेष व्याख्यान दिया।

(v) राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के कंटेन्ट जनरेशन योजना में सम्मिलित हुये।

(vi) गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद में 7-9 दिसम्बर, 2009 को ''संस्कृत साहित्य में नारी विमर्श'' विषय पर प्रतिभागिता की एवँ शोध पत्र प्रस्तुत किया।

(vii) उज्जैन में आयोजित कालिदास समारोह के अवसर संस्कृत कवि सम्मेलन में भाग लिया।

(viii) उनके निर्देशन में दो शोध छात्रों ने अपने शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किये।

(ix) अनौपचारिक संस्कृत शिक्षा के त्रिमासीय सत्र का समन्वय किया।

4. डॉ. ललित कुमार त्रिपाठी (सहआचार्य)

(i) तारक चन्द्रिका का सम्पादन किया।

(ii) परिसर शोध पत्रिका के सम्पादन में सहयोग किया।

(iii) दूरस्थ संस्कृत शिक्षण के व्याकरण पाठों का सम्पादन किया।

(iv) प्रकाशन के लिये शोध-पत्र प्रस्तुत किये।

(v) ''संस्कृत एवं कम्पयूटर'' विषय पर केन्द्रिय विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा आयोजित राष्ट्रिय कार्यशाला में एक रिसोर्स व्यक्ति के रूप में सहभागिता की।

(vi) ''संस्कृत ग्रंथों में विज्ञान'' विषय का जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलन में सहभागिता की।

(vii) जगत तारन कन्या डिग्री महाविद्यालय में संस्कृत कम्पयूटरस् पर एक विशेष व्याख्यान दिया।

(viii) राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा आयोजित संस्कृत कम्पयूटरस् पर कार्यशाला में सहभागिता की।

(ix) परिसर एवं मुख्यालय कार्यालय द्वारा प्रदत्त शैक्षिक गतिविधियाँ में सहभागिता की।

5. डॉ. जर्नादन प्रसाद पाण्डेय मणि (सहआचार्य)

(i) नृपविलासति का सम्पादन किया।

(ii) गंगानाथ झा परिसर' (2009-10) की ''उषती'' का सम्पादन किया।

(iii) आठ शोध छात्रों का शोध निर्देशन।

(iv) राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान एवं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा 25-5-2009 से 13-6-2009 तक राजीव गाँधी परिसर, श्रृंगेरी में आयोजित सर्व धर्म कार्यशाला में सांस्कृतिक गतिविधियों का संयोजन किया।

(v) संस्कृत नाट्यशाला में सहभागिता की।

(vi) कौमुदी महोत्सव में अभिनित संस्कृत नाटक ''इन्द्रजलम्'' का निर्देशन किया।

(vii) चार शोध सम्मेलनों और दो अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलनों में सहभागिता की।

(viii) पाँच संस्कृत शोध पत्रिकाओं में पाँच शोध-पत्र प्रकाशित।

(ix) आँठवें संस्कृत कवि सम्मेलन में भाग लिया और संस्कृत भाव्य पाठ प्रस्तुत किया।

(x) जापान में क्योटो विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत कवि सम्मेलन में संस्कृत काव्य पाठ किया।

6. डॉ. अपराजिता मिश्रा (सहायक आचार्य)

(i) विश्वनाथ रानाडे लिखित रामविलासकाण्यम् के कार्यों का सम्पादन किया और जयकृष्ण के ध्रुव चरित्रम् का सम्पादन कार्य सम्पूर्ण किया।

(ii) लक्ष्मीनारायण के विलासरत्नमाला एवँ गोपाल के गोपाल विवक् का सम्पादन कार्य प्रगति पर है।

(iii) ऋग्वेद-भाष्य कोश परियोजना में सहायता की।

(iv) इलाहाबाद में राष्ट्रिय सम्मेलन में सहभागिता की एवँ शोध पत्र प्रस्तुत किया।

(v) धर्मज्ञान संस्कृत महाविद्यालय, प्रयाग में राष्ट्रिय सम्मेलन में शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

(vi) गंगानाथ झा परिसर पत्रिका में शोध-आलेख प्रकाशित किये।

(vii) राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की दूरस्थ शिक्षा के पाठयक्रम के लिये पाठ-लेखन किया।

7. डॉ. शैलजा पाण्डे (शोध सहायक)

(i) ऋग्वेद भाष्य कोश खण्ड भाग प्रेस में।

(ii) ''सत्योपख्यन्'' के कार्यों का सम्पादन।

(iii) वार्षिक पत्रिका उषती का सह-सम्पादन।

8. श्री रामचन्द्र (शोध सहायक)

(i) ''विष्णुभक्तिकल्पलता'' ग्रंथ का सम्पादन कार्य।

(ii) ''विश्वेश्वरी'' का सम्पादन कार्य प्रगति पर है।

9. श्री सुरेश पाण्डे (शोध सहायक)

(i) लघुपसर्गदीपिका का सम्पादन कार्य।

(ii) शाखा से देवनागरी लिपि में माइक्रोफिल्मिंग रील कार्य प्रगति पर है।

सूचना का अधिकार कानून:

प्राप्त शिकायतों की संख्या : 5

इन सूचनाओं के प्रति दिये गये उत्तर : 5

7.2 श्री सदाशिव परिसर, पुरी (उड़ीसा)

परम्परागत संस्कृत अध्ययन-अध्यापन में चिरकाल से सम्बद्ध, राज्य सरकार के अन्तर्गत संचालित पूर्ववर्ती सदाशिव संस्कृत कॉलेज, पुरी का 15 अगस्त, 1971 को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के द्वारा अधिग्रहण किया गया। प्रबन्धन के अन्तरण के पश्चात् पुराने सदाशिव संस्कृत कॉलेज, पुरी का नाम बदल कर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, पुरी रखा गया। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान को मानित विश्वविद्यालय की पदवी मिल जाने के कारण अब यह राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के श्री सदाशिव परिसर, पुरी के रूप में जाना जाता है।

परिसर के शैक्षिक क्रियाकलाप 4.78 एकड़ भूमि पर नव-निर्मित भवन में आरम्भ हो गए हैं। परिसर में पाठकों के लिए विभिन्न विषयों पर लगभग 50000 पुस्तकों, हस्तलिपियों और पत्रिकाओं से युक्त अति समृद्ध पुस्तकालय है।

यह परिसर साहित्य, नव्य व्याकरण, धर्मशास्त्र, पुराणेतिहास, सिद्धान्त ज्योतिष, फलित ज्योतिष, अद्वैत वेदान्त, सांख्य योग, नव्य न्याय, सर्वदर्शन आदि विभिन्न विभागों में प्राक् शास्त्री से आचार्य तक शिक्षण प्रदान करता है। परिसर विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) उपाधि हेतु शोध कार्यक्रम भी प्रस्तुत करता है।

इन विषयों के अतिरिक्त, संस्थान के पाठ्यक्रमों के अनुसार शास्त्री व प्राक्शास्त्री की कक्षाओं में अंग्रेजी, हिन्दी, उड़िया, इतिहास, गणित और कंप्यूटर शिक्षा जैसे कुछ आधुनिक विषयों का अध्यापन किया जा रहा है। पर्यावरण अध्ययन का ज्ञान भी इन कक्षाओं में प्रदान किया जाता है। परिसर में बी.एड. के बराबर शिक्षाशास्त्री (प्रशिक्षण) पाठ्यक्रम भी चलाया जाता है।

इस वर्ष में प्राक् शास्त्री से विद्यावारिधि तक कुल 705 छात्र पंजीकृत थे। इन छात्रों में से 449 छात्राएँ थीं। 196 छात्रों को छात्रावास सुविधा प्रदान की गई थी।

समारोहों/सम्मेलनों की सूची

(i) संस्कृत सप्ताहोत्सव : 3-7 अगस्त, 2009.

(ii) हिन्दी दिवस : 14.9.2009.

(iii) अखिल भारतीय युवा महोत्वसव: 27.11.2009 से 29.11.2009.

(iv) अखिल भारतीय स्पर्धा: 30.11.2009 से 2.12.2009.

(v) वार्षिक समारोह : 23.12.2009.

(vi) विस्तार व्याख्यान : व्याकरण 26.2.2010 को प्रो. आर. च. पण्डा द्वारा।

वर्ष 2009-10 के दौरान शिक्षाशास्त्री कक्षा की गतिविधियाँ

(i) दाखिला : 6 एवं 7 जुलाई, 2009.

(ii) सत्र प्रारम्भ : 14.7.2009.

(iii) प्रथमोपचार प्रशिक्षण : 1.9.2009 से 11.9.2009.

(iv) शिक्षक दिवस समारोह: 5.9.2009.

(v) अध्यापन अभ्यास : 14.9.2009 से 14.11.2009.

(vi) स्काऊट एवं गाईड प्रशिक्षण शिविर: 14.12.2009 से 21.12.2009.

(vii) शैक्षिक भ्रमण : 20.1.2010 से 25.1.2010.

(viii) अन्तिम शिक्षण : 9.2.2010 से 14.2.2010.

(ix) विस्तार व्याख्यान : 28.1.2010 को डॉ. ए. आर. एन. अर्लिट्टी द्वारा।

सम्मेलन/ओरियन्टेशन/पुनश्चर्या पाठयक्रम

डॉ. महेश झा, पुनश्चर्या पाठयक्रम : 18.8.2009 से 7.9.2009.

डॉ. एस. एन. महलिक, पुनश्चर्या पाठयक्रम: 18.8.2009 से 7.9.2009.

7.3 श्री रणवीर परिसर, जम्मू (जम्मू एवं कश्मीर)

जम्मू एवं काश्मीर के पूर्व महाराज श्री रणवीर सिंह जी के द्वारा संस्थापित पूर्ववर्ती श्री रघुनाथ संस्कृत महाविद्यालय का अधिग्रहण 1 अप्रैल, 1971 को संस्थान द्वारा अंगीभूत विद्यापीठ के रूप में किया गया तथा इसका नाम श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ रखा गया। संस्थान की घोषणा मानित विश्वविद्यालय के रूप में किए जाने पर विद्यापीठ का नामकरण पुनः श्री रणवीर परिसर के रूप में किया गया। यह व्याकरण, ज्योतिष (फलित एवं सिद्धान्त), साहित्य, दर्शन, शिक्षा-शास्त्र एवं काश्मीर शैव दर्शन कोश योजना रूपी छः विभागों के माध्यम से कार्यरत है। प्राक् शास्त्री से आचार्य तक के छात्र यहाँ विभिन्न विषयों के विद्वान शिक्षकों से शिक्षा प्राप्त करते हैं। संस्कृत अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए 1979 में शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) पाठ्यक्रम आरम्भ किया गया। शास्त्री स्तर तक पारम्परिक विषयों के साथ हिन्दी, डोगरी, अंग्रेजी, राजनीतिशास्त्र तथा इतिहास जैसे आधुनिक विषय पढ़ाए जाते हैं। छात्रों हेतु कम्प्यूटर शिक्षा, पर्यावरण अध्ययन, संगीत कक्षा और योग प्रशिक्षण की भी अच्छी व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त, परिसर विद्यावारिधि (पी-एच.डी) उपाधि प्रदान करने हेतु शोध कार्यक्रम प्रदान करता है। अब तक इस केन्द्र से लगभग 100 शोध-छात्रों को यह उपाधि मिल चुकी है और 4 छात्रों का शोध कार्य प्रगति पर है। परिसर ने कश्मीर शैव दर्शन शब्दकोश नामक महत्वपूर्ण योजना का बीड़ा उठाया है। इसका उद्देश्य कश्मीर शैव दर्शन शब्दकोश का संकलन करना है। इसमें समृद्ध पुस्तकालय है और इसे अब तक 20 रचनाओं के प्रकाशन का श्रेय मिल चुका है।

वर्ष 2009-10 में विभिन्न कक्षाओं में प्रविष्ट छात्रों-छात्राओं की कुल संख्या 378 थी जिसमें 46 छात्राएँ थीं। 184 छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गईं। 18 छात्राओं और 67 छात्रों को छात्रावास सुविधा प्रदान की गई।

परिसर की पाठ्यतेर गतिविधियाँ

परिसर द्वारा त्रिदवसीय ''शैव आगम व्याख्यानमाला'' का आयोजन 28 जनवरी, 2010 से 30 जनवरी, 2010 तक किया गया, जिसमें अपनी उपस्थिति से एवं व्याख्यान देकर शोभा बढ़ाई-

1. प्रो. वेद कुमारी घई, भूतपूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।
2. प्रो. बदरीनाथ कल्ला।
3. प्रो. श्रीवत्स शर्मा।
4. डॉ. गंगा दत्त विनोद।
5. प्रो. लोकेश वर्मा, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।
6. प्रो. जे. एन. वलिय, संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।
7. प्रो. रमणीक जलाली, संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।

परिसर ने दो दिवसीय संस्कृत व्याख्यान माला का आयोजन 30 मार्च 2010 से 31 मार्च 2010 तक दिया। निम्नलिखित विद्वानों ने निम्नलिखित व्याख्यान दिये।

1. प्रो. वेद कुमार घई, भूतपूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू ने ''नीलमत् पुराण'' विषय पर।
2. प्रो. बदरीनाथ कल्ला ने ''शैव आगम'' विषय पर।
3. प्रो. सत्यपाल श्रीवत्स ने ''भाषा-विज्ञान'' पर।

संस्कृत दिवस समारोह का आयोजन किया जो एक सप्ताह तक चला जिसमें संस्कृत में परिचर्चा, कविता पाठ कवि सम्मेलन एवं विभिन्न अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमो को आयोजित किया गया। इस अवसर पर स्थानीय विद्वानों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों को आमन्त्रित किया गया। संस्कृत भाषा के प्रचार व प्रसार के लिये विभिन्न उपाय किये गये। 15 अगस्त 2009 को स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया और शहीदों को श्रृद्धांजलि दी गयी। हिन्दी पखवाड़ा भी मनाया गया तथा समापन समारोह 16, सितम्बर को आयोजित किया गया। विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे कविता पाठ और अनेकों स्पर्धायें परिसर में आयोजित की गई, विजेता छात्रों को पुरस्कार वितरित

किये गये। प्रो. नीलम सराफ, हिन्दी विभागाध्यक्ष मुख्य अतिथि थीं। पूर्व-निदेशक, जम्मू एवं कश्मीर रेडियो स्टेशन श्री जितेन्द्र ऊधमपुरी का प्राचार्य द्वारा शाल एवँ स्मृति चिन्ह से सम्मान किया गया।

इसके अतिरिक्त, गाँधी जयन्ती दिवस, शिक्षक दिवस, गणतन्त्र दिवस एवँ वसन्त पञ्चमी परिसर में मनाये गये। शिक्षा शास्त्री एवं शिक्षा आचार्य के छात्रों के लिये निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये गये-

(i) प्रथमोपचार प्रशिक्षण- 20 अक्टूबर, 2009 से 22 अक्टूबर, 2009।

(ii) स्काउट एवं गाइड प्रशिक्षण- 26 फरवरी, 2010 से 5 मार्च 2010।

(iii) शैक्षिक भ्रमण- 26 मार्च, 2010 को इसके अतिरिक्त, प्रत्येक बुधवार को संस्कृत भाषा संवाद कौशल कक्षायें और प्रत्येक शुक्रवार को साप्तहिक सम्मेलन वाग्वर्धिनी सभा का आयोजन किया गया।

शिक्षण संकाय ने वर्ष के दौरान अपने योगदान के साथ-साथ निम्नलिखिति कार्यक्रमों में भाग लिया।

(1) श्री रोमेश सिंह।

(2) डॉ. भरत भूषण।

(3) डॉ. नागेन्द्र झा।

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में आयोजित वेद सम्मेलन में भाग लिया।

शरतचन्द्र शर्मा

संस्थान के मुख्यालन द्वारा आयोजित परिक्षाओं में चयन आधारित आकलन व्यवस्था का प्रारम्भ की कार्यशाला में भाग लिया।

डॉ. वी. एन. झा

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय शास्त्रार्थ परिषद् में सहभागिता की।

परिसर के छात्रों ने 10 नवम्बर, 2009 से 12 नवम्बर, 2009 तक राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) द्वारा आयोजित कौमुदी महोत्सव के दौरान श्रृंगेरी परिसर द्वारा आयोजित ''न्याय सिद्धान्त मुक्तावली'' कार्यशाला में भाग लिया। परिसर के छात्रों ने संस्कृत नाटक अभिज्ञान शांकुन्तलम अभिनीत किया और तृतीय पुरस्कार जीता। परिसर के छात्रों ने जयपुर परिसर (राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान) में हुई विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में भाग लिया और पाँच पुरस्कार जीते। इसके अतिरिक्त, परिसर ने 2009-10 की हस्त पुस्तिका एवँ पत्रिका 2009-10 को प्रकाशित किया। परिसर में ई-ग्रन्थालय सॉफ्टवेयर द्वारा साहित्य तथा पुस्तकालय ग्रंथों के स्वचलन का कार्य चल रहा है।

7.4 गुरुवायूर परिसर, पुरनाट्टुकरा, त्रिचूर (केरल)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), गुरूवायूर परिसर भारत सरकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली द्वारा राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों में चल रहे इस परिसरों में से एक है।

गुरूवायूर परिसर 16 जुलाई, 1979 को गुरूवायूर साहित्य दीपिका संस्कृत विद्यापीठ, पवस्ती, गुरूवायूर के समीप, जिसे स्वर्गीय श्री पी. टी. कुरिअको से मास्टर द्वारा स्थापित किया गया था के अधिग्रहण के पश्चात् अस्तित्व में आया। भूतपूर्व विद्यापीठ ने केरल राज्य के भीतर और बाहर शास्त्री और आचार्य स्तर पर संस्कृत शिक्षण के एक केन्द्र के रूप में सर्वप्रथम 1934 में मद्रास विश्वविद्यालय, सन् 1958 में केरल विश्वविद्यालय और सन् 1968 में कालिकट विश्वविद्यालय से सम्बद्ध होते हुए प्रतिष्ठा अर्जित की थी। प्राचीन पारम्परिक स्तर का यह केन्द्र जनवरी 1970 को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय से सम्बद्ध हुआ। 7 मई, 2002 को संस्थान को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली के एक घटक के रूप में मानित विश्वविद्यालय घोषित किया गया।

गुरूवायूर परिसर के दो केन्द्र हैं, एक पुरनाट्टुकरा में और एक पावर्टी में। मुख्य केन्द्र पुरनाट्टुकरा में सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों सहित 14 एकड़ के क्षेत्र में स्थित है। इसमें मुख्य शैक्षिक खण्ड, प्रशानिक खण्ड, पुस्तकालय, छात्र व छात्रा छात्रावास, अतिथि गृह, प्रेक्षागार, क्रीड़ा-क्षेत्र, अर्ध-क्रियाशील भवन और आवास गृह समाहित हैं। पावर्टी का केन्द्र 50 सेन्ट क्षेत्र में स्थित है। इस केन्द्र का पुनर्नामकरण, पी. टी. कुरियाकोसे स्मृति भवन किया गया है। यह एक मंजिला भवन है, जिसमें दो बड़े हॉल कमरे, एक प्रशासनिक कक्ष तथा आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न दस श्रेणी कक्ष हैं।

पी. टी. कुरियाकोसे स्मृति भवन में अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण और संस्कृत शिक्षा प्रति हेतु पत्राचार पाठयक्रम के अधीन त्रिमासीय कक्षायें चलायी जाती हैं। यह संस्थान पाण्डुलिपि संग्रह का भी यह केन्द्र है।

संस्थान और परिसर के पदाधिकारी अगले शैक्षिक सत्र से इस केन्द्र में एम. एड. पाठयक्रम प्रारम्भ करने के लिये प्रयास कर रहे हैं।

परिसर की स्थिति

गुरूवायूर परिसर केरल के त्रिचूर जिले में अदत् पंचायत के एक शैक्षिक काम्पलेक्स में स्थित है और अमला चिकित्सा महाविद्यालय, रामकृष्ण आश्रम, गुरूकुलम पब्लिक हायर सैकेण्डरी विद्यालय, शारदा कन्या हायर सैकेण्डरी विद्यालय, केन्द्रीय स्कूल, एवं आई. ई. इस. इंजीनियरिंग महाविद्यालय से घिरा है। त्रिचूर कस्बे से गुयवायूर परिसर उत्तर-पश्चिम दिशा में 8 किलोमीटर दूर है। नेदुमावस्येरी में कोच्चि अन्तर्राष्ट्रिय विमान पत्तन परिसर से केवल 61 किलोमीटर की दूरी पर है।

गुरूवायूर परिसर के दो क्रियाशील केन्द्र हैं:

1. पुरनाट्टुकरा अर्थात् मुख्य परिसर।
2. पावर्टी मे कुरियाकोसे मास्टर स्मृति भवन, मुख्य परिसर से 15 किलोमीटर दूर।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम

वर्तमान में पुरनाट्टुकरा परिसर अध्ययन के निम्नलिखित पाठ्यक्रम प्रस्तुत करती है।

1. प्राक् शास्त्री (इण्टरमीडियट)
2. शास्त्री (स्तानक)-वेदान्त, साहित्य, व्याकरण, न्याय एवं ज्योतिष में।
3. आचार्य (स्नातकोत्तर)- वेदान्त, साहित्य, व्याकारण, न्याय एवं ज्योतिष में।
4. शिक्षा शास्त्री
5. विद्यावारिधि

परिसर छात्रों को आधुनिक संसार के लिये सक्षम बनाने की दृष्टि से इतिहास, अंग्रेजी, मलयालम, हिन्दी, कम्पयूटर शिक्षा एवं पर्यावरण मध्ययन जैसे आधुनिक विषयों में प्राक् शास्त्री से लेकर शास्त्री पाठयक्रम तक के पाठयक्रम प्रस्तुत करती है।

प्रतिवेदन के अधीन प्रस्तुत शैक्षणिक वर्ष में प्राक् शास्त्री से विद्यावारिधि तक विभिन्न पाठयक्रमों में कुल 407 छात्रों का पंजीयन किया गया है। 244 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की गयी। इसके अतिरिक्त, राज्य सरकार के जन-कल्याण विभाग ने 39 अनु. जाति, 2 अनु. जनजाति तथा 2 अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की गयी।

वर्ष में परिसर के क्रियाकलाप

डॉ. पी. जी. श्रीनिवासन्, डॉ. वी. के. शैलजा एवँ डॉ. सी. एल. सिसली, व्याकरण विभाग के रीडरों को कैरियर एडवॉसमेन्ट योजना के अन्तर्गत पूर्वव्याप्ति से प्रोफेसर के रूप में पदोन्नति दी गई, डॉ. के. सरलादेवी, व्याख्याता व्याकरण विभाग को पूर्वव्याप्ति से वरिष्ठ व्याख्यता के रूप में पदोन्नत किया गया। न्याय विभाग के डॉ. बालामुरुगन एवँ डॉ श्रीधरन तथा शिक्षा शास्त्र विभाग के डॉ. अशोक कुमार कचुवा एवँ डॉ. बी. पी. एम. श्रीनिवास को भी सी. ए. एस. के अन्तर्गत ग्रेड प्रमोशन दिया गया।

श्रीमती पी. बी. राधा, प्रवर लिपिक लेखा विभाग सहायक के रूप में पदोन्नत हुई, श्रीमती एलिजाबेथ, पी. जे. पुस्तकालय सहायक पुस्तकालय में अवर लिपिक (तदर्थ) के रूप में पदोन्नत हुईं। श्री. पी. एस. राधाकृष्ण, चौकीदार एवं श्री. पी. ए. मोहनन्, चौकीदार क्रमशः पुस्तकालय सहायक एवं चपरासी के रूप में नियुक्त

हुए। श्री मैरी दास, स्टॉफ़ कार चालक ग्रेड-II स्टॉफ कार चालक के रूप में पदोन्नत हुए।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निरीक्षण

11.8.2009 को एक समिति ने जिसमें प्रो. पंकज चाँदे, कुलपति, कविकुलगुरू कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, नागपुर (अध्यक्ष), डॉ. सुधारानी पाण्डे, कुलपति, उत्तरांचल संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार (सदस्य) तथा डॉ. शुक्ला मुखर्जी, परियोजना अधिकारी (संस्थान की प्रतिनिधि) ने वि. अ. आ. के निर्देशन पर परिसर के कार्यों की समीक्षा की।

पाठ्येतर शिक्षण क्रियाकलाप

यह परिसर भी राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के अन्य परिसरों के समान त्रिभाषा-फार्मूला सहित आधुनिक ऐच्छिक विषयों के साथ-साथ संस्कृत शिक्षण के पारंपारिक तरीके के प्रति प्रतिबद्ध है। शिक्षण कार्य के अतिरिक्त, परिसर ने वाग्वर्धिनी परिषद्, वाक्यार्थ परिषद, विस्तार व्याख्यान माला (राष्ट्रिय स्तर) और सम्मेलन आयोजित किये। परिसर छात्रों की सभी श्रेष्ठ क्षमताओं को बाहर लाने के लिये पुस्तकालय, ललित कलाओं, क्रीड़ा और खेल के क्षेत्रों में सभी पाठ्येतर क्रियाकलापों को उपलब्ध कराती है।

वाग्वर्धिनी परिषद्

वाग्वर्धिनी परिषद् छात्रों के लिये अपनी सर्वांगीण शैक्षणिक श्रेष्ठता को विकसित करने के लिये एक मंच है। विभिन्न विधाओं के छात्रों और स्तनातक छात्रों के प्रतिनिधियों के लिये विभिन्न संकायों के निर्देशन में विभिन्न मंच हैं। स्नातोकत्तर छात्रों के लिये प्राचार्य द्वारा नियुक्त एक संकाय सदस्य के निर्देशन में एक सामूहिक मंच है। सन् 2009-10 के लिये वाग्वर्धिनी सभा का उद्घाटन प्राचार्य प्रो. के. टी. माधव द्वारा 15.7.2009 को किया गया। वाग्वर्धिनी सभा अक्टूबर 2009 से आगे प्रत्येक बुधवार को सभी कक्षाओं के लिये 2 बजे से 5 बजे (सायंकालीन सत्र) तक संचालित की गयीं। सभा के दौरान स्टॉफ एवं छात्रों द्वारा आलेख प्रस्तुत किये गये।

निम्नलिखित विषयों पर परिचर्चा करते हुए वाग्वर्धिनी सभा का संचालन हुआ।

1. वाक्यार्थ विचार:
2. शास्त्र परिचय:
3. समकालीन विषय:
4. प्रश्नोत्तरी
5. कालविनोद:

30 से अधिक सभा हुईं। छात्रों व शिक्षकों की एक अच्छी संख्या ने सक्रियता से सहभागिता की और विभिन्न विषयों पर लेख प्रस्तुत किये।

वाक्यार्थ परिषद्

वाक्यार्थ परिषद् एक अन्य मंच है, जहाँ परिसर का स्टॉफ छात्रों के समक्ष आदर्श वाक्यार्थ प्रस्तुत करता है और छात्रों को पारम्परिक तरीके से वाक्यार्थ प्रस्तुत करने के लिये प्रशिक्षित किया जाता है। यह छात्रों के लिये वाक्यार्थ की दक्षता विकसित करने का मार्ग प्रशस्त करता है-पारम्परिक शास्त्रिक शिक्षण का सार।

जुलाई माह में, प्रो. के. टी. माधवन, प्राचार्य ने प्रो. च. ल. न. शर्मा, विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्री की अध्यक्षता में वाक्यार्थ परिषद् का उद्घाटन किया। डॉ. मधुसूदनम् ई., न्याय परिसर प्रमुख, डॉ. (श्रीमती) आर. प्रतिमा, वेदान्त परिसर प्रमुख, डॉ. ई. एम. राजन्, साहित्य परिसर प्रमुख एवं डॉ. वी. के. शैलजा, प्रो. व्याकरण तथा अच्छी संख्या में अन्य शिक्षकों ने आदर्श वाक्यार्थ प्रस्तुत किये।

विस्तार व्याख्यान माला

परिसर ने, पारम्परिक और आधुनिक दोनों, विभिन्न शास्त्रों के विख्यात् विद्वानों द्वारा विस्तार व्याख्यान माला आयोजित की। व्याख्यान विषय अन्तर्विषयक प्रवृत्ति के हैं जिससे कि विभिन्न शास्त्रीय अवधारणाओं का मूल्याँकन किया जा सके। यह छात्रों के मध्य विभिन्न विषयों के सिद्धान्तों की बेहतर समझ एवं स्पष्टता को सुसाध्य बनाता है। विख्यात विद्वानों द्वारा वर्ष के दौरान दिये गये व्याख्यानों के विषय इस प्रकार हैं-

क्र.सं.	विद्वान का नाम	तिथि	विषय
1.	प्रो. हरिदास भट्ट, प्राचार्य पूर्णप्रज्ञा, बंगलोर	17.11.09	शब्द बोध

2.	डॉ बालमोहन थम्वी पूर्व कुलसचिव, केरल विश्वविद्यालय	18.11.09	रस एवँ चथर्सिस
3.	प्रो. आर. वासुदेवन पोट्टी, पूर्व-डीन, एस.एस.यू.एस., कलाड़ी (राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता)	20.1109	भमत्यनुसरम् अध्यसविचार
4.	प्रो. के. चन्द्रशेखरन् नायर, पूर्व-डीन, एस. एस. यू. एस. कलाडी	9.12.09	शब्दार्थत्वसमीक्षा
5.	डॉ. वी. सुरेन्द्रन हयक्रीधातु प्राचार्य, विद्यद्री राजा मॉडल कालेज ऑफ टीचर एजुकेशन	18.11.10	दी नयू एजुकेशन ट्रैन्डस् इन 21st सैन्चुरी

भारत परम्परा एवं सांस्कृतिक केन्द्र

परिसर में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परम्परा का अध्ययन, व्यक्त तथा प्रदर्शित करने के लिये एक परम्परा एवँ सांस्कृतिक केन्द्र है। केन्द्र परिसर में प्रदर्शन एवँ व्याख्यान आयोजित करता है। कार्यक्रम को समन्वित करने के लिये प्राचार्य ने एक व्याख्यान प्रस्तुत किया। भारत परम्परा और सांस्कृतिक केन्द्र के विभिन्न क्रियाकलापों का संचालन डॉ. बी. पी. एम. श्रीनिवास और श्रीमती के. ए. जैसी के योग्य निर्देशन में हुआ।

साहित्य

साहितीयम् स्टॉफ एवँ छात्रों के लिये साहित्यिक क्षेत्रों और साथ ही साथ अक्षर श्लोक जैसी साहित्यिक अभ्यास में कविता, लघु कहानियाँ, इत्यादि के अपने योगदान को प्रस्तुत करने एवँ मूल्याकित करने का एक साहित्यिक मंच है। साहितीयम् अन्य साहित्यिक मंचों जैसे केरल साहित्य एकादमी, केरल ललित कला एकादमी, इत्यादि के साथ अच्छे कार्यक्रमों को आयोजित करने के और अवसर उपलब्ध कराता है।

प्रो. के. टी. माधवन्, प्राचार्य ने अगस्त माह में शैक्षणिक वर्ष के लिये श्रीमती. पी. इन्दिरा की अध्यक्षता में साहितीयम का उद्घाटन किया। अच्छी संख्या में क्रियाकलापों का आयोजन हुआ।

राष्ट्रिय सेवा योजना

स्वतन्त्रता के समय से ही छात्रों को राष्ट्रिय सेवा में सम्मिलित करने की इच्छा के प्रति बढ़ती जागरूकता है। परिसर ने राष्ट्रिय सेवा योजना की एक शाखा खोलने की पहल की। डॉ. के. के. हर्षकुमार और डॉ. (श्रीमती) के. सरलादेवी राष्ट्रिय सेवा योजना के प्रभारी हैं। इस परिसर के छात्रों ने योजना के प्रति अच्छी रूचि प्रदर्शित की है। विभिन्न क्रियाकलापों के एक भाग के रूप में, राष्ट्रिय सेवा योजना ने एक रक्तदान शिविर और एच.1 एन.1 के प्रति एक जागरूकता शिविर का आयोजन परिसर में एवं उसके आस-पास किया। इसके अतिरिक्त राष्ट्रिय संस्कृत सेवा के छात्रों ने राष्ट्रिय सेवा योजना की रामकृष्ण आश्रम, एच. एस. एस. पुरनट्टुकर की शाखा एवं गुरूवायूर परिसर के संयोजन से आयोजित दो दिवसीय अंहिसा शिविर में भाग लिया। परिसर ने रोधक दवायें लेकर 11.11.2009 को राष्ट्रिय फिलेरिया दिवस को मनाया। स्वास्थ केन्द्र, अदत के चिकित्सकों ने स्टॉफ और छात्रों को व्याख्यान दिये और दवाईयाँ (औषधियाँ) बाँटी। प्रो. एम. हरिदास, अध्यक्ष, शास्त्र साहित्य परिषद् ने परिसर में राष्ट्रिय सेवा योजना का उद्घाटन किया।

सम्मेलन

न्याय विभाग

न्याय विभाग ने 17.11.2009 को परिसर में एक राष्ट्रिय सम्मेलन का आयोजन किया। डॉ. ए. वेंकट राधेश्याम, सी. एस. एस. वी. कांचीपुरम् ने ''परमाणुवाद'' विषय का आधार वक्तव्य दिया। प्रो. टी. आर्यदेवी, शास्त्र चूडामणि विद्वान ने ''परमाणुविषये श्री शंकराचार्यमत्स्य विमर्श'' विषय पर एक व्याख्यान दिया। डॉ. के. जी. कुमारी ने ''पीलुपकपितरपकवाद'' पर एक व्याख्यान दिया। डॉ. के. ई. मधुसूदनन्, विभागाध्यक्ष ने अध्यक्षीय भाषण दिया।

साहित्य विभाग

साहित्य विभाग ने वर्ष के दौरान राष्ट्रिय सम्मेलन का आयोजन 18.11.09 को किया। डॉ. डी. वासुदेवन, रीडर, एस. एस. यू. कालाडी ने ''रीति और स्टाईल'' विषय पर प्रो. छत्रनाथ अचुथनुन्नी, पूर्व डीन, कालिकट विश्वविद्यालय ने ''थ्योरी ऑफ ध्वनि एण्ड पोस्ट मार्डन

क्रिटिकल थ्योरी'' विषय पर और डॉ. के. वी. विश्वनाथन् व्याख्यता, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, पुरूनट्टुकरा ने ''प्रहसन इन संस्कृत एण्ड एबसर्ड थियेटर'' विषय पर व्याख्यान दिये। सम्मेलन का उद्घाटन डॉ. बालमोहन थम्बी, पूर्व कुलपति, केरल विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। डॉ. ई. एम. राजन (विभागाध्यक्ष) ने संचालन का कार्य किया।

व्याकरण विभाग

व्याकरण विभाग ने 19.11.2009 को राष्ट्रिय सम्मेलन का आयोजन किया। प्रो. आर. वासुदेवन पोट्टी, पूर्व डीन, एस.एस.यू., कलाडी ने "प्रतिपादिकम्" विषय पर और डॉ. पी.एन. सुदर्शन, व्याख्यता, राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, त्रिप्पुनिथुरा ने ''वर्णपदस्फोतविचार'' विषय पर व्याख्यान दिये। डॉ. पी. जी. श्रीनिवासन्, विभागाध्यक्ष (व्याकरण) ने अध्यक्षीय भाषण दिया।

वेदान्त विभाग

वेदान्त विभाग द्वारा 20.11.2009 को ''अद्वैत एवं राष्ट्रियता'' विषय पर एक राष्ट्रिय सम्मेलन का आयोजन किया। प्रो. आर. वासुदेवन पोट्टी, पूर्व डीन, एम. एस. यू., कलाडी ने सम्मेलन का उद्घाटन किया एवं आधार वक्तव्य दिया। प्रो. के. पी. बाबूदास, सेवानिवृत्त प्रो. वेदान्त, श्रीशंकर महाविद्यालय, कलाडी ने ''मायावध'' पर एक शोध लेख प्रस्तुत किया। डॉ आर. प्रतिभा, रीडर एवं विभागाध्यक्ष ने समारोह की अध्यक्षता की।

सामान्य विभाग

सामान्य विभाग ने आधुनिक विषय (मलयालम एवं इतिहास) पर 16.11.09 को राष्ट्रिय सम्मेलन आयोजित किया। डॉ. थूलूर राशिधरन्, सेनानिवृत्त प्राचार्य, एस. एन. महाविद्यालय, नट्टिका ने ''केरलवर्मा पझस्सिराजा'' पर एक व्याख्यान दिया तथा डॉ. वी. जी. तम्पी, मलयालम के स्नातकोत्तर विभाग के विभागाध्यक्ष, श्री केरल वर्मा महाविद्यालय, त्रिचूर ने ''भाषा साहित्यम् एवं संस्कृति पर व्याख्यान दिया।

शिक्षा शास्त्री विभाग

शिक्षा शास्त्री विभाग ने 18.1.2010 को राष्ट्रिय सम्मेलन का आयोजन किया। डॉ. वी. सुरेन्द्रन्, प्राचार्य श्री विद्याधिराज मॉडल कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। डॉ के. गिरिधर राव, राजीव गाँधी परिसर, श्रृंगेरी ने ''न्यू एजुकेशन ट्रेन्डस् इन 21वीं सेन्चुरी'' पर एक शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

अन्य क्रियाकलाप

1. कौमुदी महोत्सव

कौमुदी महोत्सव का आयोजन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली द्वारा 10.11.09 से 12.11.09 तक सिरि फोर्ट प्रेक्षागार में किया गया। इस परिसर के छात्रों ने संस्कृत नाटक ''अभिज्ञान शाकुन्तलम् (सप्तम् अंक) प्रस्तुत किया और प्रथम पुरस्कर जीता।

2. अखिल भारतीय वाक् स्पर्धा 2009-10

अखिल भारतीय वाक्यस्पर्धा 10 से 20 अक्टूबर, 2009 तक जयपुर परिसर में हुई। 12 छात्र विभिन्न शास्त्रीय विषयों पर स्पर्धाओं में चुने गये और सहभागिता की।

3. युवा महोत्सव-राष्ट्रिय खेलकूद एवं साहित्यिक प्रतियोगितायें

राष्ट्रि संस्कृत संस्थान ने पूर्व शैक्षणिक वर्ष से एक साहसिक कार्य के रूप में युवा महोत्सव, एक राष्ट्र स्तरीय खेलकूद एवं साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन करना प्रारम्भ किया जिसमें संस्थान के अन्तर्गत दस परिसरों के छात्र भाग लेते हैं। इस वर्ष कार्यक्रम 27-29 नवम्बर, 2009 तक जयपुर परिसर में संचालित हुआ। 50 सदस्यों के एक दल ने जिसमे इस परिसर से 46 छात्र और 4 शिक्षक समाहित थे ने स्पर्धाओं में भाग लिया तथा ललित कलाओं में 7 पुरस्कार एवं खेलकूद में 6 पुरस्कार जीते। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा जिसने राष्ट्र के विभिन्न भागों में स्थित विभिन्न परिसरों के छात्रों को उनके मध्य स्वस्थ अन्योन्यक्रिया के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराये।

विकासात्मक क्रियाकलाप

1. परियोजनायें

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा इस परिसर के लिये स्वीकृत तीन परियोजनायें अद्वैत वेदान्त, साहित्य एवँ न्याय प्रगति पर हैं।

2. कम्पयूटेशनल भाषा वैज्ञानिक प्रयोगशाला

परिसर ने पिछले आर्थिक वर्ष के अन्त के दौरान एक भाषा-वैज्ञानिक प्रयोगशाल स्थापित की जिसमें 11 कम्पयूटर समाहित हैं और उसका उद्घाटन 7 जुलाई, 2009 को प्रो. श्रीनिवास रथ, उपाध्यक्ष, वेद विद्या प्रतिष्ठान द्वारा किया गया।

3. शास्त्र चूडामणि विद्वान

दो विद्वान अद्वैत वेदान्त के लिये प्रो. बाबूदास, के. पी. तथा व्याकरण के लिये प्रो. आर्यदेवी को शास्त्र चूडामणि योजना के अन्तर्गत नियुक्त किया गया और उनकी सेवायें छात्रों के लिये उपलब्ध हैं।

4. साहित्य दीपिका संस्कृत महाविद्यालय का शताब्दी महोत्सव

संस्थान ने शताब्दी महोत्सव के संबंध में त्रिदिवसीय कार्यक्रम आयोजित करने के लिये 5,15,000 रूपये स्वीकृत किये। समारोह दिनांक 21.2.2010 से 23.2. 2010 तक आयोजित किये। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान मानित विश्वविद्यालय ने साहित्य दीपिका संस्कृत महाविद्यालय, पावट्टी का शताब्दी महोत्सव मनाने का निर्णय लिया, जिसे वर्ष 1979 में भारत सरकार द्वारा अधिग्रहित किया गया था। पूर्व संस्थान की स्थापना संस्कृत प्रत्यमजनम् श्री पी. टी. कुरियाकोसे मास्टर द्वारा की गयी थी।

श्री के. पी. राजेन्द्रन, माननीय राजस्व मंत्री, केरल सरकार ने 21 फरवरी, 2010 को 10.30 बजे प्रातः पावट्टी परिसर में शताब्दी महोत्सव का उद्घाटन किया। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी विश्वविद्यालय के कुलपति ने समारोह की अध्यक्षता की। पी. टी. कुरियाकोसे स्मृति व्याख्यान माला का भी उद्घाटन किया गया। प्रो. वी. एन. राजेशखरन् पिल्लई, कुलपति, इग्नू, नई दिल्ली ने श्री के. एल. सेबसटियन (विद्यापीठ के भूतपूर्व अंग्रेजी शिक्षक) द्वारा लिखित पुस्तक ''साहित्य दीपिका से संस्कृत विद्यापीठ'' को विद्वान श्री पी. के. जोश मास्टर को भेंट कर पुस्तक का विमोचन किया। प्रो. आर. देवनाथन, कुलसचिव, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ने सभा का स्वागत किया तथा प्रो. पी. जी. श्रीनिवासन् ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। श्री मुरली पेरून्नेली, विधानसमभा सदस्य, श्री बाबू एम. पलिस्सेरी, विधानसभा सदस्य, श्री थेरम्बिल रामकृष्णन्, विधानसभा सदस्य एवँ श्री के. वी. अब्दुल कादिर, विधानसभा सदस्य ने अवसर पर अपने उद्भाषण दिये और साहित्य दीपिका महाविद्यालय की साहित्यिक विभूतियों श्री पी. टी. कुरियाकोसे मास्टर, प्रो. एम. पी. सन्कुन्नी नायर, प्रो. नारायण पिशरोदी एवं प्रो. एन. पी. उन्नी के छायाचित्रों का अनावरण किया।

शोध लेखों का एक संग्रह, निबन्धमाला, गुरूवायूर परिसर का प्रकाशन का भी विमोचन हुआ। श्रीमती कोमलम् रामचन्द्रन् (अध्यक्ष, ग्राम पंचायत पावट्टी), श्री दामोदरन् मास्टर (अध्यक्ष, अभिभावक शिक्षक संघ), श्री पी. जे. सिजो (अध्यक्ष, पूर्व छात्र संघ) और श्री प्रजेश एन. एस. (अध्यक्ष, छात्र कल्याण संघ) ने बधाईयाँ दीं।

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी की अध्यक्षता में प्रो. वी. एन. राजेशखरन् पिल्लई ने ''साईस, टेकनोलॉजी एण्ड संस्कृत'' विषय पर प्रथम कुरियकोसे स्मृति व्याख्यान दिया। डॉ श्रीनिवास वरकेदी (संस्कृत एकादमी, हैदराबाद) तथा डॉ. डी. के. राना (निदेशक, सीआईइफएसएस, कोचीन) ने शोध-पत्र प्रस्तुत किये। प्रो. च. ल. न. शर्मा एवं प्रो. सी. एल. सिसली ने श्रोताओं का क्रमशः स्वागत किया और धन्यवाद ज्ञापन किया।

नाट्य शास्त्र और केरल रंगमंच पर राष्ट्रिय सम्मेलन 22.2.10 को हुआ। प्रो. आर. देवनाथन ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। डॉ के. जी. पोउलोसे, कुलपति, केरल कलामण्डलम् ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। श्री वेणु जी., निदेशक, अम्मन्नुर चचु चकिर गुरूकुलम्, डॉ एन. पी. उन्नी, पूर्व कुलपति, एम. एस. यू. एस, कलाडी एवं प्रो. पी. सी. मुरली माधवन् ने सम्मेलन में सहभागिता की। प्रो. के. पी. बाबूदास ने श्रोताओं का स्वागत किया एवं प्रो. पी. के. शैलजा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

राष्ट्रिय संस्कृत कवि सम्मेलन का उद्घाटन प्रो. श्रीनिवास रथ, उपाध्यक्ष, वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन द्वारा किया गया। प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने सम्मेलन

की अध्यक्षता की। महाकवि अक्कितम्, प्रो. विष्णु नारायनन् नम्बूदिरी, प्रो. इच्छाराम द्विवेदी, प्रो. पी. सी. मुरली माधवन्, डॉ. ई. एम. राजन ने अपनी कविताओं का पाठ किया। डॉ. के. ई. मधूसूदनन् ने अतिथियों का स्वागत किया और डॉ. आर. प्रतिभा ने धन्यवाद् ज्ञापन किया। प्राचार्य और परिसर के छात्रों ने 23.2.2010 को श्री पी.टी. कुरियाकोसे मास्टर की पुण्यतिथि पर उनको श्रृंद्धाजलि दी।

समापन समारोह का उद्घाटन डॉ क्रिस्टी एल. फरनान्डेज़, भारतीय प्रशासनिक सेवा, सचिव, भारतीय राष्ट्रपति ने किया। डॉ. जे. प्रसाद, कुलपति, एस. एस. यू. एस., कालडी ने समारोह की अध्यक्षता की। सम्मानीय राफेल थत्तिल, त्रिचूर डिओसिस के बिशप, स्वामी प्रशान्तानन्द, अध्यक्ष, एस आर के मठ-त्रिचूर, डॉ. के मोहनदास, कुलपति (चिकित्सिय विश्वविद्यालय, केरल) ने समारोह में सहभागिता की। महान विद्वान महाकवि अक्किथम्, प्रो. श्रीनिवास रथ, प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, प्रो. आर. वासुदेवन पोट्टी, विद्वान पी. के. जोश मास्टर, प्रो. विष्णु नारायण नम्बूदिरी, प्रो. एन. पी. उन्नी, प्रो. इच्छाराम द्विवेदी तथा डॉ. श्रीनिवास वय्यवेदी का सम्मान किया गया। श्री अनिल अक्कर, अध्यक्ष, अदत् ग्राम पंचायत और श्री के. एल. सेबस्टियन ने बधाई दीं। प्रो. आर. देवनाथन् ने स्वागत भाषण दिया। प्रो. के. टी. माधवन, परिसर के प्राचार्य ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

एक बड़ी संख्या में सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे ''अभिज्ञान शाकुन्तलम्'' पर कोडियत्तम्, ''करनभरम्'' और नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। परिसर पूर्व छात्रों ने ''पीपुल विल् टॉक'' कार्यक्रम पर ''सुवर्ण स्मृति'' प्रस्तुत किया।

धर्मादा पुस्कार

1. श्री पी. के. जोस मास्टर धर्मादा पुरस्कार छात्रों को जिन्होनें क्रमशः आचार्य (साहित्य) प्रथम वर्ष तथा शास्त्री तृतीय वर्ष मलयालम में प्रथम स्थान प्राप्त किया हो दिया जाता है। यह पुरस्कार इस संस्थान के स्टॉफ ने प्रारम्भ किया है। इस वर्ष यह पुरस्कार विजित पी. डी., जिन्होंने 500 में से 394 अंक तथा श्री भरत पी., जिन्होंने 100 में से 81 अंक 2009 की वर्षिक परीक्षा में अर्जित किये।

2. श्रीराम जानकी पुरस्कार (रू. 101/-) की स्थापना डॉ. आर. एन. दास द्वारा आचार्य द्वितीय वर्ष (वेदान्त) में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वालो के लिये की गयी है। पुरस्कार रागेश एस. आर. को प्रदान किया गया जिन्होंने 2009 वार्षिक परीक्षा में 1000 में से 743 अंक अर्जित किये।

3. **प्रो. पी. सी. वासुदेवन् एलायथ स्मारक पुरस्कार** 250/- रूपये का है जिसे आचार्य द्वितीय (साहित्य) परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले को दिया जाता है जिसकी स्थापना उनके सुपुत्र डॉ. पी. सी. मुरली माधवन् द्वारा की गयी है। इस वर्ष यह पुरस्कार निधीश एम. जी. को प्रदान किया गया, जिन्होंने 2009 वार्षिक परीक्षा में 770 अंक अर्जित किये।

4. प्रो. पी. टी. कुरियाकोसे मास्टर स्मारक धर्मादा नकद पुरस्कार (500/-) की स्थापना इस संस्था के सेवा निवृत्त वरिष्ठ श्रेणी व्याख्याता श्री के. एल. सेबैस्टीयन द्वारा आचार्य द्वितीय की परीक्षा में सर्वोच्च अंक अर्जित करने वाले के लिये की गयी है। पुरस्कार निधीश एन. जी. को प्रदान किया गया, जिन्होंने 2009 वार्षिक परीक्षा में 1000 में से 770 अंक अर्जित किये।

5. हनुमंत पुरस्कार की स्थापना डॉ. आर. एन. दास द्वारा आचार्य द्वितीय (व्याकरण) परीक्षा में सर्वोच्च अंक पाने वाले के लिये की गयी है। इस शैक्षणिक वर्ष के दौरान यह पुरस्कार जीसमा गुणसिंह-723 अंक को प्रदान किया गया।

6. प्रो. एस. वेंकटकृष्ण स्मारक धर्मादा पुरस्कार की स्थापना प्रो. के. टी. माधवन द्वारा आचार्य द्वितीय (साहित्य) परीक्षा में सर्वोच्च अंक पाने वाले के लिये की गयी है जिसे इस वर्ष निधीश एम. जी. (770/1000) को प्रदान किया गया।

7. ''पाणिनी पुरस्कार'' जिसकी स्थापना प्रो. वी. के. शैलजा ने अपनी स्वर्गीय माता श्रीमती लक्ष्मीकुट्टी अम्मा के नाम से व्याकरण कक्षाओं के छात्र के लिये की है, जिन्होंने राष्ट्रिय स्तर श्लाका स्पर्धा में सहभागिता की श्याम के. एस. आचार्य द्वितीय वर्ष को प्रदान किया

गया।

8. डॉ. एम. के एन्डुज स्मारक धर्मादा पुरस्कार आचार्य प्रथम वर्ष (व्याकरण) में सर्वोच्च अंक अर्जित करने वाले के लिये श्रीमती बेबी एन्डुज द्वारा स्थापित किया गया है जिसे इस वर्ष मालिनी पी. ने प्राप्त किया है।

संस्कृत दिवस

परिसर ने संस्कृत दिवस समारोह को 3-7 अगस्त, 2009 के मध्य मनाया। डॉ. जे. प्रसाद, कुल पति, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी ने समारोह का उद्घाटन किया और मुख्य वक्तव्य प्रो. सत्यनारायण-चार्यन्, विभागाध्यक्ष, साहित्य विभाग, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, तिरूपति ने दिया। प्रो. के. टी. माधवन्, कार्यवाहक प्राचार्य ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर संस्कृत में विभिन्न स्पर्धाओं का आयोजन किया गया।

परिसर के पूर्व छात्र संघ

परिसर के पूर्व छात्र संघ 21.2.2009 को अस्तित्व में आया। श्री पे. जे. श्तैजू और सुनिल मोहन को शैक्षणिक वर्ष के लिये क्रमशः अध्यक्ष और सचिव निर्वाचित किया गया। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति पूर्व छात्र संघ के मुख्य संरक्षक होंगें। परिसर के प्राचार्य संरक्षक के रूप में कार्य करेगें।

कार्यकारिणी समिति की पाँच बैठकें हुईं। पूर्व छात्र संघ ने शताब्दी महोत्सव के दौरान अनेक क्रियाकलापों को संचालित किया तथा ''पीपुल विल टॉक'' कार्यक्रम प्रस्तुत किया। पूर्व छात्र संघ ने पावट्टी केन्द्र में हजारों दिये प्रज्वलित कर शताब्दी महोत्सव मनाया।

छात्र कल्याण संघ

शैक्षणिक वर्ष के लिये छात्र कल्याण संघ का गठन 23.7.2009 को योग्यता-सह-तत्परता के आधार पर सभी कक्षाओं से निर्वाचित छात्र प्रतिनिधियों सहित किया गया। छात्र कल्याण संघ का उद्घाटन 18.8.09 को 10.30 बजे प्रातः संसद सदस्य श्री बीजू द्वारा किया गया। श्रीमती आर. मुथुलक्ष्मी, रीडर, एस. एस. यू. एस., त्रिवेन्द्रम ने आधार वक्तव्य दिया। श्रीमती उषा नंग्यर कोडियत्तम् कलाकार ने इस अवसर पर अध्यक्षता की।

डॉ (श्रीमती) पी. इन्दिरा, स्टाफ सलाहकर, छात्र कल्याण संस्था ने अतिथियों एवं अन्य लोगों का स्वागत किया। अध्यक्षीय भाषण श्री वैसख. ए. यू., संस्था के अध्यक्ष द्वारा दिया गया। श्री प्रियनन्दनन्, फिल्म निर्देशक तथा राष्ट्रिय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के पुरस्कार विजेता ने इस अवसर पर सन्देश दिया। प्रो. के. टी. माधवन, कार्यवाहक प्राचार्य ने समारोह की अध्यक्षता की। संस्था के अंग के रूप में विभिन्न समितियों जैसे ललित-कला, साहित्यिक, क्रीडा एवं पत्रिका का भी गठन किया गया। ओनम् त्यौहार की पूर्व संध्या पर ऋषिकेशन् की स्मृति में, जिनका देहान्त परिसर में अध्ययन-रत रहते हुआ, एक पुष्प अठक्कलम् स्पर्धा आयोजित की गयी।

छात्र कल्याण संघ परिसर प्रमुख की अनुमति से परिसर में विभिन्न अवधारणाओं और विभूतियों पर प्रति वर्ष विभिन्न कार्यकलाप सुनियोजित एवं संचालित करती है जैसे ललित कला दिवस, साहित्यिक दिवस, खेलकूद दिवस, शैक्षणिक भ्रमण, सम्मेलन। छात्र कल्याण संघ की प्रत्येक समिति को स्टॉफ सलाहाकार की सदस्य समिति एवं सह स्टॉफ सलाहाकार द्वारा निरिक्षण और सलाह दी जाती है।

छात्र कल्याण संघ 2009 के पदाधिकारी

छात्र कल्याण संघ के	
स्टॉफ सलाहाकर	प्रो. च. ल. न. शर्मा
संयुक्त स्टॉफ सलाहकार	डॉ ई. एम. राजन
	श्रीमती के. यू. जया
अध्यक्ष	एन. एस. प्रजीश
सचिव	सिजिल एन. एस.
उपाध्यक्ष	विन्सी टी. सी.
संयुक्त सचिव	राहुल ओ. एस.
ललित कला समिति	डॉ सुब्रह्मन्य शर्मा
संयुक्त सलाहाकार	डॉ पी. इन्दिरा
	डॉ वी. आर. भट्ट

सचिव	रन्जीत राज क.
संयुक्त सचिव	नवनीत कृष्णन्
साहित्यिक समिति	डॉ. पी. जी. श्रीनिवासन्
संयुक्त सलाहकार	डॉ. बालामुरुगन
	श्रीमती एम. ए. जेस्सी
सचिव	व्यसख ए. वी.
संयुक्त सचिव	कृष्ण वन्दना जी.
खेलकूद समिति	डॉ. अशोक कुमार कच्छवा
संयुक्त सलाहकार	डॉ. के कृष्णन् नम्बूदिरी
	डॉ. के. सरलादेवी
सचिव	सौजेश ए. वी.
संयुक्त सचिव	कन्नदास पी. जी.
पत्रिका	डॉ. वी. के. शैलजा
संयुक्त सलाहकार	डॉ. श्रीमती आर. प्रतिभा
	डॉ. के. के. हर्षकुमार
सचिव	सरिन दास टी. आर.
	विस्वम् गोपाल क.

अभिभावक शिक्षक संघ

अभिभावक शिक्षक संघ किसी भी शैक्षणिक संस्थान का एक अनिवार्य अंग है। अभिभावक शिक्षक संघ का उद्देश्य अभिभावकों एवं शिक्षकों के मध्य अच्छे सम्बन्ध बनाना है जिससे कि सभी दोषों को दूर करने के लिये बच्चों में अन्दरूनी प्रेरणा को विकसित किया जा सके। संघ संस्थान के पदाधिकारियों को अनुशासन बनाये रखने एवं लक्ष्यों को अर्जित करने में सक्षम बनाता है। गुरूवायूर परिसर में अभिभावक शिक्षक संघ 8 अगस्त, 2009 को अस्तित्व में आया। अभिभावक शिक्षक संघ की सामान्य सभा ने शैक्षणिक वर्ष 2009-2010 के लिये 21.8.2009 को श्री के. के. दामोदरन् को अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। नयी कार्यकारिणी सभा की बैठक उसी तिथि को हुई तथा पूर्व अभिभावक शिक्षक संघ के अध्यक्ष एवं सदस्यों को विदाई दी गयी। अभिभावक-शिक्षक संघ ने शैक्षणिक स्टॉफ एवं अभिभावक शिक्षक संघ के सदस्यों के साथ ही साथ छात्र कल्याण संघ के अध्यक्ष एवं सचिव की एक संयुक्त बैठक आयोजित की। शिक्षकों के साथ अन्योन्य क्रिया परिसर में अनुशासन बनाने रखने के लिये अत्यन्त प्रभावशाली रही थी।

अभिभावक शिक्षक संघ की 15.12.2009 को हुई बैठक ने सभी कक्षाओं के लिये आदर्श परीक्षा कराने का सुझाव दिया। यह भी निर्णय लिया गया कि योग्य मामलों में गरीब छात्रों के चिकित्सिय व्यय को चुकाने में सहायता की जाये। कार्यकारिणी बैठक 16.2.2010 को हुई। अभिभावक शिक्षक संघ ने 21 से 23 फरवरी, 2010 तक संचालित होने वाले शताब्दी महोत्सव की सफलता में पूरे मन से सहयोग देने की इच्छा प्रकट की। अभिभावक शिक्षक संघ ने अपने कोष से शताब्दी महोत्सव के दौरान सम्मेलन के 450 प्रतिभागियों को पेन सहित एक फाईल पैड प्रायोजित किया।

स्वतन्त्रता दिवस

स्वतन्त्रता दिवस समारोह 15 अगस्त, 2009 को 8.30 बजे प्रातः आयोजित किया गया। ध्वजारोहण के पश्चात् एक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें प्रो. च. ल. न. शर्मा, श्री बी. पी. एम. श्रीनिवास, डॉ. अशोक कुमार कच्छवा जैसे विख्यात विद्वानों एवं अन्य लोगों ने सहभागिता की।

हिन्दी सप्ताह कार्यक्रम

हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन 16.9.2009 को प्राचार्य प्रो. पी. टी. माधवन् द्वारा किया गया। 17.9.2009 को समापन समारोह में, डॉ. सी. के. थॉमस, सहायक निर्देशक, दूरदर्शन केन्द्र, त्रिचूर मुख्य अतिथि थे और उन्होंने व्याख्यान दिया। प्रो. लक्ष्मी नारायण, विभागाध्यक्ष, शिक्षा-शास्त्री विभाग ने समारोह में आधार वक्तव्य दिया।

मुख्य भाषण प्रो. के. जी. प्रभाकरण, हिन्दी विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी ने दिया। प्रो. के. टी. माधवन, प्राचार्य ने समारोह की अध्यक्षता की अध्यक्षता की। अनुवाद, भाषण, इत्यादि सहित विभिन्न स्पर्धायें छात्रों के लिये हुईं। मुख्य अतिथि द्वारा विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किये गये।

क्रीड़ा दिवस

खेलकूद प्रतिस्पर्धायें परिसर मैदान में 17 और 18

दिसम्बर, 2009 को आयोजित की गयी थीं। श्री एम. पीथम्बरन्, पूर्व कोच (प्रशिक्षक), केरल सन्तोष ट्रॉफी फुटबॉल टीम ने स्पधाओं का उद्घाटन किया।

ललित-कला एवं साहित्यिक दिवस

ललित कला एवं साहित्यिक दिवस समारोहों (**वेलिचम्**) का आयोजन परिसर में 13 से 15 जनवरी, 2010 को किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री वसु पिशरदी, कत्थकली कलाकार, पूर्व उप-प्राचार्य, केरल कलामण्डलम् ने किया तथा आधार वक्तव्य डॉ. सी. शान्ति, विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग), केरल वर्मा महाविद्यालय, त्रिचूर द्वारा वर्तमान विश्व में हिन्दी का महत्त्व पर एक व्याख्यान के रूप में दिया। 11.1.2010 को विभिन्न स्पर्धायें संचालित की गयीं तथा इस अवसर पर डॉ. सी. शान्ति द्वारा नकद पुरस्कार वितरित किये गये। प्रो. पी. जी. श्रीनिवासन्, कार्यकारी प्राचार्य ने समारोह की अध्यक्षता की।

वार्षिक दिवस

इस वर्ष के समापन समारोह के रूप में, परिसर का वार्षिक दिवस छात्र कल्याण संघ, शिक्षकों एवँ गैर-शैक्षणिक स्टॉफ के सहयोग से 20.1.2010 को 10.30 बजे आयोजित किया गया। समारोह का उद्घाटन प्रो. पी. जी. पौलोस, कुलपति, केरल कलामण्डलम्, मानित विश्वविद्यालय द्वारा किया गया तथा प्रो. रामानुज देवनाथन्, कुलसचिव, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्व-विद्यालय), नई दिल्ली ने वार्षिक वक्तव्य दिया तथा विभिन्न ललित कला, साहित्यिक एवं खेलकूद प्रतिस्पधाओं में सफल रहे प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरण किया।

सूचना का अधिकार कानून

प्राप्त शिकायतों की संख्या - 3

इन सूचनाओं के प्रति दिये गये उत्तर - 3

7.5 जयपुर परिसर, जयपुर (राजस्थान)

केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना राजस्थान संस्कृत अकादमी की संस्तुतियों के आधार पर एवं राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री के द्वारा तत्कालीन शिक्षामंत्री, भारत सरकार को किये गये अनुरोध के फलस्वरूप मई 1983 में जयपुर में हुई। अब इसका परिवर्तित नाम राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) का जयपुर परिसर है। इस परिसर को जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा 7.27 एकड़ भूमि त्रिवेणी नगर, गोपालपुरा बाई पास, जयपुर में रेलवे स्टेशन से लगभग 12 किलोमीटर दूर उपलब्ध कराई गई है। परिसर के मुख्य भवन का निर्माण तथा छात्र-छात्राओं के छात्रावास तथा नौ कर्मचारी आवास रुपये 6.00 करोड़ की लागत से पूरे हो चुके हैं।

परिसर में शोध कार्य होता है जिसके पश्चात् विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) की उपाधि दी जाती है। इसके साथ साहित्य, ज्योतिष, व्याकरण, धर्मशास्त्र, जैन दर्शन में आचार्य एवं शास्त्री स्तर का अध्यापन होता है, शिक्षा-शास्त्री (बी.एड.) शास्त्री स्तर पर तथा प्राक् शास्त्री का सीनियर सेकण्डरी स्तर पर अध्यापन होता है। परिसर द्वारा शिक्षा आचार्य (एम. एड.) कार्यक्रम भी संचालित किया जाता है। इसके अतिरिक्त छात्रों को कम्प्यूटर शिक्षा सुविधा भी उपलब्ध कराई जाती है।

विचाराधीन वर्ष में, विभिन्न कक्षाओं में कुल 964 छात्रों का पंजीकरण हुआ है। 374 छात्रों को छात्रावास की सुविधा उपलब्ध कराई गई है।

सहपाठ्य एवं पाठ्येतर गतिविधियाँ

(i) परिसर ने 6 जून 2009 से 27 जून 2009 तक संस्कृत शिविर संचालक शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का और 19 जुलाई, 2009 को चिकित्सा शिविर का आयोजन किया।

(ii) अखिल भारतीय प्राकृत साहित्य सम्मेलन का आयोजन 25 से 27 जुलाई, 2009 तक किया गया।

(iii) संस्कृत सप्ताह समारोह 3 अगस्त, 2009 से 10 अगस्त, 2009 तक आयोजित किया गया था। विभिन्न शास्त्र भाषण स्पर्धायें, परिचर्चायें एवं अन्य विभिन्न कार्यक्रमों को इस अवसर के दौरान आयोजित किये गये। देव ऋषि कलानाथ शास्त्री

मुख्य अतिथि थे। श्री नारायण प्रसाद शर्मा सम्मानीय अतिथि थे तथा क्षेत्र के स्थानीय विद्वानों और प्रख्यात विभूतियों को इस अवसर पर आमन्त्रित किया गया था।

(iv) परिसर ने 24 अगस्त 2009 से 20 नवम्बर, 2010 तक ज्योतिष प्रशिक्षण स्पर्धा आयोजित किया। योग प्रशिक्षण 6 से 7 सितम्बर 2009 को आयोजित किया गया। परिसर ने 10 सितम्बर 2009 से 17 सितम्बर 2009 तक व्याख्यान माला का आयोजन किया। अनेक प्रख्यात विद्वानों डॉ. भोलानाथ झा, प्रो. ओन्कार नाथ चतुर्वेदी (दिल्ली), डॉ गोपीनाथ शर्मा एवं प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, डॉ जगत नारायण पाण्डेय, डॉ शीतल जैन ने व्याख्यान दिये।

(v) परिसर द्वारा अखिल भारतीय संस्कृत वाक् स्पर्धा का आयोजन 23 अक्टूबर 2009 से 23 अक्टूबर, 2009 तक किया गया।

(vi) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने 30.10.2009 को परिसर का निरीक्षण किया।

(vii) वार्षिक खेलकूद प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन परिसर में 3 नवम्बर, 2009 से 9 नवम्बर, 2009 तक किया गया। इन प्रतिस्पर्धाओं में दौड़, ऊँची कूद, लम्बी कूद, बैडमिंटन, कब्बड्डी, वॉलीबाल मुख्य खेल थे।

(viii) सांस्कृतिक स्पर्धा का आयोजन 16 नवम्बर से 18 नवम्बर, 2009 तक किया गया।

(ix) युवा महोत्सव का आयोजन 27 नवम्बर, 2009 को दिया गया। परिसर के छात्रों ने विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों में सहभागिता की।

(x) समसामयिक विषयों पर परिसर में व्याख्यान माला का आयोजन किया गया जिसमें अनेक विद्वानों ने अपने विचारों को व्यक्त किया।

संकाय सदस्यों के कार्यकलाप

1. डॉ. रमाकान्त पाण्डे ने ''आधुनिक संस्कृत साहित्य का परिशीलन'' विषय पर परियोजना ली।
2. ई-पाठ्य ग्रन्थ।
3. ई-ग्रन्थालय सॉफ्टवेयर द्वारा पुस्तकालय ग्रंथों का ऑटोमेशन।

प्राकृत शोध अध्ययन केन्द्र

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने इस परिसर में प्राकृत शोध अध्ययन केन्द्र का उद्घाटन किया।

सूचना का अधिकार कानून

प्राप्त शिकायतों की संख्या - 3

इन सूचनाओं के प्रति दिये गये उत्तर - 3

7.6 लखनऊ परिसर, लखनऊ (उ.प्र.)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा अपने अंगीभूत केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ को 1986 में लखनऊ में स्थापित किया गया। मानित विश्वविद्यालय की पदवी प्राप्ति के पश्चात् संस्थान द्वारा इसका नाम परिवर्तित करके 'लखनऊ परिसर' रखा गया। इस परिसर हेतु 10 एकड़ भूमि गोमती नगर, विशाल खण्ड में लखनऊ विकास प्राधिकरण से प्राप्त की गई। यह रेलवे स्टेशन से लगभग 12 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा परिसर में रु. 2.76 करोड़ की लागत से मुख्य भवन का निर्माण हो चुका है और परिसर के क्रियाकलाप वहाँ प्रारम्भ हो गए हैं। द्वितीय चरण में छात्र-छात्राओं हेतु छात्रावास का कार्य प्रगति पर है तथा कर्मचारियों हेतु न्यूनतम आवास के निर्माण का कार्य पूरा हो गया है।

परिसर में शोध कार्य होता है जिसके पश्चात् विद्यावारिधि (पी-एच.डी) की उपाधि दी जाती है। साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष तथा बौद्ध दर्शन में शिक्षा आचार्य एवं शास्त्री स्तर पर, शिक्षा शास्त्री के(बी.एड.) शास्त्री स्तर तथा प्राक् शास्त्री के इण्टर स्तर पर शिक्षा दी जाती है। हिंदी, अंग्रेजी, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र तथा कम्प्यूटर शिक्षा जैसे आधुनिक विषयों को पारंपरिक विषयों के साथ शास्त्री स्तर पर पढ़ाया जाता है। खेलकूद एवं योग गतिविधियों हेतु यहां एक विशाल क्रीड़ा-क्षेत्र है। शिक्षकों तथा छात्रों हेतु यहाँ एक समृद्ध पुस्तकालय भी है। प्रशिक्षणाधीन छात्रों के लाभार्थ शिक्षा-शास्त्र

विभाग की प्रयोगशाला आधुनिक मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षणिक प्रविधि उपकरणों से सज्जित है।

2009-10 के दौरान विभिन्न कक्षाओं में कुल 274 विद्यार्थियों को प्रवेश मिला। इनमें से 77 छात्राएँ थीं। 136 छात्रों को छात्रावास सुविधा प्रदान की गयी। विद्यावारिधि शोध उपाधि हेतु सात विद्यार्थियों को पंजीकृत किया गया।

संस्थान के माननीय कुलपति आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी के विशेष प्रयत्न से इस परिसर के बौद्ध दर्शन विभाग के अंतर्गत पालि भाषा अध्ययन केन्द्र की स्थापना हो गयी है जिसके प्रथम चरण में पालि भाषा हेतु तीन कनिष्ठ अध्येता (जूनियर रिसर्च फेलो) व पाँच वरिष्ठ अध्येता (सीनियर रिसर्च फेलो) की नियुक्ति की जा चुकी है और सम्बन्धित लोग परिसर में कार्यभार ग्रहण कर चुके हैं। इस केन्द्र द्वारा पालि त्रिपिटक की संस्कृत छाया कराये जाने व प्राकृत की ऑनलाइन डिक्शनरी बनाये जाने की वृहद् योजना आरम्भ हो गयी है। ज्ञातव्य है कि पूर्व में अनेक बौद्ध सम्प्रदायों के संस्कृत त्रिपिटिक भी उपलब्ध थे पर काल-क्रम में आज वे लुप्त हो गये हैं। त्रिपिटक की संस्कृत में वापसी एक महान् सांस्कृतिक विरासत की पुनर्प्रतिष्ठा होगी और सभी पुरातन भाषाओं को एक साथ लेकर चलने का यत्न किया जा रहा है।

पाठ्येतर गतिविधियाँ

सितम्बर माह के प्रथम सप्ताह में त्रिदिवसीय संस्कृत दिवस समारोह का शुभारंभ हुआ, जिसके उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रो. रमेशचन्द्र तिवारी ने की। उद्घाटन परिसर के पूर्व प्राचार्य प्रो. उमारमण झा ने किया। दूसरे दिन मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती रीता बहुगुणा जोशी (प्रदेश अध्यक्ष, कांग्रेस) तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री भगेलूराम सदस्य-विधानसभा सम्मिलित हुये। 15.9.09 को संस्कृत दिवस का समापन सत्र हुआ। संस्कृत दिवस के समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. अशोक कुमार कालिया, पूर्वकुलपति, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व केन्द्रीय मंत्री तथा संसद् सदस्य डॉ. संजय सिंह उपस्थित हुये।

दि. 27.8.09 को ''नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति उत्तर प्रदेश'' की बैठक केन्द्रीय औषधि शोध संस्थान, लखनऊ में सम्पन्न हुई जिसमें परिसर द्वारा प्रकाशित पत्रिका ''गोमती'' को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। पुरस्कार के रूप में शील्ड तथा प्रमाणपत्र कार्यवाहक प्राचार्य प्रो. सर्वनारायण झा ने ग्रहण किया।

दि. 9.9.09 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की टीम का परिसर में आगमन हुआ। टीम द्वारा परिसर के कार्यालय, कक्षाओं, पुस्तकालय, छात्रावास, क्रीड़ा स्थल व क्रीड़ा उपकरणों का निरीक्षण किया गया एवं यहाँ की सुव्यवस्था से टीम के सदस्य प्रभावित थे।

28.10.2008 को अखिल भारतीय शास्त्रीय स्पर्धा हेतु लखनऊ मण्डलीय स्तर के छात्रों को आमंत्रित किया गया एवं छात्रों का चयन किया गया। इसी क्रम में दि. 8.11.2009 को राज्य स्तरीय संस्कृत भाषण प्रतियोगिता परिसर में सम्पन्न हुई। इस प्रतियोगिता में उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड राज्य के संस्कृत महाविद्यालय के छात्र उपस्थित हुए। प्रतियोगिता के बाह्य पर्यवेक्षक के रूप में प्रो. राजेन्द्र मिश्र, पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्व-विद्यालय वाराणसी, प्रो. ओम्प्रकाश पांडेय, अध्यक्ष-संस्कृत विभाग, लखनऊ विभाग, लखनऊ, प्रो. रमाशंकर मिश्र, पूर्व अध्यक्ष-संस्कृत विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, प्रो. ब्रजेश कुमार शुक्ल, संस्कृत विभाग, लखनऊ विश्वविद्यलाय लखनऊ एवं प्रो. सुरेन्द्र झा, प्राचार्य, गंगानाथ झा परिसर, इलाहाबाद उपस्थित हुये। जयपुर परिसर में आयोजित अखिल भारतीय शास्त्रीय प्रतियोगिता में उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड के हमारे छात्रों ने अपना वर्चस्व कायम करते हुये चलवैजयंती प्राप्त की। साथ ही युवा महोत्सव में सम्मिलित हुये परिसर के छात्रों ने बहुत सुन्दर प्रदर्शन कर कई स्वर्ण पदक एवं रजत पदक प्राप्त किया।

अक्टूबर माह में ही शिक्षा शास्त्री में अध्ययनरत छात्राध्यापक एवम् छात्राध्यापिकाओं का विभिन्न स्थानीय विद्यालयों में शिक्षण अभ्यास प्रारंभ हुआ। साथ ही इसी माह में त्रैमासिक अनौपचारिक शिक्षण केन्द्र का भी शुभारंभ किया गया जिसमें बढ़-चढ़ कर छात्र उपस्थित हो रहे हैं।

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली में कौमुदी महोत्सव के शुभावसर पर परिसर द्वारा मंचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् (पंचम अंक) को अखिल भारतीय स्तर पर द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस नाटक के निर्देशक प्रो. रामलखन पाण्डेय एवं सह निर्देशक डॉ. धनीन्द्र कुमार झा थे।

अन्तर्राष्ट्रीय वेद सम्मेलन, गुरूकुल कांगड़ी, हरिद्वार में 21 से 23 नवम्बर को सम्पन्न हुआ, जिसमें परिसर के अनेक प्राध्यापक सम्मिलित हुये एवं उन्होंने अपने शोध पत्रों का वाचन किया।

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ द्वारा वाराणसी में आयोजित व्यास महोत्सव में सम्पन्न होने वाली प्रतियोगिता में परिसर के पाँच छात्र सहभागी हुये।

तीन निम्नलिखित कार्यशालयें आयोजित की गयीं:

(i) डिजिटल कान्टेन्ट जनरेशन योजना-कार्यशाला का आयोजन 31.1.2009 को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली में हुआ।

(ii) डिजिटल कान्टेन्ट जनरेशन योजना-कार्यशाला का आयोजन 31.3.2009 को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली में हुआ।

(iii) डिजिटल कान्टेन्ट जनरेशन योजना-कार्यशाला का आयोजन 31.9.2009 को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली में हुआ।

सूचना का अधिकार कानून

प्राप्त सूचनाओं की संख्या - 4

इन सूचनाओं के प्रति दिये गये उत्तर - 4

7.7 श्री राजीव गांधी परिसर, शृंगेरी (कर्नाटक)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने श्री राजीवगान्धी केन्द्रीय संस्कृतविद्यापीठ की स्थापना अपने अङ्गीभूत एकक के रूप में शृङ्गेरी में 13 जनवरी 1992 को की। मानव संसाधन विकास मन्त्री, भारत सरकार की उपस्थिति में दिनांक 05.03.92 के शुभदिन पर भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम श्री आर. वेङ्टरमण के हाथों इस परिसर का उद्घाटन हुआ। इसका पुन: नामकरण राष्ट्रिय-संस्कृतसंस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के राजीव गान्धी परिसर के रूप में किया गया है। परिसर हेतु राज्य सरकार द्वारा शृङ्गेरी में 10.2 एकड भूमि प्रदान की गई है। जो कर्नाटक राज्य के चिक्कमंगलूरू जिले में स्थित है। यह मंगलूरू से 120 कि. मी., बेंगलूरू से 380 कि. मी., उडुपि से 90 कि. मी., और शिमोगा से 105 कि. मी. दूरी पर स्थित है। शिमोगा से बेंगलूरू रेलवे मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा रु. 1.63 करोड़ की लागत से परिसर के मुख्य भवन का निर्माण किया गया है। द्वितीय चरण में बालक एवं बालिकाओं हेतु छात्रावास, न्यूनतमकर्मचारी आवास का निर्माण रु. 4.17 करोड़ की लागत पर होने को है।

परिसर में साहित्य, नव्यव्याकरण, अद्वैतवेदान्त, मीमांसा, नव्यन्याय और फलितज्योतिष की शिक्षा आचार्य एवं शास्त्री स्तर पर, शिक्षाशास्त्री (बी. एड.) की शास्त्री स्तर पर तथा प्राक शास्त्री की शिक्षा प्रदान की जाती है। यहाँ शोध कार्य भी होता है। जिसको सम्पन्न करने पर शोध छात्र को विद्यावारिधि (पी. एच. डी.) की उपाधि प्रदान की जाती है। आधुनिक विषयों तथा कम्प्यूटर की शिक्षा दी जाती है।

2009-10 के शैक्षिक वर्ष में परिसर के विभिन्न पाठ्यक्रमों में 339 छात्रों को प्रवेश दिया गया। उनमें से 12 छात्र आ. जा., 16 अ.ज.जा. के थे तथा 97 छात्राएँ थीं। 88 छात्रों और 51 छात्राओं को छात्रावास सुविधा प्रदान की गई। जगद्गुरु श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी मुख्य प्रशासक, शृंगेरी श्री शारदापीठ के आशीर्वाद से परिसर के सभी छात्रों को दिन में दो बार भोजन प्रदान करवाया जाता है।

पाठ्येतरगतिविधियाँ-

छात्रों व संकाय सदस्यों के लाभार्थ ''श्री शारदा विशिष्टव्याख्यानमाला'' शीर्षक से भाषणमाला का आयोजन किया गया। आचार्य ए.पी. सच्चिदानन्द शिक्षाशास्त्र विभागाध्यक्ष एवं डॉ. सूर्यनारायणभट्ट मीमांसा व्याख्याता इस कार्यक्रम के संयोजक थे। इस वर्ष परिसर में पढ़ाए जाने वाले सात शास्त्रों में व्याख्यान माला की व्यवस्था की गई। इस व्याख्यान के लिए राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत

सुविख्यात विद्वानों को आमन्त्रित किया गया। कार्यक्रम का विस्तृत वर्णन अधोलिखित है।

- दिनांक 04.08.09 के प्रो. डि. प्रह्लादाचार्यजी पूर्वकुलपति राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठ, तिरुपति ने न्यायशास्त्र में 'समासशक्ति' विषय का भाषण दिया।
- दिनांक 08.08.09 को आचार्य श्रीधरवसिष्ठजी पूर्वकुलपति श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रियसंस्कृत विद्यापीठ नवदेहली ने शिक्षाशास्त्र में 'अनितरसाधारणी सुरवाणी' विषय पर भाषण दिया।
- दिनांक 12.10.09 को प्रो. वासुदेवन पोथी तिरूवनन्तपुरं निवृत्त वेदान्तविभागध्यक्ष कालडी श्रीशंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय ने विशिष्ट व्याख्यान दिया।
- दिनांक 13.10.09 को प्रो. एस्. सुदर्शन शर्मा, कुलपति, श्री वेङ्कटेश्वर वेदविश्वविद्यालय, तिरुपति ने साहित्यशास्त्र में विशिष्ट व्याख्यान किया।
- दिनांक 14.10.09 को प्रो. नारायण अडिग, मीमांसा विभागाध्यक्ष महाराजसंस्कृत कॉलेज मैसूरु ने मीमांमाशास्त्र में शास्त्रीयरीत्या भाषण किया।
- दिनांक 14.10.09 म.म.प्रो. श्रीवत्साङ्काचार्यजी निवृत्तप्राचार्य महिलापुरसंस्कृत महाविद्यालय चन्नै ने व्याकरणशास्त्र तथा समारोप भाषण किया।

वाक्यार्थपरिषद्-

परिसर में पूर्व से ही छात्रों के वाक्यार्थ शक्तिवर्धन एवं अध्यापकों के उत्साह वर्धन के लिए परिसर के संकाय सदस्यों द्वारा शास्त्रीयपद्धति मे शास्त्रार्थ करने की परम्परा रही है। यह कार्यक्रम प्रतिमाह एक-एक दिन होता रहा। उसके सात अधिवेशनों के विवरण अधोलिखित रूप में है। इस परिषद् को डॉ. आर. बालाजी, वरिष्ठव्याख्याता तथा डॉ. सि.एस.एस.एन. मूर्ति, वरिष्ठव्याख्याता ने सुचारु रूप से सञ्चालित किया।

1. उद्घाटन समारोह एवं प्रथम बैठक 28.07.09 को हैदराबाद का केन्द्रीय विश्वविद्यालय के आचार्य के. सुब्रह्मण्यम जी ने दीप प्रज्वालित करके उद्घाटन किया और उद्घाटन भाषण दिया इस सन्दर्भ में परिसर डॉ. सि.एस.एस.एन. मूर्ति- व्याकरण विभागाध्यक्ष, डॉ. महाबलेश्वर पि. भट्ट- वेदान्त विभागाध्यक्ष, डॉ. नवीनहोळळ-न्यायविभागाध्यक्ष ने क्रमशः इको यणचि, शास्त्रयोनित्वधिकरण, ज्ञानानां परप्रकाशत्वम् इन विषयों मे वाक्यार्थ प्रस्तुत किये।
2. दिनांक 25.08.09 को डॉ. ई. पि. श्रीदेवी-साहित्य विभागाध्यक्ष, डॉ. रामचन्द्रुला बालाजी-शिक्षाशास्त्री वरिष्ठ व्याख्याता, श्री वेंकटेश तातार्य-मीमांसा व्याख्याता, श्री एच. श्रीनाथ-ज्योतिष व्याख्याता ने क्रमशः उपमाप्रभेदाः, अनतर्दृष्टि-अधिगम, वैश्वानरेष्टि-अधिकरण और पञ्चमभाव इन विषयों में वाक्यार्थ किये।
3. दिनांक 15.09.09 को आयोजित वाक्यार्थ परिषद के तृतीयाधिवेशन में डॉ. चन्द्रकान्त, शिक्षाशास्त्र वरिष्ठव्याख्याता, डॉ. भगवान सामन्तराय, वेदान्त व्याख्याता, डॉ. सोमनाथ साहू, शिक्षाशास्त्रिव्याख्याता, श्री सि. एच. के. पद्मनाभं, व्याकरणव्याख्याता ने क्रमशः अधिगम, स्मृतिश्रुतीनां विरोध परिहारः, समशैक्षिकावसरः और सर्वादीनि सर्वनामानि इन विषयों पर वाक्यार्थ किये।
4. दिनांक 20.10.09 को आयोजित वाक्यार्थ परिषद के चतुर्थ सत्र में डॉ. चन्द्रकला आर. कोंडी, साहित्यव्याख्याता, डॉ. गणेश ति. पण्डित, शिक्षाशास्त्रिव्याख्याता, डॉ. विजयराघवाचार्य, नव्यन्यायव्याख्याता, डॉ. गिरिधरराव, शिक्षाशास्त्रिव्याख्याता ने क्रमशः मम्मटोक्तकाव्यलक्षणस्य रसपरत्वं, आत्मावलोकनविधिः, प्रलयनिरूपणम् और अवधानम् इन विषयों में व्याख्यान दिया।
5. दिनांक 04.12.09 को आयोजित वाक्यार्थ परिषद के पञ्चमसत्र में डॉ. सुब्राय वि. भट्ट, मीमांसाविभगाध्यक्ष, डॉ. मधुकेश्वर भट्ट, व्याकरण व्याख्याता, डॉ. रामचन्द्र जोयिस, साहित्यव्याख्याता ने क्रमशः अर्थापत्तेः प्रमाणान्तरत्वम्, उभयगतिरित भवति, और परिणाम-अलङ्कारः इन विषयों पर वाक्यार्थ प्रस्तुत किये।
6. दिनांक 15.12.09 को आयोजित वाक्यार्थ परिषद के षष्ठाधिवेशन में डॉ. गणेश ईश्वर भट्ट, वेदान्त व्याख्याता, श्री श्यामसुन्दर भट्ट, न्याय व्याख्याता, डॉ. हरिप्रसाद शिक्षाशास्त्रिव्याख्याता और डॉ. राघवेन्द्र

भट्ट, साहित्य व्याख्याता ने क्रमशः अखण्डार्थनिरूपणं, स्वशब्दार्थ विचारः, मेस्लोवर्यस्य अभिप्रेण सिद्धान्तः, प्रमात्रा गोचरीक्रियमाणो रसः इन विषयों पर वाक्यार्थ प्रस्तुत किये।

7. दिनांक 19.01.2010 को समायोजित वाक्यार्थपरिषद के समापन समारोह में डॉ. चन्द्रशेखर भट्ट व्याकरण व्याख्याता, डॉ. कृष्णन् नम्बूत्तिरी, साहित्य वरिष्ठव्याख्याता और डॉ. सूर्यनारायणभट्ट ने क्रमशः विकरणानाम् उत्सर्गापवाद विचारः, सरस्वत्यास्तत्त्वम्, और योगसिद्ध्यधिकरणम् इन विषयों पर वाक्यार्थ प्रस्तुत किये। बाद में आचार्य एस. कुमारशर्मामहोदय तिम्मसमुद्रम् ने समारोप भाषण दिये।

संस्कृतोत्सव-

परिसर में संस्कृतोत्सव का आयोजन अत्यन्त आकर्षक रूप में दिनांक 04.08.09 से 08.08.09 तक प्राचार्य रामानुजदेवनाथ महोदयजी के मार्गदर्शन में तथा डॉ. सुब्राय वी. भट्ट, डॉ. चन्द्रशेखर भट्ट एवं डॉ. राघवेन्द्र भट्ट के संयोजकत्व में आयोजित किया गया। अनन्त श्री विभूषित श्री श्री भारती तीर्थमहास्वामीजी ने अनुग्रह भाषण के साथ उद्घाटन समारोह का शुभारम्भ किया। द्वितीय दिन में विद्यालयीय बालकों के लिए भाषणं एवं भगवद्गीता कण्ठपाठ स्पर्धा आयोजित किया गया। श्री शंकरभट्ट महोदय ने संस्कृत भाषा में हरिकथा कार्यक्रम प्रस्तुत किया। तीसरे दिन काव्योपसना नाम से स्वरचित काव्यों का वाचन किया गया। तत्पश्चात् परिसर के विभागाध्यक्षों ने शास्त्रसपर्या कार्यक्रम में अपने शास्त्रों के लोकोपयोगिता को दर्शाया छात्रों के लिए विविधस्पर्धाओं का आयोजन किया गया। चौथे दिन शोभायात्रा का आयोजन किया गया। पाँचवे दिन वेदवन्दन कार्यक्रम में पाठशाला के वेदविद्वानों ने अष्टविकृतिपाठ की रीति को दर्शाया। समापन कार्यक्रम में राष्ट्रपतिपुरस्कृत डॉ. श्रीधरवाशिष्ठजी ने अभिभाषण करते हुए परिसर की गतिविधियों को देखकर हर्षोद्गार व्यक्त किया।

राष्ट्रिय शिक्षादिवस-

परिसर में राष्ट्रीय शिक्षा दिवस को 11.11.09 को मौलना अब्दुल कलाम आजाद जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया। आचार्य एच. लक्ष्मीनारायण शर्मा शिक्षाशास्त्रविभागाध्यक्ष गुरुवायूरूपरिसर ने पिछड़े हुए बालकों की शिक्षा के बारे में व्याख्यान दिया। डॉ. सोमनाथ साहू ने संयोजक के रूप में कार्य को सम्पन्न किया।

संस्कृत वाग्मिता एवं अभिविन्यासकार्यक्रम-

संस्कृत वाग्मिता कौशल के संवर्धन हेतु परिसर में नवागत छात्रों के लिए 10 दिवसीय सम्भाषण पाठ्यक्रम का संचालन किया गया। इसी प्रकार प्राकशास्त्री प्रथम एवं द्वितीय वर्ष, शास्त्री प्रथम वर्ष छात्रों के लिए प्रगत सम्भाषण शिविर संचालित किया गया। आचार्य रामनुजदेव-नाथाचार्यजी के मार्गदर्शन में डॉ. चन्द्रकान्त भट्ट, वरिष्ठ व्याख्याता, डॉ. राघवेन्द्र भट्ट, डॉ. चन्द्रशेखर भट्ट, डॉ. मधुकेश्वर भट्ट, डॉ. गिरिधर राव एवं वरिष्ठ छात्रों ने कार्य को भली भान्ति से संचालित किया।

वाग्वर्धिनी परिषद्-

परिसर के प्राचार्य के समुचित तत्त्वावधान में डॉ. गणेश ईश्वर भट्ट एवं डॉ. गणेश ति. पण्डित के अध्वदर्शित्व में वाग्वर्धिनी परिषद के परिणाम अत्यन्त सफल रहे। सभी कक्षाओं में से एक-एक छात्र प्रतिनिधि के रूप में चुने गये। कार्यदर्शी के स्थान पर श्री विनायक भट्ट और अश्विनी हेगडे निर्वाचित हुए तथा अन्य योग्य छात्र विभिन्न पदों पर अलंकृत हुए। इस परिषद का उद्घाटन दिनांक 23.07.09 को आचार्य जयप्रकाशनारायण-द्विवेदी श्रीद्वारकाधीश संस्कृत परिषद, द्वारका के द्वारा किया गया। प्रति गुरुवार को छात्रों द्वारा अध्यापकों के समूह के सामने वाक्यार्थ प्रस्तुत किये गये। परिषद के प्रयत्न के फलस्वरूप छात्रों का सर्वतोमुख विकास हो पाया।

वाग्वर्धिनीमहोत्सव-

दिनांक 24.01.10 से 25.01.10 तक परिसर में छात्रों के कार्यकलापों और प्रतिभाओं के सम्मान एवं संवर्धन हेतु वाग्वर्धिनी परिषद के दो दिवसीय महोत्सव आचारित हुआ। इस महोत्सव का उद्घाटन प्रो. वि. डि. हेग्डे ने किया। गोकुल निर्गम नामक यक्षगान छात्रों द्वारा प्रस्तुत किया गया। हैदराबाद से आए हुए विद्वान शिव-

कुमारजी ने अमरकोष का अष्टावधान किया। सम्मान-महोत्सव में आचार्य दोर्बलप्रभाकरशास्त्री ने वाग्वर्धिनी परिषद को अभिनन्दित करते हुए अपने काव्यरचनादि कौशलों को उपस्थापित किया।

अनौपचारिकशिक्षण-

डॉ. भगवान सामन्तराय के संयोजकत्व में श्री टि. आर. कृष्णमूर्ति ने शृंगेरी में अध्येताओं को शाम 5.00 बजे से 7.00 बजे तक प्रथमदीक्षापाठ्यक्रम को प्रशिक्षित किया। परिसर प्राचार्य महोदय के द्वारा यह केन्द्र दिनांक 28.10.09 उद्घाटित हुआ। पट्टन के प्रमुख व्यक्ति श्री पराशर जी मुख्यातिथि के रूप में रहे।

व्याकरणप्रशिक्षण कार्यशाला (परियोजना)-

दिनांक 04.01.2010 से 18.01.10 तक श्रीमती पुष्पादीक्षितजी निर्देशिका पाणिनीयशोधसंस्थानं बिलासपुर के नेतृत्व में कार्यशाला सम्पन्न हुआ। आचार्य नागराज भट्ट, अध्यक्ष सद्विद्यासंजीविनीपाठशाला शृंगेरी ने 04. 01.10 को उद्घाटन किया। डॉ. सि. एस. एस. एन. मूर्ति महोदय वरिष्ठव्याख्याता मुख्य संचालक रहे। संस्थान के नाना परिसर के 42 छात्र-छात्राओं ने प्रायः 6 बजे से रात्रि 9 बजे तक अष्टाध्यायीक्रमेण व्याकरणाध्ययन वैशिष्ट्यों का अध्ययन किया। इस वर्ग में डॉ. पुष्पादीक्षित, डॉ. सि. एस. एस. एन. मूर्ति, डॉ. एच.वि.नागराजराव, श्री जर्नादनहेगडे, श्री जि. महाबलेश्वरभट्ट, आचार्य रामानुज देवनाथन, डॉ. एस. एल. पि. आञ्जनेयशर्मा, डॉ. चन्द्रशेखर भट्ट, डॉ. कृष्णानान्तपद्मनभम, डॉ. मधुकेश्वरभट्ट, छात्रों को यथाविधि अध्यापन कार्य सम्पन्न किये जिससे छात्र अनेक प्रकार से लाभान्वित हुए।

न्यायप्रबोधनकार्यशाला-

दिनांक 27.01.10 से 10.02.10 तक सिद्धान्तमुक्तावलीग्रन्थ का अध्ययन कार्यशाला सम्पन्न हुई। इस कार्यशाला को प्रो. डी. प्रह्लादाचार्यजी ने दीप प्रज्वालन करके समुद्घाटित किया और उद्घाटन भाषण करके न्यायशास्त्राध्ययन के महत्त्व को बतलाया। डॉ. नवीनहोळळा, नव्यन्यायविभागाध्यक्ष मुख्य संचालक के रूप में कार्यनिर्वहण किये। इस कार्यशाला में डॉ. एम. विश्वनाथ शास्त्रीजी, विद्वान हरिदास भट्ट, डॉ. रजारामशुक्ल, डॉ. नवीनहोळळा, डॉ. ओ. आर. विजयराघवन, श्री श्यामसुन्दर ने यथाविधि अध्यापन को रोचिष्णु बनाया। विविध परिसरों एवं अन्य संस्कृत महापठशालओं से 51 छात्रों ने इस कार्यशाला में भाग ग्रहण किया।

भगवद्गीता अभियान-

दिनांक 24.01.10 को परमपूज्य श्री स्वर्णवल्ली मठाधीश श्री श्री गंगाधेरन्द्र सरस्वतीजी के दिव्य मार्गदर्शन में हमारे अध्यापक एवं छात्रों के सहयोग से शृंगेरी तहसील के सभी विद्यालयीय बालकों को भगवद्गीता परिचय कार्य करवाने हेतु अभियान का उद्घाटन परिसर में सम्पन्न हुआ।

परिसरीय वैश्विक अन्तर्जालम्-

परिसर की गातिविधियों को जानने के लिए परिसर का एक वैश्विक अर्न्तजाल www.sringeri.campus.ac.in में उपलब्ध होगा। इस अन्तर्जाल का उद्घाटन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के माननीय कुलपति जी द्वारा किया गया।

वर्ष के दौरान संकाय सदस्यों के कार्यकलाप-

1. डॉ. महाबलेश्वर पि. भट्ट जी ने सोन्दा स्वर्णवल्ली मठ में यडतोरे मठ के. आर. नगर में, रेवती पट्टतान में और शिमोगा नगर में प्रवृत्त राष्ट्रिय सगोष्ठी में भागग्रहण करके शास्त्रार्थ चर्चा किये है।
2. डॉ. सुब्राय वी. भट्ट 03.11.09 से 07.11.09 पर्यन्त सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में अखिल भारत बृहच्छास्त्र सम्मेलन में और शृंगेरी शारदापीठ का महागणपति वाक्यार्थ सभा में वाक्यार्थ किये है।
3. डॉ. कृष्णन् नम्बूत्तिरी ने 11.02.2010 को कोषिक्कोट में राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में सेवारत अध्यापक प्रशिक्षण वर्ग में विषय विशेष रूप में भाषण किया।
4. डॉ. ई. पि. श्रीदेवी राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति में 24.09.09 से 14.10.09 तक पुनश्चर्य- पाठ्यक्रम में और 27.12.2009 को श्री रामवर्मा सरकारी महाविद्यालय तिरुपुणित्तुरा, केरळ में शास्त्रार्थ चर्चा में भागग्रहण करके वाक्यार्थोपस्थापन किया। 11.02.

2010 को कोषिक्कोट में राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में सेवारत अध्यापक प्रशिक्षण वर्ग में विषय विशेष रूप में भाषण किया।

5. डॉ. रामचन्द्रुल बालाजी 08.10.09 से 10.10.09 तक धारवाड़ ब्रह्मश्री बालचन्द्रशास्त्री 90 को जन्म दिवस में वाक्यार्थ किये। 01.11.09 से 04.11.09 पर्यन्त सातारा में काशीनाथजोशी महोदय शताब्दी में शास्त्रार्थ किये और 05.11.09 से 07.11.09 सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में वाक्यार्थ प्रस्तुत किये।

6. डॉ. सी. एस. एस. एन. मूर्ति 24.09.09 से 14.10. 09 तक पुनश्चर्यवास्य क्रम में भाग लिए। 04.11. 09 से 07.11.09 तक वारणसी में आयोजित अखिल भारतीय विद्वत् सम्मेलन में भागग्रहण किये। श्री शारदा पीठ शृंगेरी में महागणपरि वाक्यार्थ सभा में भाग लिए।

7. डॉ. नवीन होळळा दिनांक 3.11.09 से 07.11.09 तक वारणसी मे अखिल भारत बृच्छास्त्र सभा में वाक्यार्थ किये। तीस नवम्बर को तिरुपति राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में Centre for Excellency योजनान्तर्गत दृश्यश्रान्यपाद्यनिर्माणे न्यायशास्त्रीय ग्रन्थों का अध्यापन किये।

8. डॉ. चन्द्रशेखर भट्ट तेनाली शास्त्रपोषणी सभा में व्याकरण शास्त्र में श्री श्री जगद्गुरु भारती तीर्थ महास्वामीजी के सन्निधि में परीक्षा देकर विद्वत् प्रवर उपाधि प्राप्त किये। सोन्दा स्वर्णवल्लि मठ में वाक्यार्थ किये।

9. श्री एच. कृष्णानन्त पद्मनाभम् दिनांक 1.11.09 से 04.11.09 तक सातारा काशीनाथ जोशी जन्म शताब्दी उत्सव में और महागणपति वाक्यार्थ सभा में वाक्यार्थ किये।

10. डॉ. गणेश ईश्वर भट्ट ने बेंगळूरू संस्कृत भारती के कोष निर्माण कार्य में भाग लिए। यडेतोरेमठ की वेदान्त भारती संस्था से आयोजित शास्त्रार्थ गोष्ठी में भागग्रहण किये। स्वर्णवल्ली मठ के संस्कृतोत्सव में निर्णायक के रूप में काम किये।

11. डॉ. राघवेन्द्र भट्ट राष्ट्रियसंस्कृत नाट्यप्रस्तुति कार्यशाला में भाग ग्रहण किये। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मुख्यालय में दूरस्थशिक्षा कार्यशाला में भाग ग्रहण किये। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की कौमुदीमहोत्सव में अभिज्ञान शाकुन्तलनाटक के मार्गदर्शक के रूप में भाग ग्रहण किये।

12. डॉ. चन्द्रकला आर. कोण्डी ने संस्थान मुख्यालय में पाठ्यक्रमनिर्माण कार्यशाला में भाग ग्रहण किया। 08.10.09 से 10.11.09 तक धारवाड नगर में ब्रह्मश्री बालचन्द्रशास्त्री जी 90 की जयन्ती में वाक्यार्थ किया। 02.11.09 से 04.11.09 तक धारवाड में कर्णाटक विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सम्मेलन में वाक्यार्थ किया।

13. डॉ. रामचन्द्र जोयिस ने मैसूर विश्वविद्यालय में प्रध्यापक प्रशिक्षण में भाग लिया। हरिहर पुर मठ में प्रवृत्तस्पर्धाओं में न्यायनिर्णायकरूप में कार्य किया। शृंगेरी जूनियर कालेज में भारतीय संस्कृति के विषय में भाषण दिया।

14. डॉ. वेंकटेश तातार्य ने तमिलनाडु के नावलपाक में वेद शास्त्रसंगोष्ठी में वाक्यार्थ प्रस्तुत किया महागणपति वाक्यार्थ सभा में वाक्यार्थ करके श्री श्री जगद्गुरू-भारतीतीर्थमहास्वामीजी के द्वारा स्वर्णागुलीयक पुरस्कार से सम्मानित हुए।

15. डॉ. रेखा कुमारी (पाण्डेय) ने हैदरबाद विश्व-विद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा अयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी 'साहित्य का समाज शास्त्रीय अधिगम: सीमाएँ और संभावनाए' (अक्टूबर 03-05.2009) तथा इ. एफ. एल. यूनिवर्सिटी, हैदराबाद द्वारा आयोजित समकालीन साहित्य (24 मार्च 2010) में भाग लिया। श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी द्वारा अयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी-सांस्कृतिक संकट और समकालीन हिन्दी उपन्यास (25-26 मार्च 2010) तथा वास्तु सदन, दिल्ली एवं वेद विभाग बी. एच. यू. बनारस के संयुक्त तत्त्वाधान में आयोजित अखिल भारतीय संगोष्ठी वास्तु शास्त्र एण्ड अलाइड साइसेज (23-25 जुलाई 2010) में भी प्रपत्र प्रस्तुत किया।

7.8 गरली परिसर, गरली (हिमाचल प्रदेश)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने भारतीय स्वाधीनता के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में हिमाचल प्रदेश के गरली नामक स्थान पर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना की। इस विद्यापीठ का उद्घाटन तत्कालीन शिक्षा राज्य मंत्री के द्वारा हिमाचल प्रदेश के तत्कालीन मुख्य मंत्री की उपस्थिति में 16 सितम्बर, 1997 के शुभ दिन को किया गया। इसका नामकरण अब पुनः राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के गरली परिसर के रूप में किया गया है। परिसर अभी किराये के भवन में चल रहा है। परिसर हेतु हिमाचल प्रदेश सरकार ने गाँव बलहर, समीप प्रागपुर, तहसील देहरा, जिला काँगड़ा में 2-63-18 हेक्टेयर उपयुक्त भूमि आबंटित की है।

जीवन के सभी क्षेत्रों से सम्बद्ध छात्रों को प्राक् शास्त्री का शिक्षण इण्टर स्तर पर और साहित्य, ज्योतिष तथा व्याकरण विद्या विशेषों का शिक्षण शास्त्री एवं आचार्य स्तरों पर दिया जाता है। शोध-छात्रों को विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) की उपाधि प्राप्त करवाने की दिशा में शोध कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षा, पर्यावरण अध्ययन, हिन्दी, अंग्रेजी और इतिहास जैसे आधुनिक विषय भी पाठ्यक्रम के भाग के रूप में पढ़ाए जाते हैं।

शैक्षिक सत्र 2009-10 के दौरान 325 छात्रों ने प्राक् शास्त्री से आचार्य तक की कक्षाओं में प्रवेश प्राप्त किया। उनमें से 159 छात्राएँ थीं।

पाठ्येतर गतिविधियाँ

आयोजित व्याख्यान

1. परिसर में दिनांक 24 जुलाई 2009 से सायम् 5 से 6 तक संस्कृतभाषा/गोष्ठी, सम्भाषण आदि का व्याख्यान किया गया।
2. दिनांक 02 से 08 अगस्त 2010 तक परिसर में संस्कृत सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें सरस्वती पूजन के साथ संस्कृत सप्ताह कार्यक्रम का उद्घाटन तदनन्तर श्लोकोच्चारण, सूत्रान्त्याक्षरी, श्लोकोन्त्याक्षरी आदि प्रतियोगिताओं के आयोजन किये गये। साथ ही ज्यौतिष, साहित्य एवं व्याकरण विषय में पृथक-पृथक भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। श्रावणी पर्वउत्सव के अवसर पर परिसर के प्राचार्य प्रो. प्रकाश पाण्डेय तथा प्रो. रामनारायण दास, एवं डॉ. सुबोध शर्मा, डॉ. मदनमोहन पाठक एवं डॉ. विजयपाल शास्त्री ने विशेष व्याख्यान दिये पुरस्कार की घोषणा एवं अध्यक्षीय भाषण के साथ समारोह का समापन किया गया। कार्यक्रम में परिसर के सभी प्राध्यापक, कर्मचारी एवं छात्र/छात्राएँ उपस्थित रहे।
3. दिनांक 15 अगस्त 09 को परिसर में ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया गया।
4. दिनांक 28 अक्टूबर 2009 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निरीक्षण समिति के द्वारा परिसर का निरीक्षण किया गया। इस समिति में प्रो. पंकज चान्दे, कुलपति, कविकुलगुरु कालिदास विश्व-विद्यालय, महाराष्ट्र, प्रो. सुधारानी पाण्डेय, कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, उत्तरांचल एवं डॉ. शुक्ला मुखर्जी, परियोजना अधिकारी, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली थे।
5. अखिल भारतीय वाक् स्पर्धा प्रतियोगिताओं के चयन हेतु परिसर में दिनांक 04 से 06 नवम्बर तक **चतुः प्रान्तीय वाक् स्पर्धा प्रतियोगिताओं** का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ एवं हिमाचल प्रदेश के छात्र/छात्राओं ने भाग लिया। इस समारोह में प्रो. बृजबिहारी चौबे, साधु आश्रम, होशियारपुर, मुख्यातिथि, डॉ. विरेन्द्र कुमार मिश्र, हिमाचल प्रदेश पाण्डेय, काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी विशिष्टातिथि के रूप में सम्मिलित हुये थे। समापन समारोह में परिसर के प्राचार्य द्वारा विजेता छात्र/ छात्राओं को पुरस्कार भी प्रदान किये गये।
6. दिनांक 23 नवम्बर 2009 को बलाहर ग्राम में परिसर के नये भवन का निर्माण कार्य हेतु भूमि पूजन कार्यक्रम किया गया। इस अवसर पर परिसर

के प्राचार्य, ज्यौतिष विभागाध्यक्ष तथा परिसर के छात्र उपस्थित थे। परिसर में दिनांक 17 एवं 18 दिसम्बर 2009 को स्व. विजयमित्र शास्त्री स्मारिका विद्वद्गोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रो. रामाकान्त शुक्ल, निदेशक, देववाणी परिषद, नई दिल्ली, ने दीप प्रज्जवलित कर गोष्ठी का शुभारम्भ किया। गोष्ठी में देश के कई विद्वानों ने भाग लिया इनमें प्रमुख प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत- विश्वविद्यालय, वाराणसी, राष्ट्रपति सम्मानित प्रो. ब्रजबिहारी चौबे, साधु आश्रम, होशियारपुर, प्रो. दामोदर झा, साधु आश्रम, होशियारपुर, डॉ. चन्द्रमौली रैना, जम्मू परिसर, जम्मू एवं अन्य कई विद्वानों ने भी गोष्ठी में अपने-अपने विषयों में व्याख्यान दिये।

7. विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर परिसर में दिनांक 11 जनवरी 2009 को विश्व हिन्दी दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी भाषा में भाषण प्रतियोगिता, निबन्ध, नोटिंग/ड्राफ्टिंग, टाईप टेस्ट, एवं कविता पाठ आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम डॉ. विजयपाल शास्त्री, एसोसिएट प्रोफेसर एवं श्री सन्दीप कुमार, सहायक प्रोफेसर, (अं. का.) हिन्दी की देख-रेख में किया गया। विजेता प्रतिभागियों को प्राचार्य के द्वारा पुरस्कृत भी किया गया। कार्यक्रम में परिसर के सभी कर्मचारियों ने भाग लिया।

8. राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के द्वारा युवा महोत्सव 2010 का आयोजन जयपुर में किया गया, इस महोत्सव में क्रीड़ा एवं अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, क्रीड़ा प्रतियोगिता **(वॉली-वॉल)** में इस परिसर को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। **योग स्पर्धा** में इस परिसर के **विवेक शर्मा**, आ. प्रथम वर्ष को **प्रथम पुरस्कार** प्राप्त हुआ। इसी छात्र को पंतजलि योगपीठ, जयपुर शाखा द्वारा **विशिष्ट पुरस्कार** से सम्मानित किया गया। पंतजलि योगपीठ हरिद्वार द्वारा विवेक शर्मा को मुख्यालय (हरिद्वर) में योग के नि:शुक्ल प्रशिक्षण हेतु आमंत्रित भी किया गया है। युवा महोत्सव जयपुर में ही इसी परिसर की दो छात्राओं क्रमश: **रीना एवं शारदा** ने अपने अच्छे खेल का प्रदर्शन कर **'बैडमिन्टन'** में द्वितीय **स्थान प्राप्त** किया।

संकाय सदस्यों की गतिविधियाँ:

डॉ. अशोक चन्द्र गौड़ ने रिफ्रेशरकोर्स में भाग लिया। सुबोध शर्मा ने कार्यशाला में भाग लिया और डॉ. विष्णु शर्मा ने ओरियन्टल पाठ्यक्रम में सहभागिता की।

7.9 भोपाल परिसर, भोपाल (मध्य प्रदेश)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ने सत्र 2001-02 में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ को प्रारम्भ करने का निर्णय लिया था। तद्नुसार 16 सितम्बर 2002 को राज्यपाल, मध्यप्रदेश के द्वारा परिसर का औपचारिक शुभारम्भ हुआ और इसकी शैक्षिक गतिविधियाँ शैक्षिक सत्र 2002-03 से प्रारम्भ हो गई। इसका प्रारम्भ से ही परिवर्तित नाम ''राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) भोपाल परिसर'' रखा गया है। मध्यप्रदेश की राज्य सरकार ने इसके लिए बरकतउल्ला, भोपाल के पास 10 एकड़ भूमि आवंटित की है। परिसर की चार दीवारी का निर्माण केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा पहले ही किया जा चुका है। माननीय श्री अर्जुन सिंहजी, मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार ने दिनांक 19 सितम्बर 2005 को मुख्य भवन का शिलान्यास किया था। प्रथम चरण का निर्माण कार्य लगभग समाप्त हो रहा है, तथा भोपाल परिसर दिनांक 01/05/2010 से नवनिर्मित परिसर में स्थानान्तरति हो गया है। दिनांक 01/05/2010 से प्रशासनिक एवं शैक्षिक गतिविधियाँ नवनिर्मित परिसर में प्रारम्भ हो गई हैं।

परिसर में प्राक्शास्त्री, शास्त्री एवं आचार्य कक्षाओं में साहित्य, व्याकरण और ज्योतिष का अध्यापन तथा शिक्षा-शास्त्री (बी. एड.) का प्रशिक्षण होता है। यहाँ शोध-छात्रों के द्वारा विद्यावारिधि (पी-एच. डी.) की उपाधि हेतु विभिन्न शास्त्रों में शोध कार्य किया जाता है।

परिसर के विद्वान् आचार्यगण शोधकार्य का मार्गनिर्देशन करते हैं और स्वयं भी अनुसन्धान कार्य करते हैं। आधुनिक विषय हिन्दी, अंग्रेजी, राजनीति-शास्त्र तथा कम्प्यूटर अनिवार्य विषय हैं, उन्हें पढ़ाने की उचित व्यवस्था उपलब्ध है। जरूरतमंद छात्रों को छात्रवृत्ति के साथ छात्रावास की सुविधा भी यह परिसर प्रदान करता है।

2009-2010 के शैक्षिक सत्र में, विभिन्न कक्षाओं में कुल 295 छात्रों को प्रवेश दिया गया। जिनमें से, 27 छात्राएँ थीं। 130 छात्रों को छात्रावास-सुविधा प्रदान की गई। अपने शिक्षण कार्य के अतिरिक्त निम्नलिखित संकाय-सदस्यों ने विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित विभिन्न संगोष्ठियों/पुरश्चर्या आदि में भाग लिया।

1. डॉ अर्चना दुबे, सहायक व्याख्याता (हिन्दी) ने यू. जी. सी. एकेडेमिक स्टॉफ कालेज, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में 21.10.2009 से 10. 11.2009 तक अनुस्थान पाठ्यक्रम में भाग लिया।
2. श्री नीलाम तिवारी, सहायक व्याख्याता (शिक्षा) ने यू. जी. सी. ऐकडेमिक स्टॉफ कालेज, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में 4.3.2010 से 31.3. 2010 तक अनुस्थान पाठ्यक्रम में भाग लिया।
3. श्रीमती लीना तिवारी, सहायक व्याख्याता (शिक्षा) ने यू. जी. सी. एकेडेमिक स्टॉफ कॉलेज, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में 4.3.2010 से 31.3.2010 तक अनुस्थान पाठ्यक्रम में भाग लिया।
4. डॉ. अशोक थपलियाल, सहायक व्याख्याता (ज्योतिष) ने यू. जी. सी. एकेडेमिक स्टॉफ कॉलेज, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में 5.4.2010 से 1. 5.2010 तक अनुस्थान पाठ्यक्रम में भाग लिया।

पाठ्येतर गतिविधियाँ

1. संस्कृत दिवस समारोह 3.8.2009 से 7.8.2009 तक आयोजित किया गया।
2. हिन्दी दिवस 14.9.2009 को आयोजित किया गया।
3. अधिराज्यी शास्त्रीय प्रतियोगिता 28.10.2009 से 31.10.2009 तक आयोजित की गयी।
4. विश्व हिन्दी दिवस 11.01.2010 को आयोजित किया गया।
5. परिसर का वार्षिक समारोह 16.1.2010 को आयोजित किया गया।

7.10 के.जे. सोमैया संस्कृत विद्यापीठम् परिसर, मुम्बई (महाराष्ट्र)

के.जे. सौमैया ट्रस्ट, विद्या विहार, मुम्बई ने अपने परिसर में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ स्थापित करने के प्रस्ताव के साथ में एक एकड़ भूमि विद्यापीठ भवन के लिए उपलब्ध कराने का प्रस्ताव किया। तत्पश्चात् राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा नियुक्त समिति द्वारा इसका निरीक्षण किया गया और अनुशंसा की गयी कि अंगीभूत विद्यापीठ स्थापित किया जाए। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग, भाषा प्रभाग, भारत सरकार द्वारा इस प्रस्ताव को 31.03.2002 को निर्णय लेकर स्वीकृत किया गया। के.जे. सौमैया ट्रस्ट ने आबंटित भूमि पर विद्यापीठ हेतु भवन बनने तक अपने भवन में कक्षाएँ चलाये जाने की स्वीकृति दी। संस्थान ने पट्टाकर्ता सौमैया ट्रस्ट से आबंटित एकड़ जमीन का अधिग्रहण कर लिया है। तत्कालीन माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार ने के. जे. सौमैया केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, मुम्बई परिसर का उद्घाटन दिनांक 16.05. 2002 के शुभ दिन को किया। विद्यापीठ की स्थिति विद्या विहार स्थानीय सेन्ट्रल रेलवे स्टेशन के पूर्व की ओर सौमैया कॉलेज परिसर में के. जे. सौमैया आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, विद्याविहार (पूर्व) मुम्बई - 77 के समीप लगभग आधा किलोमीटर की दूरी पर है।

वर्ष 2002-03 के मध्य अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण त्रैमासिक कार्यक्रम की प्रथम दीक्षा का पाठ्यक्रम आरंभ किया गया। बाद में मार्च, 2003 में मानित विश्वविद्यालय के रूप में प्रतिष्ठित होकर इस विद्यापीठ का नाम राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), के. जे. सौमैया संस्कृत विद्यापीठ परिसर रखा गया। शैक्षिक सत्र 2003-04 से प्राक् शास्त्री, शास्त्री और आचार्य की

नियमित कक्षाओं का शिक्षण आरम्भ किया गया।

परिसर में इण्टर के समकक्ष प्राक् शास्त्री, बी.ए. के समकक्ष शास्त्री और एम.ए. (संस्कृत) के समकक्ष आचार्य तथा पीएच.डी. (संस्कृत शास्त्रों में) के समकक्ष विद्यावारिधि का शिक्षण साहित्य, व्याकरण और ज्योतिष विद्या विशेषों में प्रदान किया जाता है। पारम्परिक विषयों के अतिरिक्त आधुनिक विषयों का शिक्षण भी संस्थान के पाठ्यक्रम के अनुसार कराया जाता है। अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण त्रैमासिक कार्यक्रम की प्रथम व द्वितीय दीक्षा पाठ्यक्रम एवं ज्योतिष के प्रारम्भिक पाठ्यक्रम भी संस्थान के अनुमोदनानुसार पढ़ाये जाते हैं। क्षेत्रीय एन. सी. टी. ई., भोपाल ने बी.एड. के समकक्ष शिक्षा शास्त्री के लिए बढ़ाई गई 100 सीटों की भर्ती का अनुमोदन किया। फलस्वरूप शैक्षिक सत्र 2006-07 से इस पाठ्क्रम को परिसर में आरंभ कर दिया गया। पिछले साल की वार्षिक परीक्षा का परिणाम लगभग 100 प्रतिशत रहा।

वर्ष के दौरान परिसर में शिक्षण संकाय के रूप में 11व्याख्याता से प्रोफेसर श्रेणी के प्रोफेसर, सात अंशकालिक शिक्षक तथा एक शास्त्र चूड़ामणि विद्वान थे। यद्यपि अभी तक परिसर में अपनी कोई छात्रावास सुविधा नहीं है, तथापि दस विद्यार्थियों के लिए शुक्ल भुगतान के आधार पर के. जे. सौमैया पॉलीटेक्निक होस्टल में छात्रवास सुविधा की व्यवस्था की गई।

शैक्षणिक वर्ष 2009-10 के दौरान, कुल 116 छात्रों को प्राक शास्त्री से विद्यावारिधि कक्षाओं में प्रवेश दिया गया। इनमें से 12 छात्रायें और 104 छात्र हैं। 63 छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की गयी है।

पाठ्य एवं पाठ्येत्तर गतिविधियाँ :

संस्कृत सप्ताह समारोह 3 अगस्त 2009 से 5 अगस्त 2009 तक मनाया गया। सप्ताह का उद्घाटन डॉ. एन. एन. जोशी, सेवा निवृत्त प्राचार्य ने किया। समापन समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान पण्डित गुलाम दस्तवीर बिरजदार ने की तथा डॉ. काला आचार्य, निदेशक, भारतीय संस्कृत पीठ्म ने विदाई भाषण दिया। 5 अक्टूबर, 2009 को स्वामी हरिहरनन्द (बह) ने ''चित्रबन्ध'' विषय पर साहित्य में एक व्याख्यान दिया।

यू. जी. सी. समीक्षा समिति ने 7 सितम्बर, 2009 को परिसर का निरीक्षण किया। प्रो. पंकज चांदे, कुलपति, कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, नागपुर दल के अध्यक्ष थे। प्रो. बलदेव मेहरा, रोहतक विश्वविद्यालय एवं प्रो. एम. ए. दोदमम्, मैसूर विश्वविद्यालय समिति के सदस्य थे तथा आर. देवनाथन्, संस्थान के कुलसचिव भी इस अवसर पर उपस्थित थे। समिति ने इस परिसर की प्रगति की समीक्षा की तथा सुधार के सुझाव दिये। समिति के स्वागत के लिये संध्या काल को एक सभा का आयोजन किया गया। डॉ. शान्तिलाल के. सोमैय्या, परिसर की स्थानीय सलाहकार समिति के अध्यक्ष ने अध्यक्षता की। श्री वी. रंगनाथ, भारतीय प्रशासनिक सेवा, माननीय सचिव के. के. सोमैय्या ट्रस्ट भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

संस्कृति की विभिन्न शाखाओं में राज्यवार श्लाका स्पर्धा इस परिसर के तत्त्वाधान में 10 नवम्बर, 2009 को आयोजित की गयी।

निम्नलिखित विभूतियों ने निर्णायक दल की भूमिका निभाई।

1. डॉ. एन. एन. जोशी, सेवा निवृत्त प्राचार्य।
2. पण्डित गुलाम दस्तगीर बिरजदार, संस्कृत विद्वान।
3. डॉ. राम राय मिश्रा, सेवा निवृत्त प्राचार्य।

राज्य में विभिन्न संस्कृत संस्थानों के प्रतिनिधि प्रतियोगियों में से निम्नलिखित छात्र 1 दिसम्बर, 2009 को जयपुर परिसर में हुए अखिल भारतीय श्लाका स्पर्धा का प्रतिनिधित्व करने के लिये चुने गये।

1. श्री गणेश देव आर्य, मुम्बई परिसर
2. श्री दर्शन भट्ट, मुम्बादेवी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय
3. श्री बोब्ले आसाराम मनोहर, मुम्बादेवी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय

इस परिसर के आचार्य द्वितीय वर्ष (व्याकरण) के छात्र श्री गणेश देव ने अखिल भारतीय स्तरीय स्पर्धाओं में रजत पदक का रनर्स अप पुरस्कार जीता। उन्होंने पुरी परिसर में वर्ष 2009 के दौरान आयोजित अखिल भारतीय श्लाका स्पर्धाओं में सर्वप्रथम आने पर स्वर्ण पदक भी जीता था। अन्तर्परिसरीय युवा एवं क्रीड़ा

महोत्सव जयपुर परिसर में 25 नवम्बर 2009 से 29 नवम्बर, 2009 तक आयोजित हुआ। एक क्रीड़ा सप्ताह 7 नवम्बर, 2009 से 15 नवम्बर, 2009 तक प्रतिभाशाली छात्रों को प्रशिक्षण देने के लिये आयोजित किया गया। प्रो. चौगुई, शारीरिक शिक्षा विभाग, के. जी. सोमैय्या कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड कॉमर्स ने इस कार्य में सहयोग किया। इस अवसर पर विभिन्न क्रीड़ा प्रतियोगितायें आयोजित की गयीं। महोत्सव में निम्नलिखित छात्रों ने निम्नलिखित पुरस्कार जीते-

1. सुधीर कुमार जैन, शिक्षा-शास्त्री (चित्र काला) प्रथम पुरस्कार।
2. सुधीर कुमार जैन, शिक्षा-शास्त्री (पेन्सिल आरेखण) द्वितीय पुरस्कार।
3. विलास घनिक, शास्त्री तृतीय वर्ष (कुश्ती) तृतीय पुरस्कार
4. सन्दीप चौगुले, शिक्षा-शास्त्री (कुश्ती) द्वितीय पुरस्कार
5. हरिओम परब, शास्त्री प्रथम वर्ष (कुश्ती) द्वितीय पुरस्कार
6. प्रभात नायक, शिक्षा शास्त्री (स्त्रोत पाठ) तृतीय पुरस्कार
7. केसरमल, शिक्षा शास्त्री (योग)
8. सुधीर कुमार जैन, शिक्षा शास्त्री (दीवार चित्रकला) तृतीय पुरस्कार

परिसर के शिक्षक बधाई के पात्र हैं जिन्होंने छात्रों को उनकी उपलब्धियाँ अर्जित करने में सहायता की तथा महोत्सव में उनके साथ गये। डॉ. बोध कुमार झा, सहायक व्याख्याता एवं पाठ्येतर गतिविधियों के समन्वयक, डॉ. सुशान्त कुमार राज, सहायक व्याख्याता (वरिष्ठ) और डॉ. रामाय सिहं, सहायक व्याख्यता (समाहित वेतन)अपनी निष्ठा के लिये उच्च सम्मान के पात्र हैं।

परिसर में 14 सितम्बर, 2009 को हिन्दी दिवस मनाया गया। श्री राघवेन्द्र नाथ द्विवेदी, मुख्य सम्पादक, हमारा महानगर दैनिक मुख्य अतिथि थे। इस परिसर में 18 जनवरी, 2010 को विश्व हिन्दी दिवस का भी आयोजन भारत सरकार की विज्ञप्ति के अनुसार हुआ। डॉ. करुणा शंकर उपाध्याय, मुम्बई विश्वविद्यालय मुख्य अतिथि थे, डॉ सतीश पाण्डे, प्रो. एवं विभागाध्यक्ष, के. जे. सोमैय्या कालेज ऑफ आर्टस् एण्ड सांईस ने आधार वक्तव्य दिया। डॉ गीता देवी दुबे, सहायक व्याख्याता (समाहित वेतन) ने दोनों कार्यक्रमों को आयोजित किया था।

परिसर के तीन छात्रों श्री रूपेश टाटे, श्री विपिन कुमार और श्री लक्ष्मण आर्य (शास्त्री) को राजीव गाँधी परिसर, शृंगेरी में 4 जनवरी, 2010 से 18 जनवरी, 2010 तक हुई अखिल भारतीय कार्यशाला के अन्तर्गत व्याकारण के प्रशिक्षण कार्यक्रम को करने के लिये प्रदत्त किया गया था। शिक्षा शास्त्री कक्षा के सुधीर जैन, वीरेन्द्र ज्योति और सुमेध ने 28 जनवरी, 2010 से 29 जनवरी, 2010 तक के. जे. सोमैय्या कॉलेज ऑफ एण्ड कामर्स में हुए अन्तः महाविद्यालय आशु भाषण एवं श्लोक पाठ स्पर्धा को जीता।

शिक्षा शास्त्री में विस्तार व्याख्यान माला 13 जनवरी, 2010 को हुई। प्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं सेवा निवृत्तं आचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति तथा राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता महामहोपाध्याय प्रो. आर. एन. अतलिकट्टी ने एक भाषा, विज्ञान एवं साहित्य के रूप में संस्कृत की दृष्टि से संस्कृत प्रशिक्षण का वर्गीकरण विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. एस. के. भवानी, शैक्षणिक सलाहकार, सोमैय्या विद्या विहार ने सामारोह का उद्घाटन किया।

व्याकरण शास्त्र में विस्तार व्याख्यान 25 जनवरी, 2010 को आयोजित हुआ। डॉ बन विद्या, व्याकरणाचार्य, मुम्बई विश्वविद्यालय ने पाणिणी पर व्याख्यान दिया। साहित्य में विस्तार व्याख्यान 10 फरवरी, 2010 को हुआ। प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान एवं के. जे. सोमैय्या कालेज के सेवा निवृत्त प्राचार्य डॉ. एन. एन. जोशी ने साहित्य में ''ध्वनि स्वरूपम्'' पर अपना गंभीर व्याख्यान दिया।

इस परिसर के स्टॉफ एवं छात्र इन व्याख्यानों से लाभान्वित हुए। प्रो. प्रकाश चन्द्र विभागाध्यक्ष (व्याकरण), डॉ. एस. राधा, विभागाध्यक्ष (साहित्य) तथा डॉ. के. के. शिने, विभागाध्यक्ष (शिक्षा शास्त्री) अपने सुव्यवस्थित आयोजन के लिये बधाई के पात्र हैं।

ललित कला व साहित्यिक दिवस 25-26 फरवरी, 2010 को हुए। सभी कक्षाओं के छात्रों ने विभिन्न

कार्यक्रमों में सहभागिता की।

शिक्षा-शास्त्री विभाग की सभी गतिविधियाँ शैक्षणिक वर्ष के दौरान निर्विघ्न संचालित हुईं। इसके लिये मुम्बई क्षेत्र के केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पदाधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने 3 नवम्बर, 2009 से 30 नवम्बर, 2009 तक मुम्बई के दस केन्द्रीय विद्यालयों में शिक्षक प्रशिक्षण करने की अनुमति प्रदान की। शिक्षण प्रायोगिक परीक्षा का भी आयोजन 16-17 फरवरी, 2010 को केन्द्रीय विद्यालय, पान्वेल में हुआ। इस कार्यक्रम के सुचारु संचालन के लिये श्री पी. आर. एल. गुप्ता, सहायक कमिश्नर, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मुम्बई क्षेत्र धन्यवाद के पात्र हैं। केन्द्रीय विद्यालयों के सभी प्राचार्यों, विशेषकर श्री एन. डी. जोशी, प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय, पान्वेल भी धन्यवाद ज्ञापन के अधिकारी हैं।

शिक्षा-शास्त्री प्रशिक्षुओं के लिये स्काऊट एवं गाईड प्राथनिक प्रशिक्षण शिविर 2 अक्टूबर, 2009 से 10 अक्टूबर, 2010 तक एस. टी. जी., भोर, पुणे में हुआ। इसी तरह, प्रशिक्षुओं के हित के लिये 7 दिसम्बर, 2009 से 14 दिसम्बर, 2009 तक भारतीय रेड क्रॉस सोसायटी, फोर्ट, मुम्बई में प्रथमोपचार प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

शैक्षणिक भ्रमण का कार्यक्रम दिसम्बर, 2009 में हुआ। शिक्षा-शास्त्री के स्टॉफ एवं छात्रों ने महाबलेश्वर, रत्नगिरी एवं सतम् का दौरा किया अपने शैक्षणिक अनुभवों व दृष्टिकोणों को विस्तार दिया। विभाग के सभी स्टॉफ सदस्य भ्रमण पर गये और प्रशिक्षुओं का मार्गदर्शन किया।

शिक्षा-शास्त्री की प्रायोगिक परीक्षा 15 फरवरी, 2010 से 20 फरवरी, 2010 तक हुई। प्रसिद्ध आचार्य एवं शिक्षाविद् महामहोपाध्याय प्रो श्रीधर वशिष्ट, दिल्ली सम्बद्ध परीक्षक थे। 18 फरवरी, 2010 को उनके जन्म दिवस अवसर पर उनका सम्मान किया गया।

निम्नलिखित स्टॉफ सदस्यो का विश्वविद्यालयों के विभिन्न एकाडमिक कॉलेजों में यू. जी. सी. द्वारा संचालित अनुस्थापन पाठ्यक्रमों में भाग लेने के लिये चयन किया गया।

1. डॉ. देवदत्त सरोदे, सहायक व्याख्याता ने 6 जुलाई 2009 से 25 जुलाई तक ऐकेडमिक स्टॉफ कालेज, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में अनुस्थापन पाठ्यक्रम में भाग लिया।
2. डॉ. सुशान्त कुमार राज, सहायक व्याख्याता ने 24 सितम्बर, 2009 से 16 अक्टूबर, 2009 तक राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति में अनुस्थापन पाठ्यक्रम में भाग लिया।
3. श्री वी. एन. भास्कर रेड्डी, सहायक व्याख्याता ने 9 नवम्बर, 2009 से 7 दिसम्बर, 2009 तक एकेडमिक ऑफ कालेज, नार्थ ईस्ट हिल्ल विश्वविद्यालय, शिंलाग में अनुस्थापन पाठ्यक्रम में भाग लिया।
4. डॉ. के. के. शिने, सहायक व्याख्याता एवं विभागाध्यक्ष ने 3 मार्च, 2010 से 23 मार्च, 2010 तक एकेडमिक ऑफ कालेज हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में अनुस्थापन पाठ्यक्रम में भाग लिया।

डॉ. के. के. शिने ने संस्थान के मुख्यालय में 5 फरवरी, 2010 को च्वाईस बेसड परीक्षा व्यवस्था के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम में भी भाग लिया।

इस परिसर के डॉ माधव दत्त पाण्डे, श्री भरत गर्ग, सहायक व्याख्यता (समाहित वेतन) एवं श्रीमती गौरी रमन, शोध विद्वान ने 12 सितम्बर, 2009 को नई दिल्ली में संस्थान के वार्षिक दीक्षान्त समारोह में छात्रों के साथ भाग लिया, जिन्होंने इस अवसर पर अपनी उपाधियाँ अर्जित की।

''स्वन्तंत्रतोत्तर संस्कृत साहित्य'' पर एक सम्मेलन एस. आई. एम. एस. आर. केन्द्र के ए. वी. प्रेक्षागार में 24 नवम्बर, 2009 को मुम्बई विश्वविद्यालय, के. जी. सोमैय्या बौद्ध केन्द्र तथा इस परिसर के संयुक्त तत्त्वाधान में आयोजित किया गया। सम्मेलन में प्रो. एम. ए. बाबू, प्राचार्य, प्रो. प्रकाश चन्द्र, विभागाध्यक्ष (व्याकरण) तथा डॉ. एम. राधा, विभागाध्यक्ष (साहित्य) द्वारा इस अवसर पर विभिन्न शोध लेख भारतीय दार्शनिक साहित्य पर प्रस्तुत किये गये।

8. योजनाएँ

भारत सरकार द्वारा 1956 में नियुक्त संस्कृत आयोग ने यह सिफारिश की थी कि ऐसी महत्त्वपूर्ण सक्रिय निजी शैक्षिक संस्थाओं और निकायों को सहायता तथा संरक्षण दिया जाए जो अपने-अपने क्षेत्र में संस्कृत प्रचार का कार्य कर रहे हैं।

उनका पालन करते हुए भारत सरकार ने सम्बद्ध योजनाओं के अन्तर्गत आने वाले आवेदकों को वित्तीय सहायता देकर संस्कृत के प्रोत्साहन हेतु विविध योजनाएँ आरम्भ की हैं। पहले इन योजनाओं को मा.सं.वि. मन्त्रालय, भारत सरकार ने प्रारम्भ किया था, पश्चात् विधिवत् गठित सहायता अनुदान समिति की संस्तुति पर इनके निष्पादन एवं कार्यान्वयन हेतु इन्हें संस्थान को सौंप दिया गया है। इन योजनाओं का वर्णन यहाँ नीचे किया गया है :

8.1 संस्कृत के प्रोन्नयन हेतु स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों, संस्थाओं तथा पाठशालाओं को वित्तीय सहायता

कार्यक्षेत्र

इस योजना के अन्तर्गत संस्कृत के प्रचार एवं विकास के क्षेत्र में संगठनों/संस्थाओं/व्यक्तियों को अपनी गतिविधियाँ जारी रखने और/या उनका विस्तार करने या नये क्षेत्रों का उद्घाटन करने हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। ये गतिविधियाँ निम्नलिखित में से किसी एक अथवा अधिक प्रयोजनों से संबद्ध हो सकती है:-

(क) नई संस्थाएं/पाठशालाएं खोलना और/या विकसित पाठशालाओं/संस्थाओं का अनुरक्षण करना।

(ख) संस्कृत शिक्षण की कक्षाएं चलाना।

(ग) संस्कृत शिक्षकों/प्रचारकों का प्रशिक्षण और नियुक्ति।

(घ) संस्कृत पुस्तकालयों तथा वाचनालयों की स्थापना, अनुरक्षण या बढ़ाना।

(ङ) संस्कृत प्रचार हेतु प्रचार उपस्करों को खरीदना।

(च) प्रमुख संस्कृत विद्वानों के व्याख्यानों, संस्कृत वाद-विवाद, वाक्स्पर्धा, संस्कृत नाटकों आदि का आयोजन।

(छ) द्विभाषीय शब्दकोश तैयार करना जिसकी एक भाषा संस्कृत हो।

(ज) संस्कृत पाण्डुलिपियां तैयार करना और प्रकाशित करना।

(झ) संस्कृत की पत्र-पत्रिकाएं तैयार करना, उनका प्रकाशन तथा उनके स्तर का अनुरक्षण तथा उनके सार और गुणवत्ता में सुधार।

(ञ) संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों हेतु पुरस्कारों की व्यवस्था।

(ट) भवनों का निर्माण, उनकी मरम्मत तथा उनका विस्तार। (सीमित सहयोग)

(ठ) अनुमोदित संस्कृत परम्पराओं का संगठन

(ड) संस्कृत में अनुसंधान।

(ढ) संस्कृत की समृद्धि, प्रचार और विकास में सहायता देने वाली कोई अन्य क्रियाकलाप।

सहायता का विस्तार

वित्तीय सहायता के लिए आवेदन पत्र (प्रकाशन परियोजनाओं को छोड़कर) इस प्रयोजन के लिए निर्धारित विहित आवेदन-पत्र फार्म पर नियमत: राज्य सरकारों के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं। अखिल भारतीय स्तर के संगठनों से अनुदान के आवेदन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान सीधे भी प्राप्त कर सकता है। यह राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान पर निर्भर है कि वह विशेष मामलों में आवेदन सीधे ही स्वीकार करे। वित्तीय सहायता के सभी आवेदनों पर उनके गुणों के आधार पर विचार किया जाता है और अनुदान केवल कार्य की अनुमोदित मदों के लिए ही

स्वीकृत किया जाता है। अखिल भारतीय स्तर के आवेदनों को छोड़कर जिन संगठनों और संस्थाओं के आवेदन सीधे प्राप्त होते हैं, आवश्यकता पड़ने पर उनके लिए राज्य-सरकारों के विचार आमंत्रित किए जा सकते हैं।

कार्य की प्रगति और प्रारंभ परियोजना की प्रकृति के अनुसार अनुदान किस्तों में दिए जा सकते हैं।

आवेदन-पत्र भेजने की प्रक्रिया:

संबंधित राज्य-सरकार संगठन के आवेदन की जांच करेगी और अपनी सिफारिश भेजते हुए यह बताएगी कि–

(क) संगठन सुस्थापित क्षमता और योग्यता रखता है।

(ख) सिफारिश प्राप्त योजना से संस्कृत की अभिवृद्धि/प्रचार/प्रसार होगा (ब्योरे दिये जाएं)।

(ग) प्राक्कलनों की जांच हुई है और उन्हें उचित समझा गया है।

(घ) वह विशेष राशि जिसे राज्य सरकार उस संगठन/संस्था/व्यक्ति को देने हेतु सिफारिश राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान से करती है, तथा

(ङ) सहायता-अनुदान की सिफारिश जिस निकाय हेतु है, वह दूषित भ्रष्टाचार व्यवहार से मुक्त है और प्रतिबन्ध लागू करने के उपाय (लेखा परीक्षा सहित) सोच निकाले हैं।

(च) कोई अन्य लाभदायक सूचना जो राज्य सरकारें संगठन/संस्था/व्यक्ति के आवेदन के बारे में देना चाहें।

किसी आवेदन पर अपनी सिफारिश भेजते वक्त राज्य-सरकारों को संगठन आदि की वास्तविकता और जिस कार्य के लिए अनुदान मांगा गया है, उसकी आवश्यकता और उपयोगिता के विषय में अपनी तसल्ली कर लेनी चाहिए। अनुदान सम्बन्धी प्रत्येक आवेदन पत्र के साथ आवश्यक सूचना और दस्तावेज भेजे जाएँ।

अनुदान देने की शर्तें

स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों/संस्थाओं को संस्कृत के प्रचार और प्रसार हेतु अनुदानों के संबंध में निम्नलिखित शर्तों का पालन करना होगा–

1. वित्तीय सहायता लेने वाली संस्था की जांच राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान या राज्य-शिक्षा-विभाग या भारतीय लेखा-परीक्षा और लेखा-विभाग का कोई अधिकारी किसी भी समय कर सकता है। यदि केन्द्रीय सरकार/राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा प्रदत्त अनुदान 25,000 रु. से अधिक है तो संस्था की जांच वहां जाकर की जा सकती है।

2. अनुदान लेने से पहले यह वचन देना होगा कि जिस काम के लिए सहायता दी गई है, उसे सरकार/राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा नियत समय में पूरा किया जाएगा और अनुदान का केवल उसी उद्देश्य के लिए उपयोग होगा जिसके लिए वह स्वीकृत किया जाएगा। ऐसा न करने पर संस्था को पूरा अनुदान केन्द्रीय सरकार/राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा निर्धारित ब्याज के साथ सरकार/संस्थान को वापस करना होगा।

3. किस्तों में दी जाने वाली अनुदान की बाद की किस्तें तब तक नहीं दी जाएंगी जब तक कि पहली किस्त का अधिकांश भाग खर्च न किया गया हो और जब तक पहली किस्त से किए गए काम की रिपोर्ट के साथ खर्च का प्रमाणित विवरण, अगली किस्त की प्राप्ति-प्रार्थना के साथ न भेजा जाए। काम की प्रगति के बारे में सरकार/राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के संतुष्ट हो जाने पर ही बाद की किस्त दी जाएगी।

4. भवन निर्माण/प्रकाशन के मामले में अनुदानों के लिए एक उचित समय निर्धारित किया जाना चाहिए। इस अवधि में संस्था को भवन निर्माण/प्रकाशन कार्य पूरा करना होगा, जब तक संस्थान प्रार्थना करने पर अवधि न बढ़ा दे।

5. राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान से अनुदान प्राप्त संस्था अपनी सम्पत्ति को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की अनुमति के बिना किसी व्यक्ति/संस्था/संगठन के नाम हस्तांतरित नहीं कर सकती। यदि किसी समय संस्था बन्द हो जाए तो केन्द्रीय सरकार/राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के अनुदान में से बनाई गई सम्पत्ति

या खरीदा गया सामान भारत सरकार/राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान को वापस हो जाएगा।

6. संस्था के लेखे उचित रूप से रखे जाने चाहिए और मांगे जाने पर पेश किए जाएं। इनकी जांच नियन्त्रक और महालेखा परीक्षक कभी भी कर सकता है।
7. यदि राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान/सरकार को यह विश्वास हो जाए कि संस्था का प्रबन्ध सुचारु रूप से नहीं हो रहा है, अथवा स्वीकृत धन का उपयोग अनुमोदित उद्देश्यों हेतु नहीं हो रहा है तो अनुदान की अदायगी रोकी जा सकती है।
8. संस्था, भारत के समस्त नागरिकों के लिए जाति, धर्म या वर्ग के भेदभाव के बिना खुली रहेगी। जिस राज्य में संस्था स्थित हो उसके बाहर के राज्य के लोगों से व्यक्तिकर या कोई अन्य फीस नहीं ली जाएगी।
9. जिस काम के लिए अनुदान स्वीकृत है, उसके संबंध में संस्था राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के निर्देशों और सुझावों के पालन के लिए बाध्य होगी। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा किसी भी विषय पर कोई सूचना या स्पष्टीकरण मांगे जाने पर संस्था संस्थान द्वारा निर्धारित अवधि के भीतर उसे मन्त्रालय को भेजेगी।
10. संगठन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान/भारत सरकार की पूर्व अनुमति के बिना भारत के बाहर के किसी भी विदेशी को आमन्त्रित नहीं करेगा।

वर्ष 2009-10 में प्राप्त आवेदनों के आधार पर जिन स्वैच्छिक संगठनों को वित्तीय सहायता स्वीकृत की गई है, उनका राज्य-वार विवरण संलग्नक-झ में दिया गया है।

8.2 अखिल भारतीय संस्कृत वाक्स्पर्धा

संस्थान पारम्परिक संस्कृत छात्रों को शास्त्रीय संस्कृत भाषा में आशु भाषण के लिए प्रोत्साहित करने हेतु देश के विभिन्न भागों में प्रतिवर्ष अखिल भारतीय संस्कृत वाक्स्पर्धा प्रतियोगिता का आयोजन करता है। समस्या-पूर्ति की प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जाती हैं। प्रत्येक राज्य सरकार/संघ शासित प्रदेश सरकार से अनुरोध किया जाता है कि वे आठ शास्त्रीय विषयों में प्रतियोगिता हेतु एक अध्यापक सहित आठ सहभागियों के नाम भेजें। सर्वश्रेष्ठ प्रतियोगियों को प्रत्येक प्रतियोगिता में पदक व प्रमाण-पत्र प्रदान किए जाते हैं। श्रेष्ठता के क्रम में क्रमशः रु. 2000/-, रु. 1500/- तथा रु. 1000/- के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय नकद पुरस्कार भी दिए जाते हैं। इन पुरस्कारों के अतिरिक्त विजेताओं को पदक भी दिए जाते हैं। श्लोकान्त्याक्षरी में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार की राशि बढ़ाकर रु. 7000/-, रु. 5000/- और रु. 3000/- कर दी गई है। परिशोधित पुरस्कार राशि वर्ष 2005-06 से प्रयोज्य हैं।

वर्तमान दस प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त "शास्त्र शलाका परीक्षा" का भी आयोजन किया जाता है।

प्रतियोगिता का स्वरूप भारत की प्राचीन परम्परा की शास्त्र शिक्षण पद्धति से लिया गया है। इसमें छात्र को अपनी स्मृति में टीका सहित सारे मूल-पाठ को रखना होता है और "रजत श्लाका" द्वारा प्रकट बिन्दु से वर्णन व व्याख्या करना अपेक्षित होता है। इस प्रतियोगिता का लक्ष्य परम्परा को पुनर्जीवित करना एवं छात्र की स्मरण-शक्ति को तीक्ष्ण करना है।

वर्ष 2009-10 में प्रतियोगिता का आयोजन 'राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मनित विश्वविद्यालय) जयपुर परिसर में किया गया। निर्णायक पैनल द्वारा कर्नाटक राज्य को प्रथम घोषित किया गया।

8.3 शास्त्रचूडामणि योजना

संस्थान के परिसरों, आदर्श संस्कृत पाठशालाओं और राज्य सरकार द्वारा संचालित अन्य संस्कृत कॉलेजों और स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों में प्रख्यात साहित्यिक विद्वानों की सेवाओंके उपयोग हेतु योजना

उद्देश्य

इस योजना का उद्देश्य उन विभिन्न केन्द्रों में विविध शास्त्रीय विषयों के संस्कृत में गहन अध्ययन को बढ़ावा देना है जहाँ छात्रों को पारम्परिक पद्धति से संस्कृत शिक्षण प्रदान किया जाता है। प्राचीन काल में शिक्षण पद्धति में शिष्य और गुरु के न्यूनतम 12 वर्ष तक साहचर्य का पूर्णकालिक होना ध्यान रखा जाता था। उनके पास विभिन्न दुर्बोध शास्त्रीय विषयों की व्याख्या करने का पर्याप्त समय होता था और छात्रों के पास विषय विशेष पर ध्यान व विस्तृत ढंग से नैपुण्य प्राप्त करने का अवसर रहता था। लेकिन हाल की आधुनिक शिक्षा पद्धति में सीमित अवधि के लिए पाठ्य-पुस्तकों में से चयनित व निर्धारित पाठ्यक्रम होता है। इससे संस्कृत शिक्षण पद्धति भी प्रभावित हुई है। परिणामस्वरूप, जहाँ संस्कृत विषय में छात्रों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे स्नातकोत्तर स्तर पर विशेषज्ञता प्राप्त करें, वहीं समयाभाव के कारण उच्चतर पाठ्य-पुस्तकों को विस्तार से एवं सम्पूर्णता से पढ़ाने की कोई सम्भावना नहीं है। परिणामत: इस पद्धति के अध्येता यद्यपि अपने विषयों के मूलभूत सिद्धान्तों में पूर्ण निपुण होते हैं, तथापि उनमें इन विषयों पर लिखित उच्चतर पुस्तकों के गहन एवं व्यापक ज्ञान का अभाव होता है।

स्नातकोत्तर स्तर की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के तुरन्त बाद घरेलू आवश्यकताएँ उन्हें आजीविकोपार्जन हेतु किसी व्यवसाय के लिए बाध्य कर देती हैं। इन्हीं स्नातकोत्तर परीक्षोत्तीर्ण व्यक्तियों में से अब हमें तरुण अध्यापक एवं प्राध्यापक भर्ती करने होते हैं। यद्यपि वे अपनी पढ़ाई आगे जारी रखने में अत्यधिक रुचि रखते हैं तथापि जिन संस्थाओं में वे नियुक्त होते हैं उनमें ऐसा करने की सुविधाएँ नहीं होतीं। परिणामस्वरूप, ये प्राध्यापक अपने छात्रों को सम्बन्धित परीक्षाओं के लिए तैयारी करवाने से सम्बद्ध अपने कर्त्तव्य का निर्वहण तो प्रवीणता से कर देते हैं, फिर भी उन्हें अपने क्षेत्र में उतनी योग्यता प्राप्त नहीं होती जितनी योग्यता 2 या 3 दशाब्दि पूर्व उनके पूर्ववर्ती प्राप्त करने में सक्षम होते थे। उनकी शैक्षणिक रुचि का शोषण नहीं किया जाना चाहिए और उनकी अध्ययनशील रिक्ति दूर की जानी चाहिए। इससे वे इस उद्देश्य को पूर्ण करने में सक्षम होंगे और छात्रों की एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण करने में समर्थ होंगे जो अपने-अपने विषयों में वास्तव में दक्ष होगी।

सौभाग्यवश इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु कुछ पुराने विद्वान् अभी भी जीवित हैं। वे शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से सजग हैं और कुछ अधिक वर्षों के लिए उनका सफल उपयोग किया जा सकता है। यह आवश्यक नहीं है कि वे किसी विश्वविद्यालय की उपाधि या योग्यता के कारण विद्वान् हों। लेकिन फिर भी वे अपने क्षेत्र में निपुण हैं और उनके चरणों में बैठकर तरुण शिक्षकों को अध्ययन करने में कोई अनुताप नहीं होगा। वे संस्था के शैक्षिक वातावरण में वृद्धि करेंग और अध्यापकों तथा छात्रों के सन्देह-निराकरण करने हेतु सहज ही उपलब्ध रहेंगे।

कार्यान्वयन

इस योजना के अन्तर्गत राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के प्रत्येक परिसर, आदर्श संस्कृत पाठशाला और संस्कृत विश्वविद्यालय में दो विद्वान् और राज्य सरकार द्वारा संचालित अथवा पर्याप्त रूप से वित्तपोषित संस्कृत कालेजों में एवं स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों में एक विद्वान् की नियुक्ति सामान्यतया की जाती है। ऐसी नियुक्तियाँ सम्बद्ध संस्था के माध्यम से प्राप्त आवेदनों के आधार पर विशेषज्ञों से युक्त सहायता अनुदान समिति की संस्तुतियों पर की जाती हैं। इस प्रकार से की गई नियुक्तियां प्रारम्भ में दो वर्ष की अवधि हेतु की जाती हैं। संस्था के प्रधान की विशिष्ट रिपोर्ट के आधार पर समिति द्वारा एक वर्ष का विस्तार प्रदान किया जाता है। नियुक्त विद्वान् को प्रतिमास रु. 6000/- का मानदेय प्रदान किया जाता है।

इस वर्ष विभिन्न संस्थाओं में 45 शास्त्र चूड़ामणि विद्वानों की नियुक्ति की गई।

8.4 व्यावसायिक प्रशिक्षण योजना

परम्परागत संस्कृत पाटशालाओं/संस्थाओं से शिक्षित छात्रों हेतु "प्रायोगिक प्रशिक्षण" संचालन के लिए पंजीकृत शैक्षिक संगठनों को वित्तीय सहायता

कुछ विशिष्ट विभागों में परम्परागत शिक्षण प्राप्त प्रत्याशियों को आजीविका के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से पंजीकृत शैक्षिक निकायों को वित्तीय सहायता प्रदान करने की योजना आरम्भ की गई। इसके अन्तर्गत पारम्परिक संस्कृत पाठशालाओं/संस्थाओं से शिक्षित छात्रों को अल्पकालीन अनुकूलन पाठ्यक्रम प्रदान किए जाते हैं। अध्यापन के विषय पाण्डुलिपि विज्ञान, सूची-निर्माण, पुरालिपि शास्त्र, संस्कृत टंकण व आशुलिपि, ज्योतिष, कर्मकाण्ड व पुरालेखशास्त्र इत्यादि हैं। ये प्रशिक्षण पाठ्यक्रम सामान्यतया तीन से नौ सप्ताह तक की विभिन्न अल्पावधियों के लिए संचालित किए जाते हैं। इस अवधि में छात्रों को शिक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से शैक्षिक निकाय से सम्बन्धित क्षेत्रों के विशेषज्ञों को आमन्त्रित किया जा सकता है। इच्छुक संस्थाएँ ऐसे किसी भी कार्यक्रम के आयोजन हेतु निर्धारित आवेदन-पत्र में आवेदन कर सकती हैं। उन्हें अल्पावधि पाठ्यक्रमों हेतु स्थानीय समाचार-पत्रों में भी विज्ञापन देना होता है और इसका लाभ प्राप्त करने के इच्छुक छात्रों से आवेदन आमन्त्रित करने होते हैं। प्रत्येक छात्र से रु. 5/- का सामान्य पंजीकरण शुल्क लिया जा सकता है। प्रत्येक छात्र को प्रशिक्षण दिवसों में रु. 10/- प्रति दिन के हिसाब से फुटकर भत्ता दिया जाता है। विशेषज्ञ प्रशिक्षक को सामान्यत: प्रतिदिन रु. 100/- का मानदेय प्रदान किया जाता है।

योग्यता के आधार पर संस्तुति करने हेतु किसी विशेषज्ञ/सहायता अनुदान समिति द्वारा आवेदनों पर विस्तृत विचार किया जाता है। संस्थान द्वारा सम्बद्ध संस्था को समिति द्वारा अनुमोदित कुल अनुमानित व्यय का 75% अग्रिम के रूप में जारी किया जाता है और अवशिष्ट 25% का निर्मोचन लेखा-परीक्षित लेखों की प्राप्ति होने पर तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की रिपोर्ट मिलने पर किया जाता है।

8.5 संस्कृत शब्दकोश परियोजना

1500 ईसा पूर्व से 1900 ई॰ तक ऐतिहासिक सिद्धान्तों पर अति व्यापक संस्कृत कोश तैयार करने की योजना डेकन कॉलेज, पूना द्वारा आरम्भ की गई है। यह वर्ष 1948 में आरम्भ की गई थी। प्रधान सम्पादक द्वारा संस्कृत शब्दकोश परियोजना विभाग, डेकन कॉलेज, पूणा का नेतृत्व किया जा रहा है। अब तक शब्दकोश की 8 जिल्दें प्रकाशित की जा चुकी हैं। आठवें खण्ड का कार्य प्रगति पर है। यह योजना मुख्य रूप से भारत सरकार द्वारा और कुछ सीमा तक महाराष्ट्र सरकार द्वारा वित्त-पोषित की गई। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा वर्ष 2009-10 में संस्कृत शब्दकोश परियोजना हेतु रु. 29.56 लाख की राशि का निर्मोचन किया गया।

8.6 संस्कृत, पालि/प्राकृत, अरबी और फ़ारसी विद्वानों को राष्ट्रपति-सम्मान-पत्र प्रदान करने की योजना

संस्कृत, अरबी और फ़ारसी भाषाओं के विद्वानों को सम्मानित करने के लिए 'राष्ट्रपति-सम्मान-पत्र प्रदान करने की योजना' 1958 में आरम्भ की गई। इस योजना को 1996 में पालि/प्राकृत तक विस्तारित किया गया। विद्वानों को उनके सम्बद्ध क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान की स्वीकृति में वर्ष में एक बार स्वतन्त्रता दिवस पर सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष 2008 से, एन.आर. आइ. अथवा किसी विदेशी द्वारा संस्कृत के क्षेत्र में उनकी आजीवन उपलब्धि हेतु एक अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार सम्मिलित करने के उद्देश्य से इस योजना का विस्तार किया गया। इस योजना के अधीन राष्ट्रपति द्वारा प्रत्येक विद्वान् को एक सनद तथा शाल प्रदान किए जाने के

अतिरिक्त संस्कृत के विद्वानों को रु. 5.00 लाख का आर्थिक अनुदान तथा पालि/प्राकृत, फारसी एवं अरबी विद्वानों को आजीवन रु. 50,000/- का वार्षिक अनुदान देने पर विचार किया जाता है।

इस योजना के अन्तर्गत संस्कृत हेतु 15, अरबी और फ़ारसी में से प्रत्येक के लिए 3 और पाली/प्राकृत के लिए एक पुरस्कार है।

वर्ष 2002 से 30-40 वर्ष की आयु वर्ग के युवा विद्वानों के लिए संस्कृत में 5 पुरस्कार तथा पालि/प्राकृत, अरबी और फारसी में से प्रत्येक के लिए एक पुरस्कार आरम्भ किया गया है। इस पुरस्कार का नाम महर्षि बादरायण व्यास सम्मान है। प्रत्येक को सनद तथा शाल के अतिरिक्त रु. 1 लाख का एकमुश्त नकद पुरस्कार प्रदान किया जाता है। इन युवा विद्वानों से अपेक्षित है कि वे अन्तः विद्या विशेषों के अध्ययन में निपुण हों। इनमें आधुनिकता एवं परम्परा तथा इन भाषाओं में विज्ञान के प्रोत्साहन हेतु कार्यरत वैज्ञानिकों व आइ.टी.व्यावसायिकों के मध्य सह-क्रिया की प्रक्रिया में संस्कृत अथवा प्राचीन भारतीय प्रज्ञा का योगदान सम्मिलित है।

प्रतिवर्ष इन पुरस्कारों हेतु निम्नलिखित से प्रस्ताव आमन्त्रित किए जाते हैं :

(अ) भारत सरकार के सभी सचिव।

(आ) सभी राज्य सरकारों/संघ शासित प्रदेशों के मुख्य सचिव।

(इ) सभी राज्य सरकारों/संघ शासित प्रदेशों के शिक्षा-सचिव।

(ई) सभी भारतीय विश्वविद्यालयों और मानित विश्वविद्यालयों के कुलपति।

(उ) राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त विद्वान।

(ऊ) बाह्य मामले सम्बन्धी मन्त्रालय (सभी भारतीय दूतावासों हेतु)

सर्वप्रथम संस्तुतियों की जाँच मानव संसाधन विकास मन्त्री द्वारा अनुमोदित प्राथमिक चयन समिति करती है। सदस्य अपने-अपने कार्य क्षेत्र कि अत्यन्त प्रख्यात विद्वान् हैं।

प्राथमिक चयन समिति द्वारा की गई संस्तुतियाँ फिर मानव संसाधन विकास मन्त्री , प्रधान मन्त्री और तब अन्त में भारत के राष्ट्रपति को स्वीकृति हेतु भेजी जाती हैं।

8.7 संस्कृत वाङ्मय सृजन योजना

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान संदर्भ ग्रन्थ, मूल लेखन, शोध-प्रबन्ध, अनुवाद, हस्तलिपियों की विवरणात्मक सूची, समीक्षात्मक संस्करण, दुर्लभ अप्राप्य ग्रन्थों के पुनर्मुद्रण संस्करण और अन्य किसी भी प्रकार के प्रकाशन जो संस्कृत भाषा तथा साहित्य के प्रोत्साहन हेतु प्रेरक रूप में वैयक्तिक रूप से स्वीकृत हों-जैसे संस्कृत आधारित ग्रन्थों के प्रकाशन के लिए पंजीकृत संगठनों, लेखकों, सम्पादकों एवं अनुवादकों या विशिष्ट व्यक्तियों अथवा विचाराधीन ग्रन्थ का प्रकाशनाधिकार रखने वाले और उस ग्रन्थ के प्रकाशन के इच्छुक व्यक्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है। इस योजना के अन्तर्गत सहायता राशि मूल लेखन के मामले में रचना की वास्तविक लागत की अधिकतम 80% स्वीकृत की जाती है और शोध-प्रबन्ध के मामले में यह अधिकतम 50% स्वीकृत की जाती है। तथापि, दुर्लभ हस्तलिपियों की विवरणात्मक सूची के लिए सहायता कुल व्यय का 100% तक हो सकती है।

आवेदकों को निर्धारित आवेदन प्रपत्र में प्रकाशन अनुदान हेतु आवेदन करना होता है। साथ में दो भिन्न-भिन्न मुद्रकों से रचना की अनुमानित लागत और प्रस्तावित कार्य के लगभग पैंतीस पृष्ठ भी प्रस्तुत करने होते हैं। इस प्रकार से प्राप्त नमूना पृष्ठों को प्रस्तावित कार्य की उपयोगिता पर विशेषज्ञों की राय जानने हेतु भेजा जाता है। फिर प्रस्ताव और विशेषज्ञों की राय को आवश्यक संस्तुतियाँ करने हेतु सहायता अनुदान समिति के समक्ष रखा जाता है। स्वीकृत प्रस्तावों के आवेदकों को संस्वीकृति आदेश की तारीख से दो साल की अवधि के अन्दर ही ग्रन्थ को प्रकाशित करना होता है। मुद्रण के बाद ग्रन्थ की नमूना प्रति और मुद्रक बिल की जाँच विशेषज्ञ अभिकरण द्वारा की जाती है जो रचना की वास्तविक

लागत का हिसाब लगाता है। उसके आधार पर निश्चित फॉर्मूला के अनुसार एक प्रति की कीमत निश्चित की जाती है। वास्तविक संस्वीकृत अनुदान सहित इसकी सूचना आवेदक को भेजी जाती है। अनुदान के बदले में आवेदकों को मामले के अनुसार ग्रन्थ की कुछ प्रतियाँ डाक द्वारा सूचीबद्ध पुस्तकालयों को नि:शुल्क भेजनी होती हैं। संस्थान डाक प्रभार अदा करता है और संस्वीकृत अनुदान जारी करता है। इसके साथ, संस्कृत पत्रिकाओं/समाचार-पत्रों के लिए वार्षिक संस्वीकृत प्रकाशन अनुदान भी जारी किया जाता है।

इसके अतिरिक्त, समय-समय पर सहायता अनुदान समिति की सिफारिशों पर संस्थान दुर्लभ संस्कृत ग्रंथों के पुनर्मुद्रण हेतु कुछ शर्तों के आधार पर किसी विश्वविद्यालय अथवा पंजीकृत स्वैच्छिक संगठन या सुप्रतिष्ठित व्यावसायिक प्रकाशक की सहायता कर सकता है। ऐसी सहायता अनुमोदित निम्न कीमत पर ऐसे प्रत्येक पुनर्मुद्रण की 500 प्रतियाँ खरीद कर की जा सकती है, बशर्ते कि प्रकाशक प्रथम क्रय आदेश की तारीख से तीन वर्ष के भीतर उसी कीमत पर 300 अतिरिक्त प्रतियों की आपूर्ति का वचन देता है।

वर्ष 2009-10 में वित्तीय सहायता से प्रकाशित एवं प्रकाशन अनुदान हेतु संस्वीकृत प्रस्तावों का विवरण क्रमश: संलग्नक ञ और ट में दिया गया है।

8.8 ग्रन्थ क्रय योजना

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान लेखकों, प्रकाशकों, पुस्तकों के विक्रेताओं, संगठनों आदि से संस्कृत भाषा और साहित्य से सम्बद्ध पुस्तकों की प्रतियाँ थोक में खरीद कर उनको वित्तीय सहायता प्रदान करता है, बशर्ते कि ऐसी पुस्तकें संस्थान की किसी अन्य योजना के अन्तर्गत सहायता पाकर प्रकाशित नहीं हुई हैं। हालांकि, जिन पुस्तकों के लिए नकद राज्य पुरस्कारों के माध्यम से अथवा प्रशंसात्मक उल्लेख के माध्यम से मान्यता दी गई है वे भी इसके पात्र हैं।

आवेदक निर्धारित आवेदन-प्रपत्र में संस्थान को आवेदन भेजते हुए पुस्तकों की कम-से-कम दो प्रतियाँ मानार्थ भेजें। ये मानार्थ प्रतियाँ प्रत्यावर्तनीय नहीं हैं। सहायता अनुदान समिति की सिफारिशों पर आवेदकों को क्रय आदेश के साथ उन पुस्तकालयों की सूची भी भेजी जाती है जिन्हें निर्धारित संख्या में पंजीकृत पार्सल के द्वारा प्रतियाँ भेजनी हैं। आवेदक से अपेक्षित है कि वह न्यूनतम 25% व्यापारिक बट्टा प्रदान करे। आवेदक बिल में पैकिंग व्यय और पंजीकृत पार्सल व्यय जोड़ सकता है जिनका वहन भी संस्थान करता है। आवेदक प्रतियों के प्रेषण-सम्बन्धी मूल डाक रसीदों सहित सम्बन्धित बिल भुगतान की संस्वीकृति हेतु प्रस्तुत किया जाता है।

वर्ष 2009-10 में इस योजना के अन्तर्गत रुपये 36.07 लाख की राशि का उपयोग किया गया।

8.9 आदर्श संस्कृत महाविद्यालयों/शोध संस्थानों के रूप में मान्यता प्राप्त संस्थाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु योजना

उद्देश्य

इस योजना का उद्देश्य पारम्परिक संस्कृत विद्या तथा शोध को सहायता देना एवं प्रोत्साहित करना है। इस योजना के अन्तर्गत इसी प्रयोजन से, संस्कृत महाविद्यालयों को प्राक्शास्त्री, शास्त्री एवं आचार्य स्तर पर पाठ्यक्रमों का संचालन करने हेतु और शोध संस्थानों को पी-एच. डी. एवं पी-एच.डी. से उच्च स्तरों पर शोध का आयोजन तथा संचालन हेतु सहायता प्रदान की जाती है। ऐसी अनुदानग्राही संस्थाएं स्वीकृत आवर्ती का 95%, स्वीकृत अनावर्त्ती का 75% प्राप्त करती हैं।

मान्यता एवं वित्तीय सहायता की शर्तें :

इस योजना के अन्तर्गत केवल संस्कृत महाविद्यालयों अथवा शोध संस्थानों के रूप में मान्यता-प्राप्त संस्थाएँ वित्तीय सहायता हेतु विचारणीय हैं। हालांकि, मान्यता के कारण किसी भी संस्था को स्वत: वित्तीय सहायतार्थ

अधिकार नहीं मिलता और न ही सहायता अनुदान का जारी रहना अधिकार की बात होती है।

कोई भी पंजीकृत स्वैच्छिक संगठन जो संस्कृत महाविद्यालय या शोध संस्थान का अनुरक्षण करता हो, यदि वह सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम के अन्तर्गत 'सोसाइटी' अथवा 'पंजीकृत न्यास' है, तो वह मान्यता हेतु आवेदन कर सकता है। निम्नलिखित शर्तों को पूरा करने पर ही भारत सरकार द्वारा मान्यता देने पर विचार किया जाता है।

(i) महाविद्यालय में पारम्परिक पद्धति से प्राक्शास्त्री, शास्त्री, आचार्य अथवा समकक्ष पाठ्यक्रमों का अध्यापन होता हो। शोध संस्थान में विभिन्न पारम्परिक संस्कृत विद्या विशेषों में क्रियात्मक शोध जारी रखा जाता हो;

(ii) महाविद्यालय/शोध संस्थान ऊपर (i) में उल्लिखित स्तर पर कम-से-कम सात साल से अस्तित्व में होना चाहिए। हालांकि, पहली योजना के अन्तर्गत वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले महाविद्यालयों/शोध संस्थानों का इस संशोधित योजना के अन्तर्गत वित्तीय सहायता प्राप्त करने का अधिकार बना रहेगा;

(iii) संस्थाओं के पास उपयुक्त भवनों तथा परिसरों का स्वामित्व एवं नियन्त्रण होना चाहिए। संस्थाओं के पक्ष में 99 वर्ष का पट्टा भी स्वीकार्य होगा;

(iv) इस योजना के अन्तर्गत भविष्य में मान्यता एवं वित्तीय सहायता हेतु आवेदन करने वाले पंजीकृत मूल निकाय को सावधि जमा खाते में न्यूनतम रु. 2.00 लाख की राशि जमा करवानी होगी। हालांकि, पुरानी योजना के अधीन पहले से सहायता प्राप्त जिन संस्थाओं ने महाविद्यालय/शोध संस्थान के पक्ष में रुपये 1 लाख जमा करवाए हैं, उन्हें इस शर्त से छूट दी जाएगी;

(v) महाविद्यालय/शोध संस्थान या तो केन्द्रीय सरकार अथवा राज्य सरकार द्वारा अधिनियम बनाकर विधिवत् संस्थापित किसी विश्वविद्यालय से या राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान से सम्बद्ध होना चाहिए;

(vi) एक महाविद्यालय में छात्रों की संख्या 50 से कम नहीं होनी चाहिए, एक शोध संस्थान में 12 सक्रिय शोधकर्त्ताओं से कम संख्या नहीं होनी चाहिए।

मान्यता प्रदान करने हेतु आवेदन मिलने पर सरकार तत्काल निरीक्षण करवाएगी और विशेषज्ञ समिति द्वारा उसका आकलन होगा तथा मान्यता हेतु इसका निर्णय आवेदनकर्त्ता संगठन को सूचित किया जाएगा। इसके पश्चात् विशेषत: इस उद्देश्य से संगठित अनुवीक्षण समिति द्वारा वर्तमान स्टाफ की छानबीन की जाएगी।

इस योजना के अन्तर्गत सभी मान्यता-प्राप्त संस्कृत महाविद्यालय/शोध संस्थान वित्तीय सहायता हेतु विचार किए जाने के पात्र होंगे, बशर्ते कि वे इस योजना में बताई गई शर्तों का पालन करने हेतु वचनबद्ध हों।

इसके अतिरिक्त उन्हें योजना में उल्लिखित अनुसार प्रबन्धन समिति के स्वरूप एवं संरचना, इसके कार्य, स्टाफ का स्वरूप, उपयोज्य अनुदान आदि से सम्बद्ध शर्तों का भी अनुपालन करना होगा।

संस्थान से वार्षिक अनुदान प्राप्त करने वाले आदर्श महाविद्यालयों/शोध संस्थानों की सूची संलग्नक-ठ में दी गई है।

8.10 शोध एवं उच्चमाध्यमिकोत्तर छात्रवृत्तियाँ प्रदान करने हेतु योजना

इस योजना के अन्तर्गत शिक्षा की + 2 पद्धति, स्नातक, स्नातकोत्तर और पारम्परिक पद्धति के समकक्ष पाठ्यक्रमों एवं पी-एच.डी. की मार्गदर्शक शोध अथवा संस्कृत अध्ययन में समकक्ष उपाधि जिसमें पाली व प्राकृत भाषाएँ भी एक विषय के रूप में सम्मिलित हैं–इन सभी के नियमित छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती हैं। प्रत्येक वर्ष में प्रदत्त छात्रवृत्तियों की संख्या निधि की उपलब्धता पर निर्भर है। आरक्षण समय-समय पर सरकार की नीति के अनुसार प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नौवीं व दसवीं अथवा समकक्ष स्तर के छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करता है।

संस्कृत में न्यूनतम 60% अंक लेकर अर्हकारी परीक्षा उत्तीर्ण परीक्षार्थी इन छात्रवृत्तियों के पात्र हैं।

आरक्षित वर्ग के परीक्षार्थियों के मामले में अंकों की प्रतिशतता की अर्हता को घटाकर 50% किया जा सकता है। प्रार्थी छात्रों से अपेक्षित है कि वे छात्रवृत्तियाँ पाने हेतु अपने आवेदन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान को उन संस्थाओं के माध्यम से भेजें जिनमें वे अपना अध्ययन/शोध जारी रखने के इच्छुक हों। ये छात्रवृत्तियाँ इस उद्देश्य से गठित चयन समिति की सिफारिशों के आधार पर प्रदान की जाती है। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम तक के छात्रों हेतु ये छात्रवृत्तियाँ 10 मास के एक शैक्षिक वर्ष के लिए समर्थनीय हैं। क्योंकि ये वार्षिक परीक्षा परिणामों के आधार पर प्रदान की जाती हैं, अतः छात्रों को प्रति वर्ष नये सिरे से आवेदन करना होता है। शोध छात्रवृत्ति दो पूर्ण वर्षों के लिए दी जाती है और दूसरे वर्ष की छात्रवृत्ति उपयोगिता प्रमाण-पत्र एवं छात्र के कार्य की प्रगति की रिपोर्ट प्राप्त होने पर प्रदान की जाती है।

जो छात्र किसी अन्य संस्था से कोई भी छात्रवृत्ति प्राप्त करता है या छात्रवृत्ति के कार्यकाल में किसी अन्य वृत्तिकारी कार्य में संलग्न रहता है, या किसी अन्य पाठ्यक्रम का अध्ययन करता है जिसमें संस्कृत अध्ययन का प्रावधान नहीं हो, उसे छात्रवृत्ति के अधिकार से वंचित कर दिया जाता है। प्रत्येक प्रत्याशी से सभी आवश्यक शर्तों को प्रमाणित करने की अपेक्षा की जाती है।

अध्ययन के विभिन्न पाठ्यक्रमों हेतु छात्रवृत्ति की निम्नलिखित दरें हैं :

(1) संस्कृत के साथ नवम एवं दशम कक्षाएँ तथा समकक्ष पाठ्यक्रम रु. 250/- प्रतिमाह।

(2) संस्कृत के साथ ग्यारहवीं एवं बारहवीं कक्षाएँ तथा समकक्ष पाठ्यक्रम रु. 300/- प्रतिमाह।

(3) बी.ए./बी.ए. (आनर्स) तथा त्रिवर्षीय समकक्ष पाठ्यक्रम रु. 400/- प्रतिमाह।

(4) संस्कृत/पालि/प्राकृत में एम.ए. तथा इसके समकक्ष स्नातकोत्तर उपाधि रु. 500/- प्रतिमाह।

(5) संस्कृत/पालि/प्राकृत में पी-एच.डी. और समकक्ष रु. 1500/- प्रतिमास + रु. 2000/- प्रतिवर्ष आनुषंगिक अनुदान के रूप में (दो वर्ष तक)।

8.11 असहाय परिस्थितियों वाले प्रसिद्ध संस्कृत पंडितों को सम्मान राशि देने की योजना

इस योजना के अन्तर्गत, 55 वर्ष की आयु से अधिक वाले प्रसिद्ध उन योग्य विद्वानों को सम्मान राशि दी जाती है, जिन्होंने संस्कृत को अपना जीवन समर्पित कर दिया है, लेकिन कोई स्थायी आय-स्रोत नहीं है। ऐसे सुझाव राज्य-सरकारों से सीधे प्राप्त होते हैं अथवा राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के माध्यम से पहुंचते हैं। प्रत्येक चयनित विद्वान को रुपये 24000/- प्रतिवर्ष, अन्य आय की कटौती बिना दिये जाते हैं। इस उद्देश्य हेतु केवल उन्हीं पंडितों पर विचार किया जाता है जिसकी आय रुपये 24000/- प्रतिवर्ष से कम है। किसी अन्य गुणवत्ता का निर्धारण नहीं है। संस्कृत पंडितों को यह वित्तीय सहायता 'राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान', नई दिल्ली के माध्यम से बांटा जाता है तथा लाभार्थी व्यक्ति के बैंक खाते में जमा किया जाता है।

प्राप्तकर्ता की दुर्भाग्यपूर्ण मृत्यु की दशा में, यह सहायता उसके पति/पत्नी को मृत्युपर्यन्त लगातार दी जाती है।

9. वर्ष 2009-10 की प्रमुख गतिविधियाँ

9.1 तृतीय दीक्षान्त समारोह (12, सितम्बर, 2009)

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय का तृतीय दीक्षान्त समारोह 12 सितम्बर, 2009 को ''सीरि फोर्ट'' सभागार, नई दिल्ली में आयोजित हुआ।

श्री कपिल सिब्बल, मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार तथा अध्यक्ष, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने इस समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर उच्चतम न्यायालय के पूर्व प्रधान न्यायाधीश, पद्मविभूषण, महामहीम श्री पी.एन. भगवती ने अपना दीक्षान्त उद्बोधन प्रस्तुत किया।

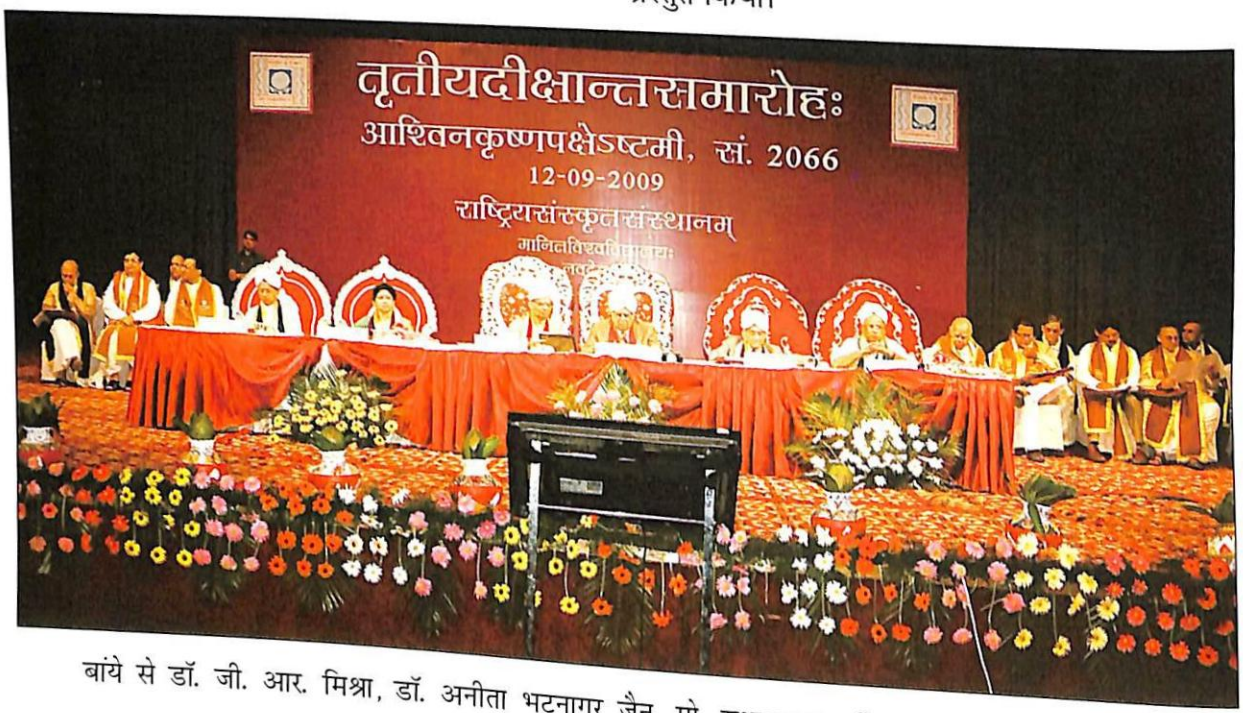

बांये से डॉ. जी. आर. मिश्रा, डॉ. अनीता भटनागर जैन, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, माननीय मंत्री, महामहीम न्यायाधीश, श्री सी.एस.कन्याल

लब्ध प्रतिष्ठित संस्कृत विद्वान प्रो. रामानुज टाटाचार्य एवं प्रो. रामकरण शर्मा को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा क्रमशः 'शास्त्रकल्पद्रुम' एवं 'विद्यावाचस्पति' से सम्मानित किया गया।

प्रबन्धन बोर्ड एवं शैक्षणिक परिषद के सभी सदस्यों, प्राचार्यों एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने पारम्परिक प्रक्रिया से इस उत्सव को सुशोभित किया। इनका स्वागत पंचवाद्यम (केरल का पारम्परिक वाद्ययंत्र) से किया गया।

इस अवसर पर निम्नलिखित पुस्तकों एवं सी.डी. एलबमों का विमोचन किया गया:-

(i) व्यवहारमयूख (अंग्रेजी अनुवाद के साथ)- सम्पादक - प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी

(ii) राधावल्लभीय मतप्रकाशकम् ब्रह्मसूत्रभाष्यम्- सम्पादक-डॉ. मिथिला प्रसाद त्रिपाठी

(iii) कविभास्करी - सी.डी. एलबम श्रृंखला - I

(iv) कथादशकम् - सी.डी. दस सजीव कहानियाँ

(v) वैदिकगणितम् - सी.डी. एलबम

कथादशकम सी.डी. का विमोचन करते हुए माननीय मंत्री महोदय

डॉ. अनीता भटनागर जैन, संयुक्त सचिव (भाषा) एवं श्री आर.पी. सिसोदिया, निदेशक (भाषा), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, प्रो. वाचस्पति उपाध्याय, कुलपति, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने अपनी उपस्थिति से इस समारोह को सुशोभित किया। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने अपना स्वागत सम्भाषण एवं रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए संस्थान के अद्यावधि विकास एवं गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

इस अवसर पर 112 विद्यार्थियों को विद्यावारिधि (पी. एच.डी.), 1471 विद्यार्थियों को शिक्षा शास्त्री (बी.एड.), 1542 विद्यार्थियों को आचार्य (एम.ए.), 45 विद्यार्थियों को शिक्षाचार्य (एम.एड.) एवं 1780 विद्यार्थियों को शास्त्री (बी.ए.) की उपाधि प्रदान की गयी। 43 मेधावी विद्यार्थियों को स्वर्णपदक भी प्रदान किये गये। एक विशेष स्वर्ण पदक जो श्री एन.जी. कौशल द्वारा अपनी स्वर्गीय बहन श्रीमती संयुक्ता थुंगन की स्मृति में संस्थापित किया गया है, को स्नातकोत्तर परीक्षा में अधिकतम अंक पाने वाले विनायक भट्ट को माननीय मंत्री जी द्वारा प्रदान किया गया।

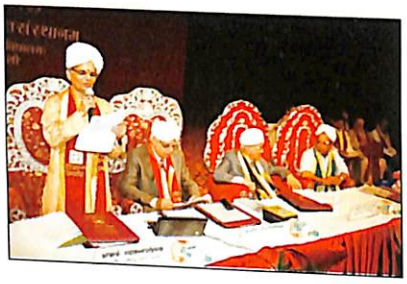

9.2 प्राकृत राष्ट्रिय संगोष्ठी (25-27 जुलाई, 2009)

अनुविभा केन्द्र, जयपुर में 25 से 27 जुलाई, 2009 तक प्राकृत राष्ट्रिय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का उद्घाटन पूर्व राज्यपाल एवं न्यायाधीश श्री अंशुमन सिंह द्वारा किया गया। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने इस समारोह की अध्यक्षता की। श्रीमती रीता चटर्जी, निदेशक (भाषा), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी, पूर्व निदेशक, कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन, प्रो. एस.पी. शर्मा, अलीगढ़ विश्वविद्याल एवं मुनि श्री विनय कुमार ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम सुशोभित किया। इस समारोह में श्री सी. एस. कन्याल, कुलसचिव एवं प्रो. अर्कनाथ चौधरी, प्रभारी प्राचार्य, जयपुर परिसर भी उपस्थित थे।

बांये से श्री सी.एस. कन्याल, श्रीमती रीता चटर्जी, प्रो. आर. वी. त्रिपाठी, न्यायाधीश श्री अंशुमन सिंह, मुनि श्री विनय कुमार, प्रो. के. डी. त्रिपाठी, प्रो. एस. पी. शर्मा एवं प्रो. अर्कनाथ चौधरी

प्रो. एस.पी. शर्मा ने मुख्य विषय पर उद्बोधन किया। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ने दार्शनिक, धार्मिक एवं साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत एवं प्राकृत के महत्त्व पर प्रकाश डाला। इस त्रिदिवसीय संगोष्ठी में 55 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये। प्रो. दयानन्द भार्गव, श्री ए.के. सिंघवी, श्री कोकिला एच. शाह, श्री सागर नाथ जैन, देवर्षि कलानाथ शास्त्री, डॉ. दामोदर शास्त्री, प्रो. सुदीप जैन, प्रो. रामजी राम, प्रो. प्रेम सुमन जैन, प्रो. सत्य प्रकाश शर्मा, श्री विनय सागर, प्रो. फूलचन्द जैन, प्रो. विजय कुमार जैन, श्री शीतल चन्द जैन, श्री ऋषभ प्रसाद जैन एवं डॉ. कमलेश कुमार जैन ने विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता की।

समापन समारोह 27 जुलाई, 2009 को आयोजित किया गया जिसमें प्रो. नामवर सिंह मुख्य अतिथि थे। इस त्रिदिवसीय संगोष्ठी में प्राकृत भाषा के दर्शन, धर्म, अलंकार शास्त्र, नैतिक मूल्यों एवं साहित्य पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। डॉ. अनीता भटनागर जैन, संयुक्त सचिव (भाषा), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित होकर इस समापन समारोह को सुशोभित किया। इस संगोष्ठी में

संस्कृत एवं प्राकृत के प्रख्यात विद्वानों ने भाग लिया। प्रो. युगल किशोर मिश्र, कुलपति, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने इस समापन समारोह की अध्यक्षता की। कार्यक्रम का समापन श्री सी.एस. कन्याल, कुलसचिव, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

प्रो. नामवर सिंह समापन समारोह में सम्भाषण प्रस्तुत करते हुए, मञ्चासीन-प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, डॉ. अनीता भटनागर जैन, प्रो. युगल किशोर मिश्रा एवं प्रो. अर्कनाथ चौधरी

9.3. संस्कृत सप्ताहमहोत्सव समारोह (2-8 अगस्त, 2009)

2 अगस्त से 8 अगस्त तक संस्कृत सप्ताहमहोत्सव का आयोजन किया गया। 5 अगस्त, 2009 को फिक्की सभागार में मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली के सौजन्य से 'संस्कृत दिवस' मनाया गया। प्रो. राम रंजन मुखर्जी, पूर्व कुलाधिपति, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। प्रो. वी. कुटुम्ब शास्त्री, कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने मुख्य अतिथि के रूप में सम्भाषण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर पुरी, तिरुपति, उत्तराखण्ड एवं कलाड़ी के संस्कृत विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने भी अपने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए संस्कृताध्ययन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान ने शब्दकल्पद्रुमः (संस्कृत के अति विशाल विश्वकोश सम्बन्धी शब्दकोश) के इलेक्ट्रोनिक टैक्स्ट का भी विमोचन किया। साथ ही साथ संस्थान के शोध जर्नल 'संस्कृत विमर्श' के द्वितीय अंक एवं कक्षा में अध्यापनार्थ तैयार की गयी ''संक्षेप रामायण'' की डी.वी.डी. का लोकापर्ण किया गया। इस अवसर पर प्रख्यात अर्थशास्त्री एवं राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के पूर्व कुलाधिपति, प्रो. वी.आर. पंचमुखी ने भी अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रो. वाचस्पति उपाध्याय, कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली ने स्वागत भाषण दिया तथा प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। श्री वी.के. अग्रवाल, अवर सचिव (संस्कृत विभाग), मानव संसाधन विकास मन्त्रालय ने भी इस अवसर पर सम्भाषण प्रस्तुत किया।

बांये से : प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो. वाचस्पति उपाध्याय, प्रो. वी. कुटुम्ब शास्त्री, प्रो. आर.आर. मुखर्जी, प्रो. वी.आर. पंचमुखी, प्रो. पी. एल. जानी, प्रो. एस. के. सतपथी, डॉ. सुधा रानी पाण्डेय, डॉ. सुषमा कुलश्रेष्ठ एवं श्री वी.के. अग्रवाल

संस्कृत सप्ताहोत्सव के दौरान अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। 2 अगस्त, 2009 को संस्कृत सप्ताहोत्सव के उद्घाटन के उपरान्त समकालीन संस्कृत विद्वानों द्वारा विचार-विमर्श ''विद्वत् सपर्या'' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रो. पी. श्रीरामचन्द्रुडु, हैदराबाद का अभिनन्दन किया गया। निम्नलिखित विद्वानों ने प्रो. श्रीरामचन्द्रुडु के कार्यों पर अपने विचार प्रकट किये- प्रो. सी. राजेन्द्रन, कालिकट, प्रो. शशि प्रभा कुमार, दिल्ली, प्रो. शशि रेखा, हैदराबाद एवं प्रो. जी. एस. आर. कृष्णमूर्त्ति, तिरुपति।

सामूहिक चर्चा का भी आयोजन किया गया जिसमें प्रो. डी. प्रह्लादाचार, प्रो. प्रदीप गोखले, प्रो. पीयूषकान्त दीक्षित, डॉ. अम्बिकादत्त शर्मा, डॉ. राजाराम शुक्ला एवं डॉ. मणि द्रविड़ ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये।

विद्वत् सपर्या के दौरान मञ्चासीन विद्वान्

कवि सपर्या - 3 अगस्त,2009 को एक समकालीन संस्कृत कवि पर चर्चा आयोजित की गयी। चर्चित कवि प्रो. हर्षदेव माधव जानी थे। निम्नलिखित विद्वानों ने प्रो. हर्षदेव माधव के विद्वत कार्यों पर चर्चा की-

प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, शिमला, डॉ. महाराज दीन पाण्डेय, बब्नान, घोण्डा, श्री अष्टभुज शुक्ला, चित्रखोद, बस्ती, डॉ. बजरंग बिहारी तिवारी, दिल्ली।

कवि सपर्या के दौरान चर्चा में संलग्न विद्वान्

दिल्ली के विद्यालयों के मध्य विभिन्न समूहों में श्लोक पाठ, भाषण स्पर्धा एवं निबन्ध लेखन की प्रतियोगितायें आयोजित की गई थीं। विजेता छात्रों को स्मृति चिन्हों एवं प्रमाणपत्रों के साथ नकद पुरस्कार भी दिये गये। 8 अगस्त, 2009 को संस्कृत सप्ताहोत्सव के समापन समारोह में डॉ. सुषमा कुलश्रेष्ठ, कुलपति, जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी मुख्य अतिथि थीं। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ने अपने अध्यक्षीय भाषण के माध्यम से सभी आयोजकों, प्रतिभागियों एवं कार्यकर्त्ताओं का धन्यवाद ज्ञापन किया।

समापन समारोह के अवसर पर डॉ. सुषमा कुलश्रेष्ठ, कुलपति, जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी का सम्भाषण

संस्कृत सप्ताहमहोत्सव के दौरान राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के सभी परिसरों में भी विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये।

4 अगस्त 2009 को राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली द्वारा ''इक्कीसवीं शताब्दी में संस्कृत शिक्षा की समस्याऐं, दृष्टिकोण एवं चुनौतियाँ'' विषय पर संस्कृत विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की एक संगोष्ठी भी आयोजित की गयी। संस्कृत विश्वविद्यालयों के ग्यारह कुलपतियों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया।

संस्कृत विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की संगोष्ठी

9.4 क्योटो में 14वीं विश्व संस्कृत संगोष्ठी (1-5 सितम्बर, 2009)

1 सितम्बर से 5 सितम्बर, 2009 तक क्योटो विश्वविद्यालय, क्योटो, जापान में 14वीं विश्व संस्कृत संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस समारोह के दौरान मानव संसाधन विकास मंत्रालयाधीन राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान द्वारा शास्त्र चर्चा, कवि सम्मेलन एवं यक्षगान शैली में एकल अभिनय का आयोजन किया गया। डॉ. अनीता भटनागर जैन, संयुक्त सचिव (भाषा), मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं श्री एस. मोहन, निदेशक (वित्त), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने शासकीय प्रतिनिधियों के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व किया। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ने कवि सम्मेलन सत्र का संचालन किया। संस्कृत अध्ययन की अन्तर्राष्ट्रिय संस्था के शासी निकाय के सदस्य के रूप में भी प्रो. त्रिपाठी का चयन किया गया। इस अवसर पर कवि भास्करी अंक-1 पुस्तक का विमोचन किया गया। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के पूर्व कुलपति एवं संस्कृत अध्ययन की अन्तर्राष्ट्रिय संस्था के अध्यक्ष प्रो. वी. कुटुम्ब शास्त्री ने शास्त्रचर्चा सत्र का संचालन किया।

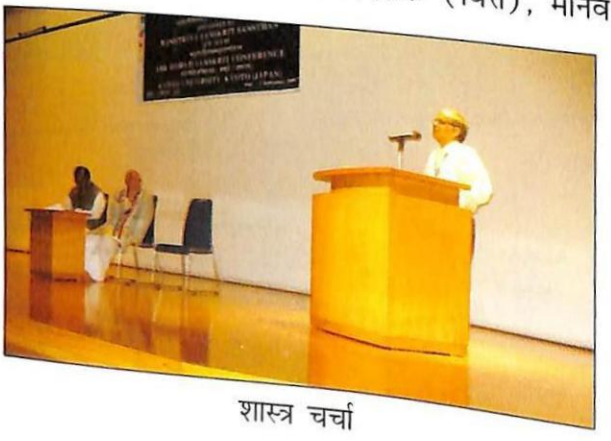

शास्त्र चर्चा

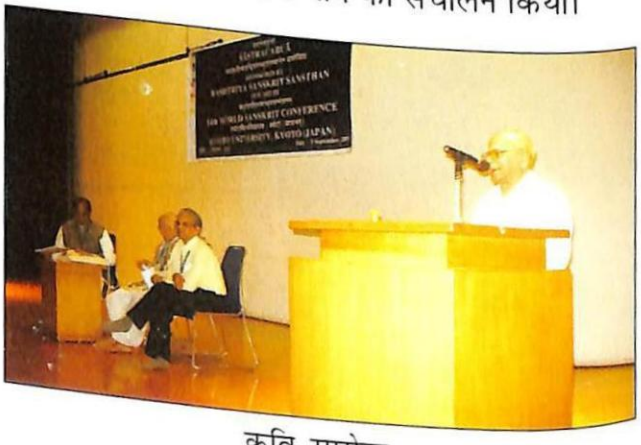

कवि सम्मेलन

यक्षगान

यक्षगान

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने देश के विभिन्न भागों से संगोष्ठी में सम्मिलित होने के लिये 25 विद्वानों का चयन किया था जिनमें से 19 विद्वानों ने संगोष्ठी में भाग लिया। दस विद्वानों को 50% वित्तिय सहायता भी प्रदान की गयी थी।

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान को जनवरी, 2012 में दिल्ली में आयोजित होने वाली 15वीं विश्व संस्कृत संगोष्ठी को आयोजित करने का अवसर प्रदान किया गया है।

9.5 पालि की अन्तर्राष्ट्रिय संगोष्ठी (22-24 सितम्बर, 2009)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने 22-24 सितम्बर तक विज्ञान भवन, नई दिल्ली में पालि की त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रिय संगोष्ठी को आयोजित किया। इस संगोष्ठी का उद्घाटन दिल्ली विश्वविद्यालय के भिक्षु छात्रों और सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के भिक्षु छात्रों द्वारा पालि-पद्यों के संगायन से हुआ। डॉ. (श्रीमती) अनीता भटनागर जैन, संयुक्त सचिव (भाषा), मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने स्वागत-भाषण प्रस्तुत किया। अपने सम्बोधन में उन्होंने भगवान बुद्ध के शैक्षणिक सुधारों पर प्रकाश डाला। प्रो. जी.सी. त्रिपाठी ने सम्मानीय अतिथि के रूप में इस अवसर को सुशोभित किया। प्रो. त्रिपाठी ने अपने व्याख्यान में अष्टांगिक मार्ग की व्याख्या प्रस्तुत की। प्रो. चिरापत प्रपण्डविद्या, प्रोफेसर और अध्यक्ष, संस्कृत अध्ययन विभाग, शिल्पकार्न विश्वविद्यालय, बैंकाक, थाईलैण्ड ने ''बोद्धधर्म के संरक्षण एवं प्रसार में थाईलैण्ड का योगदान'' विषय पर एक शोध लेख प्रस्तुत किया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री रामेश्वर पाल अग्रवाल, सचिव (शिक्षा), भारत सरकार ने विद्वानों से आग्रह किया कि पालि भाषा में उपलब्ध ज्ञान और कोष भावी पीढ़ी के लिये संरक्षित है। प्रो. राम करण शर्मा ने इस अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी की सफलता के लिये शुभ कामनायें व्यक्त कीं। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी के अपने समापन भाषण में एशिया भाषाओं के भाषा-वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं की विस्तार से व्याख्या की।

बांये से- प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, डॉ. जी.सी. त्रिपाठी, श्री रामेश्वर पाल अग्रवाल, प्रो. चिरापत प्रपण्ड विद्या और डॉ. (श्रीमती) अनीता भटनागर जैन

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, ने बताया कि दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों जैसे थाईलैण्ड, कम्बोडिया, लाओ एवं श्रीलंका से, जहाँ पालि तिपिटक का पालन किया जाता है और एक भाषा के रूप में पालि के अध्ययन को उत्साहपूर्वक किया जाता है, के विद्वानों को सम्मेलन में आमन्त्रित किया गया है। उन्होंने प्रो. मैक्स मूलर के योगदानों का भी उल्लेख किया जिन्होनें 'सेक्रेड बुक्स ऑफ ईस्ट' नामक प्रतिष्ठित श्रृंखला के अधीन पालि तिपिटक के मूल ग्रंथों में से कुछ को प्रकाशित किया था। उनके द्वारा सम्पादित व अनुदित पालि ग्रंथ आज भी उपयोग में लाये जाते हैं। पालि टेक्स्ट सोसायटी के संस्थापक टी. डब्लू रॉयस डेविडस एवं श्रीमती सी.ए.एफ. रॉयस डेविडस, डॉ. पिसेल भी प्रसिद्ध पालि विद्वान हुए हैं।

भारत एवं विदेश के 80 विद्वानों ने सम्मेलन में भाग लिया। दस सत्रों में पालि भाषा और साहित्य के विभिन्न पहलुओं को समाहित करते हुए जैसे कि पालि साहित्य की धार्मिक परम्परायें, इत्यादि कुल 65 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये। उनमें पालि साहित्य की दार्शनिक परम्पराओं, ध्यान मार्ग, मनोवैज्ञानिक प्रक्रियायें, पालि साहित्य में अलंकार शास्त्र और कलायें इत्यादि जैसे मुख्य शोध पत्र सम्मिलित हैं।

निम्नलिखित विद्वानों ने अपने शोध पत्र एवं सारांश प्रस्तुत किये:

प्रो. संघसेन सिंह, प्रो. वाँगचुक दोर्जे नेगी, प्रो. सूर्य प्रकाश व्यास, प्रो. रमेश प्रसाद, प्रो. एल.जी. मेश्राम ''विमलकीर्ति'', प्रो. भागचन्द जैन ''भागेन्दु'', प्रो. पी.जी. योगी, प्रो. के.टी.एस. सराव, प्रो. लालजी ''श्रावक'', प्रो. भागचन्द जैन, प्रो. रमेश कुमार द्विवेदी, प्रो. सुधा रानी पाण्डे, प्रो. बैद्यनाथ लाभ, प्रो. भिक्षु सत्यपाल, प्रो. सुकोमल चौधरी, प्रो. शेरब रहल्दी, प्रो. अंगराज चौधरी, प्रो. गोदावरीक्ष मिश्र, प्रो. ऋषभ प्रसाद जैन, प्रो. सत्यदेव कौशिक, प्रो. प्रद्युम्न दुबे, प्रो. चिरापट प्रपण्ड विद्या, प्रो सत्य प्रकाश शर्मा, प्रो. राम शंकर त्रिपाठी, प्रो. महेश अ. देवकर, प्रो. रमेश चन्द्र तिवारी, प्रो. एम. जी. धडफले,

प्रो. अम्बिका दत्त शर्मा, डॉ. भवानी शंकर शुक्ला, डॉ. सी. उपेन्द्र रॉव, डॉ. (श्रीमती) प्रीति कुमारी दूबे, डॉ. टी. नॉंग्याल, डॉ. शाश्वती मुत्त्सुद्दी, डॉ. अवधेश कुमार चौबे, डॉ. सोमेश कुमार मिश्रा, डॉ. राजेश रंजन, डॉ. मैत्रेयी देशपाण्डे, डॉ. कल्पना जैन, डॉ. प्रतिमा भट्टाचार्य, डॉ. कमलेश कुमार जैन, डॉ. वीरूपाक्ष वी. जड्डीपाल, डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी, डॉ. तशी पल्जोर, डॉ. सत्येन्द्र कुमार पाण्डे, डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय, डॉ. विद्यासागर नेगी, डॉ. प्रद्यम्न शाह सिंह, श्री प्रफुल्ल गड़पाल, श्री हरप्रसाद दीक्षित, भदन्त कोंग सुथिआ चत्तमच्छेरो।

समापन समारोह की अध्यक्षता प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति ने की। डॉ. लोकेश चन्द्र, अध्यक्ष, सरस्वती विहार, नई दिल्ली मुख्य अतिथि थे। समापन समारोह का संचालन अंग्रेजी में डॉ. सोमेश कुमार मिश्रा ने एवं हिन्दी में डॉ. अवधेश कुमार चौबे ने किया।

समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए डॉ. लोकेश चन्द्र

संगोष्ठी को प्रो. वाचस्पति उपाध्याय, कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली प्रो. श्रीधर वशिष्ठ, पूर्व कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली, श्री आर.पी. सिसोदिया, निदेशक (भाषायें), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, श्री विद्या सागर वर्मा, भारतीय विदेश सेवा, प्रो. रमेश पाण्डेय एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने अपनी उपस्थिति से सुशोभित किया।

संगोष्ठी के अंग के रूप में पालि साहित्य पर एक प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रो. वाचस्पति उपाध्याय, कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली ने अन्तर्राष्ट्रिय ख्याति प्राप्त विद्वान प्रो. राम करन शर्मा की उपस्थिति में किया।

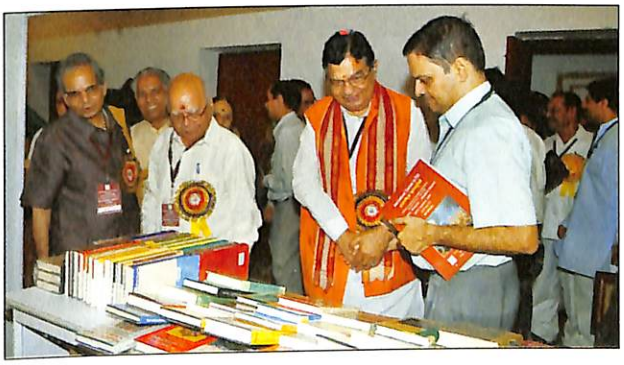

9. हिन्दी पखवाड़ा (14-30 सितम्बर, 2009)

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान द्वारा 14-30 सितम्बर तक संस्थान मुख्यालय में हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया गया। हिन्दी पखवाड़े के इस अवसर पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। संस्थान के कर्मचारियों ने अत्यन्त उत्साह के साथ भाग लिया।

3 फरवरी, 2010 को हिन्दी प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सफल कर्मचारियों को श्री नरेश कुमार, निदेशक, राजभाषा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया।

हिन्दी स्पर्धा में पुरस्कार वितरण के अवसर पर श्री नरेश कुमार का उद्‌बोधित करते हुए, समारोह में प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो. डी. प्रह्लादाचार्य, प्रो. आर. देवनाथन् एवं अन्य

इस अवसर पर तीन शोध संस्थानों द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकों का विमोचन हुआ। ये पुस्तकें-

(i) उपनिषदभाष्यम्-II
(ii) सृस्ति-स्वरूपम्
(iii) जगद्‌गुरु-रेणुकागीतम्
(iv) स्तोतरत्नावली

संस्कृत अकादमी, हैदराबाद द्वारा प्रकाशित पुस्तकें-

(i) संस्कृत अकादमी का जर्नल खण्ड-IX
(ii) ग्लिम्पसिस इन्टू कौटिल्यम् अर्थशास्त्र
(iii) साहित्य सौरभम्

चिन्मय इन्टरनेशनल फाऊँडेशन शोध संस्थान, वेलियनद्, केरल, द्वारा प्रकाशित पुस्तकें-

(i) श्री राम कृष्ण चरित्रम्
(ii) पदमपदचरितम्
(iii) स्मर्त प्रायश्चितम्
(iv) लघुकर्णमृतम्
(v) लोजिक ऑफ परमार्थ

प्रो. डी. प्रह्लादाचार्य को इस अवसर पर आमन्त्रित किया गया था।

अखिल भारतीय राज भाषा सम्मेलन में संस्थान की प्रतिनिधि डॉ. शुक्ला मुखर्जी

राजभाषा विभाग द्वारा पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय में 5-6 नवम्बर, 2009 को अखिल भारतीय राज भाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। डॉ. शुक्ला मुखर्जी, परियोजना अधिकारी ने इस सम्मेलन में भाग लिया एवं सम्मेलन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता की।

9.7. स्थापना दिवस (15 अक्टूबर, 2009)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन का नौंवा स्थापना दिवस 15 अक्टूबर, 2009 को फिक्की सभागार में मनाया गया। इस अवसर पर डॉ. राधा कृष्णन् स्मृति व्याख्यान का भी आयोजन किया गया जिसमें राज्यसभा सदस्य डॉ. कर्ण सिंह ने ''आधुनिक परिवेश में वेदान्त'' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रख्यात संस्कृत विद्वान प्रो. सत्यव्रत शास्त्री को भी वर्ष 2009 का 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार प्राप्त करने के लिये सम्मानित किया गया।

आधुनिक परिवेश में वेदान्त विषय पर
व्याख्यान देते हुए डॉ. कर्ण सिंह

प्रो. सत्यव्रत शास्त्री को सम्मानित करते हुए
प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी

प्रो. रामकरन शर्मा के मुख्यआतिथ्य में प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। संस्कृत के विद्वानों व छात्रों ने इस अद्‌भुत समारोह में भाग लिया। प्रो. रामानुज देवनाथन, प्रभारी कुलसचिव, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

सागर विश्वविद्यालय के एक शोध छात्र श्री संजय द्विवेदी ने अपनी सुरीले आवाज में ''शंकर स्त्रोत्र'' प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् सर्वरय हरिकथ पाठशाला, कपिलेश्वरपुनम्, आन्ध्र प्रदेश द्वारा दशावतार नृत्य प्रस्तुत किया गया।

दशावतार नृत्य

9.8. उत्तर-पूर्व राज्यों पर संगोष्ठी (9-11 अक्टूबर, 2009)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने ''संस्कृत में उत्तर-पूर्व राज्यों का योगदान'' विषयक त्रिदिवसी राष्ट्रिय संस्कृत संगोष्ठी का आयोजन किया जिसका उद्घाटन 9 अक्टूबर, 2009 को चिन्तन भवन, गंगटोक, सिक्किम में हुआ। मुख्य अतिथि माननीय एस.एम. लिम्बू, सिक्किम के पूर्व मुख्यमंत्री एवं योजना आयोग के उपाध्यक्ष ने अन्य अतिथियों के साथ दीप प्रवज्लित कर समारोह का उद्घाटन किया। कुलपति एवं संगोष्ठी के अध्यक्ष प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने शाल, स्मृतिचिन्ह एवं पुष्पगुच्छों से अतिथि का स्वागत किया।

उद्घाटन समारोह के सम्मानीय अतिथि श्री रुद्र प्रसाद पौडियाल, निदेशक, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, सिक्किम सरकार थे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सी.बी. करकी, आर एम डी.पी. एवं सहकारिता विभाग के मंत्री ने अपना व्याख्यान नेपाली भाषा में प्रस्तुत किया और गीता, वेद एवं अन्य संस्कृत ग्रंथों के महत्त्व की व्याख्या की।

बांये से- प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, श्री नरेश कुमार एवं प्रो. विजय बहादुर सिंह

कुलपति एवं अध्यक्ष प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि इन राज्यों विशेषकर सिक्किम के साथ जो भारत के मुकुट का हीरा है मजबूत सम्बन्ध स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक है। उन्होंने मुख्य अतिथि से सिक्किम विश्वविद्यालय में संस्कृत एवं पालि का अध्ययन प्रारम्भ करने का निवेदन किया।

श्री चन्दन सिंह कानियाल ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. रत्नमोहन झा ने भली-भांति किया।

डॉ. भीराव अम्बेडकर स्मृति व्याख्यान का आयोजन 10 अक्टूबर, 2009 को चिन्तन भवन, गंगटोक में किया गया। प्रो. विजय बहादुर सिंह, निदेशक, भाषा परिषद्, कोलकाता ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर पर एक व्याख्यान प्रस्तुत किया। श्री नरेन्द्र कुमार प्रधान, शिक्षा मंत्री, सिक्किम सरकार समारोह के मुख्य अतिथि थे तथा प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने समारोह की अध्यक्षता की।

देश भर के प्रख्यात विद्वानों ने संगोष्ठी के विषय पर अपने-अपने मत प्रस्तुत किये। विद्वानों के नाम इस प्रकार हैं- प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, प्रो. हरिदत्त शर्मा, डॉ. रमाकान्त शुक्ला, डॉ उमा रमन झा, डॉ. सोमेश मिश्र, डॉ. भगीरथी नन्दा, डॉ. बलदेवानन्द सागर, डॉ. पंकज मिश्र, डॉ. चन्द्रभूषण झा, डॉ. क्षिप्रा रॉय, डॉ. चन्दन चक्रवर्ती, प्रो. राजेन्द्र कुमार शर्मा, श्री योगेश चन्द्र शास्त्री, प्रो. राजेन्द्र नाथ शर्मा, डॉ. अशोक कुमार गोस्वामी, प्रो. प्रफुल्ल चन्द्र गोस्वामी, डॉ. सुखमय भट्टाचार्य, प्रो. पी. जी. योगी एवं श्री सी.डी. त्रिपाठी (भारतीय प्रशासनिक सेवा)। तीन दिनों में कुल 22 शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये। 11 अक्टूबर को प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली की अध्यक्षता में कवि सम्मेलन का भी आयोजन हुआ।

व्याख्यान माला का एक दृश्य

महामहिम श्री बाल्मिकि प्रसाद सिंह, सिक्किम के राज्पाल समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे। महामहिम राज्यपाल ने इस संगोष्ठी को आधुनिकता की ओर एक कदम बताया। प्रो. राधावललभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने समारोह की अध्यक्षता की।

महामहिम राज्यपाल श्री बाल्मिकी प्रसाद सिंह का उद्बोधन

बांये से प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, महामहिम राजपाल सिक्किम एवं डॉ. आर. पी. पण्डियाल

सांस्कृतिक कार्यक्रम भी संगीत नाटक एकादमी द्वारा सम्मानित श्रीमती हिमलदित लप्चा द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसमें सिक्किम के कुछ पेप्चा नृत्य प्रस्तुत किये गये थे।

लप्चा नृत्य

9.9. कौमुदीमहोत्सव (10-12 नवम्बर, 2009)

अन्तर्परिसरीय संस्कृत नाट्य प्रतियोगिता ''कौमुदी महोत्सव'' का उद्घाटन 10 नवम्बर, 2009 को प्यारे लाल भवन, आई टी ओ, नई दिल्ली में हुआ।

माननीय मुख्यमंत्री दीप प्रज्वलित करते हुए

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ने सभी अतिथियों, विद्वानों व प्रतिभागियों का स्वागत किया। श्रीमती अनीता भटनागर जैन, संयुक्त सचिव (भाषा) ने अपनी भावनायें व्यक्त कीं कि यह गर्व का विषय है कि संस्थान संस्कृत नाटकों के द्वारा संस्कृत को प्रोत्साहित करने के लिये अपना पूर्ण प्रयास कर रहा है।

प्रो. पंकज चांदें, कुलपति, कविकुलगुरू कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, नागपुर एवं उपाध्यक्ष, एसोशिएसन

राधामाधव संस्कृत महाविद्यालय, मणिपुर के छात्रों ने मणिपुरी शैली में जयदेव के गीतगोविन्द को प्रस्तुत किया।

मणिपुरी रास

समारोह का उद्घाटन श्रीमती शीला दीक्षित, माननीय मुख्यमंत्री, राष्ट्रीय केन्द्रीय क्षेत्र, दिल्ली ने किया। उन्होंने अपने उद्घोषण में संस्कृत और संस्कृत नाटकों के महत्त्व की व्याख्या की।

बांये से- प्रो. आर. देवनाथन्, डॉ. श्रीमती अनीता भटनागर जैन, माननीय शीला दीक्षित, प्रो. पी. चांदे और प्रो. आर. वी. त्रिपाठी

ऑफ इण्डियन यूनिवर्सिटीज समारोह के सम्मानित अतिथि थे। प्रो. पंकज चांदें ने कहा कि संस्कृत ही ऐसी एकमात्र भाषा है जो सबके भले के लिये सोचती है और यही कारण है कि, इस भाषा में साहित्यिक रूप में कोई दु:खान्त नाटक नहीं है। प्रो. आर. देवनाथन्, प्रभारी कुलसचिव, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापन दिया।

राधा माधव संस्कृत महाविद्यालय, नम्बोल, इम्फाल, मणिपुर के छात्रों ने मणिपुरी शैली में मंगलवाद्य प्रस्तुत किया।

मंगल वाद्य

श्रृंगेरी परिसर के छात्रों ने यक्षगण शैली में ''पूर्व रंग'' प्रस्तुत किया। अभिज्ञान शांकुन्तलम् (अंक I-VII) के सभी अंक बारी-बारी से भोपाल, जम्मू, गरली, श्रृंगेरी, लखनऊ, जयपुर और गुरूवायूर परिसरों के छात्रों ने प्रस्तुत किये। पुरी और इलाहाबाद के छात्रों ने ''प्रतिमनतकम्'' एवं ''इन्द्रजलम्'' को प्रस्तुत किया।

दो आमंत्रित नाटकों ''विक्रमोर्वशियन्'' एवं ''मत्तविलस्प्रहसनम्'' की भी प्रस्तुति नाट्य परिसद्, सागर एवं संस्कृत रंगम्, चेन्नई द्वारा की गयी।

नाटकों के लिये निर्णायक थे-

1. प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, शिमला
2. प्रो. गौतम भाई पटेल, अहमदाबाद
3. प्रो. के.के. शर्मा, वाराणसी
4. श्री कमल वशिष्ठ, सागर
5. श्रीमती नन्दिनी रमणी, चेन्नई
6. श्री के.एस. राजेन्द्रन, भारतीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली
7. डॉ. बलदेवानन्द सागर, दिल्ली

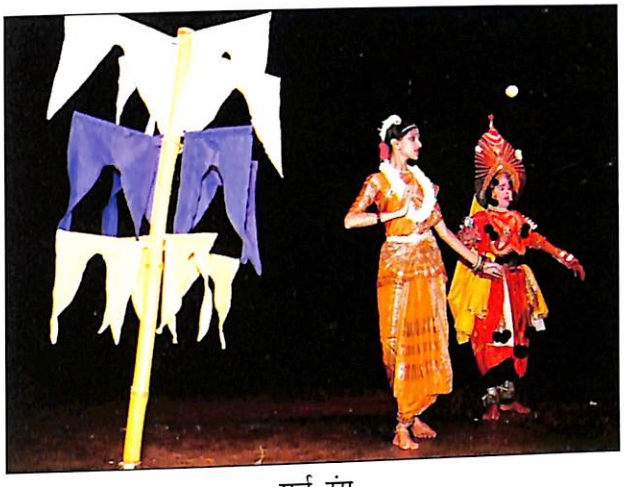

पूर्व रंग

प्रो. राम करन शर्मा, पूर्व-अध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत अध्ययन परिद्याद्, समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे। प्रो. वाचस्पति उपाध्याय, कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विषपीठ, नई दिल्ली एवं प्रो. युगल किशोर मिश्रा, कुलपति, जगद्गुरू रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर समापन समारोह के सम्मानीय अतिथि थे। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ने समारोह की अध्यक्षता की। प्रो. आर. देवनाथन्, प्रभारी कुलसचिव, ने अतिथियों एवं सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

बांये से- डॉ. बलदेवानन्द सागर, प्रो. वाचस्पति उपाध्याय, प्रो. राम करन शर्मा, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो. गौतम भाई पटेल, श्री कमल वशिष्ठ, डॉ. राजपति एवं श्रीमती नन्दिनी रमणी

प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार हैं-

प्रथम पुरस्कार-	अभिज्ञानशाकुन्तलम् अंक-4 अभिज्ञानशाकुन्तलम् अंक-7	(i) राजीव गाँधी परिसर, श्रृंगेरी (ii) गुरुवायूर परिसर, त्रिचूर
द्वितीय पुरस्कार-	अभिज्ञानशाकुन्तलम् अंक-6 अभिज्ञानशाकुन्तलम् अंक-5	(i) जयपुर परिसर, जयपुर (ii) लखनऊ परिसर, लखनऊ
तृतीय पुरस्कार-	अभिज्ञानशाकुन्तलम् अंक-2 अभिज्ञानशाकुन्तलम् अंक-1	(i) रनबीर परिसर, जम्मू (ii) भोपाल परिसर, भोपाल
सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार-	अभिज्ञानशाकुन्तलम् अंक-4 प्रतिमनतकम्	(i) रवीश हेगड़े, राजीव गाँधी परिसर, श्रंगेरी (ii) रूद्रनारायण रथ, सदाशिव परिसर, पुरी
सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री	अभिज्ञानशाकुन्तलम् अंक-4 अभिज्ञानशाकुन्तलम् अंक-7	(i) अश्विनी हेगड़े, श्रृंगेरी परिसर (ii) निधि, पी.के., गुरूवायूर परिसर, त्रिचूर

दिल्ली के प्रख्यात संस्कृत विद्वानों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने प्रतियोगिता का स्वागत किया।

गुरूवायूर परिसर

श्रृंगेरी परिसर

जयपुर परिसर

लखनऊ परिसर

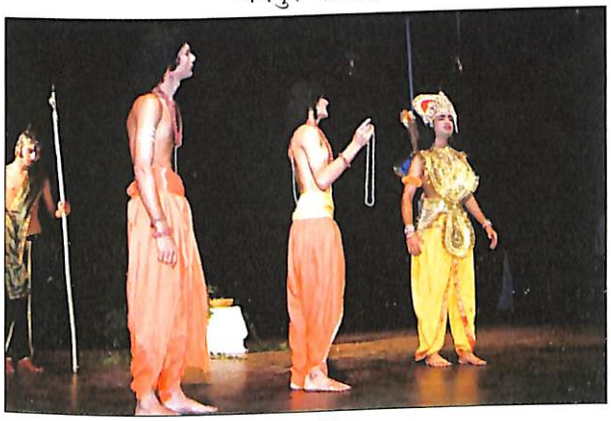

जम्मू परिसर

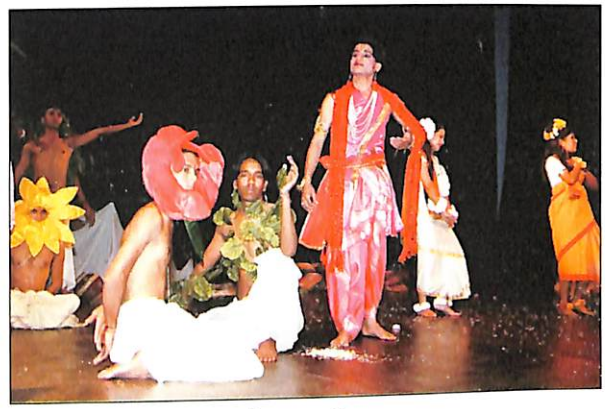

भोपाल परिसर

गरली परिसर

पुरी परिसर

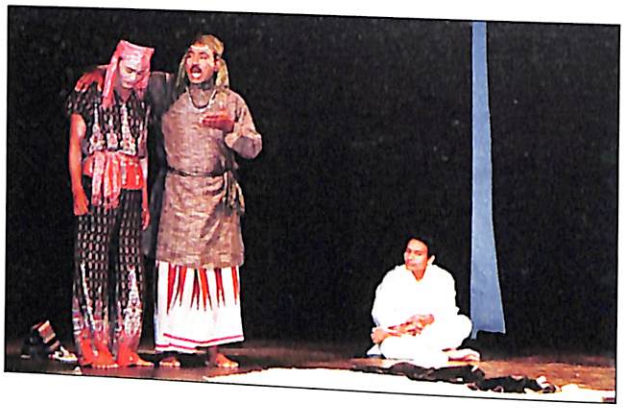

इलाहाबाद परिसर

नाट्य परिषद्, सागर द्वारा विक्रमोंवशियम्

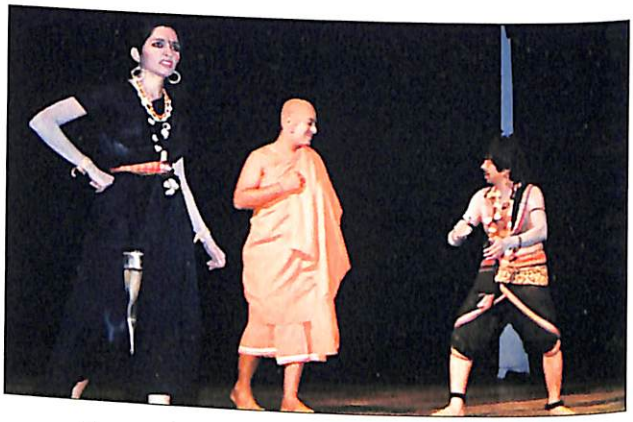

संस्कृत रंगम्, चेन्नई द्वारा मत्तविलसप्रहसनम्

9.10 युवा महोत्सव (27-29 नवम्बर, 2009)

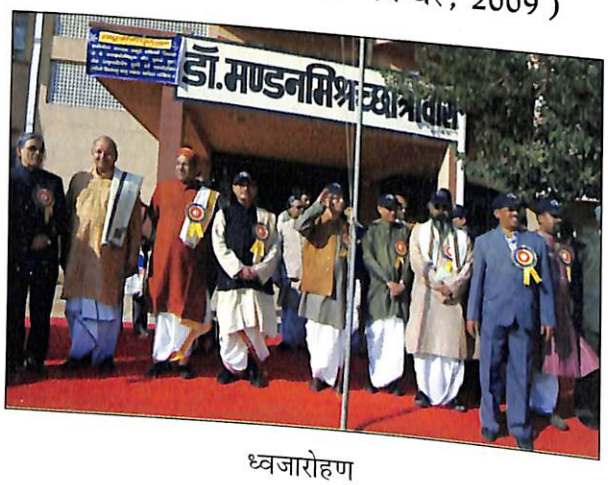

ध्वजारोहण

शपथ ग्रहण समारोह

द्वितीय युवा महोत्सव का आयोजन 27 से 29 नवम्बर, 2009 को जयपुर परिसर, जयपुर के प्रांगण में हुआ जिसमें दस परिसरों के 392 छात्रों ने विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया।

पण्डित नवल किशोर शर्मा, भूतपूर्व राज्यपाल, गुजरात एवं केन्द्रीय मंत्री उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ने समारोह की अध्यक्षता की।

बांये से- पण्डित नवल किशोर शर्मा, प्रो. आर.वी. त्रिपाठी, प्रो. आर.देवनाथन्, प्रो. अर्कनाथ चौधरी

डॉ. श्रीमती गिरजा व्यास, अध्यक्ष, राष्ट्रीय महिला आयोग, समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं। डॉ. महेश जोशी, संसद सदस्य, जयपुर समारोह में सम्मानित अतिथि थे। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ने समारोह की अध्यक्षता की।

बांये से- डॉ. वाई. एस. रमेश, डॉ. शुक्ला मुखर्जी, डॉ. (श्रीमती) गिरिजा व्यास, प्रो. राधावल्लभ त्रपाठी, डॉ. महेश जोशी, प्रो. आर. देवनाथन्, प्रो. अर्कराज चौधरी

प्रो. आर. देवनाथन्, प्रभारी कुलसचिव, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान ने अतिथि का स्वागत किया एवं प्रो. अर्कनाथ चौधरी, प्रभारी प्राचार्य, जयपुर परिसर, जयपुर ने अतिथि एवं सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

शास्त्रीय कार्यक्रम:-

1. स्तोत्रपाठ
2. चित्रकला
3. विज्ञापन चित्रण
4. रंगोली
5. वाद् विवाद
6. हास्य-चित्र चित्रण
7. शास्त्रीय नृत्य
8. वाचिक संगीत (शास्त्रीय)
9. वाद्य संगीत (शास्त्रीय)
10. एकल अभिनय
11. प्रश्नोत्तरी
12. संस्कृत गीत
13. शास्त्रीय नृत्य
14. रचनात्मक लेखन
15. परिचर्चा

योग प्रदर्शन

रंगोली

भरतनाट्यम्

स्तोत्रपाठ

खेल कार्यक्रम:

1. दौड़ें (100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर, 800 मीटर, एवं 1000 मीटर)
2. लम्बी कूद एवं ऊँची कूद
3. गोला फेंक एवं डिस्कस फेंक
4. बालीबॉल
5. कबड्डी
6. मुक्केबाजी/जूडो
7. बैडमिंटन
8. शतरंज
9. योग

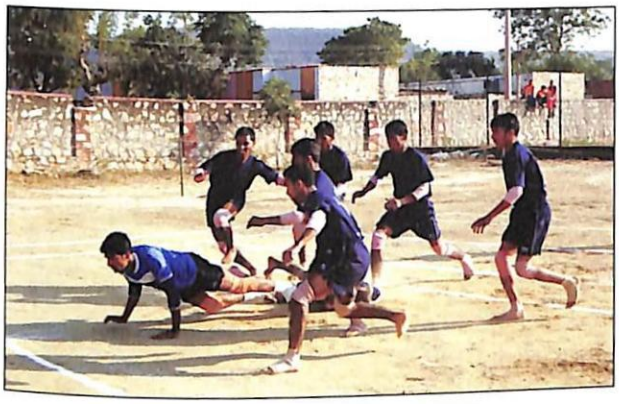

कबड्डी

दौड़

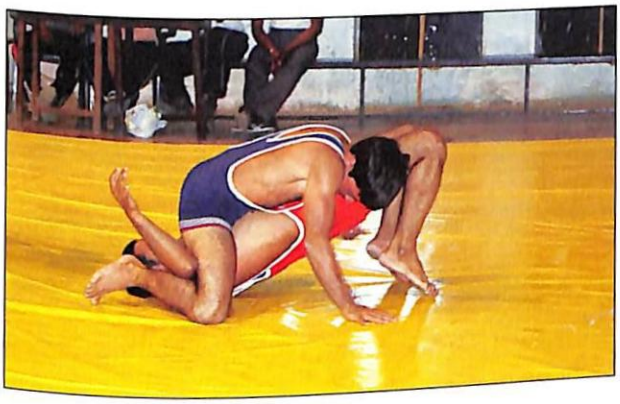

कुश्ती

ऊँची कूद

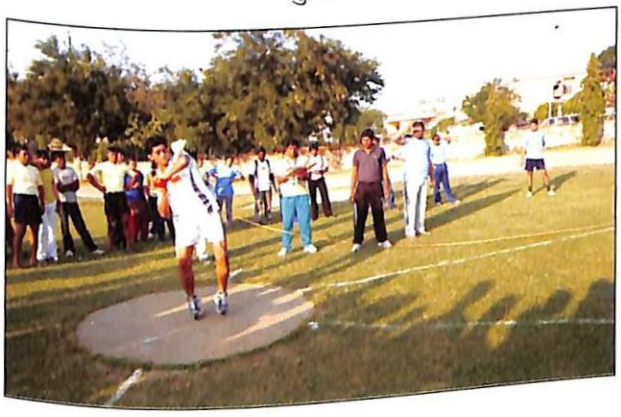

गोला फेंक

लम्बी कूद

पुरस्कार वितरण

पुरस्कार वितरण

राजीव गाँधी परिसर, श्रृंगेरी (कर्नाटक) युवा महोत्सव की विजेता थी

9.11 अखिल भारतीय शास्त्रीय स्पर्धा एवं शलाका परीक्षा (30-2 दिसम्बर, 2009)

अखिल भारतीय शास्त्रीय स्पर्धा का आयोजन 30 नवम्बर से 2 दिसम्बर, 2009 तक राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर परिसर, जयपुर के प्रांगण में हुआ। समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि, प्रो. राम करण शर्मा, पूर्व-अध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रिय संस्कृत अध्ययन परिषद् द्वारा किया गया। प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली ने समारोहों में अध्यक्षता की।

बायें से- प्रो. अर्कनाथ चौधरी, प्रो. राजेन्द्र मिश्र, प्रो. राम करण शर्मा, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो. आर. देवनाथन्

स्पर्धा में देश के 18 राज्यों के 154 छात्रों एवं 14 शिक्षकों ने 18 शास्त्रों के साथ-साथ काव्य, साहित्य, न्याय, सिद्धान्त, ज्योतिष, व्याकरण, पुराणेतिहास, वेदान्त, अष्टध्यायी एवं अमरकोश में समस्यापूर्ति, श्लोकान्ताक्षरी, भाषणस्पर्धा एवं शलाका परीक्षा में भाग

शलाका

अन्ताक्षरी

निम्नलिखित प्रख्यात विद्वानों को स्पर्धा में निर्णायकों के रूप में आमंत्रित किया गया।

1. प्रो. पुष्पा दीक्षित, छत्तीसगढ़
2. डॉ. जी.एल. सुथर, जोधपुर
3. डॉ. राजा राम शुक्ला, वाराणसी
4. प्रो. पारसनाथ द्विवेदी, जयपुर
5. प्रो. वाचस्पति शर्मा त्रिपाठी, सिवान
6. प्रो. श्री कृष्ण शर्मा, जोधपुर
7. प्रो. नरेन्द्र अवस्थी, जोधपुर
8. प्रो. अन्जनेय शर्मा, वाराणसी
9. श्री सच्चिदानन्द मिश्रा, वाराणसी
10. श्री राम सुरेश शास्त्री, जयपुर
11. प्रो. प्रभाकर शास्त्री, जयपुर
12. आचार्य कृष्ण चन्द चतुर्वेदी, मथुरा
13. श्री सत्यवगिश गणपति, तिरुपति

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली ने सम्पूर्ति समारोह की अध्यक्षता की। प्रो. रामकरण शर्मा, पूर्व अध्यक्ष, अर्न्ताराष्ट्रिय संस्कृत अध्ययन परिषद् एवं देवऋषि कलानाथ शर्मा समारोह के मुख्य अतिथि एवं सम्माननीय अतिथि थे।

बायें से-प्रो. अर्कनाथ चौधरी, देवऋषि कलानाथ शास्त्री, प्रो. रामकरण शर्मा, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो. आर. देवनाथन्

उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड राज्य सभी प्रदर्शनों में शीर्ष पर रहे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

पुरस्कार वितरण

प्रतिभागियों के साथ-साथ बड़ी संख्या में संस्कृत विद्वानों, कर्मचारियों, छात्रों और जनसामान्य ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक इस कार्यक्रम का आनन्द उठाया।

विजेता

9.12 अखिल भारतीय संस्कृत शिक्षक सम्मेलन (8-10 फरवरी, 2010)

अखिल भारतीय संस्कृत शिक्षक सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से केन्द्रिय शैक्षिक प्रशिक्षण संस्थान, राष्ट्रिय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद् के तत्त्वावधान में "विद्यालय स्तर पर संस्कृत शिक्षण की समस्याओं पर राष्ट्रीय सम्मेलन" हुआ। समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. अनीता भटनागर जैन, भारतीय प्रशासनिक अधिकारी, संयुक्त सचिव (भाषा), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ। डॉ. सुधा रानी पाण्डेय, कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार और प्रो. कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रिय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली उद्घाटन समारोह के विशिष्ट अतिथि एवं सम्माननीय अतिथि थे। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने समारोह की अध्यक्षता की। प्रो. रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष भाषा, राष्ट्रिय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद् ने अतिथियों का स्वागत किया और प्रो. रामानुज देवनाथन, कुलसचिव, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

बायें से- प्रो. रामजन्म शर्मा, प्रो. कृष्ण कुमार, डॉ. अनीता भटनागर जैन, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, डॉ. सुधा रानी पाण्डेय, प्रो. आर. देवनाथन

सम्मेलन का संचालन निम्नलिखित छह सत्रों में हुआ।

1. विभिन्न प्रदेशों के विद्यालयों में संस्कृत शिक्षण की स्थिति, समस्याएं व सुझाव
2. पाठ्यपुस्तक, पाठ्यचर्चा व शिक्षण प्रविधियों में गुणात्मक सुधार
3. त्रिभाषासूत्र और संस्कृत
4. न्यायिक प्रास्थिति और संस्कृत
5. पाठशाला पद्धति और आधुनिक शिक्षण पद्धति
6. संस्कृत शिक्षण पद्धति में नवाचार, अभिरुचि व उन्मुखीकरण

18 राज्यों के बासठ शिक्षकों ने सम्मेलन में राज्य प्रतिनिधियों के रूप में भाग लिया। निम्नलिखित विशेषज्ञ चर्चा एवं अपना मत प्रस्तुत करने के लिये आमन्त्रित किये गये।

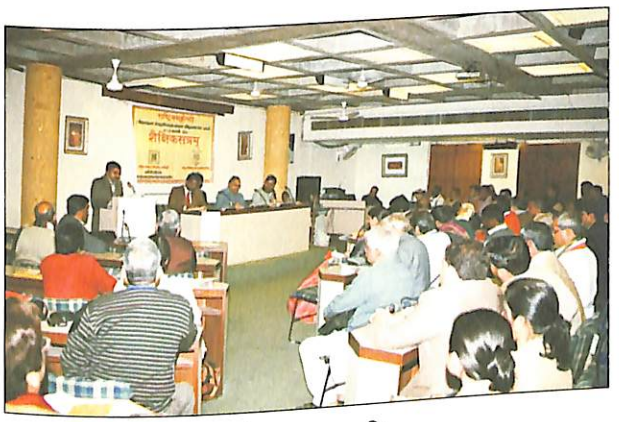

शोधपत्र प्रस्तुति

प्रो. श्रीधर वशिष्ठ, नई दिल्ली, प्रो. के. रवि शंकर मेनन और प्रो. पेटि सुब्रह्मन्यम्, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति, प्रो. वेद कुमारी घई, जम्मू, प्रो. सी.एच.एल.एन. शर्मा, गुरुवायूर, प्रो. सुदेश शर्मा, डॉ. वाई. एस. रमेश और प्रो. सन्तोष मित्तल, जयपुर, डॉ. रमाकान्त मिश्रा, पुरी, डॉ. नोदनाथ मिश्रा, दिल्ली, डॉ. आर. बालाजी, शृंगेरी, डॉ. श्री कृष्ण शर्मा, कुरुक्षेत्र, श्री वाचस्पति मेथानी, देहरादून, डॉ. संजय झा, दिल्ली, डॉ. कृष्ण चन्द्र त्रिपाठी, दिल्ली, डॉ. निलिमा त्रिपाठी, भोपाल।

संस्कृत स्वयंशिक्षण (प्रथम स्तर के नव विकसित साफ्टवेयर की सी.डी. डॉ. शुक्ला मुखर्जी एवं डॉ. वाई.एस. रमेश द्वारा अन्तिम सत्र में प्रस्तुत एवं विश्लेषित की गयी। राज्य प्रतिनिधियों ने सॉफ्टवेयर का स्वागत किया।

श्री चमुकृष्ण शास्त्री, महामन्त्री, संस्कृत भारती, दिल्ली समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने समारोह की अध्यक्षता की। प्रो. आर. देवनाथन, कुलसचिव, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने अतिथियों का स्वागत किया एवं प्रो. रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष (भाषा), राष्ट्रिय शैक्षिक अनुसन्धान प्रशिक्षण परिषद् ने अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। संस्कृत वार्ता के छठे अंक का लोकार्पण इस अवसर पर किया गया।

संस्कृत वार्ता का लोकार्पण

समापन भाषण देते हुए श्री चमुकृष्ण शास्त्री

प्रो. जी.एस. आर. कृष्णामूर्त्ति के निर्देशन में राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति द्वारा "प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक ज्ञान" पर एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गयी। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली द्वारा एक पुस्तक एवं मल्टी-मीडिया प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। डॉ. रन्जीत बेहरा, राष्ट्रिय शैक्षिक अनुसन्धान प्रशिक्षण, परिषद् एवं डॉ. शुक्ला मुखर्जी, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान त्रिदिवसीय सम्मेलन के सह-संचालक थे।

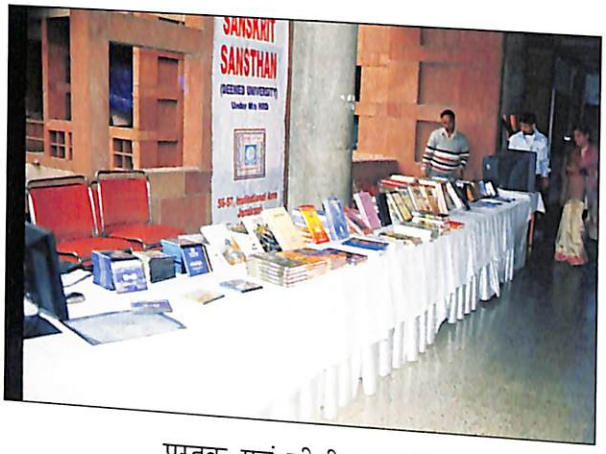

पुस्तक एवं सीडी प्रदर्शनी

प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक ज्ञान प्रदर्शनी

9.13 द्वितीय अखिल भारतीय संस्कृत कवि समवाय (कवि भास्करी) (9 फरवरी, 2010)

द्वितीय अखिल भारतीय संस्कृत कवि समवाय का आयोजन 9 फरवरी, 2010 को केन्द्रीय शैक्षिक प्रशिक्षण संस्थान, राष्ट्रिय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में हुआ। प्रो. श्रीनिवास रथ, उपाध्यक्ष, महर्षि सन्दीपनी राष्ट्रिय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन, समारोह के मुख्य अतिथि एवं प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, सम्माननीय अतिथि थे। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने समारोह ही अध्यक्षता की।

प्रो. आर. देवनाथन कविता पाठ करते हुए

निम्नलिखित कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ किया :

प्रो. श्रीनिवास, उज्जैन, प्रो. शिवजी उपाध्याय, वाराणसी, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, दिल्ली, प्रो. राजेन्द्र मिश्र, शिमला, प्रो. हरिराम आचार्य, जयपुर, पण्डित कलानाथ शास्त्री, जयपुर, प्रो. वेद कुमार, घई, जम्मू, प्रो. रामानुज देवनाथन्, दिल्ली, डॉ. रमाकान्त शुक्ला, दिल्ली, प्रो. हर्षदेव माधव, अहमदाबाद, प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, दिल्ली, डॉ. इच्छाराम द्विवेदी, दिल्ली, डॉ. रामकुमार शर्मा, दिल्ली, डॉ. रामलखन पाण्डेय, लखनऊ, डॉ. बनमाली विश्वाल, इलाहाबाद, प्रो. सतीश कपूर, जम्मू, डॉ. सुज्ञान कुमार मोहन्ती, भोपाल।

प्रो. श्रीनिवास रथ कविता पाठ करते हुए

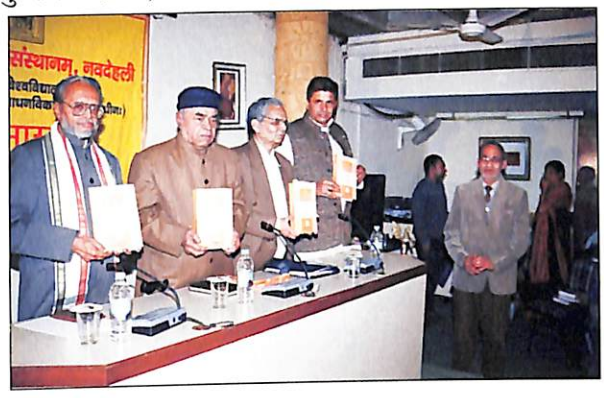

पुस्तकों का लोकार्पण

मन्जूनाथग्रन्थावली के खण्ड 1 के भाग 1 एवं 2 मधुरनाथ शास्त्री द्वारा लिखित एवं देवर्षि कलाथ शास्त्री तथा डॉ. रमाकान्त पाण्डेय द्वारा सम्पादित "जयपुर वैभवम्", "गोविन्द वैभवम्" एवं "साहित्य वैभवम्" का भी विमोचन किया गया।

9.14 अखिल भारतीय संस्कृत नाट्योत्सव (15-17 फरवरी, 2010)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ने द्वितीय अखिल भारतीय संस्कृत नाट्ययोत्सव का आयोजन 15-17 फरवरी, 2010 को सुकान्त अकादमी, अगरतला, त्रिपुरा के सभागार में किया। समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि त्रिपुरा के राज्यपाल माननीय महामहिम पद्मश्री डॉ. डी.वाई. पाटिल के करकमलों से हुआ। इस समारोह में प्रो. अरुणोदय साहा, कुलपति, त्रिपुरा विश्व-विद्यालय, अगरतला सम्माननीय अतिथि थे।

उद्घाटन समारोह को सम्बोधित करते महामहिम राज्यपाल

अभिज्ञान शाकुन्तलम् के डीवीडी एलबम का भी इस अवसर पर लोकार्पण हुआ।

अभिज्ञान शाकुन्तलम् के डीवीडी एलबम का लोकार्पण

माननीय श्री अनिल सरकार, शिक्षा मंत्री, त्रिपुरा सरकार और माननीय श्री जितेन्दर चौधरी, उद्योग एवं व्यापार हथकरघा हस्तशिल्प एवं रेशम उत्पादन, ग्रामीण विकास एवं वन मंत्री, त्रिपुरा सरकार समापन समारोह में क्रमशः मुख्य एवं सम्माननीय अतिथि थे। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने दोनों समारोहों की अध्यक्षता की।

बाँये से श्री जितेन्दर चौधरी, श्री अनिल सरकार, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी

निम्नलिखित नाटक और सांस्कृतिक कार्यक्रम विभिन्न सांस्कृतिक समूहों द्वारा प्रस्तुत किये गये थे :

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम का चतुर्थ अंक - राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, राजीव गांधी परिसर, शृंगेरी, कर्नाटक के छात्र।

2. विक्षतु ऐस कलिका - कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र

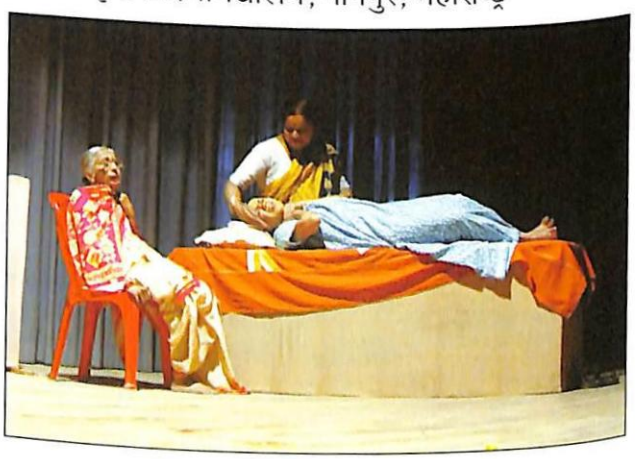

3. उरुभंगम्, निसर्ग, लखनऊ

4. आत्मनिवेदनम् - सुरभारती संस्कृत संस्था, कोलकाता

5. मणिपुरी रास - राधामाधव संस्कृत महाविद्यालय, नाम्बोल, मणिपुर के छात्रों द्वारा प्रस्तुत

6. एकपात्राभिनय - श्री वेंकटेश मूर्ति द्वारा प्रस्तुत

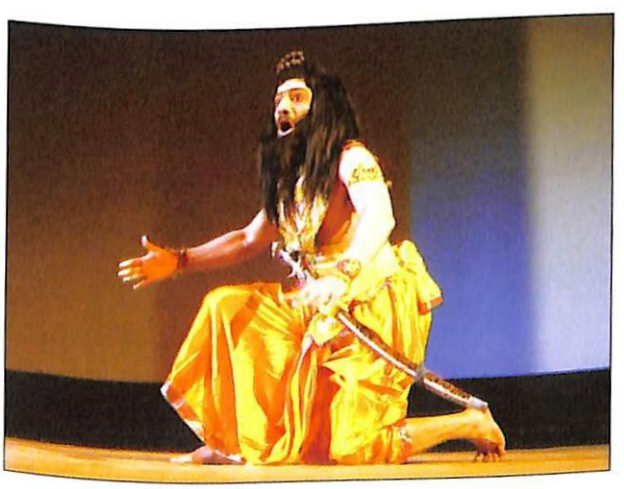

7. मार्गदीपह् वेद - त्रिपुरा विश्वविद्यालय, अगरतला के संस्कृत छात्रों द्वारा प्रस्तुत

8. संस्कृत नृत्य-ऊतशी मोहपत्र एवं कृष्णनेन्दु, कालिचक विक्रम किशोर आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, मिदनापुर, पश्चिम बंगाल।

त्रिपुरा विश्वविद्यालय, अगरतला के सभागार में 16 फरवरी, 2010 को एक विशेष कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जिसमें राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, राजीव गांधी परिसर, श्रृंगेरी एवं कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र द्वारा क्रमशः "अभिज्ञानशांकुन्तलम" एवं "वन्दु अभिनयम् करोति" प्रस्तुत किये गये।

विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ :

1. शकटशत्रकम् एवं श्रीकृष्ण सत्यभामा-एस.डी. बर्मन संगीत महाविद्यालय, अगरतला, द्वारा नाट्य नाटिका।

2. रवीन्द्र नृत्य - नालन्दा, अगरतला द्वारा प्रस्तुत
3. रियंग नृत्य - श्री देन राम रिगंग, नलचड़ त्रिपुरा का समूह।

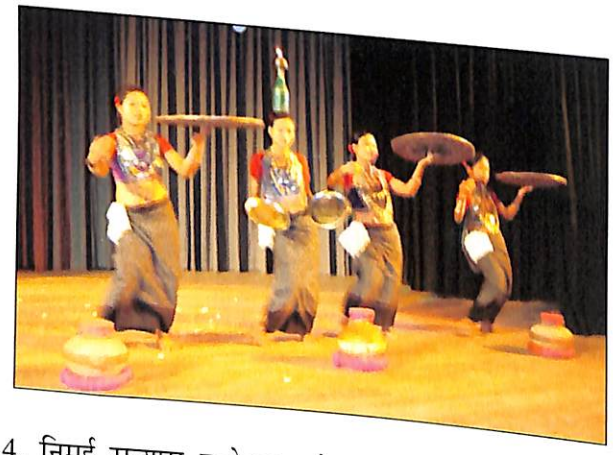

4. निमई सन्यास-नवोदय अपेरा, नलचड़, त्रिपुरा

9.15 पण्डित परिषद् (9 मार्च, 2010)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली द्वारा 9 मार्च, 2010 को भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् नई दिल्ली का प्रथम एशियाई दार्शनिक सम्मेलन जो 6-9 मार्च, 2010 तक हुआ जिसके दौरान एक पण्डित परिषद् का आयोजन हुआ। पण्डित परिषद् का विषय "भारत की बौद्धिक परम्परा" था।

प्रो. डी. प्रह्लादाचार्य, बैंगलोर, प्रो. रामानुज देवनाथन्, कुलसचिव, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, डॉ. बलराम सिंह, पुणे और डॉ. हरे राम त्रिपाठी पण्डित परिषद् के वक्ता थे। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने अध्यक्ष पद को सुशोभित किया।

बायें से डॉ. बलराम सिंह, प्रो. डी. प्रह्लादाचार्य, प्रो. आर. वी. त्रिपाठी, प्रो. लक्ष्मी ताताचार्य, प्रो. पी. के. महोपाध्याय, प्रो. आर. देवनाथन् एवं प्रो. गोदावरी मिश्र

9.16 अखिल भारतीय पालि-प्राकृत सम्मेलन (27-28 मार्च, 2010)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली द्वारा अपने लखनऊ परिसर में "संस्कृत पालि-प्राकृत अन्तः सम्बन्ध" विषय पर 27-28 मार्च, 2010 को अखिल भारतीय पालि-प्राकृत सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन मुख्य अतिथि प्रो. जी.सी. त्रिपाठी, पूर्व-प्राचार्य, गंगानाथ झा परिसर, इलाहाबाद और पूर्व-निदेशक, कला कोश, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला

केन्द्र, नई दिल्ली के कर-कमलों से हुआ। समारोह के सम्मानीय अतिथि श्री जगदीश गाँधी थे। उद्घाटन समारोह की अध्यद्वाता प्रो. रामानुज देवनाथन, कुलसचिव, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ने की।

उद्घाटन समारोह को सम्बोधित करते हुए प्रो. आर.देवनाथन्।
मञ्चासीन प्रो. विजय कुमार जैन, प्रो. जी.सी. त्रिपाठी एवं प्रो. सुरेन्द्र झा।

संस्कृत विमर्श, अंक III का विमोचन

पुस्तक का विमोचन

प्रो. जी.सी. त्रिपाठी ने अपने उद्घाटन भाषण में अपने विचार व्यक्त किये कि पालि-प्राकृत भाषाओं का अध्ययन संस्कृत भाषा के विकास के लिये आवश्यक है।

सम्मेलन के अध्यक्ष प्रो. देवनाथन ने कहा कि यह सम्मेलन हमारे कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी के कठोर परिश्रम का परिणाम है जो संस्कृत के साथ पालि और प्राकृत के साहित्यिक और सांस्कृतिक विकास के अध्ययन और शोध के साधन हैं। इस अवसर पर "प्राकृत भाषा और भारतीय परम्परा" एवं "संस्कृत विमर्श" के तृतीय अंक का भी विमोचन सम्माननीय अतिथियों द्वारा किया गया।

प्रो. सुरेन्द्र पाठक, प्राचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, लखनऊ परिसर ने अतिथियों का स्वागत किया एवं प्रो. विजय कुमार जैन ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा सम्मेलन के विषय को विस्तार से व्याख्या की।

सम्मेलन में कुल सात सत्र थे तथा प्रतिभागियों ने पालि, प्राकृत और संस्कृत साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किये। 27 मार्च, 2010 की संध्या में बौद्ध दर्शन विभाग के छात्रों ने डॉ. राम लखन पाण्डेय एवं डॉ. राका जैन के निर्देशन में सुत्तनिपात के ''धनिय सुत्त'' पर आधारित एवं नाटक प्रस्तुत किया।

विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता प्राच्य विद्या के प्रख्यात विद्वानों द्वारा की गई जैसे प्रो. संघसेन सिंह, दिल्ली, प्रो. विमलकीर्ति, नागपुर, प्रो. अंगराज चौधरी, नासिक, प्रो. हरि शंकर शुक्ला, वाराणसी, प्रो. शेरब रहल्दी, लखनऊ, डॉ. तशी पल्जोर, लद्दाख, प्रो. प्रेम सुमन जैन, श्रवनबेलगोला, प्रो. भागचन्द्र जैन, नागपुर, प्रो. वृषभ प्रसाद जैन, लखनऊ, प्रो. एस.पी. जैन, डॉ. रमाकान्त शुक्ला एवं प्रो. सुदीप जैन, दिल्ली। अन्य विद्वानों के नाम जिन्होनें अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किये इस प्रकार हैं- प्रो. रामजी रॉय, डॉ. वाँग्यचुक दोर्जी, डॉ. तशी पल्जोर, डॉ. धर्म चन्द्र जैन, डॉ. प्रीति दूबे, डॉ. राहुल अमृतराज, डॉ. मोहन मिश्र, डॉ. नीलिमा चौहान, डॉ. श्रेयांस कुमार सिंघई, डॉ. वीर सागर जैन, डॉ. दीनानाथ शर्मा, डॉ. महावीर पी. शास्त्री, डॉ. सुदर्शन मिश्र, डॉ. अनेकान्त कुमार जैन, डॉ. कल्पना जैन, डॉ. सरोज जैन, डॉ. जय कुमार उपाध्याय, श्री जयवंत खण्डारे, श्री वेद व्यास पाण्डे, श्री प्रदीप कुमार, डॉ. राजेश रञ्जन, डॉ. प्रियसेन सिंह, डॉ. अल्का बरुआ, डॉ. धर्मेन्द्र सिंहदेव, डॉ. धमेन्द्र जैन, डॉ. रजनीश शुक्ला, डॉ. पत्रिका जैन, डॉ. तारा डागा, श्री राजीव रञ्जन, श्री आनन्द जैन, श्री देवमणि पाण्डेय और श्री अजय कुमार सिंह।

समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. अशोक कुमार कालिया, पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा की गई। मुख्य वक्ता अलीगढ़ के प्रो. एस.पी. शर्मा, एवं लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ के संस्कृत विभाग के विभागध्यक्ष प्रो. ब्रजेश शुक्ला थे तथा लखनऊ के श्री धर्मवीर जैन विशिष्ट अतिथि थे।

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की परियोजना अधिकारी डॉ. शुक्ला मुखर्जी ने सभी प्रतिभागी विद्वानों और अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिचर्चा

समापन समारोह

9.17 संस्कृत विद्वानों को ''पद्म पुरस्कार'' (29 जनवरी, 2010)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने भारत संरकार द्वारा संस्कृत विद्वानों को दिये गये ''पदम'' सम्मान पाने वालों के लिये अपने परिसर जनकपुरी, नई दिल्ली में सम्मान समारोह का आयोजन किया था। संस्कृत के क्षेत्र में विख्यात विद्वानों प्रो. सत्यव्रत शास्त्री, पूर्व कुलपति, जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी को ''पद्मविभूषण'' सम्मान से, प्रो. रमारञ्जन मुखर्जी, पूर्व कुलाधिपति, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति को ''पद्मश्री'' एवं प्रो. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय व प्रो. शेल्डन् पुल्लोक, अमेरिका को ''पद्मश्री'' से सम्मानित किया गया।

प्रो. श्रीनिवास रथ, उपाध्यक्ष, महर्षि वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन, डॉ. अनीता भटनागर जैन, संयुक्त सचिव (भाषा), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, प्रो. गौतम भाई पटेल, अहमदाबाद, डॉ. रमाकान्त शुक्ला एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति भी इस अवसर पर उपस्थित थे। प्रो. आर. देवनाथन् ने अतिथियों का स्वागत किया। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने समारोह की अध्यक्षता की।

9.18 स्मृति व्याख्यानमाला (विशेष व्याख्यान-माला)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने 2008-2009 से कुछ महान विभूतियों की स्मृति में वार्षिक विशेष स्मृति व्याख्यानमाला का गठन किया है जो इस प्रकार हैं:

1. डॉ. वी. राघवन
2. डॉ. बी.आर. अम्बेडकर
3. डॉ. एस. राधाकृष्णन
4. पण्डित मण्डन मिश्र
5. महामहोपाध्याय मधुसूदन ओझा
6. प्रो. हीरालाल जैन
8. श्री राजीव गाँधी अन्तर्राष्ट्रिय स्मृति व्याख्यान
9. पण्डित गौरीनाथ शास्त्री
10. श्री पी.टी. कुरिआकोसे

स्मृति व्याख्यालामाला का आयोजन विभिन्न स्थलों पर किया गया। 2008-2009 में हुए व्याख्यान इस प्रकार हैं:

डॉ. वी. राघवन स्मृति व्याख्यान (22 अगस्त, चेन्नई)-

डा. वी. राघवन स्मृति व्याख्यान 22 अगस्त, 2009 को मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई में आयोजित किया गया। प्रो. एम. नरसिंहाचार्य, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित ने ''डॉ. वी राघवन के अनुसार नाटक की अवधारणा' पर व्याख्यान दिया।

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर स्मृति व्याख्यान (10 अक्टूबर, 2009)-

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर स्मृति व्याख्यान का आयोजन 10 अक्टूबर, 2009 को चिन्तन भवन, गंगटोक में हुआ। प्रो. विजय बहादुर सिंह, निदेशक, भाषा परिषद्, कोलकाता ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर पर एक व्याख्यान दिया। श्री नरेन्द्र कुमार प्रधान, शिक्षा मंत्री, सिक्किम सरकार समारोह के मुख्य अतिथि थे एवं प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने समारोह की अध्यक्षता की।

डॉ. राधाकृष्णन् स्मृति व्याख्यान (15 अक्टूबर, 2009)-

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन का उन्तालिसवाँ स्थापना दिवस 15 अक्टूबर, 2009 को फिक्की सभागार में मनाया गया। इस पावन अवसर पर डॉ. राधाकृष्णन् स्मृति व्याख्यान का भी आयोजन हुआ जिसमें माननीय डॉ. कर्ण सिंह, सदस्य, राजय सभा ने ''आधुनिक युग में वेदान्त'' विषय पर एक व्याख्यान दिया।

पण्डित मण्डन मिश्र स्मृति व्याख्यान (26 अक्टूबर, 2009)-

पण्डित मण्डन मिश्र स्मृति व्याख्यान 26 अक्टूबर, 2009 को इलाहाबाद में आयोजित किया गया। प्रो. वाचस्पति उपाध्याय ने ''मीमांसानये लोकतन्त्रम्'' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

महामहोपाध्याय मधुसूदन ओझा स्मृति व्याख्यान (18 दिसम्बर, 2009)-

मधुसूदन ओझा स्मृति व्याख्यान 18 दिसम्बर, 2009 को जयपुर परिसर, जयपुर में आयोजित किया गया। प्रो. अशोक अकलूजकर, विभागाध्यक्ष, एशियाई अध्ययन, ब्रिटिश कोलम्बिया विश्वविद्यालय, कनाडा ने ''वाक्यपदीयम्'' पर व्याख्यान दिया।

बांये से- प्रो. वागीश शुक्ला, प्रो. आर. वी त्रिपाठी एवं प्रो. विजय बहादुर सिंह मञ्चासीन

पण्डित गौरीनाथ शास्त्री स्मृति व्याख्यान (2 फरवरी, 2010)-

पण्डित गौरीनाथ शास्त्री स्मृति व्याख्यान भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता में 2 फरवरी, 2010 को आयोजित किया गया। प्रो. वागीश शुक्ला, प्रोफेसर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली ने ''भारतीय शास्त्र परम्परा परिप्रेक्ष्ये काव्य शास्त्र'' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

प्रबन्ध मण्डल के सदस्यों की सूची

1.	प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी कुलपति राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली।	अध्यक्ष
2.	श्री नीतीश सेनगुप्ता भूतपूर्व सदस्य-योजना आयोग 'सुनन्दा' 40/135, सी.आर.पार्क एक्स्टेंशन, नई दिल्ली-110019	सदस्य
3.	प्रो. श्रीनिवास रथ 12, उदयन मार्ग, उज्जैन-456010 (म.प्र.)	सदस्य
4.	प्रो. मिथिला प्रसाद त्रिपाठी निदेशक, कालिदास संस्कृत अकादमी विक्रम विश्वविद्यालय मार्ग कोठी रोड, उज्जैन (म.प्र.)	सदस्य
5.	प्रो. गंगाधर पण्डा संस्कृत प्रोफेसर पुराणेतिहास विभाग संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी-221002 (उ.प्र.)	सदस्य
6.	प्रो. बलदेव मेहरा संस्कृत विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक-124001 (हरियाणा)	सदस्य
7.	वित्त सलाहकार मानव संसाधन विकास मन्त्रालय माध्यमिक व उच्चतर शिक्षा विभाग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001	सदस्य
8.	निदेशक (भाषाएं) मानव संसाधन विकास मन्त्रालय उच्चतर शिक्षा विभाग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001	सदस्य

क्रमशः....

9. डॉ. कमल नयन शर्मा, — सदस्य
रीडर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, (मानित विश्वविद्यालय)
जयपुर परिसर, त्रिवेणी नगर,
गोपाल पुरा बाई-पास, जयपुर-302018 (राजस्थान)

10. डॉ. एस.सुब्रमण्यम शर्मा — सदस्य
वरिष्ठ व्याख्याता, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, (मानित विश्वविद्यालय)
गुरूवायूर परिसर पो. पुरनाटुकरा, जिला-त्रिचूर-680551 (केरल)

11. कुलसचिव — सदस्य-सचिव
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), जनकपुरी,
नई दिल्ली

संलग्नक-ख

वित्त समिति के सदस्यों की सूची

1. कुलपति — अध्यक्ष
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान,
(मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली

2. निदेशक (भाषाएं) — सदस्य
मानव संसाधन विकास मन्त्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001

3. प्रो. श्रीनिवास रथ — सदस्य
12, उदयन मार्ग, उज्जैन-456010 (म.प्र.)

4. श्री एस.के.राय, वित्त सलाहकार — सदस्य
मानव संसाधन विकास मन्त्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001

5. डॉ. करतार सिंह (यू.जी.सी. नामिनी) — सदस्य
उपवित्त अधिकारी
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

6. श्री नीतिश सेनगुप्ता — सदस्य
भूतपूर्व सदस्य - योजना आयोग
'सुनन्दा' 40/135, सी.आर.पार्क एक्सटेंशन,
नई दिल्ली-110019

7.	प्रो. केशव शर्मा रत्ना कुमारी संस्कृत शोध संस्थान भारती विहार, मशोबरा, शिमला (हि.प्र)	सदस्य
8.	कुलसचिव राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली	सदस्य-सचिव

संलग्नक-ग

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के संकाय-सदस्यों का परिसरवार विवरण

1. श्री गंगानाथ झा परिसर, इलाहाबाद (उ.प्र.)

क्रमांक	नाम	पदनाम	विशिष्टीकरण
1.	प्रो. सुरेन्द्र झा (21.2.2008 से)	प्राचार्य	साहित्य, व्याकरण
2.	डॉ. (श्रीमती) एस. के. मिश्र	रीडर	साहित्य
3.	डा. ललित कुमार त्रिपाठी	रीडर	नव्य व्याकरण
4.	डॉ. वी. एन. गिरि	रीडर	साहित्य
5.	डॉ. बनमाली बिस्वाल	रीडर	व्याकरण
6.	डॉ. जनार्दन प्रसाद पाण्डेय	रीडर	साहित्य
7.	डॉ. अपराजिता मिश्रा	व्याख्याता	साहित्य
8.	श्रीमती बीना मिश्रा	संग्रहाध्यक्ष	शोध
9.	श्री राम रूप	पुस्तकालयाध्यक्ष	शोध
10.	डॉ. (श्रीमती) शैलजा पाण्डेय	शोध सहायक	शोध
11.	श्री रामचन्द्र	शोध सहायक	शोध
12.	डॉ. सुरेश पाण्डेय	शोध सहायक	शोध
13.	डॉ. राम किशोर झा	प्रतिलिपिक	शोध
2.	**श्री सदाशिव परिसर, पुरी**		
1.	डॉ. जी. गंगन्ना	प्राचार्य	अद्वैत वेदान्त
2.	प्रो. के.बी. सुब्रायाडु	प्रोफेसर	अद्वैत वेदान्त

क्रमश:....

क्रमांक	नाम	पदनाम	विशिष्टीकरण
3.	डॉ. एफ. एम. पण्डा	प्रोफेसर	पुराणेतिहास
4.	डॉ. एच. के. मोहापात्र	प्रोफेसर	नव्य व्याकरण
5.	डॉ. ए. के. नन्दा	प्रोफेसर	धर्मशास्त्र
6.	डॉ. एम. चन्दशेखर (पदग्रहण 2.2.09)	प्रोफेसर	शिक्षा-शास्त्र
7.	डॉ. खगेश्वर मिश्र	प्रोफेसर	धर्मशास्त्र
8.	डॉ. च. एन. वी. प्रसाद राव	रीडर	अद्वैत वेदान्त
9.	श्री एस.वी.आर. मूर्ति	रीडर	अंग्रेजी
10.	डॉ. के.वी. सोमयाजुलु	रीडर	नव्य व्याकरण
11.	डॉ. (श्रीमती) एम.रथ	रीडर	पुराणेतिहास
12.	डॉ. एल.के. साहू	रीडर	धर्मशास्त्र
13.	डॉ. एस.एम. रथ	रीडर	साहित्य
14.	डॉ. एम.एम. झा	रीडर	शिक्षा शास्त्र
15.	डॉ. एस.के. सेनापति	रीडर	सर्वदर्शन
16.	डॉ. यू.एन. झा	रीडर	साहित्य
17.	डॉ. आर.के. बर्मन	रीडर	अद्वैत वेदान्त
18.	डॉ. सत्यम कुमारी	रीडर	नव्य न्याय
19.	श्री बी.पी. मोहन्ती	व्याख्याता (पी.ई.) चयन श्रेणी	शारीरिक शिक्षा
20.	डॉ. ए. परुस्ती	वरिष्ठ व्याख्याता	नव्य व्याकरण
21.	श्रीमती गौरा प्रिया दाश	वरिष्ठ व्याख्याता	सांख्य योग
22.	डॉ. पी.के. महापात्र	वरिष्ठ व्याख्याता	ज्योतिष
23.	डॉ. आर.के. मिश्रा	वरिष्ठ व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
24.	डॉ. शुभस्मिता मिश्रा	वरिष्ठ व्याख्याता	ज्योतिष
25.	डॉ. (श्रीमती) एन. पाणिग्रही	व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
26.	डॉ. के. ई. मधुसूदन (21.11.08 को कार्यमुक्त)	वरिष्ठ व्याख्याता	नव्य न्याय
27.	डॉ. बृंदाबन पात्र	वरिष्ठ व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
28.	डॉ. एस.जी. पाण्डेय	वरिष्ठ व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
29.	डॉ. वी.पी. कच्छवाह	वरिष्ठ व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
30.	डॉ. दुर्गा चरण सारंगी	व्याख्याता	नव्य व्याकरण
31.	डॉ. महेश झा	व्याख्याता	न्याय

क्रमांक नाम	पदनाम	विशिष्टीकरण
32. डॉ. विश्वरंजन पति (26.2.09 को कार्यग्रहण)	व्याख्याता	ज्योतिष
33. श्री ए.के. मीणा (4.3.09 को पदग्रहण)	व्याख्याता	एस.वाई.
34. डॉ. गणपति शुक्ला (6.3.09 को कार्यग्रहण)	व्याख्याता	एन.एन.
35. डॉ. श्रीमती के. महोपात्र	कनिष्ठ व्याख्याता (वरिष्ठ ग्रेड)	हिन्दी
36. डॉ. एन.सी. साहू	कनिष्ठ व्याख्याता (वरिष्ठ ग्रेड)	उड़िया
37. श्री पी.सी. मोहपात्र	कनिष्ठ व्याख्याता (वरिष्ठ ग्रेड)	इतिहास
38. कुमारी स्नेहा नन्दा	पी.जी.टी. (वरिष्ठ ग्रेड)	साहित्य
39. डॉ. श्रीमती एस. सतपथी	पी.जी.टी. (वरिष्ठ ग्रेड)	सर्वदर्शन
40. डॉ. पी.सी. साहू	टी.जी.टी. (वरिष्ठ ग्रेड)	गणित
41. श्रीमती बी.एल. मोहन्ती	टी.जी.टी. (वरिष्ठ ग्रेड)	साहित्य
42. डॉ. (श्रीमती) आर.एम. प्रतिहारी	टी.जी.टी. (वरिष्ठ ग्रेड)	साहित्य
43. श्री डी.पी. दास मोहापात्र	टी.जी.टी. (वरिष्ठ ग्रेड)	इतिहास
44. डॉ. एन.के. पाण्डेय	टी.जी.टी. (वरिष्ठ ग्रेड)	व्याकरण
3. श्री रणवीर परिसर, जम्मू		
1. प्रो. वी.एम. शास्त्री	प्राचार्य	साहित्य
2. डॉ. वाई.पी. खजूरिया	प्रोफेसर	व्याकरण
3. डॉ. आई.एम. दास	प्रोफेसर	ज्योतिष
4. डॉ. बी.एन. झा	रीडर	दर्शन
5. श्री के. रघुनाथन	रीडर	दर्शन
6. श्री एस.सी. शर्मा	रीडर	अंग्रेजी
7. डॉ. वी.एन.झा	रीडर	साहित्य
8. डॉ. रमेश सिंह	रीडर	शारीरिक शिक्षा
9. डॉ. हरि नारायण तिवारी	रीडर	व्याकरण
10. डॉ. जे.आर. शर्मा	वरिष्ठ व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
11. डॉ. जय प्रकाश नारायण	वरिष्ठ व्याख्याता	साहित्य
12. डॉ. नागेन्द्र नाथ झा	व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
13. डॉ. बी.बी. मिश्रा	रीडर	ज्योतिष
14. डॉ. सी.एम. रैना	व्याख्याता	ज्योतिष

क्रमांक	नाम	पदनाम	विशिष्टीकरण
15.	श्री शीश राम	व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
16.	श्री गोरांग बाग	व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
17.	श्रीमती रेणु मल्होत्रा	कनिष्ठ व्याख्याता	राजनीति विज्ञान
18.	डॉ. विनोद कुमार गुप्ता	कनिष्ठ व्याख्याता	हिन्दी
19.	डॉ. रामजी पाण्डेय	पी.जी.टी.	व्याकरण
20.	श्रीमती निर्मल गुप्ता	टी.जी.टी.	डोगरी/हिन्दी
21.	डॉ. एस.एन. शर्मा	टी.जी.टी.	व्याकरण
22.	श्रीमती विजय शर्मा	टी.जी.टी.	डोगरी/हिन्दी
23.	श्री राम दास	टी.जी.टी.	ज्योतिष
24.	कुमारी मीनाक्षी बावा	कम्प्यूटर शिक्षिका	
25.	श्री अजय कुमार	कम्प्यूटर शिक्षक	
4.	**गुरुवायूर परिसर, त्रिचूर**		
1.	डॉ. के.टी. माधवन्	प्राचार्य, प्रभारी व प्रोफेसर	साहित्य
2.	डॉ. ई.एम. राजन्	रीडर	साहित्य
3.	डॉ. (श्रीमती) इन्दिरा पी.	वरिष्ठ व्याख्याता	साहित्य
4.	श्री के. विश्वनाथन्	व्याख्याता	साहित्य
5.	श्री ए.एम.सी. त्रिविक्रमन नम्बूदिरी	कनिष्ठ व्याख्याता (वरिष्ठ ग्रेड)	साहित्य
6.	डॉ. सी. सन्त	कनिष्ठ व्याख्याता (वरिष्ठ ग्रेड)	साहित्य
7.	डॉ. पी.वी. श्रीदेवी	कनिष्ठ व्याख्याता (वरिष्ठ ग्रेड)	साहित्य
8.	डॉ. पी.जी. श्रीनिवासन्	रीडर	व्याकरण
9.	डॉ. (श्रीमती) वी.के. शैलज	रीडर	व्याकरण
10.	डॉ. (श्रीमती) सी.एल. सिसिली	रीडर	व्याकरण
11.	डॉ. (श्रीमती) के. सरलादेवी	व्याख्याता	व्याकरण
12.	डॉ. प्रसन्ना उन्निथान	कनिष्ठ व्याख्याता (वरिष्ठ ग्रेड)	व्याकरण
13.	डॉ. आर. प्रतिभा	रीडर	वेदान्त
14.	श्री एस. सुब्रह्मनियम् शर्मा	वरिष्ठ व्याख्याता	वेदान्त
15.	डॉ. शम्भुनाथ महालिक	व्याख्याता	वेदान्त
16.	डॉ. ई.के. मधुसूदन	रीडर	न्याय
17.	डॉ. आर. बालामुरूगन्	व्याख्याता	न्याय

क्रमांक	नाम	पदनाम	विशिष्टीकरण
18.	डॉ. एन. आर. श्रीधरन्	व्याख्याता	न्याय
19.	डॉ. च. एल. एन. शर्मा	प्रोफेसर	शिक्षा-शास्त्र
20.	डॉ. के.के. हर्षकुमार	वरिष्ठ व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
21.	डॉ. चन्द्रकान्त	वरिष्ठ व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
22.	डॉ. अशोक कुमार कछवाह	व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
23.	डॉ. बी. पी.एम. श्रीनिवास	व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
24.	डॉ. वेंकट रमण भट	व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
25.	श्रीमती के.यू. जया	कनिष्ठ व्याख्याता	इतिहास
26.	श्रीमती वी. के. सुबैदा	कनिष्ठ व्याख्याता (वरिष्ठ ग्रेड)	हिन्दी
27.	श्रीमती के. ए. जेस्सी	कनिष्ठ व्याख्याता	मलयालम
5.	**जयपुर परिसर, जयपुर**		
1.	डॉ. हिन्द केसरी	प्राचार्य	व्याकरण
2.	प्रो. अर्कनाथ चौधरी	प्रोफेसर	व्याकरण
3.	डॉ. शिवकान्त झा	रीडर	व्याकरण
4.	डॉ. श्रीधर मिश्रा	रीडर	व्याकरण
5.	डॉ. विष्णुकान्त पाण्डेय	व्याख्याता	व्याकरण
6.	डॉ. के. पी. केशवन	रीडर	साहित्य
7.	डॉ. विजय पाल शास्त्री	रीडर	साहित्य
8.	डॉ. रमाकान्त पाण्डेय	रीडर	साहित्य
9.	डॉ. उमाकान्त चतुर्वेदी	वरिष्ठ व्याख्याता	धर्मशास्त्र
10.	डॉ. कमल नयन शर्मा	रीडर	धर्मशास्त्र
11.	डॉ. (श्रीमती) भगवती सुदेश	रीडर	ज्योतिष
12.	डॉ. वासुदेव शर्मा	प्रोफेसर	ज्योतिष
13.	डॉ. ईश्वर भट्ट	वरिष्ठ रीडर	ज्योतिष
14.	डॉ. विजय कुमार शर्मा (26.2.09 को कार्यग्रहण)	व्याख्याता	जैन-दर्शन
15.	डॉ. श्रियांस कुमार सिंघई	रीडर	जैन-दर्शन
16.	डॉ. अनेकान्त कुमार जैन	वरिष्ठ व्याख्याता	

क्रमश:....

क्रमांक	नाम	पदनाम	विशिष्टीकरण
17.	डॉ. कमलेश कुमार जैन	रीडर	जैन दर्शन
18.	डॉ. टी.के. शर्मा	रीडर	शिक्षाशास्त्र
19.	डॉ. वाई.एस. रमेश	रीडर	शिक्षा-शास्त्र
20.	डॉ. सुदेश कुमार शर्मा	रीडर	शिक्षाशास्त्र
21.	डॉ. (श्रीमती) संतोष मित्तल	रीडर	शिक्षाशास्त्र
22.	डॉ. फतेह सिंह	रीडर	शिक्षाशास्त्र
23.	डॉ. सोहन लाल पाण्डेय	रीडर	शिक्षाशास्त्र
24.	डॉ. दरियाव सिंह	वरिष्ठ व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
25.	कुमारी लीना सक्करवाल (भोपाल को स्थानान्तरित)	व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
26.	डॉ. ओ. पी. भदाना	रीडर	शारीरिक शिक्षा
6.	**लखनऊ परिसर, लखनऊ**		
1.	प्रो. एन.आर. कन्नन (श्रंगेरी को स्थानान्तरित)	प्राचार्य	न्याय, मीमांसा, वेदान्त
2.	प्रो. एस.एन. झा	प्रोफेसर	ज्योतिष
3.	डॉ. एस.के. चतुर्वेदी	रीडर	व्याकरण
4.	डॉ. एस.के. पाठक	रीडर	व्याकरण
5.	डॉ. एम. चन्द्रशेखर (स्थानान्तरित)	रीडर	शिक्षा-शास्त्र
6.	डॉ. एल.एन. पाण्डे	रीडर	शिक्षा-शास्त्र
7.	डॉ. बटोही झा	रीडर	साहित्य
8.	डॉ. वी.के. जैन	रीडर	बौद्ध दर्शन
9.	डॉ. अवधेश कुमार चौबे	रीडर	बौद्ध-दर्शन
10.	डॉ. एस.के. पाण्डे	रीडर	हिन्दी
11.	डॉ. राम लखन पाण्डेय	रीडर	साहित्य
13.	डॉ. जी.पी. शर्मा	रीडर	शारीरिक शिक्षा
13.	डॉ. (श्रीमती) ए. अग्रवाल	रीडर	शिक्षा-शास्त्र
14.	डॉ. बच्चा भारती	रीडर	शिक्षा-शास्त्र
15.	डॉ. डी.के. झा	वरिष्ठ व्याख्याता	व्याकरण

क्रमांक	नाम	पदनाम	विशिष्टीकरण
16.	डॉ. पी.वी.बी. सुब्रह्मण्यम	वरिष्ठ व्याख्याता	ज्योतिष
17.	डॉ. भारत भूषण त्रिपाठी	वरिष्ठ व्याख्याता	व्याकरण
18.	डॉ. देवी प्रसाद दूबे	वरिष्ठ व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
19.	डॉ. शामदेव मिश्र	व्याख्याता	ज्योतिष
20.	डॉ. गणेश शंकर विद्यार्थी	व्याख्याता	शिक्षाशास्त्र
21.	कुमारी गजाला अंसारी	व्याख्याता	साहित्य
22.	डॉ. गुरचरन सिंह नेगी	व्याख्याता	बौद्ध दर्शन
23.	श्री पवन कुमार	व्याख्याता	साहित्य
24.	श्री कुलदीप शर्मा	व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
25.	श्री जगन्नाथ झा	कनिष्ठ व्याख्याता	राजनीति विज्ञान
26.	श्रीमती कविता बिसरिया	कनिष्ठ व्याख्याता	अंग्रेजी
27.	डॉ. एस.पी. सिंह	कनिष्ठ व्याख्याता	अर्थशास्त्र

7. श्री राजीव गान्धी परिसर, शृंगेरी

1.	प्रो. आर. देवनाथन (मुख्यालय को स्थानान्तरित)	प्राचार्य	व्याकरण
2.	डॉ. ए.पी. सच्चिदानन्द	प्रोफेसर	शिक्षाशास्त्र
3.	डॉ. ई.एम. राजन (स्थानान्तरित)	रीडर	साहित्य
4.	डॉ. महाबलेश्वर पी.भट्ट	रीडर	अद्वैत वेदान्त
5.	डॉ. सुब्राय वी. भट्ट	रीडर	मीमांसा
6.	डॉ. ई.पी. श्रीदेवी	वरिष्ठ व्याख्याता	साहित्य
7.	डॉ. रमाकान्त मिश्र (स्थानान्तरित)	वरिष्ठ व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
8.	डॉ. रामचन्द्रुल बालाजी	वरिष्ठ व्याख्याता	शिक्षाशास्त्र
9.	डॉ. सी.एस.एस.एन. मूर्ति	वरिष्ठ व्याख्याता	व्याकरण
10.	डॉ. नवीन होल्ला	व्याख्याता	नव्य न्याय
11.	डॉ. चन्द्रशेखर भट्ट	व्याख्याता	व्याकरण
12.	श्री कृष्णनाथन पद्मनाभम्	व्याख्याता	व्याकरण
13.	श्री गणेश ईश्वर भट्ट	व्याख्याता	अद्वैत वेदान्त
14.	डॉ. राघवेन्द्र भट्ट	व्याख्याता	साहित्य
15.	डॉ. भगवान समथराय	व्याख्याता	अद्वैत वेदान्त
16.	डॉ. चंद्रकला आर. कोन्डी	व्याख्याता	साहित्य

क्रमांक	नाम	पदनाम	विशिष्टीकरण
17.	डॉ. सूर्यनारायण भट्ट	व्याख्याता	मीमांसा
18.	डॉ. वेंकटरमन भट्ट (स्थानान्तरित)	व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
19.	डॉ. गणेश टी. पंडित	व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
20.	डॉ. के. गिरिधर राव	व्याख्याता	शिक्षा-शास्त्र
21.	श्रीमती कविता एस.	व्याख्याता	कन्नड़
22.	श्री प्रभाकर	व्याख्याता	इतिहास
23.	श्री श्यामसुन्दर	व्याख्याता	नव्य न्याय
24.	श्री मधुकेश्वर भट्ट	व्याख्याता	नव्य न्याय
25.	श्री शंकर एम. हैबर	व्याख्याता	मीमांसा
26.	श्री विनय एम.एस.	व्याख्याता	अंग्रेजी
27.	श्रीमती श्यामनाथन जे.एस.	व्याख्याता	हिन्दी
28.	श्री अनन्तकृष्णा	व्याख्याता	नव्य न्याय
29.	श्री शशिधर के.वी.	संकाय	कम्प्यूटर
8.	**गरली परिसर, गरली**		
1.	डॉ. प्रकाश पाण्डेय (21-2-09 से प्रभावी)	प्राचार्य	वेद, तन्त्र, साहित्य, वेदान्त, सुरलिपि
2.	प्रो. आर.एन. दास	प्रोफेसर	व्याकरण
3.	डॉ. एम.एम. पाठक	रीडर	ज्योतिष
4.	डॉ. आर.के. शर्मा (जयपुर को स्थानान्तरित)	रीडर	साहित्य
5.	डॉ. सुबोध शर्मा	रीडर	व्याकरण
6.	डॉ. एस.एन. तिवारी	रीडर	साहित्य
7.	डॉ. ए.सी. गौड़ शास्त्री	रीडर	व्याकरण
8.	डॉ. एस.के. त्रिपाठी	वरिष्ठ व्याख्याता	साहित्य
9.	डॉ. के.के. दलाल	वरिष्ठ व्याख्याता	साहित्य
10.	डॉ. वी.के. निर्मल	व्याख्याता	ज्योतिष
9.	**भोपाल परिसर, भोपाल**		
1.	प्रो. आजाद मिश्र	प्राचार्य	व्याकरण
2.	प्रो. पी.एन. शास्त्री	प्रोफेसर	शिक्षाशास्त्र
3.	डॉ. वी.एन. चौधरी	रीडर	शिक्षाशास्त्र
4.	डॉ. पी.डी. चौधरी	रीडर	शिक्षाशास्त्र

क्रमांक	नाम	पदनाम	विशिष्टीकरण
5.	डॉ. पवन कुमार (जयपुर को स्थानान्तरित)	रीडर	शिक्षाशास्त्र
6.	श्री नीलाभ तिवारी	व्याख्याता	शिक्षाशास्त्र
7.	डॉ. बोध कुमार झा	रीडर	व्याकरण
8.	श्री ब्रजभूषण ओझा	व्याख्याता	व्याकरण
9.	डॉ. कैलाश चन्द्र दाश	व्याख्याता	व्याकरण
10.	डॉ. सुज्ञान कुमार महन्ती	व्याख्याता	साहित्य
11.	डॉ. नारायणन ई. आर. (जम्मू को स्थानान्तरित)	व्याख्याता	साहित्य
12.	डॉ. रामचन्द्र जोइस	व्याख्याता	साहित्य
13.	डॉ. हंसधर झा	रीडर	ज्योतिष
14.	श्री अमित शुक्ल	व्याख्याता	ज्योतिष
15.	डॉ. अशोक थपलियाल	व्याख्याता	ज्योतिष
16.	डॉ. अर्चना दूबे	व्याख्याता	हिन्दी
17.	श्रीमती स्नेह लता उपाध्याय	पुस्तकालयाध्यक्ष	शोध

10. के.जे. सोमैया संस्कृत विद्यापीठम् परिसर, मुम्बई

1.	डॉ. एम.ए. बाबू	कार्यकारी प्राचार्य	व्याकरण
2.	डॉ. कमल चन्द्र योगी	प्रोफेसर	व्याकरण
3.	डॉ. एस. राधा	रीडर	साहित्य
4.	डॉ. प्रकाश चन्द्र	रीडर	व्याकरण
5.	डॉ. के.के. शिने	वरिष्ठ व्याख्याता	शिक्षाशास्त्र
6.	डॉ. बत्तीलाल मीना (जयपुर को स्थानान्तरित)	व्याख्याता	शिक्षाशास्त्र
7.	डॉ. सुशान्त कुमार राज	व्याख्याता	साहित्य
8.	डॉ. देवदत्त सरोदे	व्याख्याता	शिक्षाशास्त्र
9.	डॉ. हरिप्रसाद	व्याख्याता	शिक्षाशास्त्र
10.	श्री वी.एस.वी.भास्कर रेड्डी	व्याख्याता	शिक्षाशास्त्र
11.	डॉ. आर. गायत्री मुरली कृष्णा	व्याख्याता	शिक्षाशास्त्र
12.	डॉ. रामरूप मिश्रा	शास्त्र चूड़ामणि	व्याकरण

संलग्नक-घ

विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) उपाधि प्राप्त शोध छात्रों का विवरण

क्र.	शोध छात्र	शोध केन्द्र	शीर्षक	विषय
1.	श्रीमती मन्जरी सिन्हा	गंगानाथ झा परिसर इलाहाबाद	विशिष्टाद्वैतदृष्ट्या श्रीमद्भगवद्गीतायाः परिशीलनम्	अद्वैत वेदान्त
2.	शन्जू एन.पी	गुरूवायूर परिसर गुरूवायूर	श्रीमद्भगवद्गीतायां शाङ्कररामानुजयोः सिद्धान्तभेदविमर्शः	अद्वैत वेदान्त
3.	जगदीश प्रसाद जाट	जयपुर परिसर जयपुर	श्रीशेषनारायणदीक्षितप्रणीतस्य महाभाष्यसूक्तिरत्नाकरस्य समीक्षा	व्याकरण
4.	कुमार सिंह	जयपुर परिसर जयपुर	व्याकरणाभिमतवाक्तत्त्वस्य मधुसूदन-ओझाभिमतवाक्तत्त्वेन सह समीक्षणम्	व्याकरण
5.	दिल्ली राम पौडियाल	रणबीर परिसर जम्मू	संज्ञासूत्राणां न्यासानुगतमर्थोदाहरण-परिशीलनम्	व्याकरण
6.	दिगम्बर नायक	श्री सदाशिव परिसर, पुरी	योगदर्शनस्य वार्त्तिकतत्त्ववैशारदीटीकयो-स्तुलनात्मकमध्ययनम्	योग दर्शन
7.	चुन्नी लाल त्रिपाठी	गंगा नाथ झा परिसर, इलाहाबाद	भेदरत्नाद्वैतरत्नरक्षणयोः सामीक्षिकमध्ययनम्	दर्शन शास्त्र
8.	सस्मिता पाणिग्रही	श्री सदाशिव परिसर, पुरी	आपस्तम्बधर्मसूत्रेण सह पारस्कर-गृह्यसूत्रस्य तुलनात्मकमध्ययनम्	धर्मशास्त्र
9.	मनीषा सक्सेना	जयपुर परिसर, जयपुर	प्रमुखसंस्कृतनाटकेषु मानवाधिकारचेतना	साहित्य
10.	जय सिंह	गंगा नाथ झा परिसर, इलाहाबाद	कविदामोदरगुप्तप्रणीतस्य कुट्टनीमत-स्यालोचनात्मकमध्ययनम्	साहित्य
11.	गिरजा नन्द तिवारी	गंगा नाथ झा परिसर, इलाहाबाद	पवनदूतस्य सामीक्षिकमनुशीलनम्	साहित्य
12.	सुचित्रा रथ	श्री सदाशिव परिसर, पुरी	पण्डितराजजगन्नाथप्रणीतानां लहरीकाव्यानां समीक्षात्मकमध्ययनम्	साहित्य
13.	मनोज कुमार शर्मा	जयपुर परिसर, जयपुर	पं॰ मणीरामदीक्षितविरचितस्य दानरत्नस्य समीक्षात्मकमध्ययनम्	धर्मशास्त्र
14.	आशाराम	गंगा नाथ झा परिसर, इलाहाबाद	नवाह्निकमहाभाष्यप्रदीपटीकायाः नवाह्निकशब्दकौस्तुभस्य च समीक्षात्मकमध्ययनम्	व्याकरण

क्रमशः....

क्रमांक	शोध छात्र	शोध केन्द्र	शीर्षक	विषय
15.	अनिल कुमार शर्मा	जयपुर परिसर, जयपुर	उज्जवलदत्तजाजलिकृतपञ्चपाद्युणादि-सूत्रवृत्तेः समीक्षासहितं सम्पादनम्	व्याकरण
16.	तिलक मणि ए.जी.	गुरूवायूर परिसर, गुरूवायूर	श्रीमहिषमङ्गलशङ्करविरचितरूपानयनपद्धतेः सम्पादनं समीक्षात्मकमध्ययनं च	व्याकरण
17.	सुमन्त कुमार दासे	श्री सदाशिव परिसर, पुरी	संस्कृतसाहित्यं प्रति पण्डितश्रीवैकुण्ठ-विहारिनन्दशर्मणां योगदानम्	साहित्य
18.	पद्मा रानी	गंगा नाथ झा परिसर, इलाहाबाद	वाङ्मयसन्दर्भे श्रीसोमदेवसूरिविरचितनीति-वाक्यामृतग्रन्थस्य पर्यालोचनात्मकमध्ययनम्	साहित्य
19.	के.एस. पीताम्बरन्	गरूवायूर परिसर, गरूवायूर	केरलीयज्योतिषशास्त्रे अष्टमङ्गलप्रश्नस्य परिशीलनम्	ज्योतिष
20.	बनवारी लाल	गरली परिसर, गरली	शब्दकौस्तुभस्य दार्शनिकमनुशीलनम्	व्याकरण
21.	सुशान्त कुमार रथ	श्री सदाशिव परिसर, पुरी	पाणिनीयाष्टाध्याय्यां शैक्षिकतत्त्वानां समीक्षणात्मकमध्ययनम्	व्याकरण
22.	चमन लाल शर्मा	रणबीर परिसर, जम्मू	आधुनिकपरिप्रेक्ष्ये मुहूर्तशास्त्रस्य समालोचनात्मकमध्ययनम्	ज्योतिष
23.	विनय कुमार पाण्डेय	गंगा नाथ झा परिसर, इलाहाबाद	युवराजदाराशिकोहकृतसिर्रे-अकबरस्य सांस्कृतिकमध्ययनम्	वेदान्त
24.	राम प्रसाद कनौजिया	गंगा नाथ झा परिसर, इलाहाबाद	उद्भटकाव्यालङ्कारसारसङ्ग्रहस्य समीक्षात्मकमध्ययनम्	साहित्य
25.	सुमन कुमार	गरली परिसर, गरली	नारदसंहितायाः समीक्षात्मकमध्ययनम्	ज्योतिष
26.	पूनम पाण्डे	गंगा नाथ झा परिसर, इलाहाबाद	विशिष्टाद्वैतवेदान्तं प्रति पिल्ललोकाचार्यस्य योगदानम्	दर्शन
27.	पूजा उपमन्यु	जयपुर परिसर, जयपुर	राजस्थाने संस्कृतगद्यसाहित्यस्य विकासपरम्परा	साहित्यं
28.	श्रीमती कुमुदिनी पाण्डे	शैवभारती शोध प्रतिष्ठान	राजनकभास्करकण्ठकृतायाः मोद्घोपाय-टीकायाः आद्यप्रकरणद्वयस्य सम्पादनम्	अद्वेत-दर्शनम्
29.	वेद प्रकाश पाण्डे	गंगा नाथ झा परिसर, इलाहाबाद	सुबर्थविचारप्रसङ्गे नैयायिकमीमांसक-वैयाकरणाभिमतसिद्धान्तानां समीक्षात्मकमध्ययनम्	व्याकरण
30.	मदन लाल सैनी	जयपुर परिसर, जयपुर	प्राचीनभारते प्रतिरक्षाव्यवस्थाविमर्शः	धर्मशास्त्र
31.	मुकेश विजय	जयपुर परिसर, जयपुर	विद्यापतिविरचिताया दानवाक्यावल्लयाः समीक्षात्मकं सम्पादनम्	धर्मशास्त्र

क्रमांक	शोध छात्र	शोध केन्द्र	शीर्षक	विषय
32.	निर्मल शर्मा	जयपुर परिसर, जयपुर	श्रीशङ्करविरचितस्य स्मृतिसुधाकरस्य समीक्षात्मकं सम्पादनम् (धर्मशास्त्र)	धर्मशास्त्र
33.	रवींद्र कुमार	लखनऊ परिसर लखनऊ	नारायणीयकाव्यस्य श्रीमद्भागवताधारेण समीक्षात्मकमध्ययनम्	साहित्य
34.	रेखा सिंह	गंगा नाथ झा परिसर, इलाहाबाद	प्रतिनायकदृष्ट्या संस्कृतकाव्यानां (प्रमुखदृश्यकाव्यानां) परिशीलनम्	नाट्य शास्त्र
35.	प्रेम सिंह सिकरवार	जयपुर परिसर, जयपुर	गुणमन्दार-मञ्जरीकथायाः सम्पादनं समीक्षणञ्च	साहित्य
36.	राम किशन शर्मा	जयपुर परिसर, जयपुर	श्रीगान्धीगौरवमिति महाकाव्यस्य साहित्यिकमध्ययनम्	साहित्य
37.	रत्नाकर खुन्टिया	श्री सदाशिव परिसर, पुरी	साहित्यदर्पण-साहित्यभूषणयोः तुलनात्मकमध्ययनम्	साहित्य
38.	जय प्रकाश वर्मा	गंगा नाथ झा परिसर, इलाहाबाद	लोकव्यवहारे संस्कृतभाषा : स्वल्पाध्ययनम्	वेदान्त
39.	सुषमा पाण्डे	गंगा नाथ झा परिसर, इलाहाबाद	श्रीमद्रुद्रदेवप्रणीतस्य ययातिचरितनाटकस्य समालोचनात्मकमध्ययनम्	साहित्य
40.	रोशन लाल	गरली परिसर, गरली	ज्योतिषशास्त्रदृष्ट्या मेलापकसमीक्षणम्	ज्योतिष
41.	रंगनाथ कट्टी	पूर्ण प्रज्ञा संशोधन मन्दिर, बंगलूरु	बाहुपल्लीश्रीवेङ्कटपत्याचार्य विरचितसूत्रार्थ संङ्ग्रहस्य सविमर्शं सम्पादनमध्ययनं च	द्वैत वेदान्त
42.	धरित्री मोहन्ती	श्री सदाशिव परिसर, पुरी	श्रीमत्सुनीतिभागवतस्य नीतिशास्त्रीयं समीक्षणं	पुराणेतिहास
43.	दुर्योधन नाथ	श्री सदाशिव परिसर, पुरी	रमानाथमिश्रकृतीनां समीक्षात्मकमध्ययनम्	साहित्य
44.	कुलमणि मिश्रा	श्री सदाशिव परिसर, पुरी	मानवजीवने ग्रहप्रभावसमीक्षणम्	ज्योतिष
45.	महिन्द्र सिंह मीणा	जयपुर परिसर, जयपुर	श्रीजिनपालगणिप्रणीतस्य सनत्कुमारचक्रि-चरितमहाकाव्यस्य समीक्षणम्	साहित्य
46.	राधा वल्लभ शर्मा	जयपुर परिसर, जयपुर	काव्यप्रकाशाऽलङ्कारमहोदधिग्रन्थयोः तुलनात्मकमध्ययनम्	साहित्यं
47.	स्वरूपानन्द स्वामी	रानी पद्मावती टी.टी. आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी	शैवागमीयविद्यायोगपादयोः सांख्यायोग-दर्शनाभ्यां तुलनात्मकं समीक्षणम्	दर्शन

क्रमांक	शोध छात्र	शोध केन्द्र	शीर्षक	विषय
48.	ज्योति प्रसाद दास	श्री सदाशिव परिसर, पुरी	शंहितोक्तदृष्टियोगविमर्शः	ज्योतिष
49.	टी.एस. विजयन्	गुरूवायूर परिसर, केरल	श्रीनारायणगुरुदेवकृतिषु तन्त्रशास्त्रप्रभावः	साहित्य
50.	बिकसिनी गुमान सिंह	श्री सदाशिव परिसर, पुरी	सांख्यकारिकायाः युक्तिदीपिका-तत्त्वकौमुदीटीकयोः तुलनात्मकमध्ययनम्	सांख्य-योग
51.	शिव कुमार पाण्डे	गंगानाथ झा परिसर, इलाहाबाद	वृहद्होराशास्त्रस्य जातकपारिजातस्य तुलनात्मकमध्ययनम्	ज्योतिष
52.	हरि प्रकाश यादव	गंगानाथ झा परिसर, इलाहाबाद	कविशेखर बदरीनाथ झा प्रणीतस्य राधापरिणयमहाकाव्यस्य परिशीलनम्	साहित्य

संलग्नक-ङ

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) से सम्बद्ध संस्थाएं

क्रमांक	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
बिहार		
1.	जगदीश नारायण ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत विद्यालय ग्राम-पो. लगमा, (रामभद्र पुर) वा. लोहना रोड, जिला-दरभंगा (बिहार)-847407	प्रथमा-तृतीय, पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
2.	देवराहा बाबा भक्त शिव शंकर संस्कृत महाविद्यालय, रामचन्द्रपुर, अन्धैल, पो. पटेली, जिला-समस्तीपुर, पिन-848132	प्रथमा-तृतीय, पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय
3.	डॉ. रामजी मेहता संस्कृत महाविद्यालय मालीघाट, मुजफ्फरपुर (बिहार) 842001	प्रथमा-तृतीय, पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय (साहित्य, नव्य व्याकरण, सिद्धान्त ज्योतिष, फलित ज्योतिष, सर्वदर्शन, प्राचीन व्याकरण)

क्रमशः....

क्रमांक	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
4.	राजकुमारी गणेश शर्मा संस्कृत विद्यापीठ कोलहन्टा पटोरी, पो. पटोरी बसंत, जिला–दरभंगा (बिहार) 846003	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय, प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय (साहित्य, ज्योतिष-सिद्धान्त, फलित व व्याकरण)। विद्यावारिधि
5.	सरस्वती आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, बेगूसराय, बिहार–851101	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय (साहित्य, व्याकरण)
6.	रामसुन्दर संस्कृत विश्व विद्या प्रतिष्ठान रमोल बेलान (लक्ष्मीनाथ नगर) वाया बहेरा, जिला–दरभंगा (बिहार)	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय, आचार्य–प्रथम, द्वितीय (साहित्य, व्याकरण, वेद, ज्योतिष)
7.	डॉ. मंडन मिश्र माध्यमिक संस्कृत विद्यालय, संजात, जिला–बेगुसराय (बिहार)	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय
8.	अजित कुमार संस्कृत शिक्षण संस्थान, उमाकान्त नगर, पो. लढोरा, जिला–समस्तीपुर–848302 (बिहार)	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय
9.	लक्ष्मी हरिकान्त प्राथमिक संस्कृत माध्यमिक विद्यालय झंझारपुर, जिला–मधुबनी, बिहार–847404	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय
10.	दीनानाथ मिथिला संस्कृत महाविद्यालय गाँव व पो. कथरा–847423 जिला–दरभंगा (बिहार)	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय
11.	जे.एन.बी. आदर्श संस्कृत महाविद्यालय पो. ऑ. लगमा, वाया लोहना रोड, जिला–दरभंगा (बिहार) 847407	प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय (वेद, व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष और धर्मशास्त्र)। विद्यावारिधि

क्रमांक	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
दिल्ली		
12.	श्री मोतीनाथ संस्कृत महाविद्यालय, रमेश नगर, नई दिल्ली–15	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय (साहित्य, व्याकरण, नव्य न्याय)
13.	ब्रह्मर्षि राम प्रपन्नाचार्य संस्कृत वेद वेदांग महाविद्यालय राजघाट के पीछे, पुराना पावर हाऊस, नई दिल्ली–2	प्रथमा–प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय
14.	श्रीराम ज्योतिष कर्मकाण्ड महाविद्यालय, (राम विद्या मन्दिर एजुकेशन सोसायटी के अन्तर्गत) मंडावली, दिल्ली–110092	आचार्य–प्रथम, द्वितीय (कर्मकाण्ड, पौरोहित्य, ज्योतिष-फलित और सिद्धांत)
15.	वसंत ग्राम आदर्श संस्कृत विद्यालय वसंत विहार, नई दिल्ली–110057	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय
16.	राम दल संस्कृत महाविद्यालय 1612 दरीबा कलाँ, दिल्ली–6	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय
17.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, 1021-1024, गली शक्ति मन्दिर दरियागंज, नई दिल्ली–110002	प्रथमा–तृतीय पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय
18.	समन्त भद्र संस्कृत महाविद्यालय दरियागंज, नई दिल्ली–110002	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय (साहित्य, जैन-दर्शन)
19.	श्री महावीर विश्व विद्यापीठ ए-6, पश्चिम विहार, चौधरी बलबीर सिंह मार्ग, नई दिल्ली–110063	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय (साहित्य, व्याकरण, सर्वदर्शन), विद्यावारिधि

क्रमांक	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
20.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय एफ-487/3, रघुवीर नगर नई दिल्ली-110027	प्रथमा-तृतीय, पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय
21.	आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-110060	प्रथमा-तृतीय, पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
22.	राम ऋषि संस्कृत महाविद्यालय करोला, दिल्ली-110081	प्रथमा-तृतीय, पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय
23.	आदर्श संस्कृत विद्यापीठ हरेवली, दिल्ली-110039	प्रथमा-तृतीय, पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय
24.	बाल विद्या मन्दिर रोहिणी, पूठ कलाँ दिल्ली-110041	प्रथमा-तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय
गुजरात		
25.	श्री समर्थ संस्कृत महाविद्यालय, समर्थेश्वर महादेव एलिस ब्रिज, अहमदाबाद-6	प्रथमा-तृतीय, पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
26.	श्री रघुवर रामानंद वेदांत महाविद्यालय श्री कौशलेन्द्र मठ, सुरखेज रोड, पो. पलाडी, अहमदाबाद, गुजरात-380007	प्रथमा-तृतीय, पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय (रामानंद वेदांत)
27.	एम.जे.पी. संस्कृत विद्यालय नरुनपुर, मीलाम्बिका रोड, अहमदाबाद-13	प्रथमा-तृतीय, पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय
28.	दर्शनम् संस्कृत महाविद्यालय सरखेज गांधी नगर, हाईवे, छरोडी-382421	प्रथमा-तृतीय, पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय

क्रमांक	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
हरियाणा		
29.	आलोक संस्कृत महाविद्यालय महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) – 123039	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय
30.	हरियाणा संस्कृत विद्यापीठ पो. बघौला, तहसील–पलवल जिला–फरीदाबाद (हरियाणा)	प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय (साहित्य, व्याकरण)
31.	श्री रामानन्द ब्रह्मर्षि महाविद्यालय विराट नगर, पिंजौर (हरियाणा)	पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय
32.	श्री लज्जाराम संस्कृत महाविद्यालय तीर्थ, पाण्डु पिण्डारा, जीन्द (हरियाणा)	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय
जम्मू व कश्मीर		
33.	श्री गुरु गंगादेव संस्कृत महाविद्यालय, शिवकाशी, सुन्दरवनी जिला–राजौरी, जम्मू	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय
झारखण्ड		
34.	लक्ष्मी देवी शर्राफ आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, काली रेखा, वैद्यनाथ धाम देवघर, झारखण्ड, पिन : 814112	प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय
कर्नाटक		
35.	पूर्णप्रज्ञ संशोधन मन्दिर पूर्णप्रज्ञा विद्यापीठ, पूर्णप्रज्ञा नगर, कठरीगुप्पा मेन रोड, बैंगलोर–560028	विद्यावारिधि
केरल		
36.	भारतीय संस्कृत महाविद्यालय पिल्हारा रोड, वाया मंडुर जिला–कन्नूर – 670501 (केरल)	प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय (साहित्य)

क्रमांक	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
37.	श्री रामकृष्ण आदर्श संस्कृत महाविद्यालय रामकृष्ण मठ, पो.–अरुणापुरम, पलै जिला–कोट्टायम – 686574 (केरल)	प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय (अद्वैत वेदान्त)
38.	श्री शंकर संस्कृत विद्यापीठ पो. इड्डाकाडोम, वा. इजहूकोन, जिला–क्वीलोन (केरल)	पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय
39.	कालीकट आदर्श संस्कृत विद्यापीठ, पो. बालूसरी, जिला–कालीकट – 673612	प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय
40.	कोंडगलूर विद्वत्पीठम् पैलेस रोड, पो. कोडंगलूर जिला–त्रिचूर (केरल) - 680664	प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय
41.	श्री शंकर संस्कृत महाविद्यापीठम्, देवस्वम् बोर्ड जंक्शन, कावदिअर, पो. त्रिवेन्द्रम–695003	प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय
42.	महेश्वरी संस्कृत कॉलेज गाँव व पो. कक्कुर जिला–कोजीकोड–673619 (केरल)	प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय
महाराष्ट्र		
43.	मुम्बादेवी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय भारतीय विद्याभवन, के.एम. मुन्शी मार्ग मुम्बई–400007	प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय
44.	श्री अंबाजी संस्कृत महाविद्यालय निवेतिया रोड, मलाड (पूर्व) मुम्बई (महाराष्ट्र) – 400097	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय
45.	विवेकानंद संस्कृत पाठशाला विवेकानंद आश्रम, विवेकानंद नगर, पो. हिवाटा, (बी.यू.), तहसील मेहकर, जिला–बुलढ़ाना (महाराष्ट्र) 443301	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय

क्रमांक	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
मणिपुर		
46.	मणिपुर संस्कृत विद्यापीठ डी.एम. कॉलेज कैम्पस, इम्फाल, मणिपुर–795001	प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय
47.	राधा माधव संस्कृत महाविद्यालय, पो. नाम्बोल, मणिपुर–795134	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय (साहित्य, नव्य व्याकरण, फलित ज्योतिष व सर्वदर्शन)
पंजाब		
48.	बाबा हरदित गिरि संस्कृत विद्यालय संस्कृत-प्रचारिणी अखाड़ा सरहिन्द शहर, जिला–फतेहगढ़ साहिब, पंजाब	प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय
49.	श्री सरस्वती संस्कृत कॉलेज पो0 खन्ना–141401 जिला–लुधियाना (पंजाब)	प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय
राजस्थान		
50.	नवजागृति संस्कृत विद्यापीठ, गंगापुर सिटी–322201 जिला–सवाई माधोपुर (राजस्थान) 322201	प्रथमा–तृतीय पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय
उत्तर प्रदेश		
51.	रानी पद्मावती तारा योग तंत्र आदर्श महाविद्यालय, इन्द्रपुर, (शिवपुर) वाराणसी	प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय
52.	श्री बटुकनाथ संस्कृत महाविद्यालय बी-22/195, द्वारिकाधीश मन्दिर, शंकुलधारा, वाराणसी–221010	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय (साहित्य, व्याकरण)
53.	गिन्नी देवी संस्कृत विद्यापीठ, मोदीनगर, जिला गाजियाबाद–201204 उत्तर प्रदेश	प्रथमा–तृतीय पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय

क्रमांक	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
54.	श्री टिबरीनाथ सांगवेद संस्कृत महाविद्यालय, नैनीताल रोड, बरेली, उत्तर प्रदेश–248005	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय
55.	गान्धी संस्कृत महाविद्यालय, पँवरी गौहनिया, पो. जसरा, इलाहाबाद	प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय (साहित्य, नव्य व्याकरण)
56.	अनन्ता देवी संस्कृत महाविद्यालय पो. कौंधियार, इलाहाबाद (उ.प्र.)	प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय (साहित्य, नव्य व्याकरण)
57.	रानी पद्मावती योग तन्त्र उच्च माध्यमिक विद्यालय इन्द्रपुर (शिवपुर), वाराणसी (उ.प्र.)	प्रथमा–तृतीय पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय
उत्तराञ्चल		
58.	देववाणी संस्कृत विद्यालय पो. त्रियुगी नारायण जनपद जिला–चमोली	पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय
59.	ज्वाल्पा देवी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय ज्वल्पा देवी मन्दिर, पो. पति सैन पौडी–गढ़वाल	शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय
60.	आदर्श संस्कृत विद्यापरिषद् सलड महादेव जिला–पौडी गढ़वाल–246279	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय
पश्चिम बंगाल		
61.	पगलानन्द संस्कृत विद्यालय दौरा पो. (कंटई) जिला–मिदनापुर पश्चिम बंगाल–72140	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय
62.	श्री सीताराम वैदिक आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, 7/2 पी.डब्ल्यू.डी. रोड, कोलकाता–700035	प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय (साहित्य, नव्यन्याय, व्याकरण, वेदान्त, ज्योतिष, बौद्ध दर्शन, धर्म-शास्त्र)

क्रमांक	संस्था का नाम	पाठ्यक्रम जिसके लिए सम्बद्धता है
63.	हरेश्वर संस्कृत महाविद्यालय लिंग्से, दार्जीलिंग हरलोक लिंग्से, वाया रीनोक (प. बं.) – 737133	प्रथमा–तृतीय, पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय
64.	कालियाचक विक्रम किशोर आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, गाँव–कालियाचक पोस्ट ऑफिस हेरिया जिला–मिदनापुर (पश्चिम बंगाल) – 721430	पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य–प्रथम, द्वितीय (साहित्य, धर्मशास्त्र, व्याकरण, सांख्ययोग, नव्यन्याय, वेदान्त)
65.	मदर उषा मेमोरियल ओरियन्टल सैन्ट्रल इंस्टीट्यूशन एण्ड आगम (तंत्र) रिसर्च सेन्टर, तेनोहरी, थाना रानीगंज जिला–उत्तर दीनाजपुर (पश्चिम बंगाल) – 733123	प्रथमा–प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय
66.	भारती चतुष्पठी श्री श्रीगुरु कर्ण निकेतन, अमूल्य पारा, नवद्वीप, नादिया, (पश्चिम बंगाल) – 741302	पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री–प्रथम, द्वितीय शास्त्री–प्रथम, द्वितीय, तृतीय
67.	रामकृष्ण मठ विवेवकानन्द वेद विद्यालय, पो. ओ. वेलूर मठ जिला–हावड़ा (पश्चिम बंगाल) – 711202	पूर्वमध्यमा–प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा–प्रथम, द्वितीय
68.	ठाकुर गदधर संस्कृत विद्यापीठ पोस्ट ऑफिस आरामबाग (कलिपुर) जिला हुगली (पश्चिम बंगाल)-71260	प्रथमा-तृतीय, प्राक् शास्त्री-प्रथम

संलग्नक-च

उन सरकारों के नामों की सूची जिन्होंने संस्थान की परीक्षाओं को मान्यता दे दी है

	सरकार/विभाग का नाम	स्वीकृत पाठ्यक्रम
1.	भारत सरकार, कैबिनेट सचिवालय, कार्मिक विभाग, नई दिल्ली नं. 6/12/71 स्थापना (डी)	1. प्रथमा-मिडिल स्कूल 2. मध्यमा-उच्चतर माध्यमिक 3. शास्त्री-बी.ए. 4. आचार्य-एम.ए. 5. शिक्षाशास्त्री-बी.एड. 6. विद्यावारिधि-पी-एच.डी. 7. वाचस्पति-डी.लिट्.
2.	मध्यप्रदेश शासन, सामान्य प्रशासन विभाग नं. 796/786/1 (3)/72 दिनांक 5.12.1972	–वही–
3.	पंजाब सरकार, नं. 472-468-II/72/2686 दिनांक जनवरी, 1971	–वही–
4.	गोआ, दमन व दीव, विशेष-स्थापना-2065-II दिनांक 23 अक्तूबर, 1972	–वही–
5.	भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय/शिक्षा, नई दिल्ली सं.एफ. 7-2/83-संस्कृत-2, दि. 31.12.1992	शिक्षा आचार्य-एम.एड.
6.	तमिलनाडु सरकार, ज्ञापन सं. 94120/एच-172-2-शिक्षा पत्र संख्या-एल.डिस 35033/04 दिनांक 2 जनवरी, 1973	1. शिक्षाशास्त्री-बी.एड. 2. प्रथमा-मिडिल स्कूल 3. मध्यमा-उच्चतर माध्यमिक 4. पूर्वमध्यमा-मैट्रिक
7.	महाराष्ट्र सरकार, 82/ दिनांक 24-9-92 अनुशेष सं. एस.एस.एन. 3371/137427-ई दिनांक 23 अक्तूबर, 1972	1. उत्तरमध्यमा/प्राक्शास्त्री-उच्चविद्यालय प्रमाणपत्र

क्रमशः....

	सरकार/विभाग का नाम	स्वीकृत पाठ्यक्रम
8.	उत्तर प्रदेश सरकार, सं. 10/3/1972 नियुक्ति (4) लखनऊ, दिनांक 27 अगस्त, 1973	1. प्रथमा-मिडिल स्कूल (आठवीं कक्षा) 2. पूर्वमध्यमा-हाई स्कूल 3. उत्तरमध्यमा-इण्टर 4. शास्त्री-बी.ए. 5. आचार्य-एम.ए. 6. शिक्षाशास्त्री-बी.एड. 7. विद्यावारिधि-पी-एच.डी. 8. वाचस्पति-डी.लिट्
9.	हरियाणा सरकार, सं. 278, जी. शिक्षा (4ई) 74/14620 चंडीगढ़, दिनांक 13.5.1974 ज्ञापन सं.-डी 4/50-73-सीओ(2) चंडी दिनांक 21.10.1986	1. प्रथमा-मिडिल स्कूल 2. मध्यमा-हायर सेकेण्डरी या इण्टरमीडिएट 3. शास्त्री-बी.ए. 4. आचार्य-एम.ए. 5. विद्यावारिधि-पी-एच.डी. 6. वाचस्पति-डी.लिट् 7. शिक्षाशास्त्री-ओ.टी. (संस्कृत)
10.	गुजरात सरकार, प्रस्ताव सं. एसएसएन-3266/72127 (73) ई 78583-जी सचिवालय, गान्धीनगर, दिनांक 30 अप्रैल 1986	1. शिक्षा-शास्त्री-बी.एड.
11.	हिमाचल प्रदेश सरकार, सं. 23-62/70/सेक्रे/ एजु-ए वोल् 3 दिनांक 17.3.1973	1. प्रथमा-मिडिल 2. मध्यमा-हायर सेकेण्डरी 3. शास्त्री-बी.ए. 4. आचार्य-एम.ए. 5. शिक्षाशास्त्री-बी.एड. 6. विद्यावारिधि-पी-एच.डी. 7. वाचस्पति-डी.लिट्
12.	त्रिपुरा सरकार, सं. एफ. 83 (4-12) डीई/73 अगरतला, दिनांक 15.7.1972	–वही–
13.	राजस्थान सरकार, पी 9 (75) एस.पी./71/शिक्षा-5 दिनांक 18.3.1975 शिक्षा (ग्रुप 8) सं. एफ 10 व 74 शिक्षा (ग्रुप 4)/72 दिनांक 22 मई, 1978	1. प्रथमा-मिडिल 2. मध्यमा-हायर सेकेण्डरी 3. शास्त्री-बी.ए. 4. आचार्य-एम.ए. 5. शिक्षाशास्त्री-बी.एड. 6. विद्यावारिधि-पी-एच.डी. 7. वाचस्पति-डी.लिट्

	सरकार/विभाग का नाम	स्वीकृत पाठ्यक्रम
14.	जम्मू व कश्मीर सरकार, सं एजु. - 9/ई/74 स्वीकृत दिनांक 22.6.1975	1. मध्यमा-हायर सेकेण्डरी अथवा पी.यू.सी. 2. शास्त्री-बी.ए. 3. आचार्य-एम.ए. 4. शिक्षाशास्त्री-बी.एड. 5. विद्यावारिधि-पी-एच.डी. 6. वाचस्पति-डी.लिट्
15.	उड़ीसा सरकार 176/10/ईवाइई दिनांक 19.6.1975 सं. 20/32/75/828	1. शास्त्री-बी.ए. 2. आचार्य-एम.ए.
16.	पश्चिम बंगाल सरकार, शिक्षा विभाग सेक. ब्राँच, सं. 441 - एजु. (एस) 6 सी-II/89	शिक्षाशास्त्री-बी.एड.
17.	बिहार सरकार, संकल्प सं. 8/आर.-2003/86 के.ए. 9139/पटना दि. 25-6-1987	1. प्रथमा-मिडिल 2. मध्यमा-पूर्व मैट्रिक (अंग्रेजी रहित) मैट्रिक (अंग्रजी सहित 3. शास्त्री-(अंग्रेजी सहित) बी.ए. 4. आचार्य-(बी.ए. अंग्रेजी सहित उत्तीर्ण) एम.ए.

संलग्नक-छ

उन विश्वविद्यालयों के नामों की सूची जिन्होंने संस्थान की परीक्षाओं को मान्यता दे दी है

क्र.	विश्वविद्यालय/संस्थान का नाम	स्वीकृत परीक्षा	समकक्षता
1.	महाराजा सायाजीराव बडौदा विश्वविद्यालय, पत्र सं. एसी/II/221 दिनांक 4.9.73	शास्त्री आचार्य	बी.ए. एम.ए.
2.	सागर विश्वविद्यालय, सागर, पत्र सं. सामान्य/मान्यता/974 दिनांक 16.6.73 तथा दिनांक 9.4.1973	मध्यमा शास्त्री आचार्य	इंटरमीडिएट बी.ए. एम.ए.

क्र.	विश्वविद्यालय/संस्थान का नाम	स्वीकृत परीक्षा	समकक्षता
3.	विक्रम विश्वविद्यालय,	शास्त्री	बी.ए.
	उज्जैन (म.प्र.) पत्र सं.	आचार्य	एम.ए.
	प्रशासन/मान्यता/73	शिक्षाशास्त्री	बी.एड.
	दिनांक 9 अगस्त, 1973	विद्यावारिधि	पी-एच.डी.
		वाचस्पति	डी.लिट्
4.	आन्ध्र विश्वविद्यालय,	शिक्षाशास्त्री	बी.एड.
	पत्र सं. 1 (6) 3925/72		
	दिनांक 27.9.73 वाल्टेयर		
5.	राजस्थान विश्वविद्यालय,	शास्त्री	बी.ए.
	जयपुर पत्र सं. एफ-4-1/72		
	शैक्षिक-II/1146/ए		
	दिनांक 22.5.73		
6.	कालीकट विश्वविद्यालय	शास्त्री	बी.ए. (संस्कृत मुख्य)
	संदर्भ सं. जी ए (डी 4) 899/72	आचार्य	एम.ए. (संस्कृत मुख्य)
	दिनांक 28.11.1973	शिक्षाशास्त्री	बी.एड. (संस्कृत)
		विद्यावारिधि	पी-एच.डी.
		वाचस्पति	डी.लिट्
7.	श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति	शास्त्री	बी.ए.
	संख्या-सी.आई. 33017/73		(एम.ए. (संस्कृत) में
	दिनांक 19.1.76		प्रवेश के प्रयोजन से)
8.	मगध विश्वविद्यालय, बोध गया	मध्यमा	हायर सेकेण्डरी
	पत्र सं. 4767/48-23 डी II/बोध गया	शास्त्री	बी.ए.
	दिनांक 4.12.73	आचार्य	एम.ए.
		शिक्षाशास्त्री	बी.एड.
		विद्यावारिधि	पी-एच.डी.
9.	जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू	मध्यमा	प्री-यूनिवर्सिटी
	पत्र संख्या-एफ शैक्षिक/V/153/74/4195-99	शास्त्री-भाग-1	बी.ए. (भाग-1)
	दिनांक 14.2.1974	शास्त्री-भाग-3	बी.ए. (अंतिम वर्ष)
		आचार्य	एम.ए., संस्कृत या साहित्याचार्य
10.	अन्नामलाई विश्वविद्यालय	शास्त्री	बी.ए.
	एल. डिस्. पी-बी 21/83/73	आचार्य	एम.ए.
	दिनांक 22.2.1974		

क्र.	विश्वविद्यालय/संस्थान का नाम	स्वीकृत परीक्षा	समकक्षता
11.	बर्दवान विश्वविद्यालय, बर्दवान आर.सी.आई/सम/141/376/74 दिनांक 24.6.74	मध्यमा	विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रम
		शास्त्री	कला-स्नातक परीक्षा (त्रिवर्ष)
		आचार्य	एम.ए.
		विद्यावारिधि	डी.फिल्.
		वाचस्पति	डी.लिट्
12.	कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर पी एस के वी/बोर्ड/4318/74-75 दिनांक 22.11.74	शास्त्री	बी.ए.
		आचार्य	एम.ए.
13.	उत्कल विश्वविद्यालय, पत्र सं. ए सी-1/आर.एम./171/51046/75 दिनांक 1.7.1975	शास्त्री	बी.ए. (द्रष्टव्य क्रम सं. 32 भी)
14.	पूना विश्वविद्यालय, पूना ईएलजी/सम-109/3949 दिनांक 26.4.1975	प्राक्शास्त्री	प्री-डिग्री
		शास्त्री	बी.ए. (संस्कृत)
		आचार्य	एम.ए. (संस्कृत)
		शिक्षाशास्त्री	बी.एड. (संस्कृत)
15.	जयपुर विश्वविद्यालय, पत्र सं. ई./3013 दिनांक 13.5.1975	शास्त्री	बी.ए.
		आचार्य	एम.ए.
16.	कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र पत्र सं. ए सी एम-II/6115 दिनांक 6.6.1975 और ए सी एम/II/137/76/18904 दिनांक 7.8.76, ए सी एम-II/137/81/4139 दिनांक 19.3.81 ए सी एम-II/08/एफ/37/3695 दिनांक 1-4-08 ए सी एम-II/08/एफ/37/4788 दिनांक 25-4-08	शास्त्री	बी.ए., शास्त्री
		आचार्य	एम.ए.
		प्राक्शास्त्री	+2 स्तर परीक्षा
		शिक्षाशास्त्री	बी.एड.
17.	गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, परीक्षा/बी. मान्यता सं. 32482 दिनांक 17.9.1975	शास्त्री	बी.ए.
		आचार्य	एम.ए.

क्र.	विश्वविद्यालय/संस्थान का नाम	स्वीकृत परीक्षा	समकक्षता
18.	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली देखिए डी.ओ.सं. 80628 दिनांक 27-5-1988 सी बी.एस.इ./कोआर्ड/एसओसीडी/2009/6147 दिनांक 3.3.09	प्रथमा पूर्वमध्यमा द्वितीय वर्ष उत्तरमध्यमा/प्राक्शास्त्री-II	आठवीं दसवीं बारहवीं
19.	केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेन्द्रम पत्र सं. सी.-3/720/76 जिला त्रिवेन्द्रम दिनांक 22.3.76, एसी. सी 3/1600/77 दिनांक 3.1.81	शास्त्री आचार्य विद्यावारिधि वाचस्पति	बी.ए. एम.ए. पी-एच.डी. डी.लिट्
20.	विश्व भारती सं. जी-4-43 दिनांक 23.4.76	शास्त्री आचार्य विद्यावारिधि वाचस्पति	बी.ए. एम.ए. पी-एच.डी. डी.लिट्
21.	भारतीय विश्वविद्यालय संघ संघ पत्र सं. ईवी II/(227)/76/32765 दिनांक 7.2.76 नई दिल्ली	शास्त्री आचार्य	बी.ए. एम.ए.
22.	हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला पत्र सं. 3-8-74-एच पी यू (शैक्षिक) दिनांक 2.7.77, 3-27/79 दिनांक 4.7.80	शास्त्री शिक्षा-शास्त्री आचार्य विद्यावारिधि वाचस्पति	बी.ए. बी.एड. एम.ए. पी-एच.डी. डी.लिट्
23.	दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली पत्र सं.-1/मान्यता/डी/84 दिनांक 14.11.84	शास्त्री आचार्य शास्त्री	बी.ए. पासकोर्स (एम.ए. संस्कृत में प्रवेश के प्रयोजन से) एम.ए. बी.ए. पासकोर्स
24.	संभलपुर विश्वविद्यालय, संभलपुर पत्र सं. 11727/शैक्षिक दिनांक 4.5.79, 6824/शैक्षिक दिनांक 27.9.85 संभलपुर		(एम.ए. संस्कृत में प्रवेश के प्रयोजन हेतु) एम.ए.
25.	श्री कामेश्वर सिंह दरभंगा विश्वविद्यालय पत्र संख्या-9356/74 दिनांक 4.10.74	मध्यमा शास्त्री आचार्य शिक्षाशास्त्री विद्यावारिधि वाचस्पति	मध्यमा शास्त्री आचार्य शिक्षाशास्त्री विद्यावारिधि विद्या वाचस्पति

क्रमशः....

क्रमांक	विश्वविद्यालय/संस्थान का नाम	स्वीकृत परीक्षा	समकक्षता
26.	कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ पत्र सं.-मान्यता/के-108/शैक्षिक/1504 दिनांक 12.7.79	शास्त्री आचार्य	बी.ए. एम.ए.
27.	गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर पत्र सं. सामान्य/मान्यता/3920 दिनांक 22.4.1980	शास्त्री आचार्य	बी.ए. एम.ए.
28.	मद्रास विश्वविद्यालय पत्र सं. सी आर-III/मान्यता/1925 दिनांक 17.3.1980	शास्त्री आचार्य	बी.ए. एम.ए. (यदि पाठ्यक्रम में अंग्रेजी एक विषय के रूप में हो)
29.	पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ पत्र सं. एस-16981 दिनांक 28.11.1980	प्रथमा मध्यमा शास्त्री आचार्य	प्राज्ञ विशारद शास्त्री आचार्य
30.	श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय पत्र सं. 5163/84/एस.जे.एस.बी. दिनांक 10.8.84	प्रथमा पूर्वमध्यमा उत्तरमध्यमा शास्त्री आचार्य विद्यावारिधि वाचस्पति	प्रथमा मध्यमा उपशास्त्री शास्त्री आचार्य विद्यावारिधि वाचस्पति
31.	बरहामपुर विश्वविद्यालय/भंज विहार, बरहामपुर, जिला-गंजाम उड़ीसा पत्र सं. 5131/शैक्षिक-II/बी यू/84 दिनांक 16.4.84 सं 5/01/शैक्षिक-I दिनांक 3.6.2005	शास्त्री आचार्य शिक्षा शास्त्री	बी.ए. (पास) एम.ए. (संस्कृत) बी.एड.
32.	उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर (उड़ीसा) पत्र सं. ए सी/आर एम/171ए/16292 दिनांक 31.3.84, ए सी/ मान्यता/सामान्य/ए-16178/84 दिनांक 29.3.84	आचार्य शिक्षा-शास्त्री	एम.ए. (संस्कृत) बी.एड.
33.	त्रिभुवन विश्वविद्यालय मछली टेकू, काठमांडू, नेपाल पत्र सं. 372/04 दिनांक 19.9.84	प्राक्शास्त्री शास्त्री	उत्तरमध्यमा शास्त्री

क्रमांक	विश्वविद्यालय/संस्थान का नाम	स्वीकृत परीक्षा	समकक्षता
34.	संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी पत्र सं. जी-458/4019/74-85 दिनांक 28.5.85	प्रथमा/पूर्वमध्यमा प्राक्शास्त्री/उत्तरमध्यमा शास्त्री/आचार्य शिक्षा-शास्त्री/शिक्षा-आचार्य	प्रथमा/पूर्वमध्यमा उत्तरमध्यमा शास्त्री/आचार्य शिक्षा-शास्त्री/शिक्षा-आचार्य
35.	भोपाल विश्वविद्यालय, भोपाल पत्र सं. 1112/बी यू/शैक्षिक/85 दिनांक 15.3.85	शास्त्री/आचार्य शिक्षा-शास्त्री विद्यावारिधि वाचस्पति	बी.ए./एम.ए. बी.एड. पी-एच.डी. डी.लिट्
36.	संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी पत्र सं. शै.-1722/92 दिनांक 22.12.92	आचार्य विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) वाचस्पति (डी.लिट्)	आचार्य विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) वाचस्पति (डी.लिट्)
37.	कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र पत्र सं.-एसीएम/II/137/92/32489 दिनांक 28.12.92	शास्त्री (अंग्रेजी विषय के साथ) शास्त्री आचार्य	बी.ए. (पास) टी डी सी (10+1+3 योजना के अंतर्गत) परंतु विद्यार्थी को अंग्रेजी विषय के साथ उत्तीर्ण होना चाहिए। शास्त्री एम.ए. (यदि विद्यार्थी बी.ए. अंग्रेजी विषय के साथ पास हुआ हो)
38.	गांधीजी विश्वविद्यालय, कोट्टायम् सं.एसी.ए. I/3/305/86 (3) दि. 24.10.86	प्राक्शास्त्री तथा उत्तरमध्यमा शास्त्री शिक्षाशास्त्री आचार्य विद्यावारिधि एवं वाचस्पति	प्री.डिग्री (संस्कृत) बी.ए. (संस्कृत) बी.एड. एम.ए. पी.एच.डी.
39.	मणिपुर विश्वविद्यालय कांचीपुर, इम्फाल सूचना दिनांक 3 जनवरी, 1992	शास्त्री (अंग्रेजी सहित)	बी.ए.
40.	अजमेर विश्वविद्यालय, अजमेर पत्र सं. एफ 14 (193) शैक्षिक-II/यू ओ ए/92/3400/3506 दिनांक 6 फरवरी, 1992	शिक्षाशास्त्री	बी.एड.
41.	नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर, द्वारा सं. परीक्षा/मान्यता/ए/3667 दिनांक 1.4.78	शास्त्री	बी.ए. (एम.ए. भाग I में प्रवेश प्राप्ति हेतु)

क्रमांक	विश्वविद्यालय/संस्थान का नाम	स्वीकृत परीक्षा	समकक्षता
42.	उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर, द्रष्टव्य सं. ई/3013 उत्तीर्ण) दिनांक 13.5.75	शास्त्री	बी.ए. (यदि बी.ए. स्तर के अंग्रेजी विषय में
		आचार्य	एम.ए. (यदि बी.ए. स्तर का अंग्रेजी विषय उत्तीर्ण हो)
43.	ओसमानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, द्रष्टव्य सं. 1866/1-942/II/शैक्षिक दिनांक 20.4.73 सं. 265/एल/2001/शै.दि. 27.1.2001	शास्त्री	बी.ए.
		आचार्य	एम.ए.
		विद्यावारिधि	पी-एच.डी.
		शिक्षाशास्त्री	बी.एड.
44.	महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, द्रष्टव्य सं. ए सी-/III/आर./81/2472 दिनांक 2.3.81	शास्त्री और आचार्य	उपलब्ध उच्चतर पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु
45.	हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी, द्रष्टव्य सं.ए.पी.बी./10000/472/प्रकाश/25-9-03 दिनांक 19.5.05	पूर्व मध्यमा	मैट्रिक
		उत्तर मध्यमा/प्राक् शास्त्री	सीनियर सेकण्डरी
46.	शिक्षा निदेशक, दिल्ली एफ-32/1/25/शिक्षा/72 दिनांक : 28.8.72	प्रथमा	मिडिल स्कूल
		मध्यमा	उच्च माध्यमिक
		शास्त्री	बी.ए.
		आचार्य	एम.ए.
		शिक्षा शास्त्री	बी.एड.
		विद्यावारिधि	पी-एच.डी.
		वाचस्पति	डी.लिट्.
47.	शिक्षा निदेशक, मणिपुर II/3/71-एस.ई. दि. 30 अगस्त 1972	-वही-	-वही-

संलग्नक-ज

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मुख्यालय में कर्मचारियों की अनुभागवार कार्यरत संख्या

1.	**शैक्षणिक अनुभाग**		
	I	अनुभाग अधिकारी	1
	II	शोध सहायक	1
	III	अवर श्रेणी क्लर्क (लिपिक)	1
	IV	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	1
	V	डॉटा ऐन्ट्री ऑपरेटर	1
2.	**शोध एवं प्रकाशन अनुभाग**		
	I	सहायक कुलसचिव	1
	II	शोध सहायक	2
	III	सहायक	1
	IV	अवर श्रेणी लिपिक	1
3.	**पत्राचार पाठ्यक्रम तथा अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण अनुभाग**		
	I	व्याख्याता	3
	II	शोध सहायक	2
	III	अनुभाग अधिकारी	1
	IV	अवर श्रेणी लिपिक	2
	V	डॉटा ऐन्ट्री ऑपरेटर	2
	VI	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	1
4.	**परीक्षा अनुभाग**		
	I	सहायक निदेशक	1
	II	प्रशिक्षक	1
	III	प्रवर श्रेणी लिपिक	1
	IV	अवर श्रेणी लिपिक	6
	V	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	1+1 (दैनिक वेतनिक)
	VI	अनुभाग अधिकारी	2

5.	**प्रशासन अनुभाग**		
	I	अनुभाग अधिकारी	2
	II	सहायक	5
	III	प्रवर श्रेणी लिपिक	2
	IV	अवर श्रेणी लिपिक	9
	V	चतुर्थ श्रेणी/चौकीदार	11
6.	**वित्त अनुभाग**		
	I	अनुभाग अधिकारी	1
	II	सहायक	1
	III	विक्रय सहायक	1
	IV	प्रवर श्रेणी लिपिक	2
	V	अवर श्रेणी लिपिक	2
	VI	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	2
7.	**योजना अनुभाग**		
	I	अनुभाग अधिकारी	1
	II	सहायक	1
	III	प्रवर श्रेणी लिपिक	2
	IV	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	1
	V	अवर श्रेणी लिपिक	1
8.	**पुस्तकालय**		
	I	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष-ग्रेड-I	1
	II	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	1
9.	**आदर्श पाठशाला योजना एकक**		
	I	अनुभाग अधिकारी	1
	II	प्रवर श्रेणी लिपिक	1
	III	अवर श्रेणी लिपिक	1
	IV	चतुर्थ कर्मचारी	1
10.	**छात्रवृत्ति अनुभाग**		
	I	अनुभाग अधिकारी	1
	II	सहायक	1
	III	अवर श्रेणी लिपिक	2
	IV	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	1

11.	कुलपति एवं कुलसचिव कार्यालय		
	I	निजी सचिव	2
	II	अनुभाग अधिकारी	2
	III	अवर श्रेणी लिपिक	2
	IV	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	3
12.	विक्रय		
	I	प्रभारी	1
	II	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	1
	III	डॉटा ऐन्ट्री ऑपरेटर	3
13.	पालि		
	I	विकास अधिकारी	1
	II	वरिष्ठ शोध अध्येता	1
	III	कनिष्ठ शोध अध्येता	2
14.	प्राकृत		
	I	वरिष्ठ शोध अध्येता	1
	II	कनिष्ठ शोध अध्येता	1

संलग्नक-झ

सम्बद्ध राज्य सरकारों के माध्यम से प्रेषित आवेदनों के आधार पर जिन स्वैच्छिक संस्कृत संगठनों को वर्ष 2009-10 के मध्य वार्षिक अनुदान स्वीकृत किया गया, उनकी राज्यवार संख्या का विवरण

क्रमांक	राज्य	संगठनों की संख्या
1.	आन्ध्र प्रदेश	17
2.	असम	1
3.	बिहार	29
4.	दिल्ली	11
5.	गुजरात	6
6.	हरियाणा	28
7.	हिमाचल प्रदेश	2

क्रमांक	राज्य	संगठनों की संख्या
8.	जम्मू और कश्मीर	2
9.	झारखण्ड	3
10.	कर्नाटक	23
11.	केरल	25
12.	मध्य प्रदेश	20
13.	छत्तीसगढ़	1
14.	महाराष्ट्र	16
15.	मणिपुर	4
16.	उड़ीसा	13
17.	पाण्डिचेरी	1
18.	पंजाब	8
19.	राजस्थान	28
20.	सिक्किम	11
21.	तमिलनाडु	22
22.	उत्तर प्रदेश	164
23.	उत्तराखंड	57
24.	पश्चिम बंगाल	254
	कुल	**746**

संलग्नक-ञ

संस्थान की वित्तीय सहायता से प्रकाशित प्रकाशनों का विवरण

क्रमांक	अनुदानप्राप्तकर्ता/लेखक	शीर्षक	प्रकाशक	प्रदत्त अनुदानराशि (रुपयों में)
1.	डॉ. शालिनी मिश्रां	काव्य प्रकाश की गोविन्दठक्कुर कृत 'काव्यप्रदीप टीका में काव्यगुण दोषालोचन'	नाग पब्लिशर्स, दिल्ली	22,065
2.	डॉ. भरतचन्द्र महोपात्र	वासुदेव भट्टकृत सारस्वत चन्द्रिकाया: समीक्षात्मकम् अध्ययनम्	वीनापनि प्रकाशन, जम्मू	12,589

क्रमश:....

क्रमांक	अनुदानप्राप्तकर्ता/लेखक प्रदत्त अनुदानराशि	शीर्षक	प्रकाशक	(रुपयों में)
3.	प्रो. पी.एन. कवठेकर	भूलोक विलोकनम्, भाग-5	नागपब्लिशर्स, दिल्ली	42,836
4.	प्रो. ज्ञानप्रकाश शास्त्री	यजुर्वेद पदार्थ कोष	परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली	1,15,495
5.	डॉ. शंकरलाल शास्त्री	संस्कृत वाङ्मय में पर्यावरण	रचना प्रकाशन, जयपुर	43,474
6.	डॉ उमा शर्मा	श्रीमलधारि देवप्रभसूरिकृत पाण्डव चरितम् का समीक्षात्मक अध्ययन	परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली	24,648
7.	डॉ. उषा द्विवेदी	काव्य प्रभावृत्ति सहितम् आग्नेयालङ्कार शास्त्रम्	रुपम्बिका प्रकाशन, दिल्ली	24,340
8.	डॉ. ई.पी. श्रीदेवी	केरलीयकूटियाट्टनाट्यकलायाः समालोचनात्मकम् अध्ययनम्	दी प्रोमुट ऑफसेट प्रिंटर, पल्लकड़	12,503
9.	डॉ. मीरारानी रावत	शतपथ ब्राह्मण में आचार	परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली	20,337
10.	डॉ. धमेन्द्रकुमार सिंघदेवपुनर्जन्मविमर्शः		वीनापनि प्रकाशन, जम्मू	15,219
11.	डॉ. उमारमन झा	श्री गुरुचरण शतकम्	नारायण आर्ट, लखनऊ	6304
12.	डॉ. शंकरदेव अवत्रे	शिखरिणीशतकम्	सामूहिक प्रकाशन नई दिल्ली	18,682
13.	सुश्री जयश्री मित्र	चित्र काव्य का सिद्धान्त एवं परिचय	राका प्रकाशन, इलाहाबाद	23,562
14.	डॉ. आनन्दकुमार श्रीवास्तव	संस्कृत साहित्य में विज्ञान	साहित्य भण्डार, इलाहाबाद	11,319
15.	श्रीमती सुलोचना मिश्रा	उत्पलदेव के सिद्धित्रयी की समीक्षा	परम मित्र प्रकाशन, नई दिल्ली	56,202
16.	डॉ. निलिम्ब त्रिपाठी	अरिनाशकदुर्गाशतकम्	नाग पब्लिकेशन्स, दिल्ली	25,622
17.	डॉ. तरुणकुमार शर्मा	कविवर क्षेमेन्द्र के लघु काव्यों का एक परिशीलन	राका प्रकाशन, इलाहाबाद	17,237
18.	डॉ. प्रकाश चन्द्र	नागेशभट्ट का व्याकरण-दर्शन चिन्तन	हंस प्रकाशन, जयपुर	26,133

क्रमांक	अनुदानप्राप्तकर्ता/लेखक	शीर्षक	प्रकाशक	प्रदत्त अनुदानराशि (रुपयों में)
19.	डॉ. अजयकुमार मिश्रा	मथुराप्रसाद दीक्षित के रूपकों की समीक्षा	विद्यानिधि प्रकाशन	46,600
20.	डॉ. कृष्णलाल	वैदिक वाङ्मय विवेचन		41,804
21.	डॉ. बलभद्र प्रसाद शास्त्री	ज्योतिष्मती (काव्यलता)		17,908
22.	प्रो. विन्ध्येशवरी प्रसाद मिश्रा	मन्त्रभागवत		49,334
23.	डॉ. प्रमोद बल मिश्रा	श्रौतयागों में प्रयुक्त महत्त्वपूर्ण पारिभाषिक शब्दों की विवेचना		40,574
24.	डॉ. सुनन्दा त्रिपाठी	हरिभक्ति सुधाकरप्रणीत अलंकार सत्य कौमुदी प्रभा		19,905
25.	डॉ. ब्रजेश कुमार शुक्ला	श्रीबालकृष्ण भट्ट प्रणीत अलंकार सारसमीक्षण		42,168

संलग्नक-ट

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) से वार्षिक अनुदान प्राप्तकर्ता आदर्श संस्कृत महाविद्यालयों/ शोध संस्थानों का विवरण

1. कालीकट
   आदर्श संस्कृत विद्यापीठ,
   पो. बालुसरी,
   जिला-कोजीकोड,
   केरल-673612
2. श्री रंगलक्ष्मी
   आदर्श संस्कृत महाविद्यालय,
   वृन्दावन, उत्तर प्रदेश-281121
3. हरियाणा संस्कृत विद्यापीठ,
   पो. बघोला, (पलवल),
   जिला-फरीदाबाद,
   हरियाणा
4. वैदिक संशोधन मंडल,
   तिलक विद्यापीठ,
   गुलटेकड़ी,
   पुणे-400037

5. जे.एन.बी. आदर्श
संस्कृत महाविद्यालय,
पो. लगमा, वाया-लोहना रोड,
जिला-दरभंगा, बिहार-847407

6. श्री भगवानदास आदर्श
संस्कृत महाविद्यालय,
पो. गुरुकुल कांगड़ी,
जिला-हरिद्वार, उत्तराञ्चल

7. मद्रास संस्कृत कॉलेज
एवं एस.एस.वी. पाठशाला
84, रोयपेटा हाई रोड,
मइलापुर, चेन्नई-600004,
तमिलनाडु

8. लक्ष्मी देवी सर्राफ
आदर्श संस्कृत महाविद्यालय,
काली रेखा, जिला-देवघर,
झारखण्ड-814112

9. श्री एकरसानन्द
आदर्श संस्कृत महाविद्यालय,
जिला-मैनपुरी, उत्तर प्रदेश-205001

10. मुम्बा देवी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय
द्वारा भारतीय विद्या भवन,
के.एम. मुंशी मार्ग, मुम्बई
महाराष्ट्र-400007

11. एस.डी. आदर्श संस्कृत कॉलेज,
डोहगी, जिला-ऊना,
हिमाचल प्रदेश-174307

12. हिमाचल आदर्श संस्कृत महाविद्यालय
जांगला (रोहड़ू), जिला-शिमला
हिमाचल प्रदेश-171207

13. श्री दीवान कृष्ण किशोर
एस.डी. आदर्श संस्कृत कॉलेज,
अम्बाला कैंट, हरियाणा-133001

14. राजकुमारी गणेश शर्मा
संस्कृत विद्यापीठ, कोलहन्टा, पटोरी,
जिला-दरभंगा, बिहार-846003

15. पूर्णप्रज्ञा संशोधन मंदिरम,
काठीगुप्पा मेन रोड, बंगलोर,
कर्नाटक-560028

16. स्वामी प्राङकुशाचार्य आदर्श संस्कृत
महाविद्यालय, हुलासगंज, गया,
बिहार-804407

17. श्री सीताराम वैदिक
आदर्श संस्कृत महाविद्यालय,
7/2 पी.डब्ल्यू.डी. रोड,
कोलकाता-700035
पश्चिम बंगाल

18. रामजी मेहता आदर्श संस्कृत महाविद्यालय,
मालीघाट, मुजफ्फरपुर,
बिहार-842001

19. कालियाचक विक्रम किशोर
आदर्श संस्कृत महाविद्यालय,
ग्राम-कालियाचक, पो. हरिया
जिला-पूर्वमेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल-721430

20. रानी पद्मावती तारा योग तन्त्र
आदर्श संस्कृत महाविद्यालय,
इन्द्रपुर (शिवपुर), वाराणसी
उत्तर प्रदेश-221003

21. संस्कृत अकादमी
(शोध संस्थान)
ओसमानिया यूनिवर्सिटी,
हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश

22. अहोबिला मठ आदर्श संस्कृत महाविद्यालय
मदुरान्तकम्, चेन्नई (तमिलनाडु)

23. चिन्मय इंटरनेशनल फाउंडेशन शोध संस्थान
वेलियानाद, एरनाकुलम् (केरल)

24. श्री राम सुन्दर संस्कृत विश्वविद्या प्रतिष्ठान,
लक्ष्मी नाथ नगर, रमौली-सेलोन,
वाया-बहेद, जिला-दरभंगा, बिहार-847201

25. राधा माधव संस्कृत महाविद्यालय
नाम्बोल, मणिपुर-795134

31 मार्च 2010 को समाप्त वर्ष के लिए राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के लेखों पर भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक की पृथक् लेखा-रिपोर्ट

1. हमने राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के 31 मार्च, 2010 के संलग्न तुलनपत्र और 31 मार्च, 2009 को समाप्त वर्ष के लिए आय एवं व्यय लेखों/प्राप्ति एवं भुगतान लेखों की लेखा-परीक्षा, नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (कार्य, शक्तियाँ व सेवा शर्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 20 (1) के अन्तर्गत सम्पन्न की हैं। लेखा-परीक्षा 2012-13 तक की अवधि के लिए सौंपी गई हैं। ये वित्तीय विवरण संस्थान के कार्यकर्ताओं का उत्तरदायित्व है। इन वित्तीय विवरणों में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के 10 एककों के लेखे सम्मिलित हैं। हमारा उत्तरदायित्व इन वित्तीय विवरणों का लेखा-परीक्षा के आधार पर मूल्यांकन प्रकट करना है।

2. इस पृथक् लेखा-परीक्षा रिपोर्ट में भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (सी.ए.जी.) की टिप्पणी केवल लेखा-विवेचन पर है जो श्रेष्ठ लेखा रीतियों, लेखा-मानकों एवं प्रकटन मानदंडों आदि सहित वर्गीकरण समनुरूपता से सम्बद्ध हैं। विधि, नियम तथा विनियम (उपयुक्तता और नियमितता) के अनुपालन से संबधित वित्तीय लेन-देन तथा कार्यक्षमता-सह-निष्पादन पहलुओं आदि पर लेखा-परीक्षा टिप्पणी कोई हो, निरीक्षण रिपोर्टों/सी.ए.जी. की लेखा-परीक्षा रिपोर्टों के माध्यम से पृथक् रूप से सूचित की जाती है।

3. हमने अपनी लेखा-परीक्षा सामान्यत: भारत में स्वीकृत लेखा-परीक्षा मानकों के अनुरूप सम्पन्न की है। इन मानकों में अपेक्षित है कि वित्तीय विवरणों के आर्थिक, अयथार्थ विवरणों से मुक्त होने के बारे में उचित आश्वासन प्राप्त करने के लिए हम लेखा-परीक्षा आयोजित एवं सम्पन्न करें। लेखा-परीक्षा के वित्तीय विवरणों में राशियों तथा प्रकटन समर्थक साक्ष्यों की नमूना आधार पर जांच शामिल है। प्रयुक्त लेखा-सिद्धान्तों तथा प्रबन्धन द्वारा किए गए महत्त्वपूर्ण प्राक्कलनों और वित्तीय विवरणों के समग्र प्रस्तुतीकरण का मूल्यांकन भी लेखा-परीक्षा में अन्तर्विष्ट है। हमारा विश्वास है कि हमारी लेखा-परीक्षा हमारे विचार को उचित आधार प्रदान करती है।

4. हमारी लेखा-परीक्षा के आधार पर हम सूचित करते हैं कि:-

(i) हमारी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार हमने लेखा परीक्षा के लिए आवश्यक समस्त सूचना एवं स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिए हैं।

(ii) इस प्रतिवेदन के तुलन-पत्र, आय एवं व्यय लेखे/प्राप्ति एवं भुगतान लेखे भारत सरकार वित्त मन्त्रालय द्वारा निर्धारित फार्मेट में तैयार नहीं किए गए हैं।

(iii) हमारा विचार है कि राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने उचित लेखा बहियों तथा अन्य सम्बद्ध रिकार्डों का अनुरक्षण किया है। हमारे द्वारा अब तक परीक्षित ऐसी बहियों से यहीं प्रकट होता है।

(iv) हम आगे सूचित करते हैं कि:-

क. तुलन-पत्र

क.1 स्थायी परिसम्पत्तियाँ

क.1.1 वित्त मंत्रालय, भारत सरकार की अधिसूचना सं. - 5/38/2006 - ई.पी.आर., दिनांकित 14.8.08 ने भविष्य निधि का निवेश करने के लिये निर्धारित स्वरूप नियत किया है। तथापि राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने भविष्य निधि का सम्पूर्ण धन 14.69 करोड़ रु. बैंक में केवल सावधि जमा के रूप में जमा करा दिया है।

क्रमश:....

क.2 देनदारियां

2.1 देनदारियों की 1.71 करोड़ रुपये की न्यूनोक्ति।

भविष्य निधि की 1.71 करोड़ रुपये की देनदारी तुलन पत्र के देनदारी पक्ष में आय से व्यय की अधिकता में समायोजित की गयी है। यह समायोजन स्वीकार्य लेखा सिद्धान्तों के अनुरूप नहीं है।

ख. लेखांकन नीति

संस्थान ने अपनी 'महत्त्वपूर्ण लेखांकन नीतियाँ' तथा 'लेखों पर नोट' प्रकट नहीं किए थे।

ग. सामान्य

ग.1 संस्थान ने अपना लेखा उपचय आधार के बजाय नकदी आधार पर तैयार किया है जो कि वित्त मंत्रालय द्वारा निर्धारित स्वायत्त संस्थाओं के लेखा के सामान्य प्रारूप के अनुसार नहीं है।

ग.2 सामान्य भविष्य निधि खाता- राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान का सामान्य भविष्य निधि लेखा निम्नलिखित अतियमितताओं के कारण संस्थान की वास्तविक स्थायी परिसम्पत्तियों एवं देनदारियों को प्रस्तुत नहीं करता है-

1. मुम्बई परिसर से सम्बन्धित सामान्य निधि खाता संस्थान के मुख्यालय में प्राप्त नहीं हुआ है जिसकी अनुपस्थिति में वर्ष 2009-10 के दौरान परिसर का हिसाब सामान्य भविष्य निधि के समेकित तुलन पत्र में सम्मिलित नही किया जा सका।

2. सामान्य भविष्य निधि योगदान (लखनऊ परिसर के अतिरिक्त जहाँ का हिसाब उपलब्ध नहीं हुआ है) के 99.66 लाख रुपयों का ब्याज जो वर्ष 2009-10 के लिये योगदानकर्त्ताओं को दिया जाना देय था न तो योगदानकर्त्ताओं के खाते में जमा किया गया है और न जिसके लिये कोई प्रावधान किया गया है जिसके परिणामस्वरूप उतनी धनराशि स्थायी परिसम्पत्तियों एवं देनदारियों की न्यूनोक्ति हुई है।

3. सामान्य भविष्य निधि के तुलन पत्र में मूलधननिधि को योगदानकर्त्ताओं के प्रति कुल देनदारियों के आधार पर मूल विवरण के अनुसार नहीं बनाया गया है अर्थात् योगदानकर्त्ताओं से प्राप्त कुल योगदान, योगदान कर्त्ताओं को देय/प्रदत्त ब्याज, अग्रिम एवं निकासी का समायोजन, इत्यादि। इसके स्थान पर निवेश तथा बैंक शेष को मूलधन निधि के रूप में लिया गया है।

4. वर्ष के दौरान सामान्य भविष्य निधि निवेश पर अर्जित ब्याज को सामान्य भविष्य निधि खाते से मुख्य खाते में स्थानान्तरित कर दिया गया है और उसे संस्थान की आय की तरह दर्शाया गया है तथा इसी प्रकार वर्ष के लिये योगदानकर्त्ताओं को देय ब्याज को मुख्य खाते में व्यय के रूप में डाल दिया गया है, जो एक उचित प्रक्रिया नहीं है। सामान्य भविष्य निधि खाते के कार्यविवरणों को मुख्य खाते में समाहित नहीं किया जाना चाहिये। सामान्य भविष्य निधि खाते का अधिशेष/घाटा सामान्य भविष्य-निधि तुलन पत्र में पृथक् रूप से दिखाया जाना चाहिये।

वर्ष 2009-10 के दौरान 1.89 करोड़ रूपये का ब्याज सामान्य भविष्य निधि खाते से मुख्य खाते में स्थानान्तरित किया गया है जिसके विपरीत 0.34 करोड़ रूपये की धनराशि मुख्य खाते में व्यय के रूप में ''सामान्य भविष्य निधि योगदान पर ब्याज'' में डाल दी गयी है। जिसका परिणाम आय की अत्युक्ति तथा मुख्य खाते में 1. 74 करोड़ रुपये का अधिशेष हुआ है।

5. राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मुम्बई परिसर में वर्ष 2008-09 में रु. 11.99 लाख (अनन्तिम राशि) का गबन हुआ, जिसमें से रु. 6.28 लाख की राशि तुलनपत्र में सस्पेंस खाते में दिखाई गई है जबकि जी.पी.एफ. की रु. 5.71 लाख की राशि लेखे में नहीं दिखाई गई है। वर्ष के दौरान

1.00 लाख रुपये वसूली की राशि प्राप्तियाँ एवं भुगतान खाते तथा तुलन पत्र में दिखाई गई हैं। इस मामले में अग्रिम जाँच अभी पूरी नहीं हुई है।

ग. 3 नई पेंशन योजना

संस्थान ने नई पेंशन योजना (एनपीएस) की वर्ष 2009-10 के लिए प्राप्तियाँ एवं भुगतान तथा तुलनपत्र तैयार नहीं किये जिसके अभाव में खाता बही में एनपीएस के आदि शेष और अंत शेष, परिसम्पत्तियाँ तथा सही देनदारियों का लेखा परीक्षा में सत्यापन नहीं किया जा सका।

घ. सहायता अनुदान

वर्ष 2009-10, में संस्थान ने भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मन्त्रालय से कुल रु. 85.10 करोड़ (योजना रु. 48.92 करोड़ तथा योजनेत्तर रु. 36.18 करोड़) का अनुदान प्राप्त किया जिसमें से रु. 15. 10 करोड़ (योजना रु. 11.92 करोड़, और योजनेत्तर रु. 3.18 करोड़) मार्च 2010 में प्राप्त किये गये। इसने रु. 3.89 करोड़ (योजना रु. 0.61 करोड़ और योजनेत्तर रु. 3.28 करोड़) की आय अपने स्रोतों से अर्जित की। रु. 88.99 करोड़ के कुलधन में से, संस्थान ने रु. 93.45 करोड़ (योजना : रु. 53.88 करोड़ तथा योजनेत्तर : रु. 39.56 करोड़) का उपयोग किया।

योजनाधीन अतिरिक्त व्यय रु. 4.35 करोड़ प्रारम्भ से स्थायी परिसम्पत्तियों के अवमूल्यन के परिणामस्वरूप था जिसे पिछले वर्ष के अव्यमित शेष एवं स्वयं अपनी आय से चुकाया गया।

ङ. प्रबन्धन पत्र : उपचारी/सुधारात्मक कार्यवाही के लिए पृथक् प्रबन्धन-पत्र जारी किया गया। उसमें उन कमियों की सूचना कुलसचिव, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान को दी गई जिन्हें लेखा-परीक्षा रिपोर्ट में सम्मिलित नहीं किया गया है।

(v) पूर्ववर्ती पैराग्राफों की हमारी टिप्पणी के अधीन, हम सूचित करते हैं कि रिपोर्ट से सम्बन्धित तुलन-पत्र और आय-व्यय लेखा/प्राप्ति एवं भुगतान लेखा की लेखा बहियों से अनुरूपता है।

(vi) हमारे विचार में तथा हमें उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरणों के अनुसार उक्त वित्तीय विवरण, उपर्युक्त महत्त्वपूर्ण मामलों एवं प्रस्तुत लेखा-परीक्षा रिपोर्ट के संलग्नक में उल्लिखित अन्य मामलों के अधीन, भारत में स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्तों के समनुरूप सत्य एवं स्पष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

(अ) जहाँ तक यह 31 मार्च 2009 के अनुसार राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के कार्यकलापों के तुलनपत्र से सम्बद्ध है; एवं

(आ) जहां तक यह उक्त दिनांक को समाप्त वर्ष के लिए अधिशेष के आय-व्यय लेखे से संबद्ध है।

स्थान - नई दिल्ली
दिनांक - 12-11-2010

ह०
कृते एवं की ओर से
महानिदेशक लेखा परीक्षा
केन्द्रीय व्यय

नोट: 'प्रस्तुत प्रतिवेदन मूल रूप से अंग्रेजी में लिखित पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन का हिन्दी अनुवाद है। यदि इसमें कोई विसंगति परिलक्षित होती है तो अंग्रेजी में लिखित प्रतिवेदन मान्य होगा।'

लेखा परीक्षा रिपोर्ट का संलग्नक

1. **आन्तरिक लेखा-परीक्षा की पर्याप्तता:**

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा 2008-09 में आन्तरिक लेखा-परीक्षा कक्ष की स्थापना की गई है। 2009-10 में संस्थान के सभी दस एककों की आन्तरिक लेखा-परीक्षा की योजना बनाई गई थी, परन्तु केवल नौ एककों की लेखा-परीक्षा की जा सकी। 2009-10 में मुख्यालय की आन्तरिक लेखा-परीक्षा का प्रबन्ध नहीं किया गया।

2. **आन्तरिक नियन्त्रण-प्रणाली की पर्याप्तता :**

नियन्त्रण वातावरण

वित्त अधिकारी का आवश्यक पद 2002 से रिक्त पड़ा है।

मानीटर

लेखा-परीक्षा की आपत्तियों के प्रति प्रबन्धन की अनुक्रिया प्रभावकारी नहीं है क्योंकि 2001-02 से 21 पैराग्राफ बकाया हैं।

3. **स्थायी परिसम्पत्तियों के प्रत्यक्ष सत्यापन की प्रणाली**

स्थायी परिसम्पत्तियों का प्रत्यक्ष सत्यापन 2009-10 के लिए नहीं किया गया है।

4. **सामान-सूची के प्रत्यक्ष सत्यापन की प्रणाली**

पुस्तकों एवं प्रकाशन का प्रत्यक्ष सत्यापन 1988 से नहीं किया गया है।

लेखन एवं उपभोज्य सामग्रीयों का प्रत्यक्ष सत्यापन वर्ष 2009-10 के लिए किया गया है।

5. **सांविधिक देय राशि के भुगतान की नियमितता**

31-3-2010 को उपलब्ध लेखा के अनुसार सांविधिक देय से सम्बन्धित कोई भी भुगतान छः महीने से अधिक समय तक बकाया नहीं था।

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

56-57, इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

2009-10 वर्षीय समेकित प्राप्तियों का विवरण

प्राप्तियाँ		योजनागत	योजनेत्तर	योग
पूर्व बकाया	रोकड़	0	208267	208267
पूर्व बकाया	पूर्व बकाया	49329	289041	338370
बैंक में जमा	बकाया	292753	-501020	-208267
बैंक में जमा	बैंक में जमा	18409860	16680577	35090437
मंत्रालय से अनुदान	मंत्रालय से अनुदान आरक्षण	489200000	361800000	851000000
अरक्षण				
गबन	**गबन प्राप्ति**	100000	0	100000
अनुसूची (ए)	विविध प्राप्तियाँ	6121264	32823954	38945218
विन्यास निधि	विन्यास निधि	0	50918	50918
अनुसूची (बी)	प्रेषण	15393623	78696171	94089794
अनुसूची (सी)	सावधि जमा	0	409226	409226
अनुसूची (डी)	अग्रिम खाता	2420296	9634726	12055022
यू.जी.सी. से अनुदान	यू.जी.सी. से अनुदान	846790	0	846790
उचन्त खाता	**उचन्त राशि**	628122	0	628122
कुलयोग		**533462037**	**500091860**	**1033553897**

ह०
अनुभाग अधिकारी (लेखा)

ह०
उप कुलसचिव (वित्त)

ह०
कुलसचिव

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

56-57, इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

2009-10 वर्षीय समेकित भुगतान का विवरण

भुगतान		योजनागत	योजनेत्तर	योग
अनुसूची (एफ)	स्थापना व्यय	69108782	277082279	346191061
अनुसूची (जी)	प्रशासन व्यय	23282204	51772794	75054998
अनुसूची (एच)	योजना	325570870	57981450	383552320
अनुसूची (आई)	प्रेषण	15253309	77796437	93049746
अनुसूची (जे)	सावधि जमा	0	460144	460144
अनुसूची (के)	पूँजीगत व्यय	87778846	8804077	96582923
अनुसूची (एल)	अग्रिम खाता	2397213	8594621	10991834
अन्तिम शेष	समायोजित नकद	0	208267	208267
अन्तिम शेष	अन्तिम शेष	17212	311764	328976
बैंकों में शेष राशि	समायोजित बैंक शेष	292753	-501020	-208267
बैंकों में शेष राशि	**बैंकों में शेष राशि**	9132726	17581047	26713773
उचन्त खाता	**उचन्त राशि**	628122	0	628122
कुलयोग		**533462037**	**500091860**	**1033553897**

ह०
अनुभाग अधिकारी (लेखा)

ह०
उप कुलसचिव (वित्त)

ह०
कुलसचिव

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

56-57, इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

2009-10 वर्षीय समेकित प्राप्तियों का विवरण

प्राप्तियाँ		योजनागत	योजनेत्तर	योग
अनुसूची	प्रारम्भिक शेष			
समायोजित नकद				
समायोजित नकद				
योग		0	208267	208267
		0	**208267**	**208267**
प्रारम्भिक शेष				
हाथ में रोकड़				
योग		49329	289041	338370
		49329	**289041**	**338370**
अनुसूची बैंक शेष				
समायोजित बैंक राशि				
समायोजित बैंक राशि				
योग		292753	-501020	-208267
		292753	**-501020**	**-208267**
बैंक बकाया				
बचत खाता		18244360	16680577	34924937
बचत खाता फेलोशिप		165500	0	165500
योग		**18409860**	**16680577**	**35090437**
अनुसूची	मंत्रालय से अनुदान			
मंत्रालय से अनुदान				
मरम्मत/रखरखाव		489200000	361800000	851000000
योग		**489200000**	**361800000**	**851000000**
अनुसूची	गबन प्राप्ति			
गबन प्राप्ति				
गबन राशि वसूली		100000	0	100000
योग		**100000**		**100000**

प्राप्तियाँ	योजनागत	योजनेत्तर	योग
अनुसूची-ए			
विविध प्राप्तियाँ			
पत्राचार	0	149445	149445
परीक्षा	0	3388409	3388409
ज्ञान दर्शन/संस्कृत नेट	132780	0	132780
स्थानान्तरित अ.भ.नि ब्याज	1679888	19136110	20815998
छुट्टी वेतन एवं पेन्शन अंशदान	0	722377	722377
पुस्तकालय	0	67	67
मंत्रालय प्रकाशन	407995	0	407995
अनौपचारिक संस्कृत शिक्षा	1328847	88000	1416847
अन्य विविध प्राप्तियां	2518034	5855491	8373525
पी एस.एस.टी प्राप्तियां	0	1192055	1192055
प्रकाशन	9720	1497077	1506797
अन्य स्रोतों से आय	44000	757315	801315
सी.पी.डब्ल्यू.डी से वापसी	0	37608	37608
योग	**6121264**	**32823954**	**38945218**
अनुसूची **अक्षयनिधि**			
अक्षयनिधि			
सावधि योजना पर ब्याज (दूबे सम्मान)	542	542	
सावधि योजना पर ब्याज (जिन्दल ट्रस्ट)	0	13402	13402
सावधि योजना पर ब्याज (सोम्मैया ट्रस्ट)	0	36974	36974
योग	**0**	**50918**	**50918**
अनुसूची-बी			
प्रेषण			
छात्रकोष	0	75600	75600
अंशदायी भविष्य निधि	145138	679137	824275
धरोहर राशि एवं जमानत	0	71800	71800
जी.आई.एस.	186500	687431	873931
साधारण भविष्य निधि	3351990	34412933	37764923
आय कर	8308616	26661466	34970082
पुस्तकालय सुरक्षा राशि	0	28800	28800
जीवन बीमा	3828	121466	125294
जीवन बीमा (वेतन योजना)	0	1486838	1486838
एन.पी.एस. प्रीमीयम	0	1117371	1117371
एन.पी.एस.	1636817	2049024	3685841

प्राप्तियाँ	योजनागत	योजनेत्तर	योग
पी.एल.आई.	0	146355	146355
व्यवसायिक कर	143020	256950	399970
आर.डी. (पी.ओ.)	0	213900	213900
अन्य विभागों से वसूली	1612444	10398347	12010791
टी.डी.एस.	5270	288753	294023
योग	**15393623**	**78696171**	**94089794**
अनुसूची-सी			
सावधि योजना			
सावधि योजना (दूबे सम्मान)	0	6000	6000
सावधि योजना (जिन्दल ट्रस्ट)	0	148226	148226
सावधि योजना (सोम्मैया ट्रस्ट)	0	255000	255000
योग	**0**	**409226**	**409226**
अनुसूची-डी			
अग्रिम अदायगी			
कम्प्युटर	55650	466546	522196
विविध	1159361	5443477	6602838
वाहन	33450	931737	965187
त्यौहार	31500	339100	370600
ग ह निर्माण अग्रिम	0	442746	442746
अवकाश यात्रा भत्ता	306175	374460	680635
चिकित्सा	0	81820	81820
यात्रा अग्रिम	834160	1554840	2389000
योग	**2420296**	**9634726**	**12055022**
अनुसूची यू.जी.सी. से अनुदान			
फैलोशिप (यू.जी.सी.ओ.)	766790	0	766790
इंदिरा गांधी पी.जी. स्कोलर्स (यू.जी.सी.ओ.)	80000	0	80000
योग	**846790**	**0**	**846790**
अनुसूची			
उचन्ती खाता			
गबन राशि (बैंक)	569000	0	569000
गबन राशि (नकद)	59122	0	59122
योग	**628122**	**0**	**628122**
कुलयोग	**533462037**	**500091860**	**1033553897**

क्रमश:.....

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

56-57, इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

2009-10 वर्षीय समेकित भुगतान का विवरण

भुगतान	योजनागत	योजनेत्तर	योग
अनुसूची-एफ			
स्थापना व्यय			
सा.भ.नि. अंशदान	0	175184	175184
अ.भ.नि. पर बोनस	764919	0	764919
ग्रेच्युटी	70587	7476748	7547335
अ.भ.नि. पर ब्याज	1064068	2301996	3366064
एन.पी.एस. पर ब्याज	77952	60986	138938
अवकाश का नकदीकरण	13262	3957991	3971253
अवकाश वेतन एवं भत्ते	526533	96566	623099
चिकित्सा प्रतिपूर्ति	189698	1983714	2173412
एन.पी.एस. (परिसर)	1576222	2035837	3612059
वेतन एवं भत्ते	64671901	226911225	291583126
परिवर्तित पैंशन/संशासित	153640	32082032	32235672
योग	**69108782**	**277082279**	**346191061**
अनुसूची-जी			
प्रशासनिक व्यय			
विज्ञापन	106356	2130350	2236706
ओडिट फीस	69243	542572	611815
पत्राचार व्यय	0	413693	413693
कम्प्यूटर शिक्षा	156839	372637	529476
वार्षिक महोत्सव	170681	2624564	2795245
परीक्षा व्यय	41151	6030557	6071708
कवि भास्करी/अखिलभारतीय नाटकयामहो.	327572	0	327572

भुगतान	योजनागत	योजनेत्तर	योग
कानूनी व्यय	0	329421	329421
वर्दियाँ	1782	80465	82247
विविध व्यय	7200815	18849275	26050090
पूर्व वर्ष का भुगतान	1117215	0	1117215
पोस्ट एवं टेलीग्राफ	95236	1409080	1504316
प्रोजेक्ट हू ईज हू (साहित्य)	173434	0	173434
पी.एस.एस.टी.	22701	666854	689555
किराया एवं कर	1417036	2144430	3561466
अनुरक्षण एवं मरम्मत	666696	2966283	3632979
स्टॉफ कार व्यय	0	518701	518701
स्टेशनरी एवं छपाई	357429	2778704	3136133
टी.ए. एवं डी.ए.	1966340	5833589	7799929
दूरभाष	192161	775688	967849
वसन्तोत्सव/कौमुदीमहोत्सव	1830349	55944	1886293
पानी एवं बिजली	362409	3249987	3612396
कार्यशाला/सम्मेलन	48000	0	48000
विश्व संस्कृत सम्मेलन	4958527	0	4958527
युवा महोत्सव	2000232	0	2000232
योग	**2328220**4	**51772794**	**75054998**

अनुसूची-एच

योजना

आदर्श संस्कृत महाविद्यालय	51326378	36084157	87410535
अखिल भारतीय वाद–विवाद प्रति.	1253952	94275	1348227
सी.डी.ए.सी. प्रोजेक्ट	674939	0	674939
डी.ई.ओ./ई.ग्रंथालय	0	666868	666868
दूरवर्ती शिक्षा	539209	0	539209
डक्कन कॉलेज, पुणे	2956000	0	2956000
ई.–बुक खाता	433080	0	433080
फेलोशिप योजना	717500	0	717500

भुगतान	योजनागत	योजनेत्तर	योग
ग्रांट नये शिक्षक	10048000	0	10048000
ग्रांट नये शिक्षक	2143118	0	2143118
इंदिरा गांधी पी.जी. स्कोलर्स	40000	0	40000
एन.जी.ओ.	10831493	0	10831493
एन.ई.आर.	10094654	0	10094654
अनौपचारिक संस्कृत शिक्षा	26470305	125195	26595500
पालि एवं प्राकृत	4821504	344790	5166294
संस्कृत–साहित्य प्रोडक्शन	1730607	0	1730607
खरीद संस्कृत–पुस्तक	6529333	0	6529333
राष्ट्रपति सम्मान	13500000	15026830	28526830
शोध प्रविधि	500000	0	500000
शलाका/मल्टीमिडिया परियोजना	2562491	7639	2570130
सम्मान राशि योजना	7241680	0	7241680
संस्कृत नेट/ज्ञान दर्शन	1114422	0	1114422
छात्रव त्ति	63532923	5631696	69164619
शास्त्र चूड़ामणि	2898575	0	2898575
विशेष अभिविन्यास पाठ्यक्रम	7800	0	7800
स्वैच्छिक संस्थान	103602907	0	103602907
योग	**325570870**	**57981450**	**383552320**
अनुसूची-आई			
प्रषित राशि			
छात्रकोष	0	75200	75200
सी.पी.एफ.	145138	679137	824275
धरोहर राशि एवं जमानत	0	70000	70000
जी.आई.एस.	112624	679010	791634
जी.पी.एफ.	3351990	34412933	37764923
आयकर	8308409	26661466	34969875
पुस्तकालय सुरक्षा धन	0	22200	22200
जीवन बीमा निगम	3828	121466	125294
जीवन बीमा प्रीमीयम	0	802586	802586

क्रमश:.....

भुगतान	योजनागत	योजनेत्तर	योग
जीवन बीमा वेतन योजना	0	1540176	1540176
एन.पी.एस.	1615684	1662227	3277911
पी.एल.आई	0	146355	146355
व्यवसायिक कर	143020	256950	399970
आर.डी. (पी.ओ.)	0	213900	213900
अन्य विभागों को भेजा	1567346	10158503	11725849
टी.डी.एस.	5270	294328	299598
योग	**15253309**	**77796437**	**93049746**
अनुसूची-जे			
सावधि योजना			
सावधि योजना (दूबे सम्मान)	0	286974	286974
सावधि योजना (जिन्दल ट्रस्ट)	0	5000	5000
सावधि योजना (सोम्मैया ट्रस्ट)	0	161628	161628
सावधि योजना खरीद	0	6542	6542
योग	**0**	**460144**	**460144**
अनुसूची-के			
पूंजीगत व्यय			
ग्रहनिर्माण प्रगति	78828000	1217247	80045247
फर्नीचर	7061737	2260099	9321836
पुस्तकालय	106094	403800	509894
मशीनरी एवं साज सज्जा	1783015	3373397	5156412
प्रकाशन	0	1549534	1549534
योग	**87778846**	**8804077**	**96582923**
अनुसूची-एल			
अग्रिम खाता			
कम्प्युटर	225500	335400	560900
विविध	1076813	5179241	6256054
वाहन	0	568000	568000
त्यौहार	33000	381000	414000
अवकाश यात्रा भत्ता	229000	358360	587360

क्रमश:.....

भुगतान		योजनागत	योजनेत्तर	योग
चिकित्सा		0	61820	61820
स्कूटर/कार		65400	216000	281400
यात्रा अग्रिम		767500	1494800	2262300
योग		**2397213**	**8594621**	**10991834**
अनुसूची	अन्तिम शेष			
समायोजित राशि नकद				
समायोजित राशि नकद		0	208267	208267
योग		**0**	**208267**	**208267**
अन्तिम शेष				
हाथ में रोकड़		17212	311764	328976
योग		**17212**	**311764**	**328976**
अनुसूची	बैंक शेष			
समायोजित राशि बैंक		292753	-501020	-208267
योग		**292753**	**-501020**	**-208267**
बैंक बकाया				
फैलाशिप		214790	0	214790
बचत खाता		8917936	17581047	26498983
योग		**9132726**	**17581047**	**26713773**
अनुसूची				
उचंत				
गबन राशि (बैंक)		569000	0	569000
गबन राशि (रोकड़)		59122	0	59122
योग		**628122**	**0**	**628122**
कुलयोग		**533462037**	**500091860**	**1033553897**

ह०
अनुभाग अधिकारी (लेखा)

ह०
उप कुलसचिव (वित्त)

ह०
कुलसचिव

क्रमश:.....

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

56-57, इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

2009-10 वर्षीय समेकित आय एवं व्यय की अनुसूचियाँ

क्र.सं. व्यय	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष	क्र.सं. व्यय		चालू वर्ष		पूर्व वर्ष
लेखा शीर्ष	रुपये	रुपये	लेखा शीर्ष		रुपये		रुपये
अनुसूची (ओ)			1. पूर्व वर्ष की बकाया राशि				
1. स्थापना व्यय	346191061.00	224017919.00	2. मंत्रालय से प्राप्त अनुदान	851000000.00		622400000.00	
अनुसूची (पी)			3. केन्द्रीय योजना				
2. प्रशासनिक व्यय	75054998.00	48700544.00	अनुसूची (एम)				
अनुसूची (क्यू)			4. कम पूंजीगत	96582923.00	754417077.00	83181099.00	539218901.00
3. योजना	375553140.00	319676278.00	अनुसूची (एन)				
4. आय से व्यय की अधिकता	41080005.00	0.00	5. i. विविध प्राप्ति (आय)		36229111.00		14878063.00
			ii. प्रकाशन		1914792.00		2684699.00
			iii. अन्य स्रोतों से प्राप्ति	801315.00		44000.00	
			6. आय से व्यय की अधिकता		44516909.00		35569078.00
कुल योग	837879204.00	592394741.00	कुल योग		837879204.00		592394741.00

ह०/-
अनुभाग अधिकारी (लेखा)

ह०/-
उप कुलसचिव (वित्त)

ह०/-
कुलसचिव

क्रमश:.....

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

56-57, इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

2009-10 वर्षीय समेकित आय एवं व्यय की अनुसूचियाँ

क्र.सं. व्यय	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
लेखा शीर्ष	रुपये	रुपये
अनुसूची (ओ)		
1. स्थापना व्यय		
i. वेतन एवं भत्ते	291583126.00	197798824.00
ii. चिकित्सा प्रतिपूर्ति	2173412.00	2057460.00
iii. सेवानिव त्त लाभ		
a. परिवर्तित पेंशन/संशासित	32235672.00	12365158.00
b. उपदान	7547335.00	4441742.00
c. अवकाश का नकदीकरण	3971253.00	1140668.00
iv. स.भ.नि. पर ब्याज	3366064.00	4056477.00
v. अ.भ.नि. पर संस्थान का अनुदान	175184.00	182314.00
vi. छुट्टियां एवं पेंशन अंशदान	623099.00	306441.00
vii. एन.पी.एस. पर संस्थान का अंशदान	3612059.00	1550057.00
viii. स.भ.नि. पर बोनस	0.00	60000.00
ix. एन.पी.एस. पर ब्याज	138938.00	58778.00
x. सी.पी.एफ. (परिसर)	764919.00	0.00
	346191061.00	224017919.00
अनुसूची (पी)		
2. **प्रशासनिक व्यय**		
i. किराया दरें एवं कर	3561466.00	1809203.00
ii. अनुरक्षण एव मरम्मत	3632979.00	3471300.00
iii. पोस्ट एवं टेलीग्राफ	1504316.00	1182535.00
iv. दूरभाष	967849.00	843645.00
v. टी.ए. एवं डी.ए.	7799929.00	6356374.00
vi. विज्ञापन	2236706.00	593303.00
vii. स्टेशनरी एवं छपाई	3136133.00	1529904.00
viii. ओडिट फीस	611815.00	564220.00
ix पानी एवं बिजली	3612396.00	3091795.00
x. विविध व्यय	26050090.00	12465034.00
xi. परीक्षा व्यय	6071708.00	5334016.00
xii. सी.सी. व्यय	413693.00	144454.00
xiii. वर्दियां	82247.00	39073.00
xiv. कानूनी व्यय	329421.00	504771.00
xv. स्टाफ कार व्यय	518701.00	438191.00

क्र.सं. व्यय	चालू वर्ष		पूर्व वर्ष	
लेखा शीर्ष		रुपये	रुपये	
1. मंत्रालय से अनुदान	851000000.00		622400000.00	
अनुसूची (एम)				
3. **कम पूंजीगत व्यय**				
i. निर्माण कार्य (प्रगति पर)	80045247.00		72458965.00	
ii. फर्नीचर	9321836.00		4467355.00	
iii. मशीनरी उपकरण	5156412.00		4418199.00	
iv. पुस्तकालय पुस्तकें	509894.00		234433.00	
v. प्रकाशन	1549534.00		1051103.00	
vi. प्रयोगशाला यन्त्र	0.00		0.00	
vii. संस्कृत पुस्तक खरीद (पुनर्मुद्रण)	0.00		551044.00	
	96582923.00	754417077.00	83181099.00	539218901.00
अनुसूची (एन.)				
4. **विविध प्राप्तियां**				
i. सी.सी. प्राप्तियां		149445.00		54905.00
ii. परीक्षा प्राप्तियां		3388409.00		3292438.00
iii. अन्य विविध प्राप्तियां		8373525.00		4494901.00
iv. ब्याज जी.पी.एफ. खाते से		20815998.00		1224830.00
v. पी.एस.एस.टी. प्राप्तियां		1192055.00		3377866.00
vi. संस्थान प्रकाशन		1506797.00		2300373.00
vii. मंत्रालय प्रकाशन		407995.00		384326.00
viii. अन्य स्रोतों से आय		801315.00		44000.00
ix. अनौपचारिक संस्कृत शिक्षा		1416847.00		1777659.00
x. ज्ञान दर्शन		132780.00		77232.00
xi. पुस्तकालय		67.00		46.00
xii. विविध संग्रह		0.00		
xiii. सी.पी.डब्ल्यू.डी. से वापसी		37608.00		578186.00
xiv. छुट्टी वेतन एवं पेन्सन अंशदान		722377.00		
		38945218.00		17606762.00

क्रमश:.....

क्र.सं.	व्यय	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
	लेखा शीर्ष	रुपये	रुपये
	xvi. पी.एस.एस.टी.	689555.00	374983.00
	xvii. कम्प्यूटर शिक्षा	529476.00	2880423.00
	xviii. वसन्तोत्सव/कौमुदी महोत्सव	1886293.00	1524191.00
	xix. वार्षिक सम्मेलन	2795245.00	385566.00
	xx. विश्व संस्कृत सम्मेलन	4958527.00	20146.00
	xxi. कार्यशाला/सम्मेलन	48000.00	1512426.00
	xxii. प्रोजेक्ट (हू ईज हू (साहित्य))	173434.00	54224.00
	xxiii. कवि भास्करी/अखिल भारती नाट.	327572.00	1307801.00
	xxiv. युवा महोत्सव	2000232.00	2272966.00
	xxv. payment of previous year remit.	1117215.00	0.00
	योग=	**75054998.00**	**48700544.00**
	अनुसूची (क्यू)		
3.	योजना		
	i. शास्त्र चूडामणि	2898575.00	2913400.00
	ii. स्पेशल ओरिण्टल कोर्स	7800.00	286500.00
	iii. संस्कृत पुस्तकों की खरीद	6529333.00	3607070.00
	iv. संस्कृ साहित्य का उत्पादन	1730607.00	2011995.00
	v. डक्कन कॉलेज, पुणे	2956000.00	4000000.00
	vi. राष्टिपति सम्मान	28526830.00	15212591.00
	vii. आदर्श संस्कृत महाविद्यालय	87410535.00	88005695.00
	viii. छात्रव त्ति	69164619.00	64246316.00
	ix. स्वैच्छिक सस्कृत संस्थायें	103602907.00	102756927.00
	x. अखिल भारतीय प्रतियोगिता	1348227.00	1093285.00
	xi. एन.ई.आर	10094654.00	4280730.00
	xii. कन्टैन्ट जनरेशन	0.00	573128.00
	xiii. दूरस्थ शिक्षा	539209.00	706974.00
	xiv. अनौपचारिक संस्कृत शिक्षा	26595500.00	14095426.00
	xv. ज्ञान दर्शन/सस्कृत नेट	1114422.00	3259165.00
	xvi एन.जी.ओ.	10831493.00	5031522.00
	xvii ई-बुक खाता	433080.00	481200.00
	xviii ग्राट माडर्न शिक्षक	10048000.00	6048360.00
	xix सी. डेक प्रोजेक्ट	674939.00	375000.00
	xx ग्रांट उच्चतर विद्यालय	2143118.00	690994.00
	xxi डी.ई.ओ./ई.ग्रथालय	666868.00	0.00
	xxii पालि एव प्राकृत	5166294.00	0.00
	xxiii शोध प्रविधि	500000.00	0.00
	xxiv मल्टीमिडिया परियोजना	2570130.00	0.00
	योग =	**375553140.00**	**319676278.00**

क्रमश:.....

क्र.सं.	व्यय	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष	क्र.सं.	व्यय	चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
	लेखा शीर्ष	रुपये	रुपये		लेखा शीर्ष	रुपये	रुपये
				5.	आय से व्यय की अधिकता	44516909.00	35569078.00
4.	मूल्य ह्रास व्यवस्था						
	i भूमि एवं भवन						
	पूर्व बकाया (10%)	28838012.00					
	बकाया (5%)	163733.00					
	ii मशीनरी उपकरण						
	पूर्व बकाया (25%)	5228457.00					
	बकाया (12.5%)	644552.00					
	iii फर्नीचर						
	पूर्व बकाया (15%)	5171920.00					
	बकाया (7.5%)	699138.00					
	iv प्रयोगशाला उपकरण 15%)	74302.00					
	v स्टाफ कार (20%)	259891.00					
	योग =	**41080005.00**	**0.00**				
	आय से व्यय की अधिकता		0.00				

कुल योग :	**837879204.00**	**592394741.00**	कुल योग :	**837879204.00**	**592394741.00**

ह०/-
अनुभाग अधिकारी (लेखा)

ह०/-
उप कुलसचिव (वित्त)

ह०/-
कुलसचिव

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

56-57, इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

31.3.2010 का समेकित तुलन पत्र

क्र.सं.	देनदारियां		चालू वर्ष	पूर्व वर्ष	क्र.सं.	अस्तियां		चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
	लेखा शीर्ष	रुपये	रुपये			लेखा शीर्ष		रुपये	रुपये
	देनदारियां					अस्तियां			
	अनुसूची (यू)					अनुसूची (आर)			
1.	पूंजीगत निधि				1.	अचल अस्तियां			
	पूर्व में बकाया	652117977.00				पूर्व में बकाया	652117977.00		
	वर्ष में जमा	99857579.00				वर्ष में जमा	99857579.00		
	वर्ष में समायोजन	5227123.00	746748433.00	652117977.00		वर्ष में समायोजन	5227123.00	705668428.00	652117977.00
	अनुसूची (वी)					मूल्य ह्रास	41080005.00		
2.	विन्यास निधि					अनुसूची (एस)			
	पूर्व में बकाया	2688188.00			2.	विन्यास निधि			
	वर्ष में जमा	55918.00				पूर्व में बकाया	17880115.00		
	वर्ष में समायोजन		2744106.00	2688188.00		वर्ष में जमा	55918.00	17936033.00	17880115.00
						अनुसूची (टी)			
3.	आय से व्यय की अधिकता				3.	अग्रिम वसूली			
	पूर्व में बकाया	41047568.00				पूर्व में बकाया	9586699.00		
	वर्ष में समायोजन	44516909.00	-3469341.00	41047568.00		वर्ष में जमा	10991834.00		
	अनुसूची (डब्ल्यू)					वर्ष में समायोजन	12055022.00	8523511.00	9586699.00
4.	अन्य देनदारियां					उचंती खाता		569000.00	569000.00
	पूर्व में बकाया	19787987.00				रोकड़		59122.00	59122.00
	वर्ष में जमा	55561867.00			4.	नकद बकाया			
	वर्ष में समायोजन	61574209.00	13775645.00	19787987.00		i. हाथ में रोकड़		328976.00	338370.00
5.	जी.पी.एफ./सी.पी.एफ.		175340843.00	167936790.00		बैंक बकाया			
						i. बचत खाता		26498983.00	34924937.00
6.	छात्र कोष		1578454.00	2049600.00		ii. बचत खाता (फैलोशिप)		214790.00	165500.00
					5.	जी.पी.एफ./सी.पी.एफ.		175340843.00	167936790.00
					6.	छात्रकोष		1578454.00	2049600.00
	कुल योग		936718140.00	885628110.00		कुल योग		936718140.00	885628110.00

ह०/-
अनुभाग अधिकारी (लेखा)

ह०/-
उप कुलसचिव (वित्त)

ह०/-
कुलसचिव

क्रमश:.....

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

56-57, इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

31.3.2010 का समेकित तुलन पत्र

क्र.सं. देनदारियां		चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
लेखा शीर्ष	रुपये	रुपये	रुपये
अनुसूची (यू)			
देनदारियां			
1. **पूंजीगत निधि**			
पूर्व में बकाया	375022022.00		
वर्ष में जमा	19812332.00		
वर्ष में समायोजन	1914859.00	392919495.00	375022022.00
2. **सी.पी.डब्ल्यू.डी के पास जमा**			
पूर्व में बकाया	277095955.00		
वर्ष में जमा	80045247.00		
वर्ष में समायोजन	3312264.00	353828938.00	277095955.00
योग =		**746748433.00**	**652117977.00**
अनुसूची (वी)			
3. **विन्यास निधि**			
a. विन्यास निधि (जिन्दल ट्रस्ट)		161628.00	1,48,226.00
b. आचार्य मेडल (दूबे सम्मान)		6542.00	6,000.00
c. विन्यास निधि (सौमेया ट्रस्ट)		286974.00	2,50,000.00
d. विन्यास निधि (शुक्ला अवार्ड)		5000.00	
e. एफ.डी. पर ब्याज (जिन्दल ट्रस्ट)			
पूर्व में बकाया	506.00		
वर्ष में जमा	0.00		
वर्ष में समायोजन	0.00	506.00	506.00
f. एफ.डी. पर ब्याज (दूबे अवार्ड)			
पूर्व में बकाया	1002.00		
वर्ष में जमा	0.00	1002.00	1002.00
g. एफ.डी. पर ब्याज (सौमेया ट्रस्ट)			
पूर्व में बकाया	33429.00		
वर्ष में जमा	0.00	33429.00	33429.00
h. विन्यास निधि (जी)		301.00	301.00
i. बैंक में जमा (जी)			
पूर्व में बकाया	173033.00		
वर्ष में जमा	0.00	173033.00	173033.00
j. एफ.डी.आर. (पी.एफ.)	0.00	2075691.00	2075691.00
योग		**2744106.00**	**2688188.00**

क्र.सं. अस्तियां		चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
लेखा शीर्ष (अस्तियां)	रुपये	रुपये	रुपये
अनुसूची (आर)			
1. **अचल अस्तियां**			
a. **भूमि एवं भवन**			
पूर्व में बकाया	288380122.00		
वर्ष में जमा	3274656.00		
वर्ष में समायोजन	29001745	262653033.00	288380122.00
b. **मशीनरी उपकरण**			
पूर्व में बकाया	20913829.00		
वर्ष में जमा	5156412.00		20913829.00
वर्ष में समायोजन	5873009	20197232.00	
c. **फर्नीचर**			
पूर्व में बकाया	34479464.00		
वर्ष में जमा	9321836.00		
वर्ष में समायोजन	5871058	37930242.00	34479464.00
d. **पुस्तकालय पुस्तकें**			
पूर्व में बकाया	16370576.00		
वर्ष में जमा	509894.00		
वर्ष में समायोजन	67.00	16880403.00	16370576.00
e. **प्रकाशन**			
पूर्व में बकाया	6434011.00		
वर्ष में जमा	1549534.00		
वर्ष में समायोजन	1506797.00	6476748.00	6434011.00
f. **संस्कृत पुस्तक खरीद (पुनर्मुद्रण)**			
पूर्व में बकाया	6649223.00		
वर्ष में जमा	0.00		
वर्ष में समायोजन	407995.00	6241228.00	6649223.00
g. **प्रयोगशाला यन्त्र**			
पूर्व में बकाया	495344.00		
वर्ष में समायोजन	74302.00	421042.00	495344.00
h. **स्टाफ कार**	1299453.00		
वर्ष में समायोजन	259891.00	1039562.00	1299453.00
2. **जमा एवं अग्रिम**			
a. **सी.पी.डब्ल्यू.डी.में जमा (कार्य प्रगति पर)**			
पूर्व में बकाया	277095955.00		
वर्ष में जमा	80045247.00		
वर्ष में समायोजन	3312264.00	353828938.00	277095955.00
योग =		**705668428.00**	**652117977.00**

क्रमश:.....

क्र.सं. देनदारियां	चालू वर्ष		पूर्व वर्ष
लेखा शीर्ष	रुपये	रुपये	रुपये
4. आय से व्यय की अधिकता			
पूर्व में बकाया	41047568.00		
वर्ष में समायोजन	44516909.00	-3469341.00	41047568.00
अनुसूची (डब्ल्यू)			
5. अन्य देनदारियां			
a. अन्य विभागों को जाने वाली राशि			
पूर्व में बकाया	843063.00		
वर्ष में जमा	12010791.00		
वर्ष में समायोजन	11725849.00	1128005.00	843063.00
b. बयाना एवं जमानत			
पूर्व में बकाया	24815.00		
वर्ष में जमा	71800.00		
वर्ष में समायोजन	70000.00	26615.00	24815.00
c. पुस्तकालय सुरक्षित धन			
पूर्व में बकाया	182957.00		
वर्ष में जमा	28800.00		
वर्ष में समायोजन	22200.00	189557.00	182957.00
d. जी.आई.एस.			
पूर्व में बकाया	131533.00		
वर्ष में जमा	873931.00		
वर्ष में समायोजन	791634.00	213830.00	131533.00
e. एल.आई. प्रीमियम			
पूर्व में बकाया	-201831.00		
वर्ष में जमा	1117371.00		
वर्ष में समायोजन	802586.00	112954.00	-201831.00
f. छात्रकोश			
पूर्व में बकाया	110400.00		
वर्ष में जमा	75600.00		
वर्ष में समायोजन	75200.00	110800.00	110400.00
g. आयकर			
पूर्व में बकाया	200.00		
वर्ष में जमा	34970082.00		
वर्ष में समायोजन	34969875.00	407.00	200.00
h. फेलाशिप			
पूर्व में बकाया	165500.00		
वर्ष में जमा	766790.00		
वर्ष में समायोजन	717500.00	214790.00	165500.00

क्र.सं. अस्तियां	चालू वर्ष		पूर्व वर्ष
लेखा शीर्ष (अस्तियां)	रुपये	रुपये	रुपये
अनुसूची (एस)			
3. विन्यास निधि			
i. डी.ए.वी.पी. में जमा		53,100.00	53,100.00
ii. विन्यास निधि व्यय (जिन्दल ट्रस्ट)		1,61,628.00	1,48,226.00
iii. आचार्य छात्रों को पुरस्कार (दूबे)		6,542.00	6,000.00
iv. विन्यास निधि व्यय (सोमैया ट्रस्ट)		2,86,974.00	2,50,000.00
v. विन्यास निधि व्यय (शुक्ला सम्मान)		5000.00	0.00
vi. बैंक में जमा (जी)			
पूर्व में बकाया	173033.00		
वर्ष में जमा	0.00	173033.00	173033.00
vii. बी.एस.ई.एस. में जमा		174065.00	174065.00
viii. एफ.डी.आर. (पी.एफ.)		17075691.00	17075691.00
योग =		**17936033.00**	**17880115.00**
अनुसूची (टी)			
4. अग्रिम वसूली			
a. अग्रिम व्यय			
पूर्व में बकाया	141552.00		
वर्ष में जमा	6256054.00		
वर्ष में समायोजन	6602838.00	-205232.00	141552.00
b. एल.टी.सी अग्रिम			
पूर्व में बकाया	177245.00		
वर्ष में जमा	587360.00		
वर्ष में समायोजन	680635.00	83970.00	177245.00
c. टी.ए. अग्रिम			
पूर्व में बकाया	197158.00		
वर्ष में जमा	2262300.00		
वर्ष में समायोजन	2389000.00	70458.00	197158.00
d. अग्रिम वाहन			
पूर्व में बकाया	3944840.00		
वर्ष में जमा	849400.00		
वर्ष में समायोजन	965187.00	3829053.00	3944840.00
e. त्योहार अग्रिम			
पूर्व में बकाया	196090.00		
वर्ष में जमा	414000.00		
वर्ष में समायोजन	370600.00	239490.00	196090.00
f. एच.बी.ए. अग्रिम			
पूर्व में बकाया	2925746.00		
वर्ष में जमा	0.00		
वर्ष में समायोजन	442746.00	2483000.00	2925746.00

क्रमश:.....

क्र.सं.	देनदारियां	चालू वर्ष		पूर्व वर्ष	क्र.सं.	अस्तियां	चालू वर्ष		पूर्व वर्ष
	लेखा शीर्ष	रुपये	रुपये	रुपये		लेखा शीर्ष (अस्तियां)	रुपये	रुपये	रुपये
	i. सम्मान राशि					g. कम्प्यूटर अग्रिम			
	पूर्व में बकाया	18531350.00				पूर्व में बकाया	1827125.00		
	वर्ष में समायोजन	7241680.00	11289670.00	18531350.00		वर्ष में जमा	560900.00		
	j. एल.आई.सी. (वेतन योजना)					वर्ष में समायोजन	522196.00	1865829.00	1827125.00
	पूर्व में बकाया	0.00				h. पंखा अग्रिम			
	वर्ष में जमा	1486838.00				पूर्व में बकाया	0.00		
	वर्ष में समायोजन	1540176.00	-53338.00	0.00		वर्ष में जमा	0.00		
	k. एन.पी.एस. समायोजन					वर्ष में समायोजन	0.00	0.00	0.00
	पूर्व में बकाया	0.00				i. चिकित्सा अग्रिम			
	वर्ष में जमा	3685841.00				पूर्व में बकाया	163394.00		
	वर्ष में समायोजन	3277911.00	407930.00	0.00		वर्ष में जमा	61820.00		
	l. इंदिरा गांधी पी.जी. स्कोलर्स					वर्ष में समायोजन	81820.00	143394.00	163394.00
	पूर्व में बकाया	0.00				j. अन्य		13549.00	13549.00
	वर्ष में जमा	80000.00				**योग =**		**8523511.00**	**9586699.00**
	वर्ष में समायोजन	40000.00	40000.00	0.00		उचंत खाता (बैंक)		569000.00	569000.00
	m. टी.डी.एस					उचंत खाता (बैंक)		59122.00	59122.00
	पूर्व में बकाया	0.00			4.	**रोकड़ बकाया**			
	वर्ष में जमाr	294023.00				l. हाथ में रोकड़		328976.00	338370.00
	वर्ष में समायोजन	299598.00	-5575.00	0.00	5.	**बैंक बकाया**			
	n. मुम्बई परिसर		100000			i. बचत खाता		26498983.00	34924937.00
	योग =		**10306304.00**	**60835555.00**		ii. बचत खाता (फैलोशिप)		214790.00	165500.00
6.	**अंशदायी भविष्य निधि/सामान्य भविष्य निधि**		175340843.00	167936790.00	6.	**अंशदायी भविष्य निधि/सामान्य भविष्य निधि**		175340843.00	167936790.00
7.	**छात्रकोष**		1578454.00	2049600.00	7.	**छात्रकोष**		1578454.00	2049600.00
	योग =		**176919297.00**	**169986390.00**					
	कुल योग		**936718140.00**	**885628110.00**		**कुल योग**		**936718140.00**	**885628110.00**

ह०/-
अनुभाग अधिकारी (लेखा)

ह०/-
उप कुलसचिव (वित्त)

ह०/-
कुलसचिव

* Library book amounting to Rs. 121821/- received as free of gift in Jammu Campus.

क्रमश:.....

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

56-57, इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

2009-2010 वर्षीय समेकित अं.भ.नि./सा.भ.नि. की प्राप्तियाँ एवं भुगतान का विवरण

RECEIPT प्राप्तियां

प्राप्तियां		चालू वर्ष	पूर्व वर्ष	भुगतान		चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
		रुपये	रुपये			रुपये	रुपये
1.	पूर्व बकाया	14300862.00	6257466.00	1.	अन्तिम भुगतान	25538473.00	11427368.00
2.	अशदायी भविष्य निधि	29145004.00	18864642.00	2.	भविष्यनिधि अग्रिम	6702674.00	6892884.00
3.	भविष्य निधि अग्रिम से वसूली	6837555.00	6218660.00	3.	सावधि योजना की खरीद	84767801.00	68284002.00
4.	भविष्य निधि नकद अग्रिम वसूली	455412.00	201280.00	4.	अन्य संस्थाओं को भेजी राशि	6490244.00	2835966.00
5.	सावधि योजना से प्राप्त	79705779.00	59179298.00	5.	भविष्य निधि का ब्याज मुख्य खातों में	18915568.00	1739732.00
6.	सावधि योजना से प्राप्त ब्याज	14778080.00	8568942.00	6.	बैंक चार्ज	6739.00	15747.00
7.	बचत खाते से ब्याज	651220.00	266954.00				
8.	दूसरी सस्थाओ से प्राप्त	10514414.00	2033517.00		रोकड़ बकाया		
9.	सस्थान का अंशदान	0.00	182314.00	1.	बैंक में शेष	17233186.00	14300862.00
10.	भविष्य निधि ब्याज का मुख्य खाते में स्थानान्तरण	3266359.00	3722215.00				
11.	टी.डी.एस. पर ब्याज बचत खाते में जमा	0.00	1273.00				
	कुल योग	159654685.00	105496561.00		कुल योग	159654685.00	105496561.00

ह०/-
अनुभाग अधिकारी (लेखा)

ह०/-
उप कुलसचिव (वित्त)

ह०/-
कुलसचिव

क्रमश:.....

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

56-57, इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

31-3-2010 का सा.भ.नि. का तुलन पत्र

क्र.सं.	देनदारियां		चालू वर्ष	पूर्व वर्ष	क्र.सं.	अस्तियां		चालू वर्ष	पूर्व वर्ष
	रोकड़ निधि	रुपये	रुपये	रुपये			रुपये	रुपये	रुपये
1.	पूर्व में बकाया	156141213.00			1.	भविष्य निधि अग्रिम			
	वर्ष में जमा	230121624.00				पूर्व में बकाया	11795577.00		
	वर्ष में समायोजन	222127278.00	164135559.00	156141213.00		वर्ष में जमा	6702674.00		
2.	भविष्य निधि अग्रिम					वर्ष में समायोजन	7292967.00	11205284.00	11795577.00
	पूर्व में बकाया	11795577.00			2.	सावधि जमा			
	वर्ष में जमा	6702674.00				पूर्व में बकाया	141840351.00		
	वर्ष में समायोजन	7292967.00	11205284.00	11795577.00		वर्ष में जमा	84767801.00		
						वर्ष में समायोजन	79705779.00	146902373.00	141840351.00
					3.	बचत खाता			
						पूर्व में बकाया	14300862.00		
						वर्ष में जमा	145353823.00		
						वर्ष में समायोजन	142421499.00	17233186.00	14300862.00
	कुल योग		175340843.00	167936790.00		कुल योग		175340843.00	167936790.00

ह०/-
अनुभाग अधिकारी (लेखा)

ह०/-
उप कुलसचिव (वित्त)

ह०/-
कुलसचिव

मुख्यालय

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानित विश्वविद्यालय)

नई दिल्ली

Printed by : D.V. Printers M: 9818279798